पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिका

प्रथम - पुष्प

(चैत्र शुक्ल पक्ष से ज्येष्ठ मास तक)

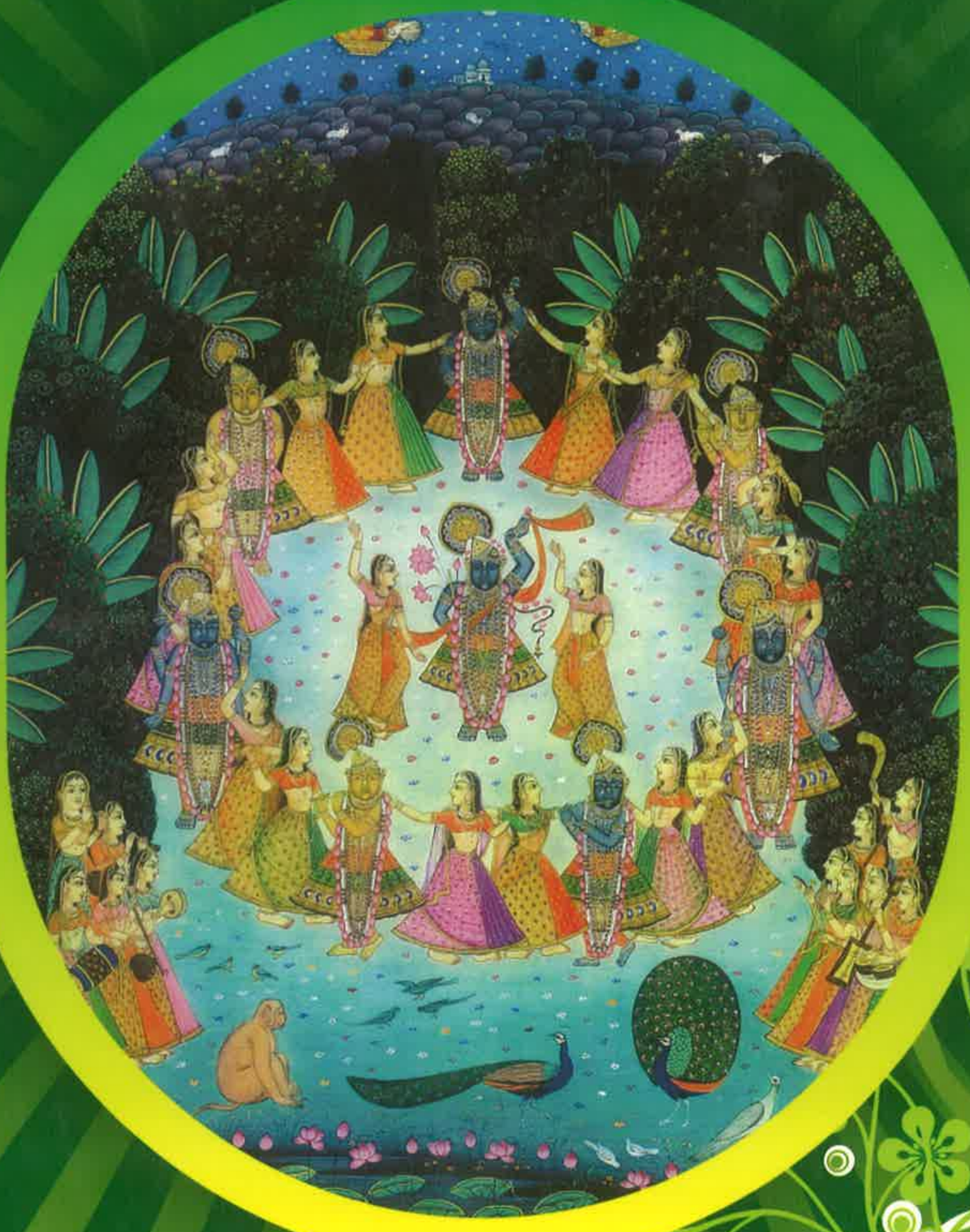

संकलनकर्ता : **मदनलाल शर्मा**, उदयपुर

।। श्रीनाथजी ।।

पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिका

प्रथम–पुष्प

(संशोधित संस्करण)

(चैत्र शुक्लपक्ष से वैसाख ज्येष्ठ मास तक)

संकलन

मदनलाल शर्मा

40, आरएमवी रोड, शर्मा गली के सामने, उदयपुर
फोन : 0294 2417209

संकलनकर्ता एवं प्रकाशक
मदनलाल शर्मा

संशोधन एवं संयोजन
श्री रमणलाल पारीख
19–ए, मोगरावाड़ी, उदयपुर (राज.) 313001
फोन : 0294–2484929 (निवास)

सर्वाधिकार सुरक्षित
मदनलाल शर्मा
40, आरएमवी रोड, शर्मा गली के सामने, उदयपुर
फोन : 0294 2417209

प्रथम संस्करण – 2013, आवृत्ति – 1000
द्वितिय संशोधित संस्करण – 2014 , आवृत्ति – 500

न्यौछावर:
रू. 301.00
(पूरे वर्ष के चारों भाग एक साथ लेने पर न्योछावर रू. 1101.00 मात्र)

प्राप्ति स्थान
श्री मदनलाल शर्मा, 40, आरएमवी रोड, शर्मा गली के सामने, उदयपुर (राज.) 0294–2417209
श्री रमणलाल पारीख, 19–ए, मोगरावाड़ी, उदयपुर (राज.) 0294–2484929, 09829307969
श्री सीताराम पुस्तकालय, द्वारकाधीश मंदिर बजार, मथुरा (उ.प्र.)
श्री जगमोहन हरिप्रियाबेन अरोड़ा, श्रीविट्ठलनाथजी मंदिर, नाथद्वारा, 0921495115

श्री पियुष भानू शर्मा – अदिती एण्ड एसोसियेट्स, आनंद नगर
कोठारिया रोड–नाथद्वारा मो. 9799778059

मुद्रक: चौधरी ऑफसेट प्रा.लि.,
11–12, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर
फोन : 0294 2584071, 2485784

।। श्रीनाथजी ।।

अनुक्रमणिका

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
	–: अ :–		२८	आज बड़ो दरबार देख्यो नंदराय	८७
१	अपने कर चन्दन सखि पिय	१७३	२९	आज बधावो श्री लक्ष्मण राय के	७५
२	अति उदार मोहन मेरे निरख	१५६	३०	आज बधावो श्री व्रजराज के	८८
३	अनत न जैये पिय रहिये मेरे	११६	३१	आज बने गिरिधारी दुल्हे	१२५
४	अब ही रंग राख्यो मुरली में	१७४	३२	आज बने नंदनंदन री, नवचंदन	११०
५	अहो कान्ह गैया कहाँ बिडरानी	११४	३३	आज बनेरी लालन गिरिधारी	२५
६	अहो बल जिय अधिक डरात	८९	३४	आज महामंगल कौशलपुर	४२
७	अरि तोमें समझ नाहिन	५५	३५	आज मेरे मिल बैठे मेहमान	१८
८	अरि हों या मग निकसी आय	४०	३६	आज लाल अति राजे, बैठे	१२१
९	अक्षय ततिया अक्षय लीला	१०७	३७	आज सखी गिरिधरन लाल सिर	१२७
१०	अक्षय ततिया गिरिधर बैठे	११२	३८	आज सखी रूचिर गिरिधरन लाल	११८
११	अक्षय भाग्य सुहाग राधे को	१६२	३९	आज हमारे भोजन कीजै	१११
	–: आ :–		४०	आज हरि नैन उनींदे आये	१२१
१२	आओ गोपाल श्रंगार बनाऊँ	१६, २४,	४१	आंगन में हरि सोय गयेरी..	२१
१३	आगे आऊरी छकहारी	३९	४२	आनंद आज नंद जू के द्वार	८७
१४	आगे आगे भाग्यो जात भागीरथ	१७७	४३	आनंद बधावनो नंदमहर जू के	७३
१५	आछो नीकों लोनो मुख	१०	४४	आनंद आज भयो हो भयो	५४
१६	आज अटारी पर उसीर महल में	२०	४५	आलिरी जब जब देखों जाय	३२
१७	आज अति शोभित हैं नंदलाल	१६२	४६	आवत कुंजन तें पोहोपी री	१५
१८	आज अयोध्या प्रगटे राम	४४	४७	आवत जात हो हार परी री	१८०
१९	आज आली अचरज सुन	२५	४८	आवत मदन गोपाल त्रिभंगी	११२
२०	आज की बानिक कही न जाय	४०	४९	आवत ललन प्रिया रस भीने	११५
२१	आज को दिन धन्य धन्य री माई	१०८	५०	आवत ही यमुना भर पानी	१५०
२२	आज को श्रंगार सुभग साँवरे	१२६	५१	आवरी बावरी उजरी पाग में	१६४
२३	आज गह नंदमहर के बधाई	४९		–: इ :–	
२४	आज तन राधा सजत श्रंगार	१२३	५२	इन अंखियन आगे ते लालन	१९
२५	आज दधि मीठो मदन गोपाल	१४५		–: उ :–	
२६	आज धरे गिरिधर पिय धोती	१२२	५३	उसीर महल में दम्पती राजत	६९
२७	आज नंदलाल मुख चन्द नयनन	१५			

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
	—: ए :—		८१	कीजे लाडिले पान अब दूध लाई हो	२०
५४	एक दिन आपुने खिरक को जातही	१३६	८२	कुंज में पौढ़े रसिक पियप्यारी	३२
	—: ऐ :—		८३	कुंज में बैठे जुगल किशोर	१५७
५५	ऐ कटि पीत पिछोरी बाँधे ठाडोरी		८४	कुंज भवन में आज मंगलचार	७८
५६	ऐ ग्वाल मंडली भोजन करत	४०	८५	कुंज भवन में पौढ़े दोऊ	५८
५७	ऐसी कौन नागरी जिन कुंजन में	१५	८६	कुंज भवन में मंगल हेरी	१२५
५८	ऐसी बंशी बाजी बन घन में	६२	८७	कुमुद वन भली पंहूची आय	१०६
	—: ओ :—		८८	कुसुम गुलाब महल में बैठे	२५
५९	ओढे लाल उपरैनी झीनी	११४	८९	कुसुम सेज पिय प्यारी पौढ़े	२५
	—: अं :—		९०	कुंवर बैठे प्यारी के संग	**२६**
६०	अंग अनंगन रंग रस्यो	१५६	९१	केसर की धोती कटि केसरी उपरना	८८
६१	आंगन में हरि सोय गयेरी	२१	९२	केसर की धोती पहरे केसरी	५१
	—: क :—		९३	केलि करें प्यारी पिय पौढ़े	२१
६२	कदम बन विथन करत बिहार	३८	९४	कोऊ माई आंब बेचन आई	११७
६३	कनक कुसुम अति शोभित	३६	९५	कौन सुकत इन व्रज वासिन को	६६
६४	कनक रतन मय पालनो रच्यो	४३	९६	कौशल्या रघुनाथ को ले गोद खिलावे	४३
६५	कन्हैया मेरो कौन–कौन को भावै	६६	९७	क्यो बैठी राधे सुकुमारी	२६
६६	कमल नयन शशी वदन	७७	९८	कपा रस नैन कमल दल फूले	१२६
६७	कमल नयन हरि करो कलेवा	११		**—: ग :—**	
६८	कमल मुख देखत कौन अघाय	३३	९९	गाऊँ श्री वल्लभ ध्याऊँ श्री वल्लभ	८
६९	कमल मुख देखत तति न होय	३४	१००	ग्वालन संग गवन बन में	३८
७०	कमल मुख शोभित सुन्दर बेनु	१२६	१०१	ग्वालिन घर तें कौन बुलाई	१७
७१	कलि में जीवन वल्लभ प्रकटे	५६	१०२	गिरिधर जानी तिहारी बात	१३८
७२	कर मोदक माखन मिश्री लै	१५, २३	१०३	गिरिधर सब ही अंग को बांको	१२२
७३	करत गोपाल यमुनाजल क्रीडा	१८७	१०४	गिरि पर चढ़ि गिरिधर टेरे	३७
७४	करत जलकेलि, पिय प्यारी	१६३	१०५	गुन अपार एक मुख कहाँ लों	१६१
७५	कहत श्रुतिसार निर्धार करिके	१३५	१०६	गोकुल की पनिहारी पनियां भरन	३६
७६	कहा ओछी व्है हे जात	१६	१०७	गोकुल गाम को पेड़ों ही न्यारो	६
७७	कहो कहाँ खेले हो लालन	६७	१०८	गोकुल में बाजत कहाँ बधाई	७७
७८	कांकर वार तैलंग तिलक	५४	१०९	गोरज राजत साँवल अंग	२७
७९	काहे आय न देखिये रानी जू	१०१	११०	गोवर्धन गिरि सघन कंदरा	२६
८०	काहे को न बोलत नागरी बैना	१६६	१११	गोवर्धन चढ़ि टेरी हो गांग	६६

क्र.स.	पद	पेज
११२	गोविन्द गायन की पीठ पर	१२०
११३	गोविन्द तिहारो स्वरूप निगम	४१
११४	गोविन्द लाड़िलौ लड़बौरा	१११
	—: घ :—	
११५	घर घर ग्वाल देत हैं हेरी	५४
११६	घर तें छाक ले आई ग्वालन	१७
११७	घरी घरी को रूसनों कैसे	१४६
११८	घाट पर ठाड़े मदन गोपाल	१४७
११९	घोर्यो सतुआ के संग जेंवत	१६१
	—: च :—	
१२०	चन्दन अरगजा ले आई बाल	११९
१२१	चन्दन को वागो पहेरे, चन्दन	१५२
१२२	चन्दन की खोर किये, चन्दन	१३३
१२३	चन्दन चर्चित नीलकलेवर	१५२
१२४	चन्दन पहेर श्याम बने, कौटिक	१६७
१२५	चन्दन भवन मध्य करत ब्यारू	१५६
१२६	चन्दन महल में पौढ़े पिय प्यारी	२१
१२७	चरण कमल बंदौ जगदीश	४५
१२८	चल तु माननी मानि निहोरो	१४४
१२९	चलहु गोपाल बोलत महतारी	१२८
१३०	चांपत चरण मोहन लाल	२१
१३१	चारू नट भेख धरि बैठे	११२
१३२	चित्त में श्री यमुना निश दिन	१३७
१३३	चिरैया चुह चुहानी, सुन	१०
	—: छ :—	
१३४	छगन मगन प्यारे लाल	१०
१३५	छबिले लाल की यह बानिक	३४
१३६	छबिलो लाल दुहत धेनु धोरी	१७१
१३७	छाक ले आई ग्वालन गोरी	१०४
	—: ज :—	
१३८	जब मेरो मोहन चलेगो घुटुरवन	९६
१३९	जमुना जल गिरिधर करत विहार	१८७
१४०	जमुना तट नव निकुंज द्रुम	१४३
१४१	जसोदा रानी जायो है सुत नीको	६०
१४२	जय जय जय श्री वल्लभ नंद	९
१४३	जय जय जय श्री वल्लभ नाथ	८
१४४	जय जय जय श्री वल्लभ प्रभु	७
१४५	जय जय श्री सूर्यजा कलिन्द	१४७
१४६	जयति भानु तनया, चरण युगल	१४५
१४७	जर जाओ री लाज मेरे ऐसी कौन	१४८
१४८	जलको गई री सुघट नेह भर लाई	१८५
१४९	जल क्यों न पीओ, जो तुम हो	१७४
१५०	जाऊँगी वंदावन भेंटोगी गोपाल	१०२
१५१	जाके दरस को जग तरसत	१८२
१५२	जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत	१३०
१५३	जागीये वजराज कुंवर	१०
१५४	जादिन कन्हैया मोंसो मैय्या कहि	९६
१५५	जेंवत नंदकान्ह बल भैया	३४
१५६	जो पे श्री वल्लभ चरण गहे	७
१५७	जो पे श्री वल्लभ प्रकट न होते	६०
	—: झ :—	
१५८	झम कि चल राधे तो ही श्याम	२७
१५९	झुक रही नींद श्याम के नैनन	२१
१६०	झुक रही सुन मुरली की टेर	३२
	—: ड :—	
१६१	डगर चल गोवर्धन की बाट	१६८
	—: त :—	
१६२	तत्व गुण बाण भुवि	७४
१६३	तनक प्याय पानी, यह मिस	१४८
१६४	तिलक तिलंगना हो	६०
१६५	तिहारो दरस मोहि भावे	१३
१६६	तिहारो दरस हों पाऊँ श्री यमुनाजी	१६७
१६७	तु चल राख मेरो मान	१६४
१६८	तु नेक बरज री यशोदा मैया	९९

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
१६९	तुमको टेर टेर में हारी	१७	१९९	धन्य माधव मास कष्ण एकादशी	५६
१७०	तुम सम और न कोई श्रीयमुनाजी	१६७	२००	धन्य यशोदा भाग्य तिहारौ	५१
१७१	तें कहुँ देख्यो री आली नंद को	१००		—: न :—	
१७२	तेरी भ्रोंह की मरोरन तें	४०	२०१	नंद कौ लाल ब्रज पालनै झूले	७०
१७३	तेरी लाल मोहि लागो बलाय	६७	२०२	नंद जु मेरे मन आनंद भयो	८८
१७४	तेरे री लाल मेरो माखन खायो	९८	२०३	नंदनंदन वंदावन चन्द	६२
१७५	तेरे सिर कुसुम बिथुर रहे	१६६	२०४	नंदराय के नवनिधि आई	६२
१७६	तेरे सुहागकी महिमा मोंपे	३४	२०५	नंद सदन गुरूजन की भीर	१००
१७७	तैलंग कुल दिपक प्रकटे	५६	२०६	नमो देवी गंगे मात गंगे	१२
१७८	तो सी त्रिया नाहिन, भटू री	३०	२०७	नमोदेवी यमुने नमो देवी यमुने	११
१७९	तोरे पैयां लागुं, गिरिधर	१९	२०८	नमो नमो जयति श्री यमुने	१३
१८०	तोहि मिलन को बहोत करत है	१७०	२०९	नमो वल्लभाधीश पद कमलयुगले	७
१८१	तोहे लालन बुलावें, झमकी चल	३०	२१०	नयनन लागी हो चटपटी	२७
	—: द :—		२११	नव निकुंज देवी राधिका वरदायिनी	२४
१८२	दम्पती पौढ़ेई रस बतियां	१२९	२१२	नवल किशोर नवल नागरिया	२०
१८३	दान देत श्री लक्ष्मण प्रभुदित	९३	२१३	निर्तत मोहन रसिक सखन संग	१११
१८४	द्विज कुल प्रकटे श्री हरि	५५	२१४	निरखी मुख ठाडी व्है जु हँसे	११८
१८५	दूध पियो मन मोहन प्यारे	२०	२१५	नीकौ बन्यो वेश चंदन को	१२८
१८६	दूपहरी झनक भई तामें आये	१२६	२१६	नैन कटाक्ष के बाण चलावत	८९
१८७	दूहिवो दुहायवो भूल गयो हो	१०८	२१७	नैन छबिले तरूण मदमाते	१२०
१८८	देख सखी गोविन्द के चन्दन	१०७	२१८	नैन भरि देख अब भानु तनया	१३९
१८९	देखरी देख रसिक नंदनंदन	१२७	२१९	नौमी चैत्र की उजियारी	४६
१९०	देखो अद्भूत अविगत की गति	७०		—: प :—	
१९१	देख्यो री हरि नंगम नंगा	१३९	२२०	पतित उध्दारना कलिमल तारना	६६
१९२	दोऊ मिल करत भांवती बतियां	६३	२२१	पद्म धर्यो जन ताप निवारण	४५
१९३	दोऊ मिल जेंवत कचन थारी	२४	२२२	पनिया न जै हों री आली	१४७
१९४	दौरी दौरी आवत मोहि मनावत	४८	२२३	परम बधाई श्री लक्ष्मण सुखदाता	७२
	—: ध :—		२२४	पहिरे माल गुलाब सुरंगकी	३४
१९५	धन धन हो हरिदास राई	१४०	२२५	प्रकटे पुष्टि महारस देन	६८
१९६	धन्य गोकुल जहाँ गोविन्द आये	५९	२२६	प्रकट भये प्रभु श्रीमद वल्लभ	७५
१९७	धरे टेढ़ी पाग टेढ़ी चंद्रिका	४०	२२७	प्रकट भये तैलंग कुल दीप	५६
१९८	धन्य धन्य माधव मास एकादशी	८०	२२८	प्रकट भये श्री वल्लभ राज	८३

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
२२६	प्रगट्या ऐमा श्री वल्लभ देवा	५७	२६१	पौढ़े रंग रमणीय रमन	३०
२३०	प्रगटे श्री वल्लभ सुखदाई	५१	२६२	पौढ़े रावटी सुख सेज	१२७
२३१	प्रफुल्लित बन विविध रंग	१४३	२६३	पौढ़े हरी झीनो पट दे ओट	२१
२३२	प्रलय पयोधि जले धतवानसिवेदं	४४	२६४	पौढ़े श्याम जु सुख सेज	११२
२३३	पाग सोहे लटपटी, गुलाब के फूलन	१८०		**–: फ :–**	
२३४	पाछे ललिता आगे श्यामा	३२	२६५	फल फलित होय फलरूप जाने	१८३
२३५	पायन चंदन लगाऊँ	११०	२६६	फूल के भवन गिरिधरन नव नागरी	१३६
२३६	प्यारी के महेल तें उढि चले भोर	१२३	२६७	फूलन की मंडली मनोहर बैठे	६०
२३७	प्राणपति बिहरत श्री यमुना कूले	१३७	२६८	फुल गई वषभान दुलारी	२६
२३८	प्रातः समै उठ करिये	८	२६६	फूलन की माला हाथ फूली सब	४७
२३६	प्रातः समै जागी अनुरागी	१०	२७०	फूलन सों बेनी गुही फूलन की	१६२
२४०	प्रातः समें नव निकुंज द्वारे	३१	२७१	फूली फूली डोले कुंज सदन में	१४४
२४१	प्रातः समै नंदनंदन श्यामा	११३		**–: ब :–**	
२४२	प्रातः समें श्री वल्लभ सुत को	६	२७२	बडौ मेवा ब्रज में टेंटी	१८३
२४३	पिछोरा खासा को कटि बांधे	१०७	२७३	बधाई री बाजत आज सुहाई	८५
२४४	पिय संग रंग भरी करी कलोले	१५५	२७४	बधावों श्री लक्ष्मण राय के	५१
२४५	पिय तोही नैनन ही में राखूं	१०३	२७५	बन्दों धरण गिरिवर भूप	४५
२४६	पित उपरेना वाले ढोटा, कबहुकी	१७६	२७६	बन्यो वागो वामना चंदन को	१०७
२४७	पीत पिछोरी कहाँ जु बिसारी	१७६	२७७	बन्यो माई पगा श्याम सिर नीको	१४१
२४८	पीताम्बर को चौलना	४२	२७८	बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु	६३
२४६	प्रीत बंधी श्री वल्लभ वर सों	५७	२७६	बने माधो जु के महेल	१३४
२५०	पूजन चलौ हो कदम्ब बन देवी	२७	२८०	बल बल आज की बानिक लाल	२४
२५१	पूत भयौरी नंद महर के	५३	२८१	बलि बलि चरित्र श्री गोकुलराय	६५
२५२	पूत मेहेर को, खिरक दुहावत गैया	१३४	२८२	बलि बलि पांऊ धारिये आज	१०६
२५३	पूरी पूरी पूर्णमासी पूर्यो पूर्यो	६३	२८३	बाल दशा गोपाल की, सब	३५
२५४	प्रेंख पर्यंक शयनम्	७२	२८४	ब्यारू करत हैं घनश्याम	१६
२५५	पौढ़िये पिय कुंवर कन्हाई	७१	२८५	बिराजत दोऊ उसीर महल में	११६
२५६	पौढ़िये लाल लाड़िली संग लै	४०	२८६	बिलग कित मानत हो जु हमारो	१३८
२५७	पौढ़े प्रेम के पर्यंक	१३८	२८७	बिहारी लाल आई छाक सलोनी	३६
२५८	पौढ़े माई मदन मोहन श्याम	२७	२८८	बैठे घनश्याम सुन्दर खेवत हे नाव	१५०
२५६	पोढ़े लाल राधिका कि गेह	१८४	२८६	बैठे ब्रजराज कुंवर प्यारी संग	१४२
२६०	पौढ़े रंगमहल गोविंद	१०८	२६०	बैठे लाल कुंजन में जो पाऊँ	१८

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
२९१	बैठे हरि राधा संग	३१	३२१	मिल जेंवत लाड़ली लाल	१८
	-: भ :-		३२२	मुख देखन को हो आई	१०
२९२	भक्त प्रतिपाल जंजाल टारे	१५६	३२३	मूल पूरूष नारायण यज्ञ	६०
२९३	भक्ति सुधा बरखत ही प्रकटे	५४	३२४	मेरे कुल कल्मश सब ही नासे	१३
२९४	भज भज श्रीवल्लभ पद कमल	५१	३२५	मेरे गह चंदन अति कोमल	१०८
२९५	भले आये भोर गिरिवर धरण	१११	३२६	मेरे तो कान्ह हैरी प्रान सखीरी	१७६
२९६	भले ही मेरे आये हो पिय टीक	१२१	३२७	मेरे री बगर में आवत, छबिसों	१२२
२९७	भयो जगति पर जय जयकार	६६	३२८	मैं जब देखेरी गोपाल लाल	१०५
२९८	भयो मध्यान्ह छाक की बिदिंया	११५	३२९	मैया मोहे बड़ौ कर ले री	६६
२९९	भोग श्रंगार यशोदा मैया	२४	३३०	मोहन घूमत रतनारे नयन	३१
३००	भोजन कर उठे दोऊ भैया	१६	३३१	मोहन जैंवत छाक सलोनी	३५
३०१	भोजन कर जु उठे पिय प्यारी	१६	३३२	मोहन नंदराय कुमार	४५
३०२	भोजन करत नंदलाल	१७	३३३	मोहन माखन चोरी करत फिरत	१०१
३०३	भोजन कर मोहन को अचवत	१६	३३४	मोहन मुखारविंद पर	४८
३०४	भोजन करत श्याम कुंजन में	१८	३३५	मोहन लाल बियारू कीजे	३०
३०५	भोजन कीनोरी गिरिवरधर	१०२	३३६	मोहि इन साँवरे दिठोना	१६६
३०६	भोजन लाव री तुं मैया	४३	३३७	मोहि मिलनी भावे बलवीर की	१८८
३०७	भोर भये देखो श्रीगिरिधर को मुख	१२८	३३८	मंगल आरती गोपाल की माई	१५
३०८	भोर भयो भावसों ले श्रीवल्लभ नाम	७	३३९	मंगल करण हरण मन आरति	१४
३०९	भोर ही श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ।	८	३४०	मंगल ज्येष्ठ ज्येष्ठा पुन्यो	१८७
	-: म :-		३४१	मंगल माधो नाम उच्चार	१४
३१०	मज्जन करत गोपाल चौकी पर	१६	३४२	मंगलम मंगलम ब्रज भुवी मंगलम्	१४
३११	मदन मोहन पिय किजिये कलेऊ	११	३४३	मगनैनी मुख अमत बैनी	११६
३१२	मनावत हार परी री माई	१०५		**-: य :-**	
३१३	माई प्रकट भये श्री राम	४३	३४४	यमुना जलघट भरन चली	१३३
३१४	माई मंगल आरती गोपाल की	२२	३४५	यमुना तट नव निकुंज, द्रुमन दल	१८२
३१५	माई री कमल नैन श्याम सुन्दर	८१	३४६	यमुना तट भोजन करत गोपाल	१८
३१६	माई री प्रातःकाल नंदलाल पाग	१०४	३४७	यशुमति दधि मथन करत बैठी	६८
३१७	माई री बांके लोचन नीके	१७०	३४८	यशोदा रानी जायो है सुत नीको	६०
३१८	माखन तनक दे री माय	६८	३४९	यशोदा रानी सोवन फूले फूली	६०
३१९	माधो मासे भर वैसाखे	६७	३५०	यह कौन टेव तेरी रे कन्हैया	१४८
३२०	मान री मान मेरो कह्यो	५२	३५१	यह धन धर्म ही तें पायो	६६

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
३५२	यह नित नेम जसोदा जु मेरे	७४		-: व :-	
३५३	यह वत माधो प्रथम लियो	१३१	३८४	वागधीश महाप्रभुजी को जपना	५२
३५४	यह सुख देखोरी तुम माई	५३	३८५	वागो बन्यो वामना चंदन को	११३
३५५	ये शीतल छैयां श्याम ठाड़े	४०	३८६	विमल कदम्ब मूल अवलम्बित	१००
	-: र :-		३८७	विहरत वन वन में वनमाली	१८१
३५६	रति पथ प्रकट करन कूं प्रगटे	७३	३८८	विहरत सातों रूप धरे	८४
३५७	रति सुखसारे गतमभिसारे	१३	३८९	व्रजनारी घर घर तें आई	१६३
३५८	राखि हो अलक बीच चम्पकली	२५	३९०	व्रज भयो महरी के पूत	४९
३५९	राग रंग राख्यो री मुरली में	३८	३९१	वतधरि देवी पुजी, जाके मन..	२३
३६०	राधा मोहन करत बियारू	३८	३९२	वंदावन जमुना के जल, खेवत	१३६
३६१	राधिका आज आनंद में डोले	३८		-: स :-	
३६२	राधेजु के प्राण गोवर्धनधारी	३२	३९३	सखी सुगंध जल घोर के चन्दन	११७
३६३	रानी जु अपने सुत हि जिमावत	६३	३९४	सदा श्री गोवर्धन में स्थित	५२
३६४	रानी जु आपुन मंगल गावै	८७	३९५	सबन सों कहत जसोदा माय	७१
३६५	रानी तेरो चिरंजीयो गोपाल	८२	३९६	सबै मिल गावौ गीत बधाई	७३
३६६	राय गिरिधरन संग राधिका रानी	२१	३९७	सावन सुदी एकादशी अर्धरात्री	६८
३६७	रास विलास गहे कर पल्लव	६३	३९८	सांवरो सुत पलना झूले	७२
३६८	रूखरी मधुबन की मोहन संग	१६६	३९९	सिरधरे पंखोवा मोर के	१४९
३६९	रूप रस पूंज वरनो कहा चातुरी	३४	४००	सियरे तहखाने, तामें खसखाने सिंचे	१२०
३७०	रूसवो न कर प्यारी रूसनो	१०१	४०१	सीतल सदन में जेंवत मोहन	१८
३७१	रंग रासी मधरासी श्रीवल्लभ	५७	४०२	सुखद सेज पौढ़े श्री वल्लभ	८९
	-: ल :-		४०३	सुखद श्यामा श्याम सुखद वंदा	७१
३७२	लटपटी पाग के पेच संवारो	१३२	४०४	सुत ही जिमावत यशोदा मैया	११९
३७३	ललन की प्रीत अमोली	१५	४०५	सुन्दर तिबारो खस खाने को	११२
३७४	ललित कथा एक कहु लडैते	४७	४०६	सुन्दर स्वरूप अति, सेवा सों	११३
३७५	ललित लाल श्रीगोपाल	९	४०७	सुन्दर यमुना तीर री मन मोहन	१३४
३७६	लाई जसुमति मैया भोजन	१८	४०८	सुन री आली, ऐसी दुपहरी की	१३९
३७७	लाड़िले बोलत है तोहि मैया	१९	४०९	सुनरी सैन दई ग्वालन को	३७
३७८	लाडिले लाल की बंदसी कहि	२५	४१०	सुन सुत एक कथा कहुँ प्यारी	४६
३७९	लाल को श्रंगार बनावत मैया	४२	४११	सुनी बडभागिन हो नंदरानी	७१
३८०	लालन पहिरत हैं नवचन्दन	११७	४१२	सुबल गिरिधारी चढ़ टेरत	३५
३८१	लालन मेरे आवत माई	११६	४१३	सुभग श्रंगार निरख मोहन को	२९
३८२	लीला होती जूनी नातर	७९	४१४	सुमिरो मन गोपाल लाल	१०२
३८३	लैहु ललन कछु करहुँ कलेऊ	११	४१५	सूर आयो सिरपर छांया आई	१३७

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
४१६	सेवक की सुख रासी सदा श्रीवल्लभ	३६	४४७	श्रीमद् वल्लभ रूप सुरंगे	६१
४१७	सैन भोग लाई भर थारी	२०	४४८	श्रीयमुना के नाम अघ दूर भाजे	१४१
४१८	सो गोविन्द तिहारो व्रजबालक	५६	४४६	श्री यमुनाजी अधम उद्धारनी में जानी	१४
४१६	सोभा आज भली बनी आई	१६३	४५०	श्री यमुनाजी के तीर बजाई	३३
४२०	सोभित सुरंग पाग झुकी रही	३६	४५१	श्री यमुनाजी तिहारो दरस मोहि	१४१
४२१	सोवत नींद आय गई श्याम ही	६७	४५२	श्री यमुने पर तन–मन–धन प्राण	१४६
४२२	सोहत नासिका गिरिधर गजमोती	१०१	४५३	श्री यमुना सी नाहीं कोऊ और दाता	१४६
४२३	सोहत लाल परदनी अति झीनी	१३२	४५४	श्री यमुने रसखानी के सीख नाऊँ	१८१
४२४	सोहत लाल पाग सांकरे पेचन	२७	४५५	श्री राधे कौन गौर ते पूजी	२६
४२५	सोहत श्याम मनोहर गात	१५६	४५६	श्री ललिताजी के आज बधायो	१२३
४२६	सोहिलरा नंद महर गह बाजे	७४	४५७	श्री लक्ष्मण कुल चन्द उदित	५८
	—: **श** :—		४५८	श्री लक्ष्मण गह आई नवनिधि	५६
४२७	शरण प्रतिपाल गोपाल रति	१६१	४५६	श्री लक्ष्मण गह आज बधाई	६३
४२८	शीतल उसीर गह छिरक्यो	१७२	४६०	श्री लक्ष्मण गह बजत बधाई	८४
४२६	शुभ वैशाख कष्ण एकादशी	५३	४६१	श्री लक्ष्मण गह महा मंगल भयो	७६
४३०	शोभित सुभग लटपटी पाग	२६	४६२	श्री लक्ष्मण भूप कुमार प्रकटे	५८
४३१	शोभित सुरंग पाग, रहि झुकी	२६	४६३	श्री लक्ष्मण वर ब्रह्मधाम	५४
४३२	श्याम सुखधाम जहाँ नाम इनके	१५७	४६४	श्री वल्लभ अवनी में प्रकटे	५३
४३३	श्याम संग श्याम व्है रही श्री यमुने	१५५	४६५	श्री वल्लभ कपा निधान अति	६
४३४	श्यामा श्याम प्रातः उठ बैठे	१२६	४६६	श्री वल्लभ की हों बलिहारी	५१
४३५	श्याम श्याम सेज पै पौढ़े	१८२	४६७	श्री वल्लभ गुण गाऊँ	७
	—: **ह** :—		४६८	श्री वल्लभ नंदन रूप अनूप	११५
४३६	हरि कों ग्वालन भोजन लाई	१७	४६६	श्री वल्लभ पुरूषोत्तम रूप	८२
४३७	हरि जन्मत ही आनंद भयो	५२	४७०	श्री वल्लभ मधुराकति मेरे	८५
४३८	हरि भोजन करत विनोद सों	३४	४७१	श्री वल्लभ मंगल रूप निधान	७८
४३६	हाँके हटक हटक गाय ठठकि	३८	४७२	श्री वल्लभ लाल आँगन मध्य	६४
४४०	हेत करि देत श्री यमुने वास कुंजे	१४३	४७३	श्री वल्लभ लाल पालने झूले	७७
४४१	हों बल बल जांऊ, कलेऊ	११	४७४	श्री वल्लभ लाल बियारू कीजे	८६
४४२	हौं ब्रज मांगनौं जू, ब्रज तज	८७	४७५	श्री वल्लभ सब के हित कारण	७०
४४३	हँसत परस्पर करत किलोल	३७	४७६	श्री विट्ठलनाथ जु के चरण शरणम्	६
४४४	हँस हँस दूध पीवत नाथ	२०	४७७	श्री विट्ठलेश चरण चारू पंकज	१३५
	—: **श्री** :—		४७८	श्री वंदावन चन्द वदन रूचि	६६
४४५	श्री गोवर्धन गिरी कन्दरा में भोजन	१५६	४७६	श्री वंदावन नव निकुंज, भ्रमर	१५५
४४६	श्रीमद् वल्लभ नमो नमो	७८	४८०	श्री वषभान सदन भोजन को	१२४

आभार

परम पूज्य तिलकायत श्री की आज्ञानुसार ''पुष्टिमार्गिय सेवा प्रणालिका'' के पूरे वर्ष के चारों भाग प्रकाशित कराये गये। प्रभु कृपा से यह महद् कार्य सम्पन्न हुआ। कई वैष्णवजन इससे लाभान्वित हुए हैं। प्रणालिका का प्रथम खण्ड समाप्त हो जाने के कारण प.भ. श्री साकगरिया बावा एवं वैष्णवों के सहयोग से इसका पुनः प्रकाशन किया जा रहा है।

इस नये प्रकाशन में मुख पृष्ठ का चित्र श्री हेमचन्द्र शर्मा, चित्रकार नाथद्वारा से प्राप्त हुआ उनके तथा उन सभी वैष्णवजनों का आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से इस ग्रंथ प्रकाशन में सहयोग दिया है।

ज्यैष्ठ शुक्लपूर्णिमा
(स्नान यात्रा)
दि. 13.06.2014

मदनलाल शर्मा

◆ ◆ ◆

"उत्सव निर्णय"

१. अथ संवत्रारम्भ निर्णयः। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा संवत्सरोत्सव। सो प्रतिपदा उद्‌यात लेनी। यदि दो प्रतिपदा हो तो पहली प्रतिपदा के दिन उत्सव माननों। यदि प्रतिपदा का क्षय हो तो विद्धा प्रतिपदा के दिन उत्सव माननों। यदि दो चैत्र होय तो पहले चैत्र की शुक्ल प्रतिपदा को उत्सव माननों।

२. अथ रामनवमी निर्णयः। उदयात् नवमी लेनी। यदि दो नवमी हो तो पहली नवमी को उत्सव माननों। यदि नवमी का क्षय हो तो विद्धा नवमी को उत्सव माननों।

३. अथ एकादशी निर्णयः। दशमी जो पचपन (५५) घड़ी हो तो उस एकादशी का त्याग करना और पलमात्र ही ५५ घड़ी में कम तो वह एकादशी नहीं छोड़नी साथ ही द्वादशी को व्रत करनो। यदि दो एकादशी हो तो दूसरी एकादशी के दिन व्रत करनो। यदि दो द्वादशी हो तो पहली द्वादशी के दिन व्रत करनो।

४. चैत्र शुक्ला छठ को श्रीयमुनाजी व श्री यदुनाथजी को उत्सव आवे है।

चैत्र मास की श्रृंगार सम्बन्धी विशेषतायें

श्रंगार – कुल्हे जोड, पाग–कतरा, चमकणी चन्द्रिका को।
– श्रृंगार स्थायी उत्सव व मनोरथ के अनुसार।
– श्रृंगार के अनुसार ही श्रृंगार व भोग – आरती मे कीर्तन गाये जाते है।

वस्त्र – लाल सुनेरी छापा रूपेरी कोर के, श्याम छापा सुनेरी कोर के, लाल चोफुली चुन्दड़ी रूपेरी कोर की, पंचरंगी लेहरिया रूपेरी कोर के।

कीर्तन सम्बन्धी विवरण –

राग – भैरव, बिलावल, देवगधार, सांरग, पूर्वी, ईमन, कान्हरौ, केदारो, बिहाग, विभास, गौरी, खट व नट आदि।

विशेष – चैत्र संवत्सर से कुंज, फूलमंडली चैत्री गुलाब आदि की आती है।

वैशाख मास की विशेषताऐं

श्रृंगार : पाग आडबन्द का, ऐठवा पाग का, धोती-पाग, मोती की पाग-परदनी का, ग्वाल पगा का, टिपारे का पाग परदनी का, आडबन्द फेंटा का, सेहरा का, धोती-पटका, पाग का, परदनी सफेद–पाग केसरी रंग की, कुल्है जोड का, मोती के आडबन्द -पाग का, छज्जेदार पाग आड़बन्द का, फेंटा कतरा का, धोती पाग व पित पिछोरी का पाग पिछोड़ा का, मोती की कुल्है जोड का एवं पाग चन्द्रिका का।

वस्त्र : सफेद मलमल के केसरी, गुलाबी, मोती के काम के वस्त्र सफेद रूपेरी कोर के, हलक पीला रंग, सफेद जामदानी के, चन्दनी रंग के, केसरिया रूपेरी कोर के, गुलाबी रूपेरी कोर के, सफेद तथा केसरी बिना कोर के, हल्का केसरी रंग का बादामी रंग के, तथा सफेद मलमल पर केसर कोर व कमल के छापा के।

राग

मंगला में – रामकली विभास भैरव, खट,
श्रृंगार में – बिलावल, रामकली।
राजभोग में – सारंग, सावंत सारंग।
भोग में – सारंग, सावंत सारंग, सौरठ,
संध्या में – ईमन कल्याण, हमीर, कान्हरौ, अडानों।
शयन में – बिहाग, कान्हरौ, अडानों, केंदारो, नायकी, ईमन।

पोढवा में — बिहाग, कान्हरौ, केदारों।

ज्येष्ठ माह की विशिष्ठतायें :

१. ज्येष्ठ मास श्री यमुनाजी के मनोरथ का है। इस माह में मंगला व श्रंगार में नित्य श्री युमनाजी के पद गाये जाते है।

२. इस माह की सम्पूर्ण लीला श्रीयमुनाजी के पुलीन (श्रीठकुरानी घाट) के निकुन्ज के द्वार पर होती है। निकुन्ज द्वार सजाया जाता है तथा श्रीजी को चन्दन व कलियों के श्रंगार धराया जाता है। श्रंगार श्रीयमुनाजी व उनकी की सखियों द्वारा श्रीठाकुरजी के श्रीअंग पर धराये जाते है।

३. श्रीजी को परदनी, आडबन्द, पिछोरा धोती उपरना तथा मुकुट काछनी जैसा भारी श्रंगार भी कराया जाता है। श्रीमस्तक पर कीरिट, टीपारा, कतरा, मुकुट, मोरशिखा आदि धराये जाते है। श्रीअंग पर चन्दन धराया जाता है।

४. इस माह में जब रोहिणी नक्षत्र होता है तो श्रीजी को चन्दन अवश्य ही धराया जाता है। श्रीअंग पर चन्दन की चोली धराई जाती है। नित्य सामग्री के अलावा इन दिनों चना व मुंग की दाल भिगी हुई, सेव के लडुवा, बुन्दी पकोड़ी की कढ़ी, बुन्दी की छाछ, भुजिया, छाछ बड़ा, बिलसारू, पापड तथा मनोहर की सामग्री धराई जाती है।

५. श्री यमुनाजी के ४१ पद। नित्य पद श्री यमुनाजी के भाव से। मंगला के बाद अष्टपदि "नमो देवी यमुने। प्रमुख राग–सारंग, सावंत सारंग, गौडसारंग, वन्दावनी सारंग तथा फुंवारा के भाव के कीर्तन गाये जाते है।

६. रोहिणी नक्षत्र में चन्दन की चोली का श्रंगार तथा फूल के श्रंगार धराये जाते है। उष्णकाल में चार अभ्यंग होते है। अभ्यंग में नित्य के कीर्तन **"काहे औछि व्हे जु जात** किया जाता है।

७. श्रंगार के एवं ऋतु प्रमाण के आधार पर कीर्तन गाये जाते है।

चैत्र मास

परिशिष्ट १

चैत्र शुक्ल १ नवसंवत्सर :

विविध फूल रचि करत मण्डली, अद्भुत महल बनावे।
कोमल गादी तकिया धरि ता उपर तापे मोय पधरावें।।

फूल मंडली दुहेरो सायवान सहित पाट आवे। उत्सव की सारी सेवा श्री स्वामिनी के भाव सो होय। नववर्ष को यह फूलमंडली दुहेरी। नववर्ष को पंचाग बांच्यो जाय। नूतन वस्त्र धरें। निंब प्रासन को भाव होय। इस नवरात्रि में अंकुरार्पण व नवविलास नहीं होय। इस कारण चैत्र शुक्ला दूज से निकुंजादि लीला होने से एक प्रकार से विलास चालू हों मानें तथा श्री वल्लभ मतानुसार भक्तजन अपने प्यारे की भक्ति में बारह महिना में दो ही बार भावांकुर उत्पन्न करें। वैसाख से आषाढ़ तक मूंग भिंजोय के अंकुरित करे तथा प्रभु को आरोगावें। इसमें भक्तों के भावों का अंकुरित होना माना जाता है।

चैत्र शुक्ल ३ गणगौर को उत्सव : आज से लेकर चार दिन तक राजस्थान में गणगौरी को उत्सव-मेला-सवारी आदि होते हैं। वल्लभ कुल तथा पुष्टि भक्त भी, प्रभु के सुख में पहले सबकों प्रभु विनियोग करावें। इसके बाद स्वयं अंगीकार करें। सर्वप्रथम मेवाड़ के राणा उदयसिंह जी ने तथा अन्य राणाओं ने गणगौर की सवारी निकाली। इसी प्रकार तिलकायत श्री गोवर्धनलाल जी की आज्ञा अनुसार श्री दामोदरलाल जी महाराज ने चार दिन में प्रथम लाल चूंदड़ी, दूसरी हरी, तीसरी गुलाबी, चौथी केसरी कर पहले तीन दिन सवारी निकालते जो गणगौर बाग तक जाती तथा चौथी घर की, यह जमुनाजी के भाव वारी मोतीमहल में होती है।

चैत्र शुक्ल ६ श्री यदुनाथ जी को उत्सव, श्री जमुनाजी को उत्सव एवं घर की गणगौरः श्री गुसांई जी के छठे लाल जी श्री यदुनाथ जी को प्राकट्योत्सव। जन्म सं. १६९५, आज के दिन गोकुल में हुवा। उपयन १६२३ तथा विवाह १६३२ में। आप अच्छे वैद्य तथा ज्ञान व वैराग्य के स्वरुप माने जाते हैं। आपने **“श्री वल्लभ दिग्विजय”** नामक ग्रंथ लिखा तथा आपने **“श्रीमुख की वार्ता”** भी लिखी। आज के दिन कई घरन में जमुनाजी का प्राकट्य दिवस भी मनाया जाता है। आज मोतीमहल में गणगौर होय है।

चैत्र शुक्ल ९ श्री रामनवमी : "चैत्र सुदी नोमी को शुभ दिन रामचन्द्र घर आवे। मात कौशल्या कूखि पधारे जन्म जयन्ति गावे।"

आज श्री जमुनाजी के भाव की चैत्री गुलाब की मंडली आती है। पंचामृत स्नान श्री बालकृष्णजी को होता है। शयन में दस माला का जोड़ फूल का आता है। यदि नववर्श के दिन शयन के दर्शन बन्द न हुवे हो तो आज से शयन के दर्शन बन्द हो जाते हैं। राम जन्म के बाद दूसरे भोग में आरती होती है। पंचध्वनी से डोल तिबारी में बड़े बंगला में श्रीठाकुरजी पोढ़े। राजभोग में झांझें बजती है।

श्याम व राम में अष्टछाप कवियों ने अभेद माना है तथा उनकी सारी लीलायें श्रीश्याम की तरह की है। भगवान राम सूर्यवंशी है। अतः श्रीनाथजी में भी जन्माष्टमी की तरह सेवा की जाती है। कीर्तनों में जन्मलीला, बाललीला, पौगंडलीला, विश्वामित्र को पधारनो तथा किशोर लीला के पद गाये जाते हैं। आसोजी नवरात्री में राम वनलीला, युद्धलीला, राम की लंका पर चढ़ाई की आदि लीला गाई जाती है। इस प्रकार श्रीराम कृष्ण में नितांत अभेद माना गया है।

चैत्र शुक्ल ११ : आचार्य श्री महाप्रभुजी के प्राकट्य की बधाई आज से ही बैठती है। मंगला से शयन पर्यन्त रोज बधाई जन्माष्टमी की एवं महाप्रभुजी की गाई जाती है। इसमें जैसा श्रृंगार होता है उसी भाव के कीर्तन गाये जाते हैं। यह सेवा चन्द्रावलीजी की प्रिय सखी प्रेम मंजरीजी की तरफ से है। प्राकट्य की बधाई १५ दिन पहले बैठती है। सो सोमयज्ञ पूर्ण होने पर, उसके फलस्वरुप वि.सं. १५३३ रामनवमी के दिन माला-बीड़ा झेलाकर स्वप्न में आदेश दिया तुम्हारे यहाँ अवतरित हो रहा हूँ। अतः आगम में बधाई बैठती है।

चैत्र शुक्ल १५ : रास की छहमासी रात्री का सम्पन्न दिवस - रास के साज व पिछवाई रास की धराई जाती है, मंगला से शयन तक रास के कीर्तन होते है। पुष्टिमार्ग की सारी सेवा भागवतोक्त है। प्रभु आज्ञा प्रधान है। यह रास नाग कन्याओं के साथ हुवा। अतः यह शरदवत श्रृंगार व कीर्तन होते हैं।

वेणुवाद करके प्रभु ने महारास का आरंभ किया। समस्त रास में सम्पूर्ण लीला अलौकिक प्रकट की गई। इसी प्रकार श्रीमद् वल्लभाचार्यजी की अनूठी अलौकिक बंसीनाद जो सम्पूर्ण आकाश मंडल में व्यापि गई एवं सर्वत्र गूंज गई।

।। श्रीनाथजी ।।

नित्यक्रम

भाग – प्रथम

श्री कृष्णाय नमः। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।

श्री मदाचार्य चरण कमलेभ्योः नमः।

श्री गुसाँईजी परम दयालवे नमः। श्रीगुरूवेभ्यो नमः ।

श्री गुरूवन्दना (मंगलाचरण)

चिंता संतान् हंतारो यद् पादाम्बुजरेणवः।
स्वीयानां तान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहः।।
यदनुग्रहतो जंतुः सर्वदुःखातिगोभवेत्।
त्वमहं सर्वदा वन्दे श्री मद्वल्लभनन्दनम्।।
अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजन शालाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।

कीर्तन–सेवा नित्यक्रम

पुष्टिमार्गीय मन्दिरों में प्रातःकाल घंटानाद के पश्चात् कीर्तन–सेवा आरंभ होती है।। सर्वप्रथम आचार्य श्री वल्लभाचार्य महाप्रभु की वन्दना, फिर श्री विट्ठलनाथ जी, गुसाँई जी की वन्दना, तत्पश्चात् प्रभु को जगाने (जगाइबे) के पद बोले जाते हैं।। मंगलभोग धरते समय कलेउ के पद, फिर श्री जमुनाजी का पद बोले जाते है।। किसी किसी घर में गुरु वन्दना के पश्चात् ही श्री जमुना जी की वन्दना की जाती है।। कुछ अन्य घरों में कलेउ के बाद संभवतः स्नान के भाव से जमुना जी के पद बोले जाते हैं।। “भैरव” आदि राग के पद वर्ष में किसी भी समय बोले जा सकते हैं पर “मल्हार” के पद केवल वर्षाकाल में और “वसन्त” राग के पद वसन्त और होरी के दिनों में ही बोले जाते हैं।।

प्रार्थना आचार्य जी श्री महाप्रभु जी

(राग भैरव) जय-जय-जय श्री वल्लभ प्रभु, श्रीविट्ठलेश सार्थे।। निज जन पर करत कृपा, धरत हाथ मार्थे।। दोष सबें दूर करत, भक्ति भाव हिये धरत। काज सबै सरत सदा, गावत गुण गार्थे।।१।। काहे को देह दमत, साधन कर मूरख जन, विद्यमान आनन्द त्यज, चलत क्यूँ अपार्थे।। 'रसिक' चरण शरण सदा, रहत हैं बडभागी जन, अपनो कर श्रीगोकुलपति, भरत ताहि बार्थे।।२।।

भोर भये भाव सों, लैं श्री वल्लभ नाम।। हे रसना तू और वृथा, बके क्यों निकाम।। सेवा रस स्वाद पावे, निशदिन गुण गावे, और सब बिसरावे, यह मन आठों याम।।१।। रसिक न कछु और करें, इनहीं में भाव धरें, अतिरस अनुपान करें, और कपट वाम।। "हितहरिवंश" छिनही में, होत सगरो भक्तिमारग, रूप हृदय बसे अरु, रससमूह धाम।।२।।

श्री वल्लभ गुन गाऊँ।। निरखत सुंदर स्वरूप, बरखत हरि रस अनूप।। द्विजवर, कुल भूप सदा, बलबल बल जाऊँ।।१।। अगम निगम कहत जाय, सुरनर मुनि लहै न ताहि।। सकल कला गुन निधान, पूरण सुखदाई।।२।। "गोविन्द" प्रभु नंद नंदन, श्री लछमन सुत जगत बंदन।। सुमिरत त्रयताप हरण, चरण रेणु पाऊँ।।३।।

जोपें श्रीवल्लभ चरण गहे।। तो मन करत वृथा क्यों चिंता, हरि हिये आय रहे।।१।। जन्म-जन्म के कोटिक पातक, छिनहीं मांझ दहे।। साधन कर साधे जिन कोउ, सब सुख सुगम लहे।।२।। कोटि-कोटि अपराध क्षमा कर, सदा नेह निबहे।। अब संदेह करौ जिन कोऊ, करूणा सिंधु लहे।।३।। अबलों बिन सेवे श्री वल्लभ, भव दुःख बहुत सहे।। "रसिक" महानिधि पाय और फल, मन-वच-क्रम न चहें।।४।।

नमो वल्लभाधीशपदकमलयुगले, सदा वसतु मम हृदयं विविधभावरसवलितं।। अन्य महिमा भासवासनावासितं, मा भवत् जातु निजभावचलितं।।१।। भवतु भजनीयमतिशयितरुचिरं चिरं, चरणयुगलं सकलगुणसुललितं।। वदित "हरिदास" इति, मा भवु मुक्तिरपि, भवतु मम देहशतजन्मफलितं।।२।।

गाऊँ श्रीवल्लभ ध्याऊँ श्री वल्लभ,श्री वल्लभ चरण रज लपटाऊँ।। वल्लभसंतति नित्य प्रति निरखूँ, वल्लभ दासन दास कहाऊँ।।१।। कृष्णलीला सेवा नित्य करों, जगत सबै तृण तुल्य धराऊँ।। “व्यासदास” की यही प्रतिज्ञा, श्री गोविंद कृपातें पाऊँ।।२।।

(राग भैरव) प्रात समय उठकरिये श्रीलक्ष्मणसुत गान।। प्रकटभये श्री वल्लभप्रभु देत भक्ति रसदान।।१।। श्री विट्ठलेश महाप्रभु रूप के निधान।। श्रीगिरिधर, श्रीगिरिधर, उदय भयो भान।।२।। श्रीगोविंद आनंदकंद, कहा वरणो गुणगान।। श्रीबालकृष्ण बाल केलि रूपहि सुहान।।३।। श्री गोकुलनाथ प्रकट कियो मारग बखान।। श्री रघुनाथलाल देख मन्मथही लजान।।४।। श्रीयदुनाथ महाप्रभु पूरण भगवान।। श्री घनश्याम पूरणकाम पोथीमें ध्यान।।५।। पांडुरंग विट्ठलेश करत वेदगान।। “परमानंद” निरख लीला थके सुरविमान।।६।।

भोरहि श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ कहिए।। आनंद परमानंद श्रीकृष्ण मुख, सुमर अष्टसिद्धि पैये।।१।। ओर सुमरो श्रीविट्ठल, श्रीगिरिधर गोविंद द्विजवर भूप।। श्रीबालकृष्ण, गोकुलपति, रघुपति, यदुपति, नव घनश्याम स्वरूप।।२।। पढो सुसार श्रीवल्लभ वचनामृत, जपो अष्टाक्षर मंत्र करी नेम।। अन्य श्रवण कीर्तन तजि निशदिन, सुनो सुबोधिनी धरी जीय प्रेम।।३।। सदा नंद-यशोमति सुत, प्रेम भक्ति सहित जिय जान।। अन्याश्रय, असमर्पित लैनो, असद-अलाप, असद्-संग हानि ।।४।। नयनन निरखो श्रीयमुनाजी ओर निरखो सुखद व्रजधाम।। यह संपत्ति “श्रीवल्लभ” हि तें पैये, हरिजन को नांहि औरसो काम।।५।।

जय जय जय श्रीवल्लभनाथ।। सकल पदारथ जाके हाथ।।१।। भक्तिमार्ग जिन प्रकट कर्यो।। नाम विस्वास जगत उद्धर्यो।।२।। सबमत खंड निरूपे वेद।। प्रेम-भक्ति को जान्यो भेद।।३।। कारण करण समरथ भुजदंड।। मायावाद कियो मत खंड।।४।। परम पुरुश पुरुशोत्तम अंशी।। भक्तजनन मन करत प्रशंसी।।५।। जाके नाम गुण रुप अनंत।। निर्मल यश गावत श्रुति संत।।६।। सुंदरस्याम कमलदल लोचन।। कृपाकटाक्ष भक्त भयमोचन।।७।। कामनापूर्ण पूरणकाम।। अहर्निश जपूं तिहारोनाम।।८।। जाके पटतर ओर न होय।। “दासगोपाल” भजें सुख होय।।९।।

(राग विभास) श्रीवल्लभ कृपानिधान अति उदार करुनामय दीन द्वार आयो।। कृपा भर नयन कोर, देखीये जु मेरी ओर, जन्म जन्म शोध शोध, चरण कमल पायो।।१।। कीरति चहुं दीश प्रकाश, दूर करत विरहताप, संगम गुण गान सदा, आनंद भर गाऊं।। विनती यह मान लीजे, अपनो "हरिदास" कीजे, चरणकमल वास दीजे, बलि बलि बलि जाऊं।।२।।

श्री विट्ठलनाथ जी गुसाँई जी

(राग भैरव) श्री विट्ठलनाथ जू के चरण शरणम्।। श्री वल्लभनंदनं, कलि दुख खंडनं, पूरण पुरुशोत्तमं, त्रयतापहरणम्।। सकल दुःखदारणं, भवसिंधुतारणं, जनहित लीला देहधरणम्।। "कान्हरदास" प्रभु सब सुख सागरं, भूतल दृढ़-भक्ति प्रकट करणम्।।

जय-जय-जय श्री वल्लभनंद।। सकल कला वृंदावन चंद।।१।। वाणी वेद न लहे पार।। सो ठाकुर श्री अक्का जी के द्वार।।२।। घोष सहस्त्र मुख करत उच्चार।। ब्रजजन जीवन प्राण आधार।।३।। लीला ही गिरि धार्यौ हाथ।। "छीतस्वामी" श्री विट्ठलनाथ।।४।।

गोकुलगाम कौ पेंडो ही न्यारौ।। मंगलरूप सदा सुखदायक, देखियत तीन लोक उजियारौ।।१।। जहां वल्लभसुत निर्भय बिराजत, भक्तजननके प्राणन प्यारौ।। "माधोदास" बल बल प्रतापबल, श्रीविट्ठल सर्वस्व हमारौ।।२।।

प्रात समें श्री वल्लभ सुत कौ, उठतहिं रसना लीजिये नाम।। आनंदकारी प्रभु मंगलकारी, अशुभहरण जन पूरण काम।। याहि लोक परलोक के बंधु, को कहि सकै तिहारे गुणग्राम।। "नंददास" प्रभु रसिक शिरोमणि, राज करौ श्री गोकुल सुखधाम।२।।

जगायवे के पद

(राग भैरव) ललित लाल श्रीगोपाल, सोइये न प्रातकाल, यशोदा मैया लेत बलैया, भोर भयौ बारे।। उठौ देव करूँ सेव, जागिये देवाधिदेव, नंदराय दुहत गाय, पीजिये पय प्यारे।।१।। रवि की किरण प्रकट भई, उठौ लाल निशा गई, दधि मथत जहाँ-तहाँ, गावत गुण तिहारे।। नंदकुमार उठे बिहँस, कृपादृष्टि सब पै बरस, युगल चरण कमलन पर "परमानन्द" वारे।।२।।

जागिये ब्रजराज कुँवर, कमल कोश फूले।। कुमुदिनी जिय सकुच रही, भृंगलता झूले।।१।। तमचर खग करत रोर, बोलत बनराई।। रांभत गौ मधुर नाद, बच्छ चपलताई।।२।। रवि प्रकाश, विधु मलीन, गावत ब्रजनारी।। “सूर” श्रीगोपाल उठे, परम मंगलकारी।।३।।

(राग देशकार) चिरैया चुह चुहाँनी, सुन चकई की बानी, कहत यशोदा रानी, जागौ मेरे लाला।। रवि की किरण जानी, कुमुदनी सकुचानी, कमलन विकसानी, दधि मथें बाला।। सुबल, श्रीदामा, तोक, उज्वल वसन पहरें, द्वारे ठाड़े टेरत है, बाल गोपाला।। “नंददास” बलिहारी, उठौ क्यों न गिरधारी, सब कोऊ देख्यौ चाहै, लोचन विशाला।।

(राग चारूकेशी) मुख देखन कों हों आई लाल कौ।। काल मुख देख गई दधि बेचन, जात ही गयौ है बिकाई।।१।। दिन तें दूनों लाभ भयौ, घर काजर बछिया जाई।। आईहों धाय थंभाय साथ की, मोहन देहौ जगाई।।२।। सुन प्रिया बचन बिहँस उठ बैठे, नागर निकट बुलाई।। “परमानन्द” सयानी ग्वालिनी, सेन संकेत बताई।।३।।

(राग विभास) प्रात समें जागी अनुरागी, सोवत हुतीरी स्याम जू के संगिया।। चीर संभारत उठीरी दक्षिन कर, बाम भुजा फरकी भर अंगिया।।१। भाल में सुहाग भरी छबि उपजत न्यारी, पहरें कसुंभी सारी सोंधे रंगमगिया।। “अग्रस्वामी” लाड़ लड़ाई, बहुत कीनी बड़ाई, फूली फिरत अति ही सगमगिया।।२।।

कलेऊ के पद

(राग भैरव) छगन मगन प्यारे लाल कीजिये कलेवा।। छींके ते सगरी दधि, ऊखल चढ़ काढ़ लेहो, पहिर लेहो झगुली, फेंट बाँध लेहो मेवा।।१।। यमुनातट खेलन जावो, खेलन के मिस भूख न लागै, कौन परी प्यारेलाल, निश दिन की टेवा।। “सूरदास मदनमोहन”, घर ही क्यों न खेलो लाल, देहोंगी चकडोर, बंसी, हंस-मोर परेवा।।२।।

(राग भैरव) आछौ, नीकौं, लोंनों, मुख, भोर ही दिखाइये।। निश के उनीदे नैन, तुतरात मीठे बैन, भांवते हो जियके मेरे, मोद ही बढ़ाइये।।१।। सकल सुखकरण, त्रिविधि तापहरण, उर कौ तिमिर बाढ्यौ, तुरत नसाइये।। द्वारे ठाड़े ग्वालबाल, करौं हो कलेऊ लाल, मीसी रोटी, छोटी-मोटी, माखन सों खाइये।।२।। तनक सौ मेरो कन्हैया, वार फेर डारी मैया, बेंनी तो गुहों बनाइ, गहरु न लगाइये।। “परमानन्द” प्रभु जननी मुदित मन, फूली-फुली अति उर अंग न समाइये।।३।।

(राग भैरव) मदन मोहन पिय कीजिये कलेऊ।। दूध में रोटी सानि, माखन-मिश्री आनि, जोइ-जोई भावे लाल, सोई-सोई लेऊ।।१।। खीर-खांड-घृत-मिठाई-मेवा, आप खाउ अरु ग्वालन कों देहु।। "ब्रजपति" पिय खेलन कों जाउ, बल सुबल श्रीदामा संग कर लेहू।।२।।

(राग रामकली) हों बलबल जाऊँ, कलेऊ लाल कीजैं।। खीर-खांड-घृत अति मीठौ है, अबकी कौर बस लीजैं।।१।। बेनी बढ़े सुनौ मनमोहन, मेरा कह्यो पतीजैं।। ओटयो दूध सद्य धौरी कौ, सात घूँट भर पीजैं।।२।। वारने जाऊँ कमल मुख ऊपर, अँचरा प्रेम रस भीजैं।। बहोर्यो जाय खेलौ यमुनातट, "गोविंद" संग कर लीजैं।।३।।

(राग विभास) कमल नयन हरि करौ कलेवा।। माखन-रोटी सद्य जम्यो दधि, भाँत-भाँत के मेवा।।१।। खारक-दाख-चिरोंजी-किसमिस, उज्वल गरी-बदाम।। सक्कर-सेव- छुहारे-सिंघारे, हरे खरबूजा आम।।२।। कई मेवा बहु भाँत-भाँत के, खटरस के मिश्ठान। "सूरदास" प्रभु करत कलेऊ, रीझे स्याम सुजान।।३।।

लेहु ललन कछु करहु कलेऊ, अपने हाथ जिमाऊँगी।। सीतल माखन मेल मिश्री, कर-कर कौर खवाऊँगी।। ओंट्यौ दूध सद्य धोरी कौ, सियरौ कर कर प्याऊँगी।। तातौ जान जो न सुत पीवत, पंखा पवन ढुराऊँगी।। अमित सुगंध सुवास सकल अंग, कर उबटन गुन गाऊँगी।। शीतल-उष्ण न्हवाय घोर जल, चंदन अंग लगाऊँगी।। दीर्घ ताप नस जात देख छबि, निरखत हियो सिराऊँगी।। "परमानंद" सीतल कर अँखिया, बानिक पर बल जाऊँगी।।

श्री यमुनाजी की अष्टपदी

(राग भैरव/बिलावल) नमो देवी यमुने नमो देवी यमुने हर कृष्ण मिलनांतरायम्। निजनाथ मार्गदायिनी कुमारी कामपूरिके कुरू भक्तिरायम।।ध्रुव।। मधुप कुलकलित कलित कम कमलावली व्यपदेश धारित श्रीकृष्णयुत भक्तहृदये।। सततमति शायित हरिभावना जाततत्सारूप्य गदित हृदये।।१।। निजकुल भव विविध तरू कुसुमयुत नीर शोभया विलसदलि वृन्दें।। स्मारयसि गोपीवृंद पूजित सरसमीशव परानन्द कंदे।।२।। उपरिवलदमल कमलारूण द्युतिरेणु परिमीलित जलभरेणामुना।। व्रजयुवति कुचकुंभ कुकंमारूणमुरः स्मारयसिमार पितुरधुना।।३।। अधि रजनी हरि विहृतिभीक्षितुं कुवलयाभिधसुभग नयनान्युति तनषे।। नयनयुगमल्पमिति बहुतराणी च तानि, रसिक

तानिधितया कुरूषे।।४।। रजनीजागर जनित, राग रंजितनयन पंकजैरहनि हरिक्षसें।। मकरंद भर मिषेणानन्दपूरिता सतत मिह हर्षाश्रुमुंचसे।।५।। तटगतानेकशुकपसारिका मुनिगण स्तुत विविध गुण सिंधु सागरे।। संगता सततमिह भक्तजनताहतिराजसे रासरससागरे।।६।। रति भर श्रम जलोदित कमल परिमल ब्रजयुवतिजन वि ृति मोदे।। ताटंकचलन सुनिरस्त संगीत युत मद मुदित मधुपकृत विनोदे।।७।। निज व्रजजनावनायात्त गोवधने राधिका हृद्यगतहूद्यकरकमले।। रतिमति शयितरस विठलेस्याशु कुरूवेणु निनादाव्हानासरले।।८।।

श्लोक

“ब्रजपरिवृढ़ वल्लभे कदात्वच्चरन सरोरूह मीक्षणास्पंद में।। तव तटगत वालुका कदाहं सकल निजांगता मुदा करिष्ये।।१।। वृदावने चारू बृहद्वने मन्मनोरथं पूरय सूरसुते।। दृगगोचर कृष्ण विहार एवं स्थिति स्त्वदीये तट एवं भूयात्।।२।।

श्रीगंगाजी की अष्टपदी

(राग बिलावल) नमो देवी गंगे मातगंगे हरशिरसी निखिलमघमलकानंदे।।१।। मधुमथनमूर्तिवर बिन्दुकरकामकं बहसी बहुवार सतरंगें।। हरिचरणनख भीधुर गजदंत निगत ब्रहाजलकृत पायसंगे।। नमो देवी गंगे।।१।। त्वमसि जलपावनी चतुरदधिगामिनी सप्तऋषिसुकृत कुलासालें।। कनकगिरिलंबिता सकलमुनिवंदिता हरमुकुटसील कुसुममाले नमो देवी गंगे।।२।। पावयसि नागर पूरयति सागर संगता विदुर्भेरि पादे।। तीर्थवरकारिणी स्वर्गजा उद्धारिनी हेमशैलपाषाण भेदे।। नमो देवी गंगे।।३।। इहनिखिल सुरगणोरिह निखिल मुनिजनैरिह निखिल वेद समुचोर।। सुयशगीयसे पीयसेजहनु मणिकर्णिक देवी संसारसारे नमो देवी गंगे।।४।। कलुषजल मीष्ठत सतमेध्तोफल तवकरम करगंभीरतोये।। तट निकटसिंधुरस्त परलोकबधुरस्त सुरसदन साधनोपाये।। नमो देवी गंगे।।५।। कृतसलिलनीरघुता पुलिनमुपकुर्विता तव नाम निर्मला पाये।। निश्चतिबाधके निर्वाणदसाधक भक्तजन दहति संताये नमो देवी गंगे।।६।। सगरसुत संग में लसद्मरसुन्दरी दुति के दृष्टतदराये। सेविता चिंतिता तर्पितावगाहितामर्जिता मम हरसि पाये।। नमो देवी गंगे।।७।। इत रामलक्ष्मणों कौशिकोनुक्षयासुरसुरित कृतनमस्कारे।। वदति मति सागरे धीर “जयदेव” कविस्तारसि भवजलधियारे नमो देवी गंगे।।८।।

(राग बिहाग) रतिसुखसागरे गतमिभसारे मदन मनोहर वेषं।। न कुरू नितंबिनी गमनविंलबनमनु सरतं हृदयेशं।।१।। धीर समीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली।। गोपी पीन पयोधरमर्दन चंचल करयुगशाली।।२।। नामसमेंत कृत संकेत वादयते मृदु वेणुं।। बहु मनुते तनु ते तनुसंगत पवन चलिपमपि रेणु।।३।। पतित पतत्रो विचलति पत्रो शंकित भवदुपयांन।। रचयति शयनं सचकितनयनं पश्चयति तुव पथ ध्यानं।।४।। मुखरमधिरं त्याज मंजिरं रिपुमिव केलिसुलोलं।। चल सखि कुजं सतिमिरपुंजं शीलय नीलनिचोलं।।५।। उरसी मुरारे रूपहितहारे धन इत तरलबालके।। तड़िदिव पीते रतिविपरीते राजसि सुकृत विपाके।।६।। विगलितशयनें परिहृत रसनं घटनं जघनमपिधानं।। किसलय शयने पंकजनू निधिमिव हरिधनाव।।७।। हरि श्भमिमानी रजनिरिदानी मियमपि याति विरांम।। कुरु मम वचनं सत्वर रंचन पूरथ मधुरिपुकामं। “श्रीजयदेवे” कृतहरि सेवे भणति रमणिकांम।। “श्रीजीन” कृष्ण हरि सेवे भणती पर रमतिणया “श्रीगालदेवें“ कृत कपि सेबे भणति परमा प्रद रमाणिया प्रभुदितहद्वयदयं हरिमति संदस नमत सुकृत कमनीयां।।८।। “श्रीजयदेवे” कृत हरि सेवे भणति परम रमणीयं।। प्रभुदित हृदयं हरिमति सदयं नमत सुकृत कमनीयं।।६।।

श्री यमुनाजी के पद

(राग विभास) तिहारो दरस मोहि भावै, श्री यमुनाजी।। श्री गोकुल के निकट बहत हों, लहरन की छबि आवै।।१।। सुखदैनी, दुखहरनी, श्री यमुनाजी, जो जन प्रात उठ नावै।। मदनमोहन जु की खरी पियारी, पटरानी जु कहावै।।२।। वृन्दावन में रास रच्यो है, मोहन मुरली बजावैं।। “सुरदास” प्रभु तिहारे मिलन कों, वेद विमल जस गावैं।।३।।

(राग भैरव) मेरे कुल कल्मश सबही नासैं, देख प्रभात प्रभाकर कन्या।। वे देखौ पाप भागजात जित तितर्ते, ज्यों मृगराज देख मृग सन्या।। पोषत है पयपान पुत्र लों, अहो जगजननी धन्य सुधन्या।। दियौ चाहे “गदाधर” हू कों, चरन कमल निज भक्ति अनन्या।।

(राग भैरव) नमो नमो जयति श्री यमुने।। जय कालिंदी पुलिन मनोहर, स्यामा स्याम करत हैं, रवने।।१।। जलक्रीड़ा करत तेरे तट, तुम सम कोऊ नहिं तीनों भवने।। सुरनर मुनि के ध्यान न आवत, सो प्रभु तिहारे गृह गवने।।२।। तुम तौ परमकृपालु जगजननी, पतितन कों पावन भवतरनी।। साख निगम पुरानन बरनी, “सूर” प्रभु के मन कों हरनी।।३।।

(राग रामकली) श्रीयमुनाजी अधम उद्धारनी मैं जानी।। गोधनसंग श्यामघनसुंदर, ललितत्रिभंगी दानी।।१।। गंगाचरन परसतें पावन, हरसिर चिकुर समानी।। सात समुद्र भेद यमभगिनी, हरि नखशिख लपटानी।।२।। रास रसिक मणि नृत्यपरायण, प्रेमपुंज ठकुरानी।। आलिंगन चुंबन रस विलसत, कृष्ण पुलिन रजधानी।।३।। ग्रीष्मऋतु सुखदेत नाथ कूँ, संग राधिका रानी।। "गोविंदप्रभु" रवितनया प्यारी, भक्ति मुक्ति की खानी।।४।।

मंगला दर्थन सम्मुख में

(राग भैरव) मंगलम् मंगलम् ब्रज भुवि मंगलम्।। मंगलमिह श्रीनंद-यशोदा, नाम स्वकीर्तन मेतद्रुचिरोत्संग सुलालित पालित रूपम्।।१।। श्री श्रीकृष्ण इति श्रुतिसारं, नामस्वार्तजनाशय, तापापहमिति मंगलरावम्।। ब्रजसुंदरी, वयस्य, सुरभीवृन्द, मृगीगण निरुपम् भावाः, मंगल सिंधु चयाय।।२।। मंगलम् मीषत्स्मित युतमीक्षण, भाषणमुन्नत नासापुट गत मुक्ताफल चलनम्।। कोमल चलदंगुलीदल संगत, वेणुनिनाद विमोहित, वृन्दावन भुवि जाताः।।३।। मंगलऽखिलं गोपी शितुरिति मंथर गति विभ्रम मोहत रासस्थित गानम्। त्वं "जय" सततं गोवर्धनधर पालय निज दासान्।।४।।

(राग भैरव) मंगल माधो नाम उच्चार।। मंगल वदन, कमल कर मंगल, मंगल जनकी सदा संभार।।१।। देखत मंगल, पूजत मंगल, गावत मंगल चरित उदार।। मंगल श्रवण, कथा रस मंगल, मंगल तन, वसुदेव कुमार।।२।। गोकुल मंगल, मधुवन मंगल, मंगल रुचि, वृंदावन चंद।। मंगल करत गोवर्धनधारी, मंगल वेश यशोदानंद।।३।। मंगल धेनु, रेणुभू मंगल, मंगल मधुर बजावत बेन।। मंगल गोपवधू परिरंभण, मंगल कालिंदी पयफेन।।४।। मंगल चरणकमल मुनि वंदित, मंगल कीरति जगत निवास।। अनुदिन मंगल ध्यान धरत मुनि, मंगल मति "परमानंददास"।।५।।

(राग विभास) मंगल करण, हरण मन आरति, वारत मंगल आरती बाला।। रजनी रस जागे अनुरागे प्रात अलसात, सिथिल बसन और मरगजी माला।।१।। बैठे कुंजमहल सिंघासन, श्री वृषभान कुँवरि नंदलाला।। "ब्रजजन" मुदित ओट व्है निरखत, निमिष न लागत लताद्रुम जाला।।२।।

(राग भैरव) मंगल आरती गोपाल की माई।। नित प्रति मंगल होत निरख मुख, चितवन नयन विशाल की।।१।। मंगल रूप स्यामसुंदर कौ, मंगल भृकुटी सुभाल की।। “चतुर्भुज” प्रभु सदा मंगलनिधि, बानिक गिरिधरलाल की।।२।।

खंडिता

(राग विभास) आवत कुंजन तें पौहोंपी री।। पिय अलसात जृंभात आलस भरे, ललन खवावत बीरी।।१।। सुरत सिथिल, अंग-अंग सिथिल अति, भुज भर स्याम-रसीली।। “विट्ठल” विपिन विनोद करौ मिल, लइ ललितादिक छबीली।।२।।

(राग विभास) ललन की प्रीति अमोली, एक रसना कहाँ कहों सखीरी।। हसन-खेलन-चितवन जो छबीली, अमृत बचन मृदु बोली।।१।। अति रसभरे मदनमोहन पिय, अपने कर-कमल खोलत बंद चोली।। “गोविंद” प्रभु की बहुत कहा कहूँ, जेजे बातें कहीं अपनो हृदे खोली।।२।।

(राग खट) आज नंदलाल मुख चंद नयनन निरख, परम मंगल भयो भवन मेरे।। कोटि कंदर्प लावण्य एकत्र कर, वारुँ तबही जब नेंक हेरे।।१।। सकल सुख सदन, हरषित बदन गोपवर, प्रबल मदन दल संग घेरें।। कहौ कोऊ कैसेंहू नहिं सुध बुध बनै, “गदाधर मिश्र” गिरिधरन टेरें।।२।।

(राग भैरव) ऐसी कौन नागरी जिन कुंज में बसाये।। अरुण उदय, तमचर कौ बोल सुन, काहे कों अरबराय उठ धाये।।१।। सुधि कर देखो, कहाँ पीयरो पट, सुभग कुंकुम उर लपटाये।। पीठ बलय के चिन्ह बिराजत, ढांप लेहु, जो आछे बनि आये।।२।। बदन बिंदु सुयश कौ टीकौ, सुरत जीत रणधीर कहाये।। “कृष्णदास” प्रभु गिरिधर नागर, पौढ़ रहौ निस बहुत जगाये।।३।।

अभ्यंग के पद (स्नान)

(राग देवगंधार) कर मोदक माखन-मिश्री लै, कुँवर के संग डोलत नन्दरानी।। मिसकर पकर न्हवायौ चाहत, बोलत मधुरी बानी।।१।। कनक पटा आँगन में राख्यौ, सीत-उष्ण धर्यो पानी।। कनक कटोरा सोंधो उबटना, चंदन कांगसी आनी।।२।। यों लाई मज्जन हित जननी, चित चतुराई ठानी।। मन में मतौ करत उठ भाजे, दुखित

केस अरुझानी।।३।। निरख नयन भर देखत रानी, सोभा कहत न बानी।। गात सचिक्कण यों राजत है, ज्यों घन तड़ित लपटानी।।४।। आओ मनमोहन मेरे ढ़िंग, बात कहूँ एक छानी।। खिलौना एक तात जो लाये, बल अजहूँ नहिं जानी।।५।। राजकुँवर अध न्हात ते भाज्यो, ताकी कहूँ कहानी।। बैनी न बाढ़ी वाकी, रही जु तनकसी, दुलहिनि देख हँसानी।।६।। बैठे आय न्हाय पट पहिरे, आनंद मन में आनी।। "विष्णुदास" गिरिधरन सयाने, मात कही सोई मानी।।७।।

(राग देवगंधार) कहा ओछी व्है हे जात।। सुन यशुमति तुम बडरन आगें, जो छिन एक बितात।१।। अति नीकौ सत भाव भलाई, जो या तनतें कीजे।। माय-बाप कौ नाम लिवावत, लोक माँझ यश लीजै।।२।। सास ननद और पार परोसन, हँस बहु भाँत कह्यौ।। तौहू मोहि तिहारे घर बिन, नाहिंन परत रह्यौ।।३।। बोल लेहौ संकोच करौ जिन, जब तुम सुतहि न्हवावौ।। "श्री विट्ठल गिरिधरन" लाल कों, मोही पें उबटावौ।।४।।

(राग बिलावल) आऔ गोपाल सिंगार बनाऊँ।। अति सुगंध कौ करू उबटनों, पाछे उष्ण जल लेजु न्हवाऊँ।।१।। अंग अंगोछ गुहुँ तेरी बेनी, फूलन रुचि-रुचि माल बनाऊँ।। सुरंग पाग जरतारी चीरा, रतन खचित सिर पेच बँधाऊँ।।२।। वागौ लाल सुन्हेरी छापो, हरी इजार चरनन बिरचाऊँ।। पटुका सरस बेंगनी रंग कौ, हँसुली हार हमेल धराऊँ।।३।। गज मोतिन के हार मनोहर, बनमाला लै उर पहराऊँ।। लै दरपन देखो मेरे बारे, निरखि-निरखि उर नैन सिराऊँ।।४।। मधु-मेवा-पकवान मिठाई, अपने करलै तुमहि जिमाऊँ।। "विष्णुदास" कौ यही कृपाफल, बालचरित्र हौं निसदिन गाऊँ।।५।।

(राग देवगंधार) मज्जन करत गोपाल चौकी पर।। अति सुगंध फुलेल उबटनो, विविध भाँत की सोंझ राखी धर।।१।। प्रथम न्हवाय फिर केसर चर्चत, शोभित अंग अंग सुंदर वर।। ब्रजगोपी सब मिल गावत हैं, अंग उबट कर परस सीस कर।।२।। विबिध भाँत श्रृंगार करत हैं, अपनी अपनी रुचि सुघर वर।। लै दर्पण श्री मुखहि दिखावत, निरख निरख नयन हँस तर।।३।। भांत भांत सामग्री कर कर, लै आई सब धर धर।। "छितस्वामी" गिरिधरन आरोगत अति आनंद प्रफुल्लित कर।।४।।

छाक के पद (ग्रीष्मकाल)

(राग वन्दावनी–सारंग) तुमको टेर टेर मैं हारी।। कहाँ जो रहे अबलों मनमोहन, लेहौ न छाक तुम्हारी।।१।। भूलि परी आवत मारग में, क्योंहुँ न पेंडो पायौ।। बूझत-बूझत यहाँ लों आई, तब तुम वेणु बजायों।।२।। देखौ मेरे अंग को पसीना, उरको अंचल भीनों।। "परमानन्द" प्रभु प्रीति जानकें धाय आलिंगन कीनों।।३।।

(राग सारंग) घरतें छाक लै आई ग्वालन।। दूरतें ग्वालिन मोहन देखी, नैनन सैन बुलाई।।१।। सखा संग कोऊ नहीं स्यामके, गये चरावन गाई।। जब एकान्त देख मोहनको, ग्वालिन मन मुसिकाई।।२।। दोऊ हिलमिल छाक अरोगत, बैठ कदमकी छांही।। रहस्य निकुंज भवनकी लीला, कापै बरनी न जाई।।३।। सिव सनकादिक नारद सारद, उनहु न देत दिखाई।। "हरिनारायण स्यामदास" के प्रभु माई, गोपी महा निधि पाई।।४।।

(राग सारंग) ग्वालिन घरतें कौन बुलाई।। जाय जिमावौ अपने पतिकों, यहां क्योंरी तुम आई।।१।। यह मर्यादा वेदकी नाहीं, करौ अपनी मन भाई।। निज पति छांड औरनकों चाहत, यह तुमे कौन बताई।।२।। दीन बचन ग्वालिन बोली हम, सुत पति छांडके आई।। जान्यौ मनमोहन भूखे हैं, अखिल लोकके राई।।३।। वचन सुनत मोहन मुसकाने, कर गहि हृदे लगाई।। दोऊ संग मिलि छाक अरोगत, "दास" निरख बलि जाई।।४।।

(राग सारंग) हरि कों ग्वालन भोजन लाई।। बैठे जहाँ गोवर्द्धन ऊपर कान्ह कुँवर सुखदाई।।१।। सखा मध्य तें निकसे मोहन, ग्वालिन निकट बुलाई।। मिल एकान्त जेंमत रस बस सों "कुंभनदास" बलि जाई।।२।।

(राग वन्दावनी–सारंग) भोजन करत नंदलाल, संग लिये ग्वालबाल, करत है ख्याल बैठे, बंसीबट छैंया।। पातनपें धर्यो भात, दधि सान लिये हाथ, माँगत मुसक्यात जात, साँवरे कन्हैया।। बिंजन सब भाँति-भाँति, अनुपम अति कही न जात, रुचि सों करि खात, मुदित पठई मैया।। "छीत स्वामी" गिरिधर पिय, मधि मंडली बिच भोभित, सबकौ मन मोहे, निरखि-निरखि लेत बलैया।।२।।

(राग सावंत–सारंग) आज मेरे मिल बैठे मेहमान।। चंदन भवन माँझ सीतल व्यंजन धरे, गोपीजन आन।।१।। धन्य भाग हैं आज हमारे, चंदन धर्यो है सान।। परम हुल्लास भई गोपीजन, गावत जन "कल्याण"।।२।।

(राग वन्दावनी–सारंग) लाई जसोमति मैया, भोजन कीजै लाल।। बिंजन धरे चटपटे मीठे, लीजे हो सुन्दरलाल।।१।। चंदन भवन बनाय स्वच्छ कर, दिए दिठोंना भाल।। "परमानंद" प्रभु ललित त्रिभंगी, बहत चहूँ दिस ख्याल।।२।।

(राग सामंत–सारंग) सीतल सदन में जेंवत मोहन, ग्वाल मंडली लै संग जोर।। सीतल छांह, सीतल बिंजन, भाव सीतल, तन मुदित होत लेत कौर।।१।। सीतल सुगंधमंद बहत वायु, सीतल अंग अरगजा लेप चंदन खौर। सीतल होत नयन, सीत अंग अंग चैन, गिरिधर पर "कुंभनदास" डारत तनतोर।।२।।

(राग सारंग) भोजन करत स्याम कुंजनमें।। ग्वालन छाक अवार भई तोहु, सकुच न आई मनमें।।१।। जमुना जल भरते भई देरी, चली थार लै देऊ करनमें।। सुंदर पाक सिद्ध कर लाई, लेहो लाल भुजनमें।।२।। भली भांति भोजन करवायौ, जल भर दियो घटनमें।। ओक मांड जल पीवत "रसिकराय" दई सेनन नेननमें।।३।।

(राग वन्दावनी–सारंग) मिल जेंवत लाड़िली लाल दूहूँ कर, व्यंजन चारु सबै सरसें।। कर कंपत हाथ तें छूट परै, कबहुं ग्रास मुख कों परसै।।१। हठ कै मनमोहन हार परे सखि, हाथ जिमावन कों तरसे।। रस की रुचि जो जिय में उपजै, सखि माधुरी कुंजन में बरसें।।२।। सखी सोंझ लिए चहुं ओर खरीं, निरखें, हरखें, दरसें, परसें।। वह सुखसिंधु कही न परै, सब सखियन तहाँ "हरिवंश" लसें।।३।।

(राग नूर सारंग) बैठे लाल कुंजन में जो पाऊँ।। स्यामा स्याम भावती जोरी, अपने हाथ जिमाऊँ।।१।। चन्दन चर्चूं पोहोप की माला, हरख हरख पहराऊँ।। "श्री भट्ट" देत पान की बीरी, चरण कमल चित लाऊँ।।२।।

यमुना तट भोजन करत गोपाल।। विविध भांत दे पठ्यौ यशोमति, व्यंजन बहोत रसाल।।१।। ग्वाल मंडली मध्य बिराजत, हँसत हँसावत ग्वाल।। कमल नयन मुसकाय मंदहँस, करत परस्पर ख्याल।।२।। कोऊ ब्यार ढुरावत ठाड़ी, कोउ गावत गीत रसाल।। "नंददास" तहां यह सुख निरखत, अखियाँ होत निहाल।।३।।

भोग सरायवे एवं अचवन बीरी के पद

(राग धनाश्री) भोजन कर उठे दोऊ भैया।। हस्त पखार शुद्ध आचमन कर, बीरी लेहु कन्हैया।।१।। मात यशोदा करत आरती, पुनि पुनि लेत बलैया।। "परमानंद दास" को ठाकुर ब्रज में केलि करैया।।२।।

भोजन कर मोहन को अचवत, लै राधे कंचन की झारी।। यमुना जल भरकै लाई, अपने कर तातो कर प्यारी।।१।। सियरो जल लै आन समोयो, अचवन करत हँसत गिरिधारी।। "धोंधी" के प्रभु श्रीमुख पोंछत, अंचर दे मुसकात सुकुमारी।।२।।

(राग वंदावनी सारंग) भोजन कर जु उठे पिय प्यारी।। कंचन नगन जराय की झारी, जमनोदक लाई ललिता री।।१।। मुख पखार बीरी ले ब्रजपति, हित सों कुंज बिहारी।। "छीत स्वामी" नवकुंज सदन में विहरत लाल बिहारी।।२।।

ब्यारू (शयन–भोग) के पद

(राग ईमन) तोरे पैयाँ लागूँ गिरधर भोजन कीजै।। उलटत–पलटत झगुलिया भीजै, खीजत खिजावै सुंदर तन छीजै।।१।। फेनी, बाबर, खाजा, गुजा, मिश्री, लड्डुवा लीजै।। बाँट देत सब ग्वालबाल कों, "परमानन्द" जननी पै लीजै।।२।।

(राग कल्याण) लाड़िले बोलत है तोहि मैया।। संध्या समें, गोधन संग आवत, चुंबत लेकर, गोद बैठैया।।१।। मधुमेवा–पकवान–मिठाई, दूध–भात अरु दार बनाई।। "परमानंद" प्रभु करत बियारू, यशुमति देख बहुत सुख पाई।।२।।

(राग कल्याण) इन अखियन आगे ते लालन, एको पलछिन होउ न न्यारे।। बलबल जाऊँ बदन देखनकों, तरसत हैं नयनन के तारे।।१।। बोहोर्‌यो सखा बुलाय संग के, यही आँगन खेलौ मेरे प्यारे।। निरखत रहूँ पन्नग की मणि ज्यों, सुन्दर बाल बिनोद तिहारे।।२।। मधु–मेवा–पकवान मिठाई, व्यंजन मीठे–खाटे खारे। 'सूरस्याम' को जोइ–जोई भावे, सोई सोई माँग लेहु मेरे प्यारे।।३।।

(राग ईमन) ब्यारू करत हैं घनस्याम।। मधुमेवा, पकवान, मिठाई, पिस्ता, दाख, बदाम।।१।। दूधभात, खोवा, बासोंधी, लै आई व्रजबाम।। "आसकरण" प्रभु मोहननागर, अंग अंग अभिराम।।२।।

(राग कान्हरौ) आज अटारी पर उसीर महल में, रचे दम्पति ब्यारु करत।। खोवा, मलाई, बसोंधी और पय, हँस हँस घूंट भरत।।१।। चहुं ओर खसखानो, छुटत फुहारे फुही, बिंजना बयार सीरी मन को हरत।। “नंददास” प्रभु प्रिया प्रीतम परस्पर हँस हँस कौर लेत, सहचरी कनक डबा बीरासों भरत।।२।।

(राग कान्हरौ) सैन भोग लाई भर थारी।। दारभात अरु कढ़ी बड़ीकी, जसुमति माय परोसन हारी।।१।। खटरस व्यंजन दूध मिठाई खोवा मिश्री सीतल जल झारी।। “श्रीविट्ठल गिरिधर” जे उठे तब, दासन को जूठी पनवारी।।२।।

दूध के पद

(राग इमन) कीजे लाडिले पान अब दूध लाई हो जसोदा मैया।। कनक कटोरा भर पीजे सुख दीजे, ब्रजराज कुंवर तेरी चोंटी बढ़ेगी मेरे भैया।।१।। आछो निको अति ओट्यो है, तामें मधुर मिठैया।। “आसकरन” प्रभु दूध पीजै जननी को सुख दीजै, प्रातः उठत करूंगी धैया।।२।।

(राग इमन) दूध पियो मनमोहन प्यारे।। बल बल जाऊ गेहरू जिन कीजें, कमल नयन अखियन के तारे।।१।। कनक कटोरा भर पीजे सुखदीजे, संग लेहों बलभद्र भैयारे।। “परमानन्द” मोहि गोधन की सों, उठत ही प्रात करूंगी धैयारे।।२।।

(राग विभाग) हँस हँस दूध पीवत नाथ।। मधुर कोमल बचन कहि-कहि, प्राण प्यारी साथ।।१।। कनक कटोरा भर्यो अमृत, दियौ ललिता हाथ।। लाडली अचवाय पहिलें, पाछें आप अघात।।२।। चिन्तामणि चित बस्यौ सजनी, नाहिन और सुहात।। स्यामा-स्याम की नवल छबि पर, “रसिक” बलबल जात।।३।।

पौढ़ायवे के पद

(राग विहागरो) नवल किसोर नवल नागरिया।। अपनी भुजा स्याम भुज ऊपर, स्याम भुजा अपने उर धरिया।।१।। करत बिहार तरणि तनया तट, स्यामा स्याम उँमग रस भरिया।। यों लिपटाय रहें दोऊ जन, मरकतमणि कंचन जैसें जरिया।।२।। या उपमा कों रवि-शशि नाहीं, कंदर्प कोटि वारने करिया।। “सूरदास” बल-बल जोरी पर, नंदनंदन वृषभान दुलरिया।।३।।

(राग मारू) केलि करें प्यारी पिय, पौढ़े लख चाँदनी में, नेह सों लग गए, जोबन के जोस में।। अँगिया दरक गई, मानों प्रात देखिबे को, चोंच काढ़ि चक्रवाक, कामतर रोस में।।१।। आरस सों मोरी बाँह, दोऊ कुच गहे पिय, रति के खिलौना मानों ढ़ाप दिये ओस में।। रूप के सरोवर में "नंददास" देखे, आली चकई के छौना बैठे कंचन के कोस में ।।2।।

(राग बिहाग) चांपत चरण मोहनलाल।। पलका पौढ़ी कुंवरि राधे, सुंदरी नवबाल।।१।। कबहुँ करगहि नयन मिलावत, कबहु छुवावत भाल।। 'नंददास' प्रभु छबि निहारत प्रीत के प्रतिपाल।।२।।

(राग विहाग) आँगन में हरि सोय गयेरी।। हरूवे हरूवे दोउ जननी मिलि कें, सेज सहित तब भवन लहेरी।।१।। कहत रोहिणी इन्हें न जगावौ, खेलत डोलत हार गयेरी।। बार-बार जृंभात सांवरो, वदन देख विस्मित जु भयेरी।।२।। कहत नंद ये कछू न जानें, गायन के संग श्रमित भयेरी।। 'सूरदास' बलराम श्याम तब, बृजरानी संग पौढ़ रहेरी।।३।।

(राग बिहाग) झुक रही नींद श्याम के नैनन।। चिबुक उठाय पिया मुख निरखत, शोभा कही न जाय कछु बैनन।।१।। आरस भरी अकुलाय अंक भर, हियौ सिंचवत चैनन।। "सूर" स्वामिनी चंद उजियारे, सुख समुद्र लहरन बढ़्यौ मैनन।।२।।

(राग बिहाग) (अक्षय ततीया) चंदन महल में पौढ़े पिय प्यारी, बात करत मिल हँसत परस्पर।। चन्दन सेज संवारी चरच कर, चन्दन पंक चहुं दिस छिरकत, निरखत नेंन अति आनंद भर।।१।। चन्दन पंखा सखी ढुरावत, रूप निहारत अति ही चोंप करि।। "सूरदास मदन मोहन", चन्दन के महल पौढ़े, बारबार तृन तोरत सहचरि।।२।।

(राग विहाग) पौढ़े हरि झीनों पट दै ओट।। संग श्रीवृषभान तनया, सरस रस की पोट।।१।। मकर कुंडल अलक अरुझी, हार गुंजा ताटंक।। नील-पीत दोऊ अदल बदलें, लेत भरि-भरि अंक।।२।। हृदय-हृदयसों, अधर-अधरसों, नयनसों नयन मिलाय।। भ्रोंह-भ्रोंहसों, तिलक-तिलकसों, भुजन भुजा लपटाय।।३।। मालती और जाई चंपो, सुभग जाति बकूल।। "दास-परमानन्द" सजनी, देत चुन-चुन फूल।।४।।

(राग विहाग) रायगिरिधरन संग राधिका रानी।। निबिड नवकुंज, नवकंज सय्या रची, नवरंग पियरंग, बोलत पिकबानी।।१।। नीलसारी, लाल कुंचुकी, गौर तन, माँग मोतिन खचित, सुंदर सुठानी।। अर्धघूंघट ललन, वदन निरखत, रसिक दंपति परस्पर, प्रेम हृदयसानी।।२।। लाल तनसुख पाग, ढरक भ्रूपर रही, कुल्हें चंपक भरी, सेहरो सुवानी।। पाणि सों पाणि गहि, उर सों लावत ललन, "गोविन्द" प्रभु व्रजनृपति, सुरत सुखदानी।।३।।

चैत्र शुक्ल १ (प्रतिपदा)

संवत्सरोत्सव (स्थाई श्रृंगार)

देहरी वन्दनमाल तथा अभ्यंग स्नान !

श्रृंगार : कुल्हे जोड तथा खुले बंद का चाकदार वागा।

वस्त्र : आज से वागा खुले बन्द का आता है। पीली सूथन रूपेरी छापा की तथा लाल खुले बन्द का वागा सोनेरी छापा का, श्री मस्तक पर लाल कुल्हे पर पांच मोर पंख की चन्द्रिका। ठाडे वस्त्र मेघ–श्याम रंग के तथा पिछवाई लाल सोनेरी छापा की, रूपेरी कोर की।

आभरण : श्री मस्तक पर ठाड़ी लड दोहेरा पन्ना मोती की, तीन पन्ना के पान, हीरा जड़ा शीशफुल, जडाउ कुण्डल हीरा के, वेणी श्याम हीरामोती की, तिलक माणक का, अलंकार कटाक्ष व नकवेशर, चिबुक हीरा का, श्री अंग में भारी श्रंगार हाँस, हार हीरा–पन्ना मोती के। गुंजा माला तथा फुलकी माला, श्री हस्त में पान, पोची, बाजुबन्द, श्री चरण कमलों में नखावली, मुद्रिका, अनवट, बिछीया पगपान, पायल, पेजनी सभी हीरा पन्ना माणक मोती के। श्रीहस्त में फूल की छड़ी, सोने के वेणुजी तथा वेत्रजी धराये गये हैं।

विशिष्ठता : आज श्रीजी राजभोग से संध्या आरती तक चैत्री गुलाब की फुल मंडली मे बिराजते है। आज श्रंगार के दर्शन मे पण्ड्या जी द्वारा नये वर्ष का वर्षफल बांचकर सुनाया जाता है। नीम की कोंपल तथा मिश्री पधराई जाती है। आज गोपी वल्लभ भोग मे मनमनोहर के लड्डु, मोटा गुंजा तथा राजभोग मे सेब का बिलसारू तथा छाछ बडा भोग मे आवे। फुल मंडली राजभोग से सायंकाल आरती तक आवे। गर्मी अधिक हो तो आज से शयन के दर्शन बन्द हो जाते हैं, नहीं तो रामनवमी से बन्द होते हैं।

मंगला (राग भैरव) माई मंगल आरती गोपाल की।। नित्य प्रति मंगल होत निरख मुख, चितवन नयन विशाल की।।१।। मंगल रूप श्याम सुन्दर को, मंगल भकुटी सुभाल की।। "चतुर्भुज" प्रभु सदा मंगलनिधि, बानिक गिरिधर लाल की।।२।।

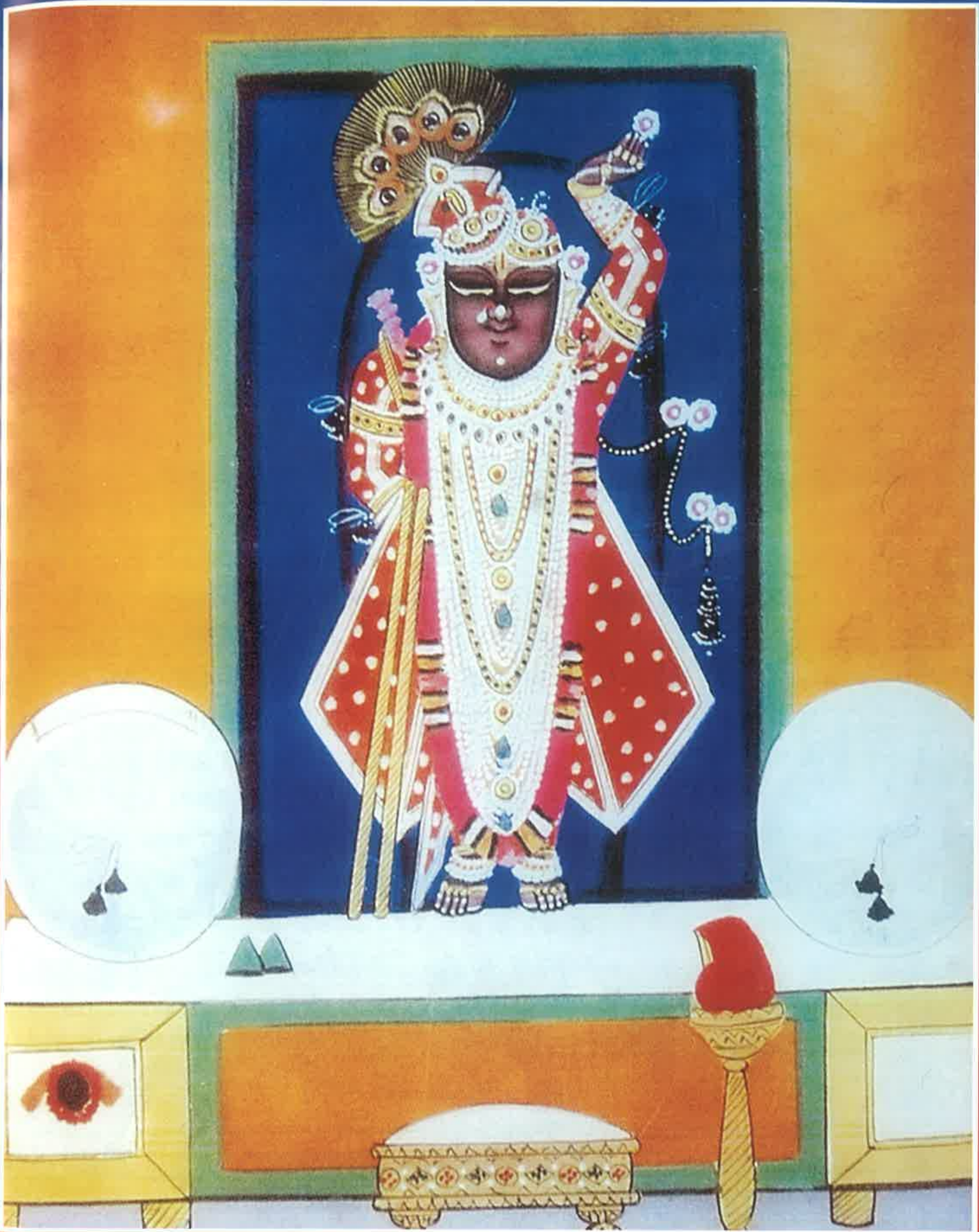

संवतसरोत्सव, चैत्र शुक्ला प्रतिपदा श्रृंगार

श्री नाथ जी के साक्गरिया जी गोपाल दास जी का सप्रेम जय श्री कृष्ण

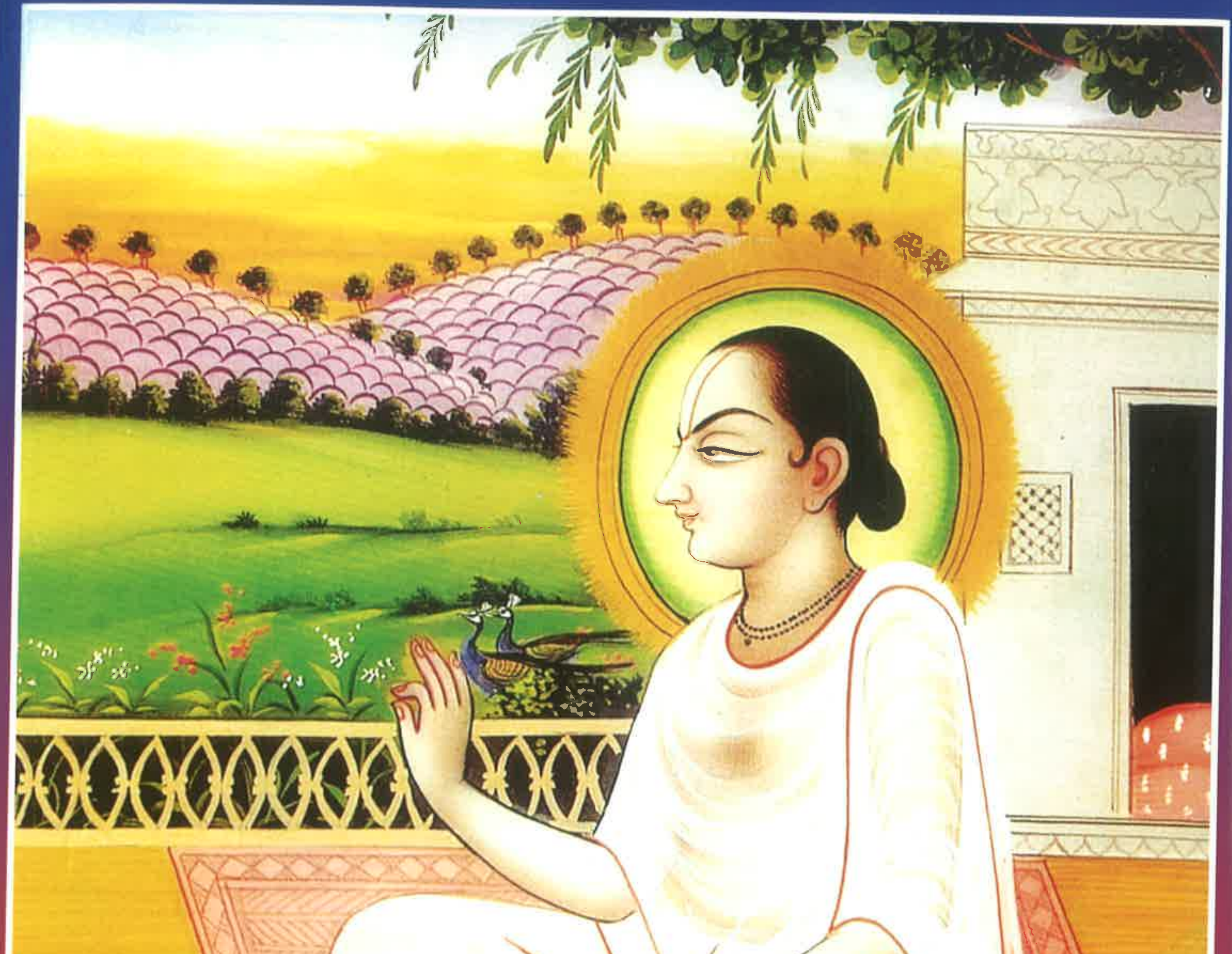

दाऊलाल शर्मा, सूरज देवी, दिनेश चन्द्र एवं पियुष भानु शर्मा परिवार
नि. लोधाघाटी, नाथद्वारा वालों का सदैन्य जय श्री कृष्ण

(राग बिलावल–चोखड़ा) व्रतधरि देवी पूजी, जाके मन अभिलाषा न दूजी। कीजै नन्द–पुत्र पति मेरे, पैहों जो अनुग्रह तेरे।। छन्द।। कर अनुग्रह वर दियो जब, बरस भरलों तप कियो। त्रैलोक्य सुन्दर पुरूष भूषण, रूप गुण नाहिन बियौ।। इत उबटि सोल सिंगार सखियन, कुँवरि चौरी जहाँ बनी। जा हित के व्रत नेम संयम, सो धरी बिधना ठनी।।१।। मुकुट रचि मौर बनायो। माथें धरि हरि वर आयो। तन सांवल पीत दुकूले। देखतहि घन दामिनी भूले।। छन्द।। दामिनी घन कोटि बारों, जब निहारों मुख छबि। कुण्डल बिराजत गंड मण्डल, नही शोभा शशि रवि।। और कौन समान त्रिभुवन, सकल गुण जा माहिं हैं। मानो मोर नाचत संग डोलत, मुकुट की परछाहि है।।२।। गोपी सब न्यौते आई। मुरली धुनि पठें बुलाई। जहां सब मिली मंगल गाये। नव फूलन के मंडप छाये।। छन्द।। छाजे जु फुलन कुंज मंडप, पुलिन मे बेदी रची। बैठे जु श्यामा स्याम वर, त्रैलोक की शोभा सची। उत कोकिलागण करें कुलाहल, इत सबें व्रजनारियां। आईजु न्यौते दुहुदिशतें, देत आनन्द गारिया।।३।। रास मंडल भुज जोरी। स्याम सांवरे श्री राधा गोरी। पाणिग्रहण विधि कीनी। तब मण्डप भ्रम भांवर दीनी।।छंद।। दीनी जु भांवर कुंजमण्डप, प्रीति गांठ ह्रदय परी। शरद् निश पून्यौ विमल शशि, निकट वन्दा शुभ घरी।। गायेजु गीत पुनीत सखियन, वेद रूचि मंगलध्वनी। नन्दसुत वृषभान तनया, रास में जोरी बनी।।४।। जहाँ मन्मथ सेन बराती। तहाँ द्रुम फूले नाना भांती। सुर बंदी जन यश गाये। तहां मधवा वाजिंत्र बजाये।।छंद।। वाजिंत्र बाजे शब्द नभ सुर पुष्प अंजुली बरखहीं। देव व्योम बिमान बैठे जय शब्द करके हरख हीं।। "सुरदास" ही भयौ आनन्द, पूजी मनकी साधिका। मदन मोहनलाल दुल्हे दुलहनि श्री राधिका।।५।।

अभ्यंग समय, (राग देवगंधार) कर मोदक माखन मिश्री ले, कुंवर के संग डोलत नन्दरानी।। मिसकरी पकरि न्हवायौ चाहत, मुख बोलत मधुरी बानी।।१।। कनकपटा आँगन मे राख्यौं, शीत–उष्ण धर्यों पानी।। कनक कटोरा सोधो उबटनो, चंदन कांगसी आनी।।२।। यों लाई मज्जन हित जननी, चित चतुराई ठानी।। मन में मतौ करत उठ भाजे, दुखित केस अरूझानी ।।३।। निरख नयन भर देखत रानी, सोभा कहत न बानी।। गात सचिक्कण यों राजत है, ज्यो घन तड़ित लपटानी।।४।। आओ मनमोहन मेरे ढिंग, बात कहुं एक छानी।। खिलोना एक तात जो लाये, बल अजहुँ नहीं जानी।।५।। राजकुंवर अधन्हात ते भाज्यो, ताकी कहुं कहानी।। बेनी

न बाढी रहीजु तनकसी, दुलहिनी देख हँसानी।।६।। बैठे आय न्हाय पट पहरे, आनन्द मन मे आनी।। “विष्णुदास” गिरिधरन सयाने, मात कही सोई मानी।।७।।

श्रंगार (राग बिलावल) आओ गोपाल सिंगार बनाऊँ। अति सुगन्ध कौ करूं उबटनों, पाछे उष्ण जलतें जु न्हवाऊँ।।१।। अंग अंगोछ गुहुँ तेर्। बेनी, फूलन रूचि रूचि माल बनाऊँ।। सुरंग पाग जरतारी चीरा, रतन खचित सिरपेच बंधाऊँ।।२।। बागौ लाल सुन्हेरी छापौ, हरी इजार चरणन बिरचाऊँ।। पटुका सरस बेंगनी रंग को, हँसुली हार हमेल धराऊँ।।३।। गज मोतिन के हार मनोहर, वनमाला लै उर पहराऊँ।। ले दरपन देखो मेरे बारे, निरखी निरखी उर नैन सिराऊँ।।४।। मधुमेवा पकवान मिठाई, अपने कर ले तुमहि जिमाऊँ।। “विष्णुदास” को यही कपाफल, बाल चरित्र यह निसदिन गाऊँ।।५।।

भोग श्रृंगार यशोदा मैया, श्री विठ्ठलनाथ के हाथ को भावे। नीकें न्हवाय श्रंगार करत हें, आछी रूचिसों मोहि पाग बंधावे।।१।। ताते सदाहों उहांही रहत हों, तू डर माखन दूध छिपावें।। “छीतस्वामी” गिरिधरन श्री विठ्ठल निरख नयन त्रय ताप नसावें।।२।।

नवनिकुंज देवी राधिके वरदायिनी, देवप्रिये वंदावन वासिनी।
करत लाल आराधन साधन करि प्रन, प्रतित नामावलि, मंत्र जपत जय विलासिनी।।१।। प्रेम पुलकि भावित गावत, अति आनन्द भर नाचत, रूप छबि देख मंद हासिनी। अंगन पट भूषण पहेराय, आरसी दिखाय, तोरत त्रण लै बलाय, सुख निवासिनि।।२।। कर जोरें चरण गहे, कहत चारू वचनावलि, विनती सुनौ दासकी, दुखरासी नासिनी। प्रतिपालौ करूणा मई, मोसु जिन मानकरो, प्राणदान दैहो, वदत ‘व्यास’ दासिनी।।३।।

राजभोग आते समय (गह भोजन के पद) (राग सारंग) दोउ मिल जेंवत कंचन थारी।। मधुमेवा पकवान मिठाई, परोसत है ललितारी।।१।। भोजन करत छहों रससों मिल, संग वषभान दुलारी।। अचवन को जमुना जल सीतल, कनक रत्न जरी झारी।।२।। अति सुगन्ध कपूर लोंग युत, प्रीति सों रूचिर संवारी।। हँस मुसकाय दशन खण्डित, बीरी “सुरदास” बलिहारी।।३।।

राजभोग (राग–सारंग) बल–बल आज की बानिक लाल।। कसुंभी पाग पीत कुल्हे, भरत कुसुम गुलाब।।१।। विश्व मोहन नव केसर को, तिलक दियो है भाल।। सुन्दर मुख कमल लपटावत, मत्त मधुप जाल।।२।। बरूनी पीत पहरे छूटे बंध, सुभग उरस विसाल।। “गोविन्द” प्रभु के पद नख परसत तरून तुलसी माल।।३।।

कुसुम गुलाब महल मे बेठे, श्री गिरीधारी श्यामा प्यारी।। जारी भांत विचित्र ता छबि, कुमक बनी तिवारी।।१।। बोहोंरंग कुसुम भूषण दम्पति, पहेरावत चहुंदिश ब्रजनारी।। वन्दावन खग मग अति सोहे, “ब्रजाधीश” प्रभु की बलिहारी।।२।।

भोग में (राग पुर्वी) आज बनेरी लालन गिरधारी, या बानिक पर बलिहारी।। चंपक भरी कूलह सिर लटकत, कसुंबी पाग छबी भारी।।१।। बरूनी पीत श्याम अंग अरगजा, मोंजे देखी मनमथ मनुहारी।। “गोविन्द” प्रभु पियसों रति मानी, पठई रसिक रिझाई प्यारी।।२।।

संध्या में, (राग ईमन) लाडिले लाल की बंदसि, कही न परे हो।। कुलह चंपक भरी अति सुन्दर, और लटपटी पाग रही आधे सिर धसि।।१।। बरूनी पीत पहरें, छूटें बन्द अरगजा, मोजें सोभा, स्याम उरसि।। “गोविन्द” प्रभु सुरति सिथिल दम्पति, प्रेम गलित बैठे अब, कुंजमहल तें निकसि।।२।।

शयन के पद (राग कान्हरौ) राखिहो अलक बिच, चंपकली गन गनी। जगमगात हीरा लाल, कुलह पर पाग अति बनी।।१।। सुभग नेन तरून मदमाते, मुसकाते अनअनी। “गोविन्द” प्रभु ब्रजराज कुँवर, धन धन हो धन धनी।।२।।

मान में (राग–बिहाग) आज आली अचरज सुन, मेरे प्रीतम आए मनावन।। तू जो नाहिन दुहुन समुझावत, रूस गये मनभावन।।१।। जाकी चरणरज ब्रहादिक सुरमुनि, पशु पंछीगन पावन।। तबतें न बिसरत मोहि सखीरी, “रसिकराय” मुखलावन।।२।।

पोढ़ते समय (राग केदारों) राय गिरिधरन संग राधिका रानी।। निबिड नवकुंज नवकंज सय्या रचि, नवरंग, पिय संग बोलत पिक बानी।।१।। नील सारी लाल कंचुकी गौर तन, माँग मोतिन खचित सुन्दर सुठानी।। अर्द्ध घूंघट ललन वदन निरखत, रसिक दम्पति परस्पर प्रेम ह्वदे सानी।।२।। लाल तनसुख पाग ढरकि भ्रू पर रही, कुल्हे चंपक भरी सेहरो सुहानी।। पाणि सों पाणि गहि उरसों लावत ललन, “गोविन्द” प्रभु ब्रजनपति सुरत सुखदानी।।३।।

कुसुम सेज पिय–प्यारी पौढ़े, करत हें रसबतियां।। हँसत परस्पर आनन्द हुलसत, लटक–लटक लपटात छतियां।।१।। अति रस भीने रीझेरी रिझवार, एक तन मन भई एक मति गतिया।। “रसिक” सुजान निर्भय क्रीड़त दोऊ, अंग अंग प्रतिबिम्बित दोउन के वसन भतियां।।२।।

चैत्र शुक्ल द्वितीया

श्रृंगार – पाग कतरा का और धोती उपर खुलेबंद चाकदार वागा।

वस्त्र – श्याम छापा का खुले बंद का वागा चाकदार लाल धोती रूपेरी किनारी की। श्री मस्तक पर लाल पाग पर मोरपिछ के कामका दोहरा कतरा ठाडे वस्त्र पीले रंग के तथा पिछवाई श्याम रंग के छापा की।

आभरण – नित्यानुसार हीरा मोती के।

मंगला में (राग विभास) **गोवर्धन गिरी सघन कन्दरा, रैन निवास कियो पिय प्यारी।। उठ चले भोर सुरत रंगभीने, नन्दनन्दन वृषभान दुलारी।।१।। इत विगलित कचमाल मरगजी, अटपटे भूषण रगमगी सारी।। उतही अधर मसि, पाग रही धसि, दुहूदिश छबि बाढी आति भारी।।२।। घूमत आवत रति रणजीते, करिणी संग गज गिरिवरधारी।। "चतुर्भुजदास" निरख दम्पति सुख, तन मन धन कीनों बलिहारी।।३।।**

श्रंगार में, (राग बिलावल) **शोभित सुभग लटपटी पाग, भीने रसिक त्रिया अनुराग।। कुंकुम अलक तिलक सेंदूर छबि, घूमत आवत और निश जाग।।१।। कछुक जंभात अरू माल मरगजी, पीक कपोल अधर मसि दाग।। "चतुर्भुजप्रभु" गिरधर नीके जानत, आलसवश सब अंग विभाग।।२।।**

शोभित सुरंग पाग, रही झुकी वाम भाग, नैनन की कोर तीखी, मोहनी भ्रोहन की।। कुण्डल अलक छबि, झलक कपोलनि पे, मनमें बिचारे बातें, प्यारी के मोहन की।।१।। हँसी हँसी परत फूल, झरत लाल अधरनि में, नासा गजमोती जोति, परसि जोहन की।। "कष्णदास" प्रभु, गिरिधर की छबि देख, और न कुछ देखत, अति ही लजीली आँखें, मदनमोहन की।।२।।

राजभोग आते समय (राग सारंग) **भोजन करत स्याम कुंजन में।। ग्वालन छाक अवार भई तोहु, सकुच न आई मन में।।१।। जमुना जल भरते भई देरी, चली थार ले दोऊ करन में।। सुन्दर पाक सिद्ध कर लाई, लेहो लाल भुजन में।। २।। भली भांति भोजन करवायो, जल भर दियो घटन में।। ओक मांड जल पिवत "रसिकराय", दई सैन नेननमें।।३।।**

राजभोग में, (राग सारंग) नयनन लागी हो चटपटी।। मदनमोहन पिय निकसे द्वारव्है शोभित पाग लटपटी।।१।। दूर जाय फिर चितयेरी मो तन, नयन कमल मनोहर भृकुटी।। "गोविन्दप्रभु" पिय चलत ललित गति, कछुक सखा अपनी गटी।।२।।

भोग में, (राग पूर्वी) सोहत लाल पाग साँकरे पेचन चोकरी।। सुन्दर कर केसन बिच राखी, सुग्रथित कुन्द करी।।१।। सुरति श्रमित अति सिथिल लोचन, निर्तत भुव रस भरी।। "गोविन्द" प्रभु प्यारी संग बैठे, जहाँ निविड निकुंज–दरी।।२।।

संध्या में, (राग गौरी) गोरज राजत साँवल अंग।। देख सखी बनतें ब्रज आवत, गोविन्द गोधन संग।।१।। अंबुज बदन नयन जुग खंजन, क्रीडत अपने रंग।। कुंचित केस सुदेस मानों, अलि सोभित ये संग प्रसंग।।२।। कबहुक बेनु बजावत कर धर, नाना तान तरंग।। "चतुर्भज" प्रभु गिरिधरनागर पर, वारौं कोटि अनंग।।३।।

शयन के पद (राग राजेश्वरी) पूजन चलो हो कदम्ब बनदेवी, आओ हमारे कोऊ संग।। पूजवति सकल घोषकी कामना, बलि न काहुकी कछु लेवी।।१।। भावभगति मानती सबहिन की, सीतल सुखद सरस सुरसेवी।। "गोविन्द" प्रभुसों कहत वृषभाननंन्दिनी, सुनाई कछुक बात ओरे बी।।२।।

मान में, (राग ईमन) झमकि चल राधे प्यारी तोही स्याम बुलावें।। तो बिन मोहन पान न खाई कोन मंत्र पढि साधे।।१।। तेरो विरह मोपें सह्यौ न परत है, विरहा अनल दाधे।। "सूरदास" प्रभु तिहारे दरस बिन, मोहन व्है गये आधे।।२।।

पोढ़ते समय, (राग बिहाग) पोढ़े माई मदन मोहन श्याम।। अनन्य होय चरनारविन्द भज, सकल पूरनकाम।।१।। अष्ट सिद्धि–नवनिधि द्वारें, योग भोग विश्राम।। उमापति, सुकदेव, नारद, रटत निसदिन नाम।।२।। सकल कला प्रवीन गिरिधर, राधिका भुज वाम।। कहत "कृष्णा" सुवस बसिये, श्रीनन्द गोकुलगाम।।३।।

चैत्र शुक्ल तृतीया

(गणगौरी)

शृंगार – पाग कतरा को और सूथन चाकदार वागा को।

वस्त्र – लाल चोफुली चुन्दडी के सुथन तथा वागो चाकदार खुले बन्द रूपेरी कोर के श्रीमस्तक पर चुन्दडी की पाग छज्जैदार, रूपेरी व सोनेरी जरी के काम का जमाव का कतरा तथा लुम तुर्रा रूपेरी बादला का, ठाडे वस्त्र हरा रंग के तथा पिछवाई लाल चोफुली चुन्दडी की रूपेरी कोर की।

आभरण – नित्यानुसार, चैत्री गुलाब के पुष्पों के दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष –आज गोपीवल्लभ भोग में चिरोंजी के लड्डु का भोग आवे।

मंगला में, (राग खट) **एक दिन आपुने, खिरक को जातही, मिल गयो सांवरो, हौं अकेली।। देखी मोहे मन्द, मुसकाय नैनन हँस्यो, के गोरी है तू, कनकबेली।।१।। अतिहि जगमग रही, चूनरी रंगभरी, कंचुकी कुचन पर, अति बिराजे।। शरद् के चन्दसों, बदन जगमगि रहयों, देखि या रूपको, कौन भ्राजे।।२।। नासिका नथनि बिराजे, झलमल रह्यों ऐसो, बड़ो मुक्ता तैं, कहाँ जु पायो।। ऐसो न देख्यो–सुन्यों, कहुँ या देस में, देखत ही लपटी मन, लटकि आयो।।३।। चाल गजराज की, लंक मगराज की, चिबुककी छबि देखी, चित्त चुरायो।। बंक अवलोकनि, बडी अंखियान में, कौनके ठगन को, अंजन लगायो।।४।। जानती नाहि मैं, नाथ तुम कौन हो, करत हों जान, जाकी बडाई।। या गामकी रीत, रसरीत जानौं नाहिं, भये दिन चार, गौनें जु आई।।५।। या गामकी रीत, रसरीत सब कहेंगे, नेक बैठो चलो, कुंज छांही।। जान गई बात में, चल्यो जा साँवरे, कुंज तर हमें, कछु काज नांहि।।६।। मुसकि ठाडी भई, धाय भुज गहि लई, अधरन पान दे, उर लगाई।। दई एक फूलकी, माल पहिराई के, कही मैं आपुने, हाथन बनाई।।७।। ता दिनतें लाल, उरमाँझ जगमग रह्यो, रैन–दिन कछु नाहिं सुहावै।। "सूर" किशोर, यह प्रेमरस छाँडिके, अंब तजि कौन को, नींब भावे।।८।।**

शृंगार में, (राग बिलावल) सुभग सिंगार निरखि मोहन को, ले दर्पण कर पियही दिखावें।। आपुन नेक निहारिये बलि जाऊँ, आजकी छबि कछू कहत न आवें।।१।। भूषण वसन रहे फबि ठांई–ठांई, अंग–अंग छबि चित्त हि चुरावें।। रोमरोम प्रफुलित व्रजसुन्दरी, फूलन रूचिरूचि माल बनावे।।२।। अंचल वार करत न्यौछावर, तनमन अति अभिलाष बढावें।। “चतुर्भुज” प्रभु गिरिधरकों स्वरूप–सुधा, पीवत नयन पुट तप्ति न पावें।।३।।

राजभोग आते समय, (राग सारंग) क्यों बैठी राधे सुकुमारी।। बुझत है वषभान की महेरी, क्यों जेंवत बाबा की थारी।।१।। आज हमारे गौरी को व्रत, ताकी विध तोंही पे पाऊँ।। सुन्दर सुभग सलोनो ढोटा, ताको पुजही हाथ जीमाऊ।।२।। एसो ढोटा नन्दरायको, हों अबही ले आऊँ।। तुम जानोरी सयानी मैया, बेग चलो हो चरन शिर नाऊँ।।३।। सुनरी जसोमति कुंवर आपनो, बेग पठे हों नोतन आई।। “परमानन्द” स्वामी सब जानत, देख देखतें सब निध पाई।।४।।

फूल गई वषभान दुलारी।। पेहले तो निरखत नैनन भर, को पूजो एकातन न्यारी।।१।। कर अंजन नैनन दे मोहन, अपने हाथ जीमायो।। अंग अंग सब भूषण भुषित, वसन मनोहर तिलक करायों।।२।। रूप रास केसेंक बरनों, नवनागरी नव नागर पायो।। रति–रस केलि करो दोऊ जन, लीला रस “परमानन्द” पायो।।३।।

कुंवर बैठे प्यारी के संग, अंग अंग भरे रंग, बलि बलि बलि बलि त्रिभंगि, युवतिन के सुखदाई।। ललित गति विलास हास, दम्पति–मन अति हुलास, विगलित कच सुमनवास, स्फुटित कुसुम निकट तेसी, ये सरद रैन सुहाई।।१।। नवनिकुंज भ्रमरगुंज कोकिला कल कुंजत–पुंज, सीतल सुगंध मंद बहत, पवन सुखदाई।। “गोविन्द” प्रभु सरस जोरी, नवकिशोर नवकिशोरी, निरख मदन फौज मोरी, छेलछबीलेजु नवलकुँवर ब्रजकुल मनिराई।।२।।

भोग में, (राग ईमन) श्रीराधे कौन गौरि तैं पूजी।। वृन्दावन गोकुल गलियनमें, सब कोऊ कहत बहुजी।।१।। मदनमोहन पियकों बस कीनो, और बात नहीं सूझी।। “परमानन्ददास” को ठाकुर, तोसी त्रिया नहीं दूजी।।२।।

संध्या में, (राग ईमन) **पुजन चलो हो कदम्ब बन देवी आओ हमारे कोऊ संग।। पूजवत सकल घोषकी कामना, बलि न काहुकी कुछ लेवी।।१।। भावभगति मानत सबहिनकी,सीतल सुखद सरस सुरसेवी।। "गोविन्द" प्रभुसों कहत वषभाननंदिनी, सुनाई कछुक बात औरेबी।।२।।**

शयन भोग आते समय (ब्यारू के पद) (राग कान्हरौ) **मोहन लाल बियारू कीजे।। व्यंजन मीठे खाटे खारे रूचिसो मांग जननी पे लीजें।।१।। खोवा मिश्री और बासोंधी, ता ऊपर तातो पय पीजें।। सखन सहित मिल जेंवत रूचिसो जूठन "आसकरन" को दीजे।।२।।**

शयन में, (राग बिहाग/केदारों) **तो सी त्रिया नाहिन भटू री।। रूप रासि रसिकमनि, जाहि भए नंदलाल लटू री।।१।। यों कर सुदढ़ करि गाँठि दई बिधि सुरंग चूनरी पीत–पटू री। "परमानन्द" स्वामी रति नायक, तू नागरी वे नागर–नटू री।।२।।**

मान में, (राग ईमन) **तोहें लालन बुलावे झमकि चल राधे।। तो बिन मोहन पान न खात, कौन मंत्र पढि साधे।।१।। निसि–बासर तेरो ध्यान धरत हैं, बिरह अग्नि तन बाँधे।। "सूरदास" प्रभु रसिक सिरोमनि, तो बिनु मोहन आधे।।२।।**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **पोढे रंग रमनीय रमन।। कुसुम सेज सँवार सखी री, कुंज कुसुमन भवन।।१।। रसिक मुदित अपार सुखनिधि, कोक–कोटिक वदन। अति आनंदित मिले दोऊ, सुखद सीतल पवन।।२।। तरनि–तनया तीर सुभग सरोज चाँदनी किरण।। गाऊँ गीत पुनित, "सुर" प्रभु सुनत श्रवन।।३।।**

चैत्र शुकल चतुर्थी

शृंगार – पाग, चमकणी चन्द्रिका, सूथन एवं चाकदार खुले बंद वागा का।

वस्त्र – पंचरंगी लेहरिया के शुथन तथा वागो चाकदार खुले बन्द रूपेरी कोर के श्रीमस्तक पर लहरीया की छज्जेदार पाग पर हरे डंके की चमकणी चन्द्रिका, ठाडा वस्त्र सफेद, पिछवाई चित्राम की निकुंज मे गोपीजन घुमर गरबा लगाती हुई गणगौर की।

आभरण – नित्यानुसार। यह दूसरी गणगौर चंद्रावलीजी के भाव की है श्रंगार ऐच्छिक है।

विशेष – आज गोपीवल्लभ भोग में विशेष सामग्री धराई गई।

मंगला में, (राग विभास) **प्रात समें नवनिकुंज द्वारे, ललिता ललित बजाई बीना।। पोढ़े सुनत स्याम श्रीस्यामा, दंपति चतुर नवीन–नवीना।।१।। अति अनुराग सुहाग भरे दोऊ, कोक कला प्रवीन–प्रवीना।। "बिहारीदास" बलबल जोरी पर, तन मन धन न्योछावर कीना।।२।।**

शृंगार **में,** (राग बिलावल) **मोहन घूमत रतनारे नयन, सँकुचत कछू कहत न बैन, सैन ही से उतर देत, नन्द के दुलारे।। भूषण–बसन अटपटे, सीस पाग लटपटी, रतिरन लई झटपटी, सुभग स्याम प्यारे।।१।। सुबस कियो कुँजसदन, भोर आये जीत मदन, पलट पहरे बसन, अजहुँ न सँभारे।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिवरधर, दर्पण ले देखियेजू, सिन्दूर को तिलक भाल, अधरन मसि कारे।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **बैठे लाल कुंजन मे जो पाऊं।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े)**

राजभोग (राग सारंग) **बैठे हरि राधा संग, कुंज भवन अपने रंग, कर मुरली अधर धरे, सारंग मुख गाई।। मोहन अतिहि सुजान, परम चतुर गुन निधान, जान बूझ एक तान, चूक कें बजाई।।१।। प्यारी जब गह्यो बीन, सकल कला–गुन–प्रवीन, अति नवीन रूप सहित, वही तान सुनाई।। "वल्लभ" गिरिधरनलाल, रीझ दई अंकमाल, कहत भले भले लाल, सुन्दर सुखदाई।।२।।**

भोग में (राग पूर्वी) पाछे ललिता आगे श्यामा प्यारी, ता आगे पिय मारग में, फूल बिछावत जात।। कठिन कली बीनि करत न्यारी–न्यारी, पग गड़िवै हि डरात।।१।। अरूझी लता करनि निरवारत, लै डारत द्रुम पल्लव पात।। “सूरदास” प्रभुकी अधीनता देखत, मेरे नैन सिरात।।२।।

संध्या आरती, (राग गौरी) झुक रही सुन मुरली की टेर।। उतते आई पनियाँ के मिस, गौ आवन की बेर।।१।। मोरचन्द्रिका मुकुट बिराजत, चपल नयनकी फेर।। “परमानन्द” प्रभु मिले खिरकमें, यातें भई अबेर।।२।।

शयन में, (राग बिहाग) राधेजु के प्राण गोवर्धन धारी।। तरूण माल ढिंग कनकलता सी, हरिजु के प्रान राधिका प्यारी।।१।। मरकत मणि नन्दलाल लाडिलों, कंचन तन वषभान दुलारी।। “सूरदास” प्रभु प्रीत निरन्तर, जोरी जुगल बने बनवारी।।२।।

मान में, (राग ईमन) आलिरी जब जब देखो जाय हरिको वदन, तब नयना मेरे मोपें न आवहिं।। ऐसे रूपलालची ललचाय रहे मानों, ज्यों बिछुरे जलचर जल पावहिं।।१।। रूपके रिझाने नयना रसमे मिल मग्न भये, अब सखी हमसों न बतरावहीं।। “मुरारीदास” प्रभु एते पर निठुर भये, अपनी ओट दुरावही।।२।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) कुंज में पोढे रसीक प्रिय–प्यारी।। सखी मुदित अति चित्रविचित्र पहिरे विविध रंग सारी।।१।। हँसत परस्पर बात रस बरखत आनन्द उमग्यों भारी।। सुरति रंगके रसमें भीजें, “नन्ददास” बलिहारी।।२।।

चैत्र शुक्ल पंचमी

गुलाबी गणगौर

श्रृंगार – पाग गोलचन्द्रिका तथा घेरदार वागा।

वस्त्र – वस्त्र गुलाबी रूपेरी कोर मलमल के, शुथन तथा वागा घेरदार कटि में पटका श्रीमस्तक पर गुलाबी रंग की छोड़वाली पाग पर रूपेरी जरीके कामकी गोल चन्द्रिका। ठाडा वस्त्र गुलाबी तथा पिछवाई गुलाबी रूपेरी कोर की।

आभरण – नित्यानुसार। हीरा, मोती, पन्ना तथा सोने के आभरण धराये गये हैं तीसरी गणगौर।

विशेष – आज श्रीनाथजी राजभोग से संध्या तक गुलाब की फूलमंडली में बिराजे। आज कभी कभी मुकुट व गोल कांछनी का श्रृंगार भी आता है। आज से ऊपर का पंखा चालु होता है। गोपीवल्लभ भोग में विशेष सामग्री अरोगाई जाती है।

मंगला में, (राग बिलावल) **श्रीयमुनाजू के तीर नंदलाल बजाई बाँसुरी।। अधर–करन मिलि सप्त सुरनसों, उपजत राग रसाल री।।१।। छूटी लट लटपटात बदन पर, टूटति मुक्तामाल री।। व्रजवनिता धुनि सुनी उठि धाई, रहिय न अंग सम्हाल री।।२।। बहत न नीर समीर न डोलत, बृंदाबिपिन संकेत री।। सुनि थावर अचेत चेत भये, जंगम भये अचेत री।।३।। अफल फले फल फूल भये री, झरे हरे भये पात री।। उमगि प्रेम जल चल्यो सिखिर तें, गर्यो गिरिन कौ गात री।।४।। तन न चरत हैं मृगामृगीरी, तान परत जब कान री।। सुनत गान गिरि पर्यो धरनी पर, मानों लागे बान री।।५।। सुरभी त्याग दियों केहरी कों, हरत श्रवन की डार री।। एक भवन पुनि चढ़ि बैठे हैं, निरखत श्रीमुख चारू री।।६।। खग रसना रस चाखि वदन पर, बैठे निमिष न मारि री।। चाखत ही फल परें चोंचतें, रहे जू पंख पसारि री।।७।। सुर–नर देव–असुर सब मोहे, छायो व्योम विमान री।। "चतुर्भुजदास" कहे कौन बस, या मुरली की तान री।।८।।**

श्रृंगार में, (राग बिलावल) **कमल–मुख देखत कौन अघाय।। सुनहि सखि लोचन–अलि मेरे, मुदित रहे अरूझाय।।१।। सोहत मुक्तामाल स्याम–तन, जनु बर फूली आय।। गोवर्धनधर के अंग अंग पर, "कष्णदास" बलिजाय।।२।।**

राजभोग आते समय (गह भोजन के पद) (राग धनाश्री) जेंवत नन्द कान्ह बलभैया।। कनक थार खटरस बहु व्यंजन, माखन दूध मिठैया।।१।। उठ भाजत सुत केली चाव लख, प्रफुल्लित यशुमति मैया।। "व्रजाधीश" प्रभु सुख व्रजनन को, दृगन सुधा बरखैया।।२।।

(राग आसावरी) हरि भोजन करत विनोद सों।। कर कर कौर मुखारविंद में, देत जसोदा मोद सों।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई, दूध दह्यो घृत ओद सों।। "परमानन्द" प्रभु भोजन कीन्हों, भोग लग्यो संखोद सों।।२।।

राजभोग में, (राग सारंग) कमल–मुख देखत तृप्ति न होय।। इहि सुख कहा दुहागिन जानै, रही निसाभर सोय।।१।। ज्यों चकोर चाहत उडुराज हिं, चन्द्र बदन रहि जोय।। नैक अँकोर देति नहिं राधे, चाहति पिय ही निचोय।।२।। उनि तो अपुनो सरबस दीनों, एक प्रान वपु दोय।। भजन भेद न्यारौ "परमानन्द", जानत बिरलो कोय।।३।।

कुसुम गुलाब महल मे बैठे श्री गिरिधारी श्यामा प्यारी।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े)

भोग में, (राग पूर्वी) छबिले लालकी यह बानिक बरनी न जाई।। देखत तन–मन करि न्योछावर, आनन्द उर न समाई।।१।। कंदमूल फल आगें धरिके, रही हैं सकल सिर नाई।। "गोविन्द" प्रभु पिय सों रति मानी, पठई रसिक रिझाई।।२।।

संध्या में, (राग ईमन) तेरे सुहागकी महिमा, मोपें बरनी न जाई।। मदनमोहन पिय, वे बहुनायक, जाको मन लियो है रिझाई।।१।। कुंवरी कुसुम गुहत अपने कर, लिखत तिलक भाल, रस भरे रसिकराई।। "गोविन्द" प्रभु रीझि, ह्रदयसों लगाय लई, लाडिलें कुँवर मन भाई।।२।।

शयन के पद (राग कान्हरौ) पहिरे माल गुलाब सुरंगकी, ले राधे मोहन तोही दीनी।। अबही उरतें उतार लई है, अपने अंगराग रसभीनी।।१।। मान निहार रे निहारि नैनभर, हंसि गहि हाथ सखीपें लीनी।। "सूर" कहे जिन करो हो सुन्दरी, गिरिधर छेल तोपें बस कीनी।।२।।

मान में, (राग केदार) रूप रस पुंज, वरनो कहा चातुरी।। मान मेरो कह्यो चतुर चन्द्रावली, निरखमुख कमल, उडुराज शंकातरी।।१।। तिलक मृगमद भाल, द्विरद की सी चाल, देख रीझे लाल, मंद मुसकातरी।।२।। "सूर" नगधर केलि, अंस पर भुज मेलि, मुग्धपद ठेल दे, मदन सिर लातरी।।३।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) नवलकिशोर नवल नागरिया।। (यह पूरा पद पेज २० पर पढ़े)

चैत्र शुक्ल षष्ठी

श्री यदुनाथ जी का उत्सव

(देहरी, बन्दनमाल, हांडी)

श्रृंगार – कुल्है–सुनहरी घेरा को।

वस्त्र – केसरिया मलमल के, रूपेरी कोरके, शुथन तथा वागो चाकदार खुले बन्द का, श्रीमस्तक पर कुल्है केसरिया तथा उस पर सोनेरी बादला को घेरा तथा ठाडा वस्त्र बादली रंग के तथा पिछवाई केसरिया रंग की रूपेरी कोरकी।

आभरण – नित्यानुसार। भारी श्रंगार किया गया है। वनमाला का श्रंगार चरणारचिंद तक किया गया है।

विशेष – श्री गोपीवल्लभ में जलेबी तथा राजभोग मे सेव तथा पेठाको बिलसारू आरोगायों गयो है।

मंगला में, (राग बिलावल) **मोहन घूमत रतनारे नयन (यह पूरा पद पेज ३१ पर पढ़े)**

श्रृंगार में, (राग बिलावल) **बाल–दसा गोपाल की, सब काहू को प्यारी।। लै लै गोद खिलाव हि, जसुमति महतारी।।१।। पीत झगुलिया तन सौहे, पग नूंपुर बाजैं।। क्षुद्रघंटिका कटि बनी, कर कंकन राजैं।।२।। मुरिमुरि नाचै मोर ज्यों, सुर नर मौहै।। "कष्णदास" प्रभु नन्द के, आँगन–मधि सौहे।।३।।**

राजभोग आने पर (छाक) (राग–सारंग) **मोहन जेंवत छाक सलौनी।। सखन सहित हुलसे दोऊ भैया, झपटत कर लै दोहनी।।१।। आज बिंजन बने कौनके, चाहत हरिकी कोहनी।। "परमानन्द" प्रभु जेंवत रूचिसों, पहिलें करि लैं बोहनी।।२।।**

सुबल गिरिघाटी चढ टेरत।। आवो बेगी चतुर छकहारि, गिरिधर पेंडो हेरत।।१।। भई अवेर भूख जब लागी, तबहि उपरैना फेरत।। "कुंभनदास" औसर पर पहुँची, रस में दान निवेरत।।२।।

राजभोग में (बधाई) (राग आसावरी) **सेवक की सुखराशि सदा, श्री वल्लभ राजकुमार।। दरसन ही प्रसन्न होत मन, पुरूषोतम अवतार।।१।। सुदष्टि चितै सिद्वान्त बतायो, लीला जग विस्तार।। इह तजि आन ज्ञान कहाँ धावत, भूले कुमति विचार।।२।। "चत्रर्भुज" प्रभु उद्धरे पतित, श्री विठ्ल कृपा–उदार।। जाके चरण गही भुज दढ करि, गिरिधर नन्द– दुलार।।३।।**

भोग में, (राग पूर्वी) **आज बनेरी लालन गिरिधारी।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े)**

संध्या में, (राग नाइकी) **राखी हो अलकन बीच चंपकली गनगनी।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े)**

शयन में, (राग ईमन) **कनक कुसुम अति सोमित श्रवननि।। घूमत अरून तरून मदमाते, मुसकाते आननि।।१।। गोल पाग पर कुल्हे सुरंगा, तामें अलक रेख बनी।। "गोविन्द" प्रभु त्रैलोक विमोहित, कंठ कौस्तूभ मनी।।२।।**

मान के पद (राग ईमन) **तेरे सुहाग की महिमा मोपें वरणी न जाई।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय (राग–केदारों) **राय गिरिधरन संग राधिका रानी।। (पूरा पद नित्य पद के पेज २५ पर पढ़े)**

चैत्र शुक्ल सप्तमी

शृंगार – ग्वाल पगा का।

वस्त्र – श्याम एक दाली चुन्दडी के रूपेरी कोर के, शुथन तथा वागा चाकदार खुला बन्द का, श्रीमस्तक पर ग्वाल पगा पर सोनेरी जरी के काम की मोर शिखा। ठाड़ा वस्त्र गुलाबी रंग के, पिछवाई श्याम एक दाली चुन्दडी की रूपेरी कोर की। श्रंगार में पिछवाई श्री गिरिराजजी, श्री यमुनाजी तथा श्री गोस्वामी बालको के चित्रकाम वाली। मोती व पीरोजां के आभरण, मोरशिखा, शीशफूल व लोलक बंदी लड़वाले कर्णफूल धराये गये हैं।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – नये वर्ष से प्रभु डोल तिबारी में पोढ़ते है।

मंगला में, (राग विभास) **गोवर्धन–गिरि सघन कन्दरा (यह पूरा पद पेज २६ पर पढ़े)**

शृंगार में, (राग–बिलावल) **सुन री सैन दई ग्वालनको, मोहनलाल बजायो बैनु।। प्रातसमें जागे अनुरागे, बृंदावन आनन्द भयो माई, चले चरावन धैनु।।१।। बरन बरन बानिक बनि आयें, पट–भूषन जसुमति पहराये, भाल तिलक दे आँजे नैनु।। "हरिनारायन स्यामदास" के प्रभु, माई प्रगट भये, धरी चन्द्रिका सीस, सब ब्रजजन सुख दैनु।।२।।**

राजभोग आते समय छाक के चार पद (राग–सारंग) **सुबल गिरिघाटी चढ़ टेरत।। आवो बेगी चतुर छकहारी, गिरिधर पेंडो हेरत।।१।। भई अबेर भूख जब लागी, तबही उपरैना फेरत।। "कुंभनदास" औसर पर पहुँची, रसमें दान निवेरत।।२।।**

गिरि पर चढ़ गिरिवरधर टेरें।। अहो भैया सुबल श्रीदामा, लावहु गाय खिरक के नेरे।।१।। भई अवेर जो छाक खायें, कछुक घैया पियें सवेरे।। "परमानन्द" प्रभु बैठ सिलन पर, भोजन करत ग्वाल रहे घेरें।।२।।

मोहन जेंवत छाक सलौनी।। (यह पूरा पद पेज ३५ पर पढ़े)

हँसत परस्पर करत किलोल।। व्यंजन सबै सराहे मोहन, मीठे कमल वदन के बोल।।१।। तोरि पलासपत्र बहुतेरे, पनवारौ जोर्यो बिस्तार।। चहुँ दिसी बैठी ग्वाल–मंडली, जेंवन लागे नन्दकुमार।।२।। कौतुक देखहिं सबन देवता, यज्ञपुरूष हैं नीके रंग।। शेष प्रसाद अबहि हम पायों, "परमानन्ददास" हो संग।।३।।

राजभोग में, (बधाई) (राग सारंग) सुनरी सैन दई ग्वालन कों मोहनलाल बजायो बैनु।। (यह पूरा पद पेज ३७ पर पढ़े)

राग रंग राख्यो री मुरली में, कहा कहौं री लाल सुघर।। तान तरंग स्वर–भेद, अरू मिलवत अति गति, बिचबिच मिलवत, विकट अवधर।।१।। चोंख मांखनकी रेख तामें, गायन टेरत लाँबे लाँबे स्वर।। बिचबिच लेत तिहारो नाम, सुन री सयानी, “गोविन्द” प्रभु ब्रजरानी के कुँवर।।२।।

भोग में, (राग–पूर्वी) हाँकें हटकि–हटकि गाय ठठकि ठठकि रही, गोकुल की गली सब साँकरी।। जारी अटारी झरोखन गोखन झाँकत, दूर दूर ठौर ठौरतें परत काँकरी।।१।। चंपकली कुंदकली बरखत रसभरी, तामें पुनि देखियत लिखे है आंकरी।। “नन्ददास” प्रभु जहीं जहीं द्वारे ठाढ़े होत, तहीं तहीं वचन मांगत, लटक लटक जात, काहूसों हाँ करी, काहूसों ना करी।।२।।

संध्या में, (राग–कान्हरौ) ग्वालन संग गवन बनमें, कहा कहा कीयों हो कहो।। कहां कहां गाय चराई, पिवाई कौन घाट, ले कहां कहां रहे अहो।।१।। स्याम धाम मुख लागी है धाम, राम संग खेलन बन हो।। “रसिक” प्रीतम सो, बुझत नंन्दरानी, बात बन की कहत कहा सकूचत हो।।२।।

शयन भोग आते समय (ब्यारू के पद) (राग–कान्हरौ) राधा मोहन करत बियारू।। एक कर थार सँवारे सुन्दरी एक वेष एक रूप उज्यारी।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई दम्पति अति रूचिकारी।। “सूरदास” को जूठन दीन्हीं अति प्रसन्न ललितारी।।२।।

शयन में, (राग केदारो) कदम बन बिथन करत विहार।। अति रस भरे मदन मोहन पिय तोर्यो पिया उर हार।।१।। कनक भूमि बिथुरे गजमोति, कुंज कुटी के द्वार।। “गोविन्द” प्रभु श्रीहस्त कर पोवत, सुन्दर ब्रजराज कुमार।।२।।

मान मिलाप में, (राग केदारों) राधिका आज आनन्द में डोले।। साँवरे चन्द गोविन्दके रसभरी, दूसरी कोकिला मधुर स्वर बोले।।१।। पहरे तन नीलपट कनक–हारावली, हाथ ले आरसी रूप को तोले।। कहत “श्रीभटट” ब्रजनारी नागर बनी, कष्ण के शील की ग्रंथिका खोलें।।२।।

पोढ़ते समय (राग केदारों) राय गिरिधरन संग राधिका रानी (पूरा पद पेज २५ पर पढ़े)

चैत्र शुक्ल अष्टमी

श्रृंगार – पाग चन्द्रिका को।

वस्त्र – लाल सुथन तथा वागा घेरदार सोनेरी छापा एवं कोर का तथा पटका। लाल पाग पर सादी मोर चन्द्रिका, ठाड़ा वस्त्र पीला रंग के तथा पिछवाई लाल रंग की।

आभरण – हरे मीना के, भारी श्रंगार। कर्णफूल चैत्री गुलाब के पुष्पों की दो मालाजी धराये गये हैं।

मंगला में, (राग विभास) **गोकुल की पनिहारी, पनियाँ भरन चलि, बड़े–बड़े नयना तामें, फबि रहयो कजरा। पहिरे कसुंभी सारी, अंग अंग छबि भारी, गोरी गोरी बँहियनमें, मोतिन के गजरा।।१।। सखी संग लिये जात, हँस हँस बूझत बात, तन हूँ की सुधि भूली, सीस धरें गगरा। "नन्ददास" बलिहारी, बिच मिले गिरिधारी, नयनन की सैनन में, भूल गई डगरा।।२।।**

श्रंगार में (राग–बिलावल) **सोभित सुरंग पाग, रही झूकी वाम भाग, नैननकी कोर तीखी, मोहनि भ्रौंहन की।। कुंडल अलक छबि, झलक कपोलनि पे, मनमें विचारे बातें, प्यारी के मोहन की।।१।। हँसि हँसि परत फूल, झरत लाल अधरनि में, नासा गजमोति जोति, परसि जोहन की।। "कृष्णदास" प्रभु गिरिधरकी छबि देख, और न कछु देखत, अति ही लजीली आँखे, मदनमोहन की।।२।।**

राजभोग आते समय (राग–सारंग) **छाक के पद बिहारी लाल आई छाक सलोनी।। अति अद्‌भुत पठई चन्द्रावली, एक गाँठि द्वै दौनी।। १।। टेरत स्याम भुजा ऊँची करि, गई सुबास अगौनी।। "कृष्णदास" प्रभु गोवर्धनधर, सब विध रसिक रिझौनी।।२।।**

आगे आऊ री छकहारी।। जब तुम टेरे तब हों बोली, सुनी न टेर तिहारी।।१।। मैया छाक सवारे पठई, तूं कित रही अवारी। अहो गोपाल गैल ही भूली, मधुरे बोलन पर वारी।।२।। गोवर्धन उद्धरन धीर–सों, प्रीत बढी अति भारी।। "जन भगवान" मगन भई ग्वालिनी, तन की दसा बिसारी।३।।

ऐ ग्वाल–मंडली भोजन करत गुपाल।। पठई छाक जसोदा मैया, व्यंजन बहुत रसाल।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई, लाई सुन्दर बाल।। खात–खवावत हँसत परस्पर, तारी दे नन्दलाल।।२।। रूचि उपजत तब बतियाँ मीठी, करि सबे विधि ख्याल।। “रसिक” सिरोमनि गिरिकी छैयाँ, राजत उर बनमाल।।३।।

ये शीतल छैया स्याम ठाड़े, भोजन की जान बिरियाँ।। वाम भुजा सखा अंस दीन्हे, दक्षिण कर दूजे द्रुम डरियाँ।।१।। चलिये जु गायन टेरी बलदाऊ सों, कहत बलि लेहु अपनी अरियाँ।। “सूरदास” प्रभु बैठे कदम्ब छैया, दूध की दोहनी लीनी फरियाँ।।२।।

राजभोग में (राग–सारंग) आजकी बानिक कही न जाय, बैठे अब निकस कुँन्जद्वार।। लटपटी पाग सिर सिथिल, चिकुर चारू, खसित बरूहा चन्द, रस भरे, ब्रजराज कुमार।।१।। श्रमजल बिन्दु कपोल बिराजत, मानों ओस कन नीलकमल पर।। “गोविन्द” प्रभु लाडिलों ललन बलि, कहा कहौं अंग अंग सुन्दरवर।।२।।

भोग में (राग–पूर्वी) धरे टेढ़ी पाग टेढ़ी चन्द्रिका, टेढे त्रिभंगीलाल।। कुण्डल किरन मानों, कोटि रवि उदय होत, उर राजत बनमाल।।१।। साँवरे वदन पीतांबर ओढ़े, बजावत मुरली मधुर रसाल।। “नन्ददास” बनतें ब्रज आवत, संग लिये ब्रजबाल।।२।।

संध्या में (राग गौरी) झुक रही सुन मुरलीकी टेर।। (यह पूरा पद पेज ३२ पर पढ़े)

शयन में (राग अड़ानों) अरि हो या मग निकसी आय अचानक, कान्हकुँवर ठाडे आपुनी पोर।। दृष्टिसों दृष्टि मिली रोमरोम सीतल भई, तनमें उठी है कैधों कामरोर।।१।। लाल पाग झूक रही भ्रौंहन पर, स्याम गात किये चन्दनकी खोर।। “सूरदास” प्रभु सर्वस्व हरके चलें, मन में आवत कैधों मिलो री दौर।।२।।

मान में, (राग ईमन) तेरी भ्रोहकी मरोरन तें, ललित त्रिभंगी भये, अंजन दे चितयो, भये जु स्यामवाम।। तेरी मुसकान देख दामिनी सी कोंध जात, दीन व्हे याचत प्यारी, लेत राधे आधो नाम।।१।। ज्यों ज्यों नचायो चाहो, तैसे हरि नाचत, बल अबतो मया कीजे, चलिये निकुंज धाम।। “नन्ददास” प्रभु बोलो तो बुलाय लाऊं, उनको तो कल्प बीतें, तेरी घरी याम।।२।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पोढिये लाल लाडलि संग लै।। नौतन सेज बनी अति सुन्दर, बिच बिच सौधें की पुट दैं।।१।। हों कर हों चरनन की सेवा, जो मेरे नैनन अति सुख व्हे।। “गोपीनाथ” या रंगमहल में, जोरी राज करो अविचल व्हे।।२।।

चैत्र शुक्ल नवमी

(श्री रामनवमी)

"देहरी बन्दनमाल व अभ्यंग"

श्रृंगार – कुल्है जोड़ का – चाकदार वागो।

वस्त्र – केसरिया सूति डोरिया के रूपेरी कोरके वागा चाकदार, शुथन लाल सोनेरी छापा की। श्रीमस्तक पर केसरिया कुल्है तथा मोर की पांच चन्द्रिका का जोड़। ठाडा वस्त्र सफेद, पिछवाई लाल रेशमी दरीयाई की सोनेरी चोड़ा पट्टा की।

आभरण – नित्यानुसार भारी श्रंगार मोती की चोटी, हीरा, मोती, माणक, पन्ना व सोने के जड़ाव के आभरण धराये गये हैं। गुलाब के पुष्पों की दो मालायें।

विशेष – आज रामनवमी जयन्ति के अवसर पर चैत्री गुलाब की मंडली में श्रीजी राजभोग से संध्या तक बिराजें। राजभोग के दर्शन के समय बालकष्ण लालजी को राम जयन्ति के अवसर पर पंचामत स्नान बाद में इन्हें श्रीनाथजी के पास पधराकर लाल पीताम्बर, गुंजा व फूल की माला धराकर ईत्र समर्पित करते हैं। पहले श्रीजी को कुंकुम का तिलक तथा अक्षत होकर बाद में उत्सव भोग आवे। इसमें बुन्दी तथा सकर पारा तथा दूधघर में बासुंदी, बरफी तथा फलफूल तथा तुलसी समर्पित कर धुपदीप करके अरोगवो की विनति करें। समय के बाद भोग सराकर, माला धरा, दर्शन खोल कर आरती आवें।

सामग्री – श्री गोपीवल्लभ भोग मे सेव के लाडु तथा राजभोग में सेव तथा बिलसारू, गुलाब का सीरा। बाल भोग में बूंदी का मोटा लाडु गोद का।

मंगला में (राग बिलावल) **गोविन्द तिहारो स्वरूप, निगम नेति नेति गावे।। भक्तन हित श्यामसुन्दर, देह धरी आवै।।१।। जोगी मुनि ज्ञान ध्यान, सपने नहिं पावे।। नन्द–घरनी बाँधि ताहि, कपि ज्यो नचावै।।२।। गोपीजन प्रेम आतुर, संग लागी डोले।। मुरली के नाद सुनत, गृह तजि वन डोले।।३।। वेद पुराण स्मृति कथा, कहत शुक विचारी।। "परमानन्द" प्रेम कथा, सबहीन तें न्यारी।।४।।**

मंगला में (रामनवमी की बधाई) (राग बिलावल) आज महामंगल कौशलपुर, सुन नपके सुत चार भये।। सदन सदन सोहिलो सुहायो, नाम और नगर निसान हये।।१।। अति सुख बेगी बोल सुर गुरू मुनि, भूपति भीतर भवन गये।। जातकर्म कर कनक–बसन मनि, भूषन सुरभि समूह दये।।२।। दधि–अक्षत फलफूल दूब, नवजुवतिन भरभर थार लये।। गावत चली भीर भई बीथन, वदन माँग सिन्दूर दये।।३।। कनक कलस और ध्वजा पताका, बिचबिच बंदनवार नये।। उडत गुलाल अरगजा छिरकत, सकल लोक इक रंग भये।।४।। सज सज साज अमर किन्नर मुनि, जान समागम गगन ठये।। नृत्यत नव–अप्सरा मुदित मन, पुनिपुनि बरखत कुसुम रये।।५।। अति आनन्दमगन पुरवासी, देत सबन मंदिर रितये।। "तुलसीदास" पुन भरे ही देखियत, राम कृपा चितवन चितये।।६।।

अभ्यंग समय (राग–देवगंधार) (झांझ बजते है) कर मोदक माखन मिश्री लें कुंवर के संग डोलत नंदरानी।। (पूरा पद पेज १५ पर देखें)

कहा ओछी व्है है जात।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े)

(राग–बिलावल) आवो गोपाल सिंगार बनाऊँ।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े)

भोग सिंगार यशोदा मैया श्री विट्ठलनाथ के हाथ को भावे।। (यह पूरा पद पेज २४ पर पढ़े)

पिताम्बर को चोलना पहेरावत मैया।। कनक छाप तापर धरी, झीनी एक तनैया।।१।। सूथन लाल चुनायकी, और जरकसी चीरा।। हंसुली हेम जराव की, उर राजत हीरा।।२।। ठाड़ी निरख जसोमति, फूली अंग न समाय।। काजर को बिन्दुका दीयो, व्रजनन मुसिकाय।।३।। नन्दबाबा मुरली दई, एक तान बजावे।। जोई सुने वाको मनहरे, "परमानन्द" बल जावे।।४।।

लालको श्रृंगार बनावत मैया।। कर उबटनों न्हवायो चाहत, हरि हलधर दोऊ भैया।।१।। हार हमेल हँसुली और दुलरी अपने कर पहरैया।। "परमानन्ददास" को जीवन, पुनी पुनी लेत बलैया।।२।।

आज महामंगल कौशलपुर सुन नृपके सुत चार भये।। (यह पद ऊपर इसी पेज पर पूरा देखें)

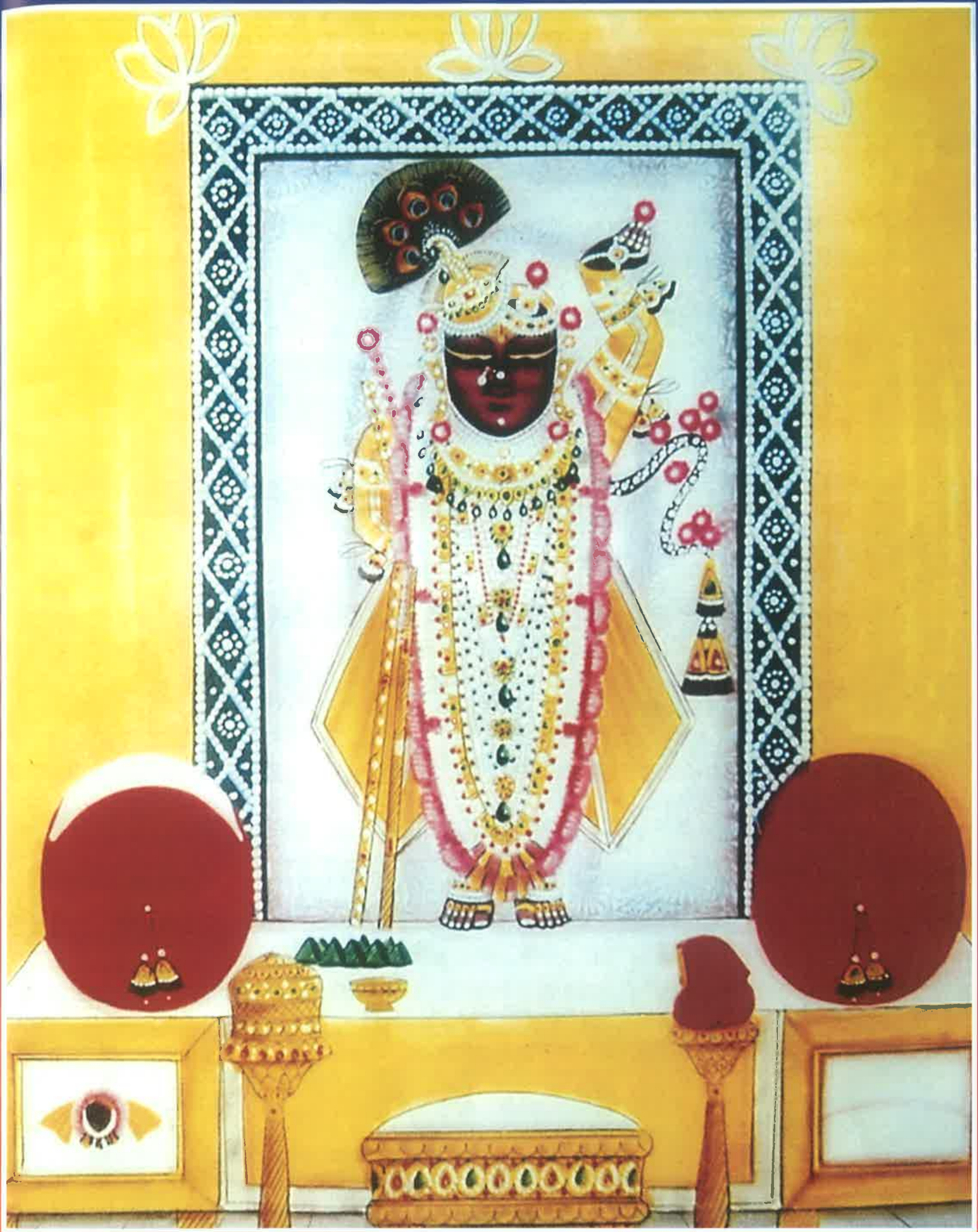

श्रीरामनवमी का श्रृंगार चैत्र शुक्ला नवमी

सचिन भाई विष्णु भाई पटेल - सद्भाव इंजिनियरिंग लिमिटेड, अहमदाबाद के सपरिवार जय श्री कृष्ण

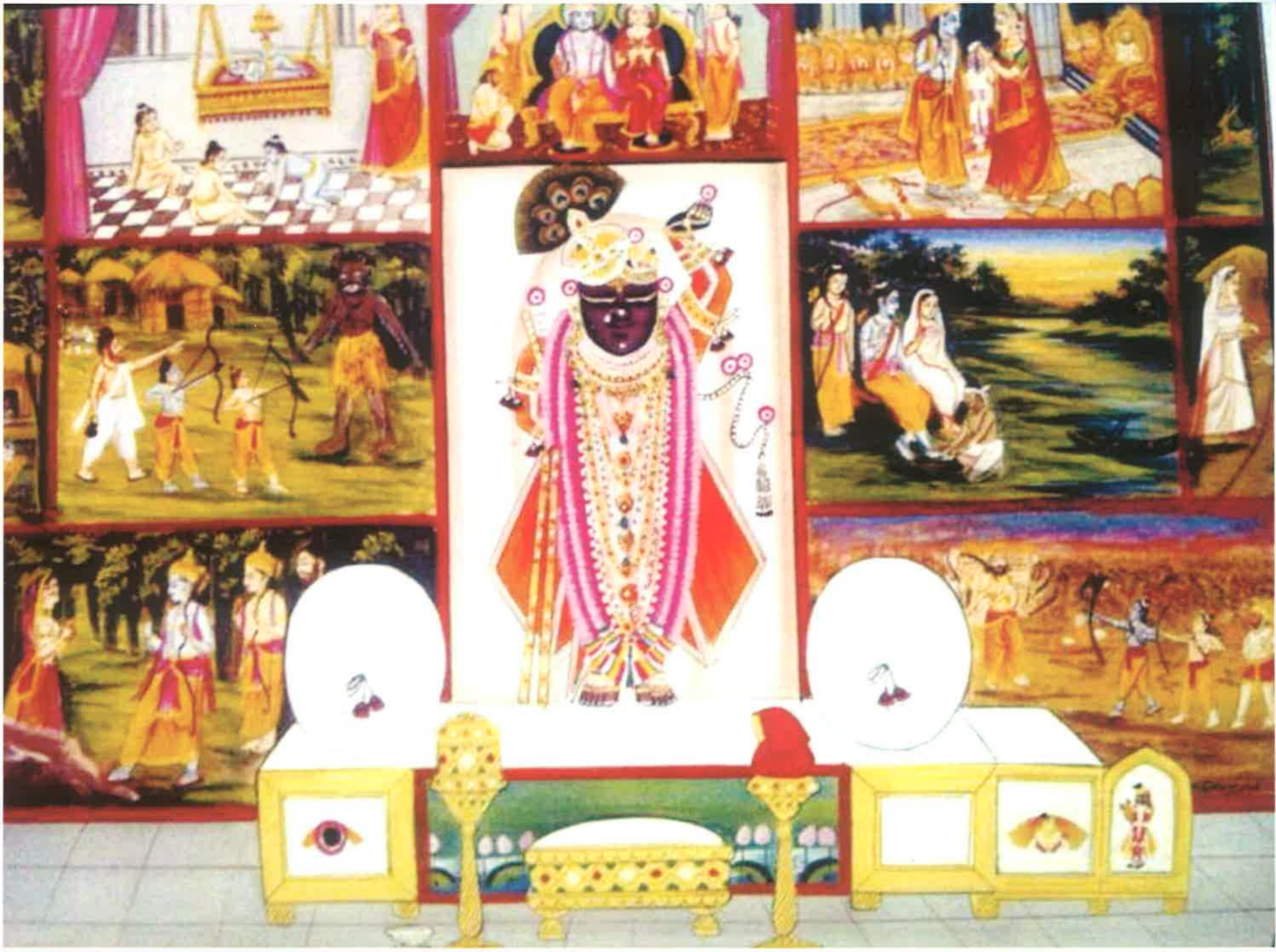

शृंगार दर्शन में (राग बिलावल) **कौशल्या रघुनाथ को, ले गोद खिलावें।। सुन्दर बदन निहारिके, हँस ले कंठ लगावे।।१।। पीत झगुलिया तन लसे, पग नूंपूर बाजे।। चलन सिखावें रामको, कोटिक छबि छाजे।।२।। सीस सुभग कुलहे बनी, माथे बिन्दु विराजे।। नीलकंठ नखकेहरी, कर कंकण बाजे।।३।। बाललीला रघुनाथ की, यह सुने और गावे।। “तुलसीदास” को यह कृपा, नित दरसन पावे।।४।।**

राजभोग आते समय (राग–सारंग) **भोजन लावरी तुं मैया।। हम कबके ताकों टेरत है, भूखे चारों भैया।।१।। सुनत बचन कौसल्या आई, लीयें हाथ मिठैया।। पूरी ले ताती अरू, बूरो डार सुमित्रा मैया।।२।। कैकेई दधि ओदन ले, आई मीठे वचन सुहैया।। मैं जानी तुम राजसभा में, बैठे हें रघुरैया।।३।। जेमत राम लक्ष्मण अरू शत्रुहन, और भरत रघुरैया।। फूंक फूंक सीरो कर पीवत, तातो मीठो घैया।।४।। जल अचवाय कपूर सुवासित, लागत परम सुहैआ।। “तुलसीदास” सुख नेनन निरखत, मैया लेत बलैया।।५।।**

पहले दर्शन में, पंचामत स्नान के समय (राग धनाश्री) **माई प्रकट भये श्रीराम।। हत्या तीन गई दशरथ की, सुनत मनोहर नाम।।१।। बंदीजन सब द्वारे ठाडे, करत निगम जस गान।। उमगे लोग सकल भुव पुरके, राधव जु रूप निधान।।२।। जै जै कार भयो वसुधा पर, संतत मन अभिराम।। “परमानन्ददास” बलिहारी, चरण कमल विश्राम।।३।।**

उत्सव भोग आवे तब (राग–बिलावल) **कनक रतन मय पालनो, रच्यो मारू सूत्रधार।। विविध खिलौना किंकीनी, मंजुल मुक्ताहार।। रघुकुल मंडनराम, रामलला होहो।।१।। जननी ऊबट न्हवायकें, मनि भूषण सजि लीये गोद।। पोढ़ाये शिशु पालने, निरखि मगन मनमोद।। दशरथ नन्दन राम, रामलला होहो।।२।। मत्त मयूर की चन्द्रिका, झलके रतनन ज्योति।। नील कमल अरू जलदकी, उपमा कहे लघु होत।। नेन सुकृत फल राम, रामलला होहो।।३।। लघु लघु लोहित ललित हें, पदपान अधर एकरंग।। सो छबि को कवि कहि सके, नखशिख सुन्दर सब अंग।। राजीव लोचन राम, रामलला होहो।।४।। पदनूंपूर कटि किंकिनी, कर कंकन पहोंची मन्जु।। हीयें केहरि नख अदभुत बने, मानो मनसिज मदके गंजु।। पुरजन उरमनि राम, रामलला हो हो।।५।। लोचन नीलसरोज से, भ्रुव मसि बिन्दु बिराज।। जनु**

मुख विधु छबि अमीय कों, रक्षक राख्यो रसराज।। शोभा सागर राम, रामलला होहो।।६।। घुघंरारी अलकावली लसे, लटकन ललित लिलाट।। मानों उडुगण विधु मिलनकों, चले तम बिडारकर बाट।। जगत तिमिर हर राम, रामलला होहो।।७।। देखि खिलोना किलकहीं, पद पान विलोचन लोल।। विचित्र विहंग अली जलज ज्यों, सुषमा सर करत कलोल।। भक्त कल्पतरू राम, रामलला होहो।।८।। बाल बोल बिन अरथ के, सुनि देत पदारथ चार।। सो पैहन बचनान तें, भये सुरनर मुनि त्रिपुरार।। नाम काम धुक् राम, रामलला होहो।।९।। मात सुमित्रा वार हीं मनि भूषण वसन विभाग।। मधुर मल्हाय झुलाव हीं, गावें उमगि उमगि अनुराग।। हें जग मंगल राम, रामलला होहो।।१०।। मोति ऊपज्यों सीपमें, अरू अदिति जन्यो जगभान।। रघुपति कोसल्या जन्यों, गुन मंगल रूप निधान।। भुवन विभूषण राम, रामलला होहो।।११।। राम प्रगट जग में भये, गये सकल अमंगल मूल।। मीन मुदित हित उदित व्हे, नित बैरिनके उर सूल।। भव भय भंजन राम, रामलला होहो।।१२।। अनुज सखा संग शिशुले खेलन चले चौगान।। लंका मे खबर परी हो, सुरपुर बजे हैं निशान। रिपुगन गंजन राम, रामलला होहो।।१३।। राम अहेरट कुं चले हो, जब गजरथ बाजि संवार।। दसकंधर उर धुकधुकी, अब जिन धावे धनुधार। अरि कुल केहरि राम, रामलला होहो।।१४।। गीत सुमित्रा सखीनके, सुनि सुनि सुरमनि अनूकूल।। दे असीस जयजय कहें, सब हरषें बरसें फूल। सुर सुखदायक राम, रामलला होहो।।१५।। बाल चरित्रमय चन्द्रमा, यह सोलह कलानिधान।। चित चकोर तुलसी कीयो, कर प्रेम अमीरस पान। "तुलसी" के जीवनराम, रामलला होहो।।१६।।

राजभोग दूसरे दर्शन में (राग–सारंग) आज अयोध्या प्रगटे राम।। दशरथ वंश उदय कुलदीपक, शिव विरंची मुनि भयो विश्राम।।१।। घर घर तोरन वंदनमाला, मोतिन चौक पूरे निज धाम।। "परमानन्ददास" तिहिं अवसर, वन्दी जनके पूरत काम।।२।।

भोग के दर्शन में (दशावतार की अष्टपदी) (राग–मालव) प्रलयपयोधिजले धतवानसी वेदं।। विहितवहित्रचरित्रमखेदं।। केशव धृत मीनशरीर जय जगदीश हरे।।१।। क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पष्ठे।। धरणिधरणकिणचक्र गरिष्ठे।। केशव धत कच्छपरूप जय जगदीश हरे।।२।। वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना शशिनि कलंककलेव निमग्ना।। केशव धृत शूकररूप जय जगदीश हरे।।३।। तव

करकमलवरें नखमद्भुत श्रृंगं।। दलित हिरण्यकशिपुतनुभंगं।। केशव धत नरहरिरूप जय जगदीश हरे।।४।। छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन।। पदनखनीरजनितजनपावन।। केशव धृत वामनरूप जय जगदीश हरे।।५।। क्षत्रियरूधिरमये जगदपगतपापं।। स्नपयसि पयसि शमितभवतापं।। केशव धत भगुपतिरूप जय जगदीश हरे।।६।। वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयं।। दशमुखमौलिबलिं रमणीयं।। केशव धृत रघुपतिरूप जय जगदीश हरे।।७।। वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं।। हलहतिभीतिमिलित यमुनाभं।। केशव धृत हलधररूप जय जगदीश हरे।।८।। निंदसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं।। सदयहृदयदर्शितपशुघातं।। केशव धत बुद्धशरीर जय जगदीश हरे।।६।। म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालं।। धूमकेतुमिव किमपि करालं।। केशव धत कल्किशरीर जय जगदीश हरे।।१०।। 'श्रीजयदेव' कवेरिदमुदितमुदारं।। श्रणु सुखदं शुभदं भवसारं।। केशव धृत दशविधरूप जय जगदीश हरे।।११।।

संध्या में (राग मालव) पद्म धर्यो जन ताप निवारण।। चार भुजा चार आयुध धरे, नारायण भुवि भार उतारन।।१।। चक्र सुदर्शन धर्यो कमल कर, भक्तन की रक्षा के कारण।। शंख धर्यो रिपु उदर विदारण, गदाधरी दुष्टन संहारन।।२।। दीनानाथ दयाल जगत गुरू, आरती हरन भक्त चिन्तामनी।। "परमानन्ददास" को ठाकुर यह औसर छाडो जीनी।।३।।

मोहन नन्दराय कुमार।। प्रगट ब्रह्म निकुंज नायक, भक्त हित अवतार।।१।। प्रथम चरण सरोज वन्दो, श्याम घन गोपाल।। ललित कुंडल गंडमंडित चारू नैन विशाल।।२।। बलराम सहित विनोद लिला, शेष शंकर देत।। "दास परमानन्द" प्रभु हरि निगम बोलत नेत।।३।।

बन्दो धरण गिरिवर भूप।। राधिका मुख कमल लंपट, मत्त मधुप स्वरूप।।१।। रसिक वर संगीत सुखनिधि, क्वनित वेणु अनुप।। कहि "कृष्णदास" उदार उर पर लोल माल अनूप।।२।।

शयन में (राग कान्हरौ) चरणकमल बन्दो जगदीश, जे गोधन के संग धाये।। जे पदकमल धूरि लपटाने, कर गहि गोपिन के उर लाये।।१।। जे पदकमल युधिष्ठर

पूजित, राजसूय यज्ञमें आये।। जे पदकमल पितामह भीष्म, भारत मे देखनि को पाये।।२।। जे पदकमल शंभु चतुरानन, ह्रदय–कमल के अन्तर राखे।। जे पदकमल रमा–उर–भूषन, वेद–भागवत मुनि जे भाखे।।३।। जे पदकमल लोकत्रय पावन, बलिराजा की पीठ धरे।। ते पदकमल दास “परमानन्द” गावत प्रेमपीयूष भरे।।४।।

नौमी चेतकी उजियारी।। दशरथ के गृह जन्म लियो मुदित अयोध्यानारी।।१।। राम लक्ष्मण भरत शत्रुध्न भूतल प्रगटे चारी।। ललित विशाल कमल दल लोचन मोचन दुख सुखकारी।।२।। मन्मथ मथन अमित छबि जल रूह नील वसन तन सारी।। पीत वसन दामिनि धुति विलसत दशन लसत सित भारी।।३।। कठुल कंठ रत्नमणि बना धनु भ्रकुटी गति न्यारी।। घुटूरन चलत हरत मन सबको “तुलसीदास” बलिहारी।।४।।

मान में (राग–बिलावल) सुन सुत, एक कथा कहुँ प्यारी।। कमलनयन मन आनन्द उपज्यों, रसिक सिरोमनि देत हुंकारी।।१।। नगर एक रमनीक अयोध्या, बडे महल जहां अगम अटारी।। बहुत गली पुर बीच बिराजत, भांति–भांति के हाट बजारी।।२।। तहां नृपति दसरथ रघुवंशी, जाकी नारी तीन सुखकारी।। कोसल्या, कैकेई, सुमित्रा, तिनके जनम भये सुत चारी।।३।। चारि पुत्र राजाके प्रगटे, तिनमें एक राम व्रतधारी।। जनक धनुष देखि जानकी, त्रिभुवन के सब नृपति हंकारी।।४।। राजपुत्र दोऊ, ऋषि ले आये, सुनि जनक व्रत तहां पगधारी।। धनुष तोरि मुख मोरि नपतिको, जनक तिनकी वरी नारी।।५।। पग अंगुठा जब पीर नृपतिके, तब केकई मुख मोलि निवारी।। वचन मांगि नृपसों तब लीनों, रघुपति के अभिषेक संवारी।।६।। तात वचन सुनि तज्यो राज तिन, भ्राता सहित धरनी बनचारी।। उनके जात पिता तनु त्याग्यो, अति व्याकुल करि जीव विसारी।।७।। चित्रकुट गये भरत मिलन जब, पग–पावरी दे करी कपारी।। जुवती हेतु कनकमृग मार्यो, राजीव लोचन गर्व प्रहारी।।८।। रावण हरण कियो सीताको, सुनि करूनामय निंद निवारी।। “सूरस्याम” सुनि रटत चांप कहं, लछमन देहु जननी भय भारी।।६।।

पोढ़ते समय (राग केदारों) राय गिरिधरन संग राधिका रानी।। (यह पद पेज २१ पर पर देखें।)

चैत्र शुक्ल दशमी

श्रृंगार – कुल्हे जोड़ का। (श्री रामनवमी का प्रचारगी श्रंगार)

वस्त्र, आभरण – श्री राम नौमी के अनुसार। कर्ण में मकराकृति कुण्डल व चैत्री गुलाब की दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – ठाडा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई चित्राम श्री रामलीला की है। राजभोग में श्रीजी की कन्दरा पर चैत्री गुलाब का चोखटा।

मंगला में (राग बिलावल) **सुन सुत, एक कथा कहुँ प्यारी।। (पूरा पद पेज ४६ पर देखें।)**

ललित कथा ऐक कहुँ लडेंते, नेकु सकुच तज छांड दे आरि।। सूरजवंस नपति दशरथ के, भये सुभग सुत चारी।।१।। तामे बड़े रामचन्द्र राजा, जनकसुता जाके घर नारि।। पंचवटी को चले राज तज, पिता–वचन माथे पर धारि।।२।। बैकुंठनाथ रनधीर वीर, रघु तापस अनुहारी।। मारे कुटिल सबल राक्षस अति, कानन बसति विघ्न सब टारि।।३।। कपट रूप रावन सीता को, ले गयो लंक सिन्धु के पारि।। जानकी हरन सुनत "सूरजप्रभु", चौंक उठे लाओ धनुष संभारी।।४।।

श्रृंगार में (राग–बिलावल) **फूलन की माला हाथ, फूली सब सखी साथ, झांकत झरोखा ठाडी, नन्दिनी जनक की।। देखन पिया की सोभा, सीयाके लोचन लोभा, एकटक ठाडी मानो, पूतरी कनक की।।१।। कुँवर कोमल गात, को कहैं पितासों बात, छाँडि दे यह पन, तोरन शिव के धनुष की।। "नन्ददास" प्रभु जानि, तोर्यो पिनाक पानि, बाँसकी धनैया जैसे, बालक तनक की।।२।।**

राजभोग आने पर (राग–सारंग) **सुबल गिरिघाटी चढ टेरत।। (यह पूरा पद पेज ३७ पर पढ़े)**

गिरि पर चढ़ि गिरिधर टेरें।। अहो भैया सुबल श्रीदामा ! लावहु गाय खिरकके नेरे।।१।। भई अवेर जो छाक खायें, कछुक धैया पियें सबेरें।। "परमानन्द" प्रभु बैठ सिलन पर, भोजन करत ग्वाल रहे घेरे।।२।।

मोहन जेंवत छाक सलोनी।। (यह पूरा पद पेज ३५ पर पढ़े)

हँसत परस्पर करत किलोल।। (यह पूरा पद पेज ३७ पर पढ़े)

राजभोग में (राग–सारंग) बल–बल आज की बानिक लाल।। (यह पूरा पद पेज २४ पर पढ़े)

भोग में, (राग पूर्वी) आज बनेरी लालन गिरधारी या बानिक पर बलिहारी।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े)

संध्या में (राग कान्हरौ) राखिहो अलक बिच चम्पकली गनगनी।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े)

शयन भोग आये (ब्यारू के दो पद) (राग–कल्याण) लाडिले बोलत है तोहि मैया।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े)

शयन में, (राग ईमन) कनक कुसुम अति सोभित श्रवननि।। (यह पूरा पद पेज ३६ पर पढ़े)

मान में, (राग–बिहाग) मोहन मुखार बिन्द पर, मनमथ कौटिक वारो री माई।। जंही जंही अंगन दृष्टि परत हें, तंही तंही रहत लुभाई।।१।। अलक तिलक कुण्डल कपोल छबि, ऐक रसना मोपें बरनी न जाई।। “गोविन्द” प्रभु की बानिक पर, बलि बलि रसिक चुड़ामनी राई।।२।।

मान में (राग बिहाग) दौरी दौरी आवत मोहि मनावत, दाम खरच कछु मोल लई री।। अचरा पसार के मोहि खिजावत, हौं तेरे बाबाकी चेरी भई री।।१।। जा री जा सखी भवन आपुने, लख बातन की एक कही री।। “नन्ददास” प्रभु वे क्यों नहीं आवत, उनके पायन कछु मेंहदी दई री।।२।।

पोढ़ते समय में, (राग केदारों) राय गिरिधरन संग राधिका रानी।। (पूरा पद पेज २१ पर पढ़े)

चैत्र शुक्ल एकादशी

श्री महाप्रभुजी के उत्सव की बधाई पन्द्रह दिन पहले आज से बैठती है। देहरी बन्दन माल तथा झांझ बजे।

शृंगार – पाग चन्द्रिका घेरदार वागो। पिछवाई सफेद रंगकी, श्री प्रभु को पलने जुलाते हुवे पूज्य गोस्वामी बालकों के चित्रकाम वाली, गादी तकिया व चरण चोकी पर सफेद (बंटा) बिछावट की गई है।

वस्त्र – सूथन, चोली, घेरदार वागो लाल रंग की मलमलका, रूपहरी तुईलेस की किनारी वाली, ठाडा वस्त्र मेघश्याम रंग का।

आभरण – छोटो कमर तक का भारी श्रृंगार। मोती, पन्ना तथा सोना के। श्रीमस्तक पर लाल रंग की गोलपाग सीरपेच, लूम, गोल जडाव की चन्द्रिका और डाबी तरफ शिशफूल। कर्ण में कर्णफूल, गुलाब के पुष्पों की दो मालाजी, श्रीहस्त में फूल की छड़ी, सोना के वेणुजी तथा दो वेत्र जी धराये गये है। आज बधाई १५ दिन पहले बैठती है तथा इस अवधि में जन्माष्टमी तथा श्री महाप्रभुजी के बधाई कीर्तन गाये जाते है तथा इन १५ दिनों में बादली, श्याम, नीले, हरे वस्त्र नहीं धराये जाते है।

मंगला में, (राग–देवगंधार) **आज गृह नन्द महरकें बधाई।। प्रातः समें मोहनमुख निरखत, कोटि चन्द छबि छाई।।१।। मिलि व्रजनारी मंगल गावत, नन्द भवन मे आई। देत आशिष जीयो जसुमति सुत, कोटिक वरस कन्हाई।।२।। नित आनन्द बढ़त वृंदावन, उपमा कही नव जाई। "सूरदास" धन्य धन्य नंदरानी, देखत नैन सिराई।।३।।**

शृंगार में, (जन्माष्टमी बधाई) **व्रज भयो महरिकैं पूत, जब यह बात सूनी।। सुनि आनंदे लोग, गोकुल गणित गुनी।। व्रज पूरब पूरे पुन्य, रूपी कुल सुथिर थुनी।। लग्न नक्षत्र बलि सोधि, कीनी वेद धुनी।।१।। सुनि धाई सब व्रजनारि, सहज सिंगार कियें।। तन पहरें नौतन चीर, काजर नैन दियें।। कसि कंचुकी तिलक लिलाट, शोभित हार हियें।। कर कंकण कंचन थार, मंगल साज लियें।।२।। वे अपने अपने मेल, निकसी भांति भलीं।। मानों लाल मुनिन की पांति, पिंजरन चूर चलीं।। वे गावें मंगलगीत, मिलि दश पांच अली।। मानो भोर भयौ रवि, एक फूली**

कमल कली।।३।। उर अंचल उड़त न जान्यौ, सारी सुरंग सुही।। मुख मांडयों रोरी
रंग, सेंदुर मांग छुही।। श्रम श्रवनन तरल तरौना, बेनी शिथिल गुही।। शिर बरषत
कुसुम सुदेश, मानो मेघ फुही।।४।। पीय पहलें पौहोंचीं जाय, अति आनन्द भरी।।
लई भीतर भवन बुलाय, सब शिशु पांय परी।। एक बदन उघारि निहारत, देत असीस
खरी।। चिरजीयौ यशोदानन्द, पूरन काम करी।।५।। धन्य धन्य दिवस धन्य रात्र,
धन्य यह पहर घरी।। धन्य धन्य महरिजूकी कूंख, भागि सुहाग भरी।। जिन जायो
एसौ पूत, सब सुख फलन फरी।। थिर थाप्यों सब परिवार, मनकी शूल हरी।।६।।
सुनि ग्वालन गाय बहोरि, बालक बोलि लिये।। गुहि गुंजा, घसि वनधातु, अंग अंग
चित्र ठये।। शिर दधि माखन के मांट, गावत गीत नये। संग झांझ मदंग बजावत,
सब नन्द भवन गये।।७।। एक नाचत एक करत कुलाहल, छिरकत हरद दही।।
मानों बरखत भादोंमास, नदी दही दूध बही।। जाको जहीं जहीं चित्त जाय, कौतुक
तहीं तहीं।। रस आनन्द मगन गुवाल, काहू बदत नहीं।।८।। एक धाय नंन्दजू पै
जाय, पुनि पुनि पांय परै।। एक आप आपुहिं मांझ, हंसि हंसि अंक भरै।। एक अंबर
सबही उतारि, देत निशंक खरैं।। एक दधिरोचन ओर दूब, सबन के शीश धरैं।।९।।
तब नन्द न्हाय भये ठाड़े, अरू कुश हाथ धरैं।। नांदीमुख पित्तर पुजाय, अन्तर सोच
हरैं।। घसि चन्दन चारू मंगाय, विप्रन तिलक करैं।। वर गुरूजन द्विजन पहराय,
सबनके पांय परैं।।१०।। गन गैया गिनी न जाय, तरून सुबच्छ बढ़ी।। नित चरैं
यमुनाजू के काछ, दूने दूध चढ़ी।। खुर रूपे तांबे पीठ, सोने सींग मढ़ी।। ते दीनी
द्विजन अनेक, हरखि असीस पढ़ी।।११।। तब अपने मित्र सुबंधु, हंसि हंसि बोलि
लिये।। मथि मृगमद मलय कपूर, माथे तिलक किये।। उर मणिमाला पहराय, बसन
विचित्र दिये।। मानों बरषत मास अषाढ, दादुर मोर जिये।।१२।। वर बन्दी मागध
सूत, आंगन भवन भरै।। ते बोलें लै लै नाम, हित कोऊ ना बिसरै।। जिन जो जांच्यौ
सो दीनी, रस नन्दराय ढरै।। अति दान मान परधान, पूरन काम करै।।१३।। तब
रोहिनी अम्बर मंगाय, सारी सुरंग घनी।। ते दीनी बधून बुलाय, जैसी जाय बनी।।
वे अति आनंदित बहोरि, निज गृह गोप धनी।। मिलि निकसीं देत असीस, रूचि
अपुनी अपुनी।।१४।। तब घर घर भेरि मृदंग, पटह निसान बजे।। वर बांधी
वंन्दनमाल, अरू ध्वज कलश सजे।। तब ता दिनतें वे लोग, सुख सम्पति न तजे।।
सुनि "सूर" सबन की यह गति, जे हरि चरन भजे।।१५।।

राजभोग आते समय (राग–सारंग) (बधाई) केसर की धोती पहरे केसरी उपरना ओढ़ें, तिलक मुद्रा घर बैठे श्री लक्ष्मण भट धाम।। जन्म द्योंस जान जान अद्भुत रूचि मान मान, नख शिख की शोभा उपर वारों कोटि काम।।१।। सुन्दरताई निकाई तेज प्रताप अतुलताई, आस पास युवती जन करत हैं गुणगान।। "पद्मनाभ" प्रभु विलोक गिरिवरधर वागधीश, यह अवसर जे हुते ते महा–भाग्यवान।।२।।

श्री वल्लभकी हों बलिहारी।। सबहिनकों वचनामृत सींचत, कहि अन्तर दुखहारी।।१।। नवनिकुंज मन्दिर की लीला, नित्य विहार विहारी।। "रसिक" मनकी आसा पूजी, हों तो शरण तिहारी।।२।।

प्रगटे श्री वल्लभ सुखदाई।। फूले डोलत जन सब मन में, अति दुर्लभ निधि पाई।।१।। घरघर मंगल होत जहां तहां, द्युति बढी अति भाई।। माधोमास कष्ण एकादशी, शुभदिन प्रकटे आई।।२।। यज्ञपुरूष है यह सुत तिहारो, द्विज सब हेत सुनाई।। युगयुग राजकरो भक्तनगृह, "दासरसिक" बलजाई।।३।।

भज भज श्रीवल्लभ पदकमल।। भूली कछू न विचारे रे मन सबको हे यह फल।।१।। विन किने कछु साधन तारत, कर अपनों ही बल।। "रसिकजन" शिर सदा विराजो, श्रीव्रजपति श्रीमुख अनल।।२।।

राजभोग में, (राग आसावरी) धन्य यशोदा भाग्य तिहारौ, जिन ऐसौ सुत जायौ हो।। जाके दरस परस सुख उपजत, कुलकौ तिमिर नसायौ।।१।। विप्र सुजन चारण बंदीजन, सबै नन्द गृह आये।। नौतन सुभग हरद दूब दधि, हरषित सीस बंधाये।।२।। गर्ग निरूप कीये शुभ लच्छन, अविगत है अविनासी।। "सूरदास" प्रभु कों यश सुनिकैं, आनंदे व्रजवासी।।३।।

भोग (राग कल्याण) बधावो श्री लक्ष्मणराय के ग्रह।। जायो पूत इलम्मा माई श्री वल्लभ सुन्दरवर।।१।। बजत निशान भेरि शहनाई, नाचत मुदित नारी नर।। मागध सुत बंदी जन याचक, देत अशीश उमगे आनन्दभर।।२।। कर गुन गान वेद विधि सों गण, देत दान कंचनपट नग धर।। "सगुणदास" बल बल बानिक पर, लेत बलैया वार फेर कर।।३।।

शयन भोग आने पर (ब्यारू का पद) (राग कान्हरौ) वागधीश महाप्रभुजी को जपना।। पंचदोष या तन में जीव के छुटे, इनके गहे शरना।।१।। शीतल दृष्टि सदा देवीजन पर, त्रिविध ताप निजजन के हरना।। "वल्लभ" ध्यान धरों नित्य चित्त में, यह रीति सों भवसागर तरना।।२।।

दूध का पद (राग बिहाग) सदा श्री गोवर्धन मे स्थित।। सदा विराजो श्री वल्लभ–विट्ठल महामहोच्छव नित्त।।१।। यज्ञ–भोक्ता जो यज्ञ करत है, भक्त जनन के हित।। "छीतस्वामी" गिरिधरन श्री विट्ठल, लग्यो रहत नित चित।।२।।

शयन में, (राग–मालव) चरन कमल बंदो जगदीश, जे गोधन के संग धाये।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े)

शयन में, (राग कान्हरौ) हरि जनमत ही आनन्द भयो।। नवनिधि प्रगट भई नन्दद्वारे, सब दुःख दूरी गयौ।।१।। वसुदेव देवकी मतौ उपायौ, पलना माँज लयो।। कमलाकन्त दियौ हुंकारौ, यमुना पार दयौ।।२।। नन्द जसोदा के मन आनन्द, गर्ग बुलाय लयौ।। "परमानन्ददास" को ठाकुर, गोकुल प्रकट भयो।।३।।

मान में, (राग बिहाग) मान री मान मेरो कह्यो।। चलरी राधे तोही स्याम बुलावत, क्यो न माने आली री मेरों कह्यो।।१।। प्रथम हेमन्त मास व्रत अर्चन कियो, जमनाजल सीत सह्यो।। नन्दगोप सुत मांग भलो वर, भाग्य आपनों तें जू लह्यो।।२।। हौं हरि पठई तातें आई सखि, मान बचन ब्रजनाथ कह्यो।। उठ चल हिलमिल कहत "गदाधर", तेरो बिरह न जात सहृयों।।३।।

पोढ़ते समय (राग–बिहाग) कुंज में पौढे रसीक पिय प्यारी।। (यह पूरा पद पेज ३२ पर पढ़े)

चैत्र शुक्ल द्वादशी

शृंगार – टिपारा को शृंगार मल्लकाछ

वस्त्र – रूपेरी कोर का लाल मल्लकांछ। ऊसपर लाल–सफेद–भोपालशाही लहरिया रूपेरी कोर का खुलाबन्द। श्याम ठाडा वस्त्र तथा पिछवाई चित्राम की, श्री गिरिराजजी की तहरटी में बिराजमान, मल्लकाछ टिपारा के श्रंगार में सज्जीत कृष्ण–बलदेव तथा श्रीनंदयशोदा और गोपीजनो वाली धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार। मध्य का शृंगार। सोना, हीरा, मोती का श्रंगार तथा हीरा की टोपी धराई गई है।

मंगला (राग देवगंधार) **यह सुख देखोरी तुम माई।। बरसगांठि गिरिधरनलाल की, बहोरि कुशलसों आई।।१।। आगम के दिन नीके लागत, उर सुख लहरी उठाई।। ऐसी बात कहत ब्रजसुन्दरि, अपु अपुने मन भाई।।२।। फिरि हंसि लेत बलाय कूंखि की, जिहिं जन्मे जू कन्हाई।। तुम्हारे पुत्र भयो नन्दरानी, सब तन तपत बुझाई।।३।। नन्दकुमार सकल या व्रजमें, आनन्द बेलि बढाई।। "श्री विट्ठल गिरिधर" पूरननिधि सब हिन भूखन पाई।।४।।**

शृंगार में, (राग बिलावल) **पूत भयौरी नन्द महर के, सब नाचो गावौ ग्वाल।। बदत न काहू परस्पर आली वारत हाटक लाल।।१।। हरद दूब दधि चन्दन छिरकत, प्रकट भये गोपाल।। "चतुरबिहारी" भक्तन हित कारन, गोकुल आये परम कपाल।।२।।**

राजभोग आते समय (राग–सारंग) (बधाई) **श्रीवल्लभ अवनि मे प्रकटे, निजजन रूप निधान री।। प्रभु सम्बन्ध कर दे है मूठकर, तूं निश्चय जिय जान री।।१।। नन्द नन्दन इन सों नही अन्तर, निश वासर कर जान री।। "रसिक" कहै लीला दरसे है यह ठान्यो है ठान री।।२।।**

राजभोग (राग सारंग) **शुभ वैशाख कष्ण एकादशी, श्री वल्लभ प्रभु प्रकट भये।। दैवी जीवन के भाग्य विस्तरे, निरखत तन के ताप गये।।१।। पुष्टि भक्ति रस निज दासन को, अति उदार मन दान दिये।। "मणिक चन्द" हीयें बसो निरन्तर, श्री वल्लभ आनन्द मये।।२।।**

आनन्द आज भयो हो, भयो जगती पर जयजयकार।। श्री लक्ष्मणगृह प्रकट भये हैं, श्री वल्लभ सुकुमार।।१।। धन्य धन्य माधवमास एकादशी, कृष्ण पक्ष रविवार।। गुणनिधान “श्रीगिरिधर” प्रकटे, लीला द्विज तनु धार।।२।।

भक्ति सुधा बरखत ही प्रकटे, श्रीवल्लभ द्विजराज।। माधवमास कृष्ण एकादशी, प्रिय पुनित दिन आज।।१।। करूणावन्त अतुल सुखसागर, संग लिये सकल समाज।। बन्धु कुमुद अनुचर चकोर के, भये मनोरथ काज।।२।। आनन्द रूप जगत के भूषण, लसत सबन सिरताज।। “विष्णुदास” गुण गणित थकित भये, पंडित पावत लाज।।३।।

घर घर ग्वाल देत हैं हेरी।। बाजत ताल मदंग बांसुरी, ढ़ोल दमामा भेरी।।१।। लूटत झपटत खात मिठाई, कहि न सकत कोऊ फेरी।। उनमद ग्वाल करत कोलाहल, व्रज वनिता सब घेरी।।२।। ध्वजा पताका तोरनमाला, सबै सिंगारी सेरी।। जय जय कृष्ण कहत “परमानन्द”, प्रकटयों कंस को बेरी।।३।।

भोग में, (राग सारंग) कांकर वार तैलंग तिलक द्विज, वन्दो श्रीमद् लक्ष्मणनंद।। श्री व्रजराज शिरोमणि सुन्दर, भूतल प्रकटे वल्लभ चंद।।१।। अवगाहत विष्णु स्वामी पथ, नवधा भक्ति रत्न रस कंद।। दर्शन ही प्रसन्न होत मन, प्रकटे पूरण परमानन्द।।२।। कीरति विशद कहा लो बरनो, गावत लीला श्रुति सुर छन्द।। “सगुणदास” प्रभु षट्गुण सम्पन्न, कलि जन उद्धरन आनन्दकन्द।।३।।

संध्या में, (राग–ईमन) श्री लक्ष्मणवर ब्रह्मधाम, काम मुरति पुरूषोतम, प्रकट भये श्री वल्लभ प्रभु, लीला अवतारी।। रसमय आनन्द रूप, अनुपम गुण ग्रन्थ भरे, वचन सुधा सींचत, नित्य निजजन सुखकारी।।१।। भजन पंथ कमल भानु, अमल भाव दान करत, व्रजपति रस राज केलि, विहरत मनुहारी।। नवललाल पिया गिरिधर, दृढ़ करि कर गहत ताहि, जे जन इन शरण आये चरण छत्रधारी।।२।।

शयन भोग आने पर (राग नाइकी) **द्विज कुल प्रकटे श्री हरि, सुन्दरता की रास।। परम पुनीत एकादशी, धन्य धन्य माधो मास।।१।। लग्न नक्षत्र बल शोध कें, बैठे द्विजवर आय।। श्री लक्ष्मण भट्ट मन मोद सों, दीनी बहु विध गाय।।२।। फूले द्रुम और वेली, फूली सरस राय।। निजजन फूले निरख के रहसि बधाई गाय।।३।।**

शयन में, (राग कान्हरौ) **भक्ति सुधा बरखत ही प्रगटे श्री वल्लभ द्विजराज।। (पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े)**

मान में, (राग नायकी) **अरि तोमें समुझ नाहिन, उठ चलरी प्रिये पहर गहनों।। कबकी ठाड़ी मनावत तोकों, चलरी सखी तोहि नाहिन रहनों।।१।। यह तेरो ज्ञान, ध्यान, नयो यौवन, यह ससि मुखतें नाहिन कहनो।। "तानसेन" के प्रभु बहुनायक, सब सखियन मे तेरों लहनों।।२।।**

पोढ़ते समय में, (राग–बिहाग) **पौढिये लाल लाडिली संग ले।। (पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)**

चैत्र शुक्ल त्रयोदशी

श्रृंगार – पाग कतरा तथा घेरदार वागा श्याम चूंदडी का।

वस्त्र – चौफुली चुन्दडी (श्याम व पीली) के रूपेरी कौर के, शुथन तथा वागो घेरदार। कटि में पटको। श्रीमस्तक पर केसरी पाग पर रूपेरी जरी के कामका कतरा। ठाडा वस्त्र लाल रंग के पिछवाई केसरी रंग की रूपेरी कोरकी।

आभरण – नित्यानुसार, माणक, पन्ना, मोती के सोने का श्रृंगार। कर्ण में चार कर्णफूल धराये गये हैं। मोती व माणक का हमेल धराया गया है।

विशेष – आज श्रीठाकुरजी चैत्री गुलाब की फूल मंडली मे बिराजे है तथा मनोरथ भोग आरोगे है।

मंगला में, (राग–बिलावल) **प्रगट भये तेलंग–कुलदीप।। श्री लक्ष्मण भट्ट अति आनंदित, सुत मुख निरखत आय समीप।।१।। मात ईलम्मा कूंख उदित भयो, ज्यों उपजत मुक्ताफल सीप।। "सगुणदास" मुख कहत न आवे, यश प्रसर्यो नवखंण्ड सप्तद्वीप।।२।।**

श्रृंगार में, (राग बिलावल) **श्रीलक्ष्मण ग्रह आई नवनिधि।। प्रगटे जान पूरण पुरूषोतम, द्वार बुहारत फिरत अष्टसिद्धि।।१।। बजत निसान भेर सहनाई, देखियत तहाँई सकल सिद्धि।। "सगुणदास" प्रभु जन्म श्रवन सुन, दरसन कारण आये हर विधि।।२।।**

राजभोग आते समय (राग–सारंग) **(बधाई) तेलंग कुल दीपक प्रकटें, श्री वल्लभ महाराज।। आज्ञा दई कृपा कर श्रीहरि, पुष्टि प्रगटवे काज।।१।। मुख मुरति प्रगट जब कीनी, निजजन भक्त समाज।। "रसिक" शिरोमणि श्रीवल्लभ प्रभु, तीन लोक पर गाज।।२।।**

धन्य माधव मास कृष्ण एकादशी, भट्ट लछमन धाम, प्रकट वल्लभ भये।। धन्य चंपारन्य, धन्य धरनी सकल, धन्य घटिका प्रहर, धन्य अति पल भये।।१।। धन्य यस पुंज, पावन करन सृष्टि कों, प्रगट करी कृष्णलीला, सहित सो किये।। धन्य गावत, "रसिकदास" बारंबार, कीजिये सफल पूरन मनोरथ हिये।।२।।

श्री वल्लभ की हो बलिहारी।। सबहिन कों वचनामृत सींचत, कहि अन्तर दुखहारी।।१।। नव निकुंज मन्दिर कीलोल, नित्य विहार विहारी।। “रसिक” मन की आसा पूजी, हों तों शरण तिहारी।।२।।

रंगरासी मधुरासी श्रीवल्लभ, श्री लक्ष्मणगृह आये हो।। विविध मधुरन प्रतिपल, वपु धरि सिंगार सघनता, बेनुरंध्र मधि पाये हो।।१।। व्रजजन विरह अग्रफल लुब्धित, अति आतुर उठि धाये हो।। उत गिरिधर मुख इत प्राकट्य सुख, “श्रीभट्ट” दुहु विधि गाये हो।।२।।

राजभोग में, (राग आसावरी) प्रीत बन्धी श्री वल्लभपद सौं, और न मन मे आवे हो।। पढ़ पुरान षट दरशन नीके, जो कछु कोऊ बतावे हो।।१।। जबतें अंगीकार कियो है मेरो, तबते न अन्य सुहावे हो।। पाय महा रस कौन मूढ़ मति, जित तित चित भटकावे हो।।२।। जाके भाग्य फले या कलि में, शरण सोई जन आवे हो।। नन्द नन्दन को निज सेवक व्है, दढ़कर बाँह गहावे हो।।३।। जिन कोउ करो भूल मन शंका, निश्चय करि श्रुति गावे हो।। “रसिक” सदा फल रूप जान के, ले उछंग हुलरावे हो।।४।।

(राग–सारंग) कुसुम गुलाब महेल में बैठे, श्री गिरधारी श्यामा प्यारी।। जारी भांत विचित्रता छबि, कुमक बनी तिबारी।।१।। बोहोरंग कुसुम भूषण दम्पति पहेरावत, चहुंदिश व्रज नारी।। वृन्दावन खग मग अति सोहे, “ब्रजाधिश” प्रभु की बलिहारी।।२।।

भोग में, (राग–धनाश्री) प्रगटया ऐमा श्री वल्लभ देवा।। लक्ष्मण भट्ट बधाईयां।। मंगल सुहेलरा।।१।। गावे ऐमा गीत रसाल।। सबे सुहागिन आइया।।२।। ब्राह्मण, ऐमां वेद पढ़ाय।। देत असीस सुहाइया।।३।। मोतिन ऐमां चोक पुराय।। बन्दन बार बधाइयां।।४।। घर घर ऐमां मंगलचार।। ध्वजा कलश फहेराइयां।।५।। पोहोप अंजुली बरखाइयां।। दीने ऐमां बहु विधदान।।६।। नरनारी पेहराइयां।। धन्य धन्य एमां ऐलंमागारू।।७।। आशा सबे प्रंजाइया।। सब दिन ऐसा सुख सम्पति राज।। हरि जीवन मन भाइयां।।८।।

संध्या में, (राग–कान्हरौ) भक्ति सुधा बरखत ही प्रगटे, श्री वल्लभ द्विजराज।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े)

शयन भोग आते समय श्री लक्ष्मण भूप कुमार प्रगटे, श्री वल्लभ पूरण काम।। परम कृपाल कृपा कर जन पर, भक्तन के अभिराम।।१।। प्रेमभक्ति दिखाय निजजन को, दीनी परम सुख धाम।। “जन मथुरा” कहे कहा लो बरने, जगत कथारथ तुम्हारों नाम।।२।।

शयन में, (राग यमन) श्रीलक्ष्मणकुल चन्द उदित जग उद्योत कारी।। मात ईलम्मा विमल राका, उडुगण निजजन समाज, पोषत पीयुष वचन, हरि यश उजियारी।।१।। करूणा मय निष्कलंक, मायावाद तिमिर हरण, सकल कला पूरण मन, द्विज वपु धारी।। बल बल “माधोदास” चरण कमल किये निवास, भयो चकोर लोचन छबि, निरखत गिरिधारी।।२।।

वागधीश महाप्रभुजी जपना।। (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) कुंज भवन मे पौढे दोऊ।। नन्दनन्दन वृषभाननंदिनी, उपमा को दूजो नहि कोऊ।।१।। लाल कुसुमकी सेज बनाई, कोककला जानत है सोऊँ।। रसमें माते रसिक मुकुटमणि, “परमानन्द” सिंघद्वारे होऊ।।२।।

चैत्र शुक्ल चतुर्दशी

श्रृंगार – फेंटा व चाकदार वागा

वस्त्र – हरा सफेद लेहरिया के, रूपेरी कोर के शुथन तथा वागा चाकदार, श्रीमस्तक पर फेंटा तथा रूपेरी जरीके कामका कतरा कलंगी। ठाडा वस्त्र हरा रंग के, पिछवाई हरा–सफेद लहरिया की रूपेरी कोर की।

आभरण – नित्यानुसार फिरोंजी–मीना के तथा मकराकति कुंडल। गुलाब के पुष्पों की दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – आज श्रीजी राजभोग से संध्या तक चैत्री गुलाब की फूल–मंडली में बिराजे तथा संध्या में ऋतु अनुसार मनोरथ भोग आरोगे।

मंगला में, (राग–बिलावल) **धन्य गोकुल जहाँ गोविन्द आये।। धन्य धन्य नन्द सुमंगल निसदिन, धन्य जसुमति जिन गोद खिलाये।।१।। धन्य यह बालकेलि यमुना तट, धन्य वन सुरभी वंद चराये।। धन्य यह समय धन्य यह लीला, धन्य वह बेनु अधर धरि गाये।।२।। धन्य यह चरन सदा सुखकारी, संत जनन के ह्वदे रहाये।। धन्य "सूर" उखल धन्य गोपी, जाके हेत गोपाल बंधाये।।३।।**

श्रंगार में, (राग बिलावल) **सो गोविन्द तिहारों वृज बालक।। प्रगट भये घनश्याम मनोहर धरे रूप मनुज फलदायक।।१।। कमला पति, त्रिभुवन पति, नायक भवन चतुर्दश नायक सोई।। उत्पति प्रलय, कालको कर्ता जाके, किये सब कछू होई।।२।। सुनो नन्द उपनन्द कथा यह आयो क्षीर समुद्र को वासी।। वसुधा भार उतारन कारन प्रकट ब्रह्म वैकुंठ निवासी।।३।। ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिक विनती करी यहां लाये।। "परमानन्द" दासको ठाकुर बहुत पुन्य तपके फल आये।।४।।**

राजभोग आते समय (राग–सारंग) **(बधाई) श्री वल्लभ की हों बलिहारी।। (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े)**

भज भज श्री वल्लभ पद कमल।। (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े)

कलि में जीवन वल्लभ प्रकटे।। गति न हुती जे कहु अधमन की, अब सब पाप कटे।।१।। करी जो कृपा धर के कर मस्तक, कीने अपने दास।। ये साक्षात पूर्ण पुरूषोतम, दास "रसिक" भली आस।।२।।

(राग धनाश्री) जसोदा रानी जायो है सुत नीको।। आनन्द भयो सकल गोकुल मे, गोप वधु लाई टिको।।१।। अक्षत दूब रोचन वंदन, नन्दे तिलक दही को।। अंचल वारि वारि मुख निरखत, कमलनयन प्यारो जीको।।२।। अपने अपने भवन तें निकसी, पहरे चीर कुसुंभी को।। “यादवेन्द्र” व्रजकुल प्रतिपालक, कंस काल भय भीको।।३।।

राजभोग में, (राग सारंग) यशोदारानी सोव फूले फूली।। तुम्हारे पुत्र भयो कुल मंडन, वासुदेव समतुली।।१।। देत असीस विरध जे ग्वालिनी, गाँम गाँम तें आई।। लै लै भेंट सबै मिल निकसी, मंगलचार बधाई।।२।। ऐसे दर्शन होई जो औरे सब कोऊ सचुपावे।। बाढो वंश नन्दबाबा को “परमानन्द” जिय भावे।।३।।

(राग सारंग) फूलन की मंडली मनोहर, बैठे जहाँ रसिक पिय–प्यारी।। शोभित सबें साज नाना विधि, फूलन को भवन परम रूचिकारी।।१।। फूलन के खंभ फूलनकी चोखंडी, फूलन बनी सुदेश तिबारी।। फूलन के झूमका झरोखा, फूलन के छाजे छबि भारी।।२।। सधन फूल चहुं ओर कंगूरा, फूलन बंदनवार संवारी।। फूलन के कलशा अति शोभित, फूलन रचि विचित्र चित्रसारी।।३।। फूलन की सेज, गेंदुवा, तकिया, फूलन की माला मनहारी।। “चतुर्भुजदास” प्रफुल्लित राधा, संग फूले गोवर्धनधारी।।४।।

भोग में, (राग नट) जो पे श्रीवल्लभ प्रगट न होते।। भूतल भूषण विष्णु स्वामी पथ, श्रंगार शास्त्र सब रोते।।१।। प्रेम स्वरूप प्रकट पुरूषोतम, बिन पाये कैसे जोते।। सेवाकाज लाल गिरधर की, कुसुम दास कैसे पोते।।२।। कर आसरो रहे जो निज जन, ते भव पार क्यों होते।। “सगुणदास” सिद्धान्त बिना, उर कपाट क्यो खोते।।३।।

संध्या में, (राग गौरी) तिलक तिलंगना हो, त्रिभुवन वंदना हो, भव भय भंजना हो, कलिमल खंडना हो।। प्रकटे श्री वल्लभ महाराज।।१।। पुष्टि भक्ति दढ़ प्रकट करन कों, श्री लक्ष्मण सुत द्विज राज।। माधव मास कृष्ण एकादशी, अमल उदित रविवार।।२।। प्रकट भये द्विजराज कुल दीपक, वदन अग्नि अवतार।। दैवी जन कलयुग में हुते, जे सब किये सनाथ।।३।। सब सागर मे बहे जात है, राखे निज

गहि हाथ।। पूरण पुरूषोतम की लीला, प्रकट करी रस मूल।। हरि सेवा सेवा सोंपी करूणा कर, मुक्ति नाहिं समतूल।। मायावाद खण्ड खंडन कर, निगम सुवचन प्रकाश।। श्री भागवत सुधा रस बरखत, सुफल कियो निजदास।। अपने जान अभयपद दीने, ऐसे परम कपाल।। आरती हरण चरण अंबुज पर, बल–बल दास “गोपाल”।।

शयन में, (राग नट) श्रीमद् वल्लभ रूप सुरंगे।। अंग अंग प्रति भावनके भूषण, वंदावन संम्पति अंग अंगे।।१।। दरस परस गिरिधर की न्याई, ऐन मेन व्रजराज उछंगे।। “पद्मनाभ” देखें बनि आवे, सुधि रहि रास रसाल भ्रुव भंगे।।२।।

पोढ़ते समय (राग–बिहाग) पौढिये लाल लाड़ली संग ले।। (पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)

चैत्र शुक्ल पूर्णिमा

श्रृंगार – मुकुट काछनी का।

वस्त्र – गुलाबी रंग के रूपेरी कोरके शुथन, कांछनी व रास पटका। श्री अंग में साटन की मेघ श्याम चोली। श्रीमस्तक पर गुलाबी पाग पर रूपेरी जरीके कामका मुकुट। रास खेलते गोपीजनों की शरद की पिछवाई व सफेद बिछावट। सारी लीला रास की है, छः महिनें की रात्रि आज पूरी हुई।

आभरण – नित्यानुसार हीरा मोती के, भारी श्रंगार धराया गया। मयूराकति कुंडल तथा सोना के जड़ाव के आभरण तथा गुलाब के पुष्पों की दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – आज कीर्तन रास तथा बधाई के गाये जाते है।

मंगला में, (राग बिलावल) **नन्द नन्दन वृन्दावन चन्द।। यदुकुल नभ तिथि दूतिय देवकी, प्रगटे त्रिभुवन चन्द।।१।। जठर कूहूंतें वद्ध वारूणी, दिस मधु री सुछन्द।। वसुदेव शम्भु सीस धरी आने, गोकुल आनन्द कन्द।।२।। व्रज प्राची यशोदा राका निस, सरद रितु नन्द।। उडुगन सहित सखा संकरषन, तम कुल दनुज निकन्द।।३।। गोपीजन चकोर चित बाध्यों, पल निवारी दुःख द्वंद।। "सूरदास" कला षोडशनिधि, परिपूरन परमानन्द।।४।।**

श्रृंगार में, (राग बिलावल) **नन्दराय के नवनिधि आई।। माथे मुकुट श्रवन मनि कुण्डल, पीत वसन अरू चार भुजाई।।१।। बाजत बीन मदंग शंख धूनि, घसि अरगजा अंग चढाई।। दधि पिवत और चन्दन छिरकत, रपटि परत है लेत उठाई।।२।। अक्षत दूब लिये सब नाचत, चढ़ द्वारन वंदनमाल बंधाई।। "सूरदास" सब मिले परस्पर, दान देत नंद मन न अधाई।।३।।**

राजभोग आते समय (राग–सारंग) (बधाई) **प्रगटे श्री वल्लभ सुखदाई।।** (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े)

तैलंग कुल दीपक प्रगटे श्री वल्लभ महाराज।। (यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े)

श्री वल्लभ की हों बलिहारि।। (यह पूरा पद पेज ५७ पर पढ़े)

भज भज श्री वल्लभ पदकमल।। (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े)

राजभोग में, (राग सारंग) ऐसी बंशी बाजी वन घन में, व्यापी रही ध्वनि, महामुनिन की, समाधि लागी।। भयो ब्रह्मनाद उठत, आल्हाद जहां तहां, व्रज घोष रत्न वन्द, भये सब त्यागी।।१।। रास आदि अनेक लीला, रस–भाव पूरित मूरति, मुखार–विंद छबि धरे, विरह अनंग जागी।। तब वेणुनाद द्वार अब श्रीलक्ष्मणभट्ट भूपकुमार, "पद्मनाभ" दैवोद्धार, अर्थ भये त्यागी।।२।।

भोग में, (राग–मालव) रास विलास गहें कर पल्लव, एक एक भुज ग्रीवामेली।। द्वे द्वे गोपी बिच बिच माधो, निर्तत संग सहेली।।१।। टूट परी मोतीन की माला, ढूँढ़त फिरत सकल ग्वारी।। विगलित कुसुम माल कच विलुलित, निरख हंसे गिरिवरधारी।।२।। शरद विमल नभ चन्द बिराजे, निर्तत नंद किशोरा।। "परमानन्द" प्रभु वदन सुधा निधि, गोपी नयन चकोरा।।३।।

संध्या में, (राग–कान्हरौ) बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु, श्याम सुन्दर कमल नयन, बांकी भ्रोह ललित भाल, घूंघर वारी अलकें।। पीत वसन मोती माल, हिये पदक कंठ लाल, हंसन बोलन गावन गंडन, श्रवन कुण्डल झलकें।।१।। कर पद भूषण अनूप, कोटी मदन मोहन रूप, अद्‍भुत वदन चन्द देख, गोपी भूलि पलकें।। कहि "भगवान हित रामराय", प्रभु ठाडे रास मण्डल मे, राधासों बांह जोटी, किये हिये प्रेम ललकें।।२।।

शयन भोग आते समय (ब्यारू का पद) (राग कान्हरौ) रानीजू अपने सुतही जिमावत बूझत बात कहो कैसे खेलें बन–बन, मैया कहि कहि रूचि उपजावत।।१।। करत ब्यारू अपने अंचलसों, पोंछत वदन् मनमोद बढावत।। "रसिक" प्रीतम को ले ले नन्दरानीजू, हंस हंस कंठ लगावत।।२।।

शयन में (राग केदारों) पूरी पूरी पूरणमासी, पूर्यो पूर्यो शरद को चन्दा।। पूर्यो है मुरली स्वर केदारो, कृष्णकला संपूरण भामिनी, रास रच्यों सुखकंदा।।१।। तान मान गति मोहन सोहे, कहियत और ही मनमोहंदा।। नृत्य करत श्रीराधा प्यारी, नचवत आप बिहारी, उघटत थेई थेई, थुगन छंदा।।२।। मन आकर्षि लियो व्रज सुन्दरी, जय जय रूचिर रूचिर गति मन्दा।। सखी अशीष देत "हरिवंशी", तेसेई विहरत श्रीवन्दावन, कुंवरि कुंवर नन्दनंदा।।३।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) दोऊ मिलकरत भामती बतियां।। मदन गोपाल कुंवरी राधेके, नख मणि अंक लिखत उरं छतियां।।१।। तेसीय छिटकरही उजियारी, पून्यो चन्द शरद की रतियां।। केलिरूपिणि यमुना "श्रीभट्ट", वन्दावन फुल्यो बहुभतियां।।२।।

वैशाख माह में ठाकुर जी की सेवा का भाव – रूप

उष्णकालीन सेवा के रूप में इस माह की श्रंगार सेवा यमुनाजी को समर्पित मानी जाती हैं। इस अवधि का मुख्य उत्सव महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य जी के प्राकट्योत्सव को माना जाता है। इनका जन्मोत्सव भगवान् श्री कृष्ण के समरूप माना जाता है तथा पिछवाई में अग्नि कुण्ड में यह महाप्रभुजी के बाल स्वरूप को चित्रांकित दर्शाया जाता है। जन्मपत्री का वाचन एवं द्वार पर पंच हाथों की छापों का रूपांकन मूलतः बुरी नजर से बचाने का लौकिक भावना के रूप में ही किया जाता है। इस अवधि में अक्षय ततीया तथा नसिंह जयंति भी उत्सव प्रमुख हैं। इन उत्सवों के अनुरूप ही ठाकुर जी को साज–श्रृंगार एवं भोग के साथ गान सेवा भी गुंजारित की जाती है।

विभिन्न उत्सव के अवसर पर श्याम स्वरूप को केसरिया वस्त्र, मुकुट काछनी, कूल्हेजोड़, पिछौड़ा एवं दुमाला आदि धरा कर वन माला का भारी श्रृंगार धराया जाकर उष्णकालीन सेवा का भाव मुखरित किया जाता है। सेवा के इस दौर में ग्रीष्म से बचाव के भाव से, ठाकुर जी की हवेली में खस के पर्दे लगाकर जल छिड़काव की सेवा पूर्ण की जाती है। कदम्ब की सुवासित सेवा भी इसी माह में धरायी जाती है तथ गेय सेवा की पदावलियों में भी कदम्ब तले राधा कृष्ण की श्रंगारित लीलाओं के भावों को महत्ता दी गई है। सखी भावना से ठाकुर जी की वेणी को सप्त व अष्ठ गुलाब पुष्प से श्रंगारित कर एकादशी के अवसर पर विवाह के भाव से ही प्रभु को सेहरा धराया जाता है। विविध लीलाओं के पदों के साथ ही विशेष रूप से छाक लीला की पदावलियों का गान गुंजारित होता है। सेवानुरूप वैशाख अष्टमी से ठाकुर जी को सतुआ का भोग धराना शुरू हो जाता है।

अक्षय ततीया को परशुराम जी के प्राकट्योत्सव के भाव से ही श्याम स्वरूप को चंदन धराकर धोती धरायी जाती है जो **''आज धरे गिरधर पिय धोती''** पद पर आधारित होता है। इसी प्रकार एकादशी पर सेहरे का श्रंगार धराकर **''आज बने गिरधारी दूल्हे''** तथा **"आज तन राधा सजत श्रंगार"** की भावनानुरूप स्वामिनी जी के भाव की श्रंगारित सेवाओं का भाव साक्षात रचा जाता है। नसिंह चतुर्दशी पर ठाकुर जी को पंचामत स्नान कराकर सुदर्शन जी के भाव की सेवाएं धरायी जाती हैं। यही नहीं, इस दिन गौ माताओं वाली कलात्मक पिछवाई सुसज्जित की जाती है तथा **''आओ गोपाल श्रंगार बनाऊँ''** पदानुसार अष्ट सखियों द्वारा ठाकुर जी को श्रंगार सेवा धराने की भावना को मुखरित किया जाता है।

वैशाख मास के उत्सव निर्णय

श्रीमदाचार्य प्रादुर्भावोत्सव : सो एकादशी उद्‌यात लेनी। यदि दो एकादशी हो तो पहली एकादशी के दिन उत्सव मानना। यदि एकादशी का क्षय हो तो विद्वा एकादशी के दिन उत्सव मानना।

श्री नसिंह चतुर्दशी निर्णय : वैशाख शुक्ला १४ को। सो उदयात लेनी दो चतुर्दशी होय तो पहली चतुर्दशी को उत्सव मानना। यदि चतुर्दशी का क्षय हो तो विद्वा चतुर्दशी को उत्सव मानना।

इस माह की विशिष्ठतायें :

श्री महाप्रभुजी का उत्सव, की चैत्रसुद ११ से बैसाख वद ११ तक बधाई होय। अक्षय ततीया से ग्रीष्मऋतु (उष्णकाल) का प्रारम्भ अतः चन्दन धराया जाता है। अक्षय ततीया से सूतीवस्त्र सफेद अथवा हल्के रंग के धराये जाते हैं। श्रृंगार हल्का तथा मोती के आभरण धराये जाते हैं।

श्रृंगार के अनुसार ही भोग व कीर्तन किये जाते हैं। श्रृंगार स्थायी (रीत के) तथा ऐच्छिक होते हैं। श्रृंगार समय श्रृंगार के अनुसार ही कीर्तन होते हैं। राजभोग में खस खाना, फूलमंडली, चन्दनवागा, कुंज निकुंज के पद गाये जाते हैं। शयन समय में बरास के शीतल जल से स्नान कराया जाता है। मिस्सी रोटी, आमरस विविध सामग्री अधकी में आरोगाई जाती है।

वैशाख कृष्ण प्रतिप्रदा

श्रृंगार – फेंटो–चन्द्रिका–घेरदार वागो।

वस्त्र – लाल चुन्दड़ी को खुला बन्द रुपेरी कोर का एवं लाल धोती। श्रीमस्तक पर केसरिया पाग पर सोनेरी जरी का की दुहरा कतरा। ठाड़ा वस्त्र पोपटि रंग (हरा) का, पिछवाई लाल चौफुली चुन्दड़ी की रुपेरी कोरकी। कटि में पटका धराया गया है।

आभरण – नित्यानुसार हीरा, हरा मीना तथा नूपुर सोने के धराये जाते हैं। सोनेरी चमक की गोल चन्द्रिका, लूम व शीशफूल तथा कर्णफूल धराये गये हैं। गुलाबी फूलों की दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – श्री महाप्रभुजी की बधाई चल रही है।

मंगला में (राग देवगंधार) **भयो जगति पर जय जय कार।। प्रकट भये श्रीवल्लभ पुरुषोत्तम, वदन अग्नि अवतार।।१।। धन्य दिन माधव मास एकादशी, कृष्ण पक्ष रविवार।। श्रीमुख वाक्य कलेवर सुन्दर, धर्यो जग मोहन मार।।२।। श्रीभागवत आत्म अंग जिनके, प्रकट करण विस्तार।। दुंदभी देव बजावत गावत, सुरवधू मंगल चार।।३।। पुष्टि प्रकाश करेंगे भूवपर, जनहित जग अवतार।। आनन्द उमग्यो लोक तिहुँपर, "जन गिरधर" बलिहार।।४।।**

(राग बिलावल) **पतित उधारना कलिमल तारना, श्रीवल्लभ परम उदार वहाँ।। दीन दयाला परम कृपाला सब जीवन को कियो उद्धार वहां।।१।। उद्धार जीवन को कियो प्रभु, कर कृपा करुणा मया।। जात देखे बहे कलि मे, चित्त में उपजी दया।।२।। करण कारण अभयदाता, अभय पद जिनको दिया।। "कृष्णदास" प्रभु की गाय लीला, मन मनोरथ कर लिया।।३।।**

श्रृंगार **में** (राग बिलावल) **श्री लक्ष्मण गह आई नव निधि।। (यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **(बधाई) श्रीवन्दावन चंद वदन रूचि अग्निरूप प्रकटे हैं देहधर।। मायिकमत पाखंड के दाहक, शीतलता सुन नाम श्रवण कर।।१।। "ब्रजपति" अति रति प्रकट होयकें, जे जन शरण आये ताके उर।। श्रीवल्लभ सब सिद्धि आनंद निधि, साधन तजि वल्लभ पायन पर।।२।।**

राजभोग (राग सारंग) केसर की धोती पहेरे, केसरी उपरना औढ़े, तिलक मुदा धर बैठे, श्रीलक्ष्मण भट धाम।। जन्म घोंस जान जान, अद्‌भुत रुचि मान मान, नख शिख की शोभा ऊपर, वारों कोटि काम।।१।। सुन्दरताई निकाई, तेज प्रताप अतुलताई, आसपास युवती जन, करत है गुणगान।। 'पद्‌मनाभ' प्रभु विलोक, गिरिवरधर वागधीश, यह अवसर जे हुते, ते महा भाग्यवान।।२।।

भोग में (राग धनाश्री) (चोखड़ा) माधो मासे भर वैषाखे, श्री वल्लभ हरि जनम लिया।। श्री लक्ष्मणनंन्दना त्रिभुवन वंदना, भक्ति मार्ग जिन प्रकट किया।।छंद।। प्रकटिया जिन भक्तिमारग, बन्ध जीव छुडाइयां।। संसार तें जें मुक्त कीने, शरण जे जन आइयां।। अभय दान निशान मेल्या, चित्त जिन हरि कों दिया।। "गोपालदास" अनन्त लीला, प्रकट श्रीवल्लभ भया।।१।। दाता मुक्त और न दूजा, त्रिभुवनराय वहाँ।। विरह निवारणा भवजल तारणा, देखत उपजे चाव वहाँ।।छंद।। देखत हरि को चाव उपजे, सकल दुःख निवार ही।। जाको नाम सुमरे पातक, करजोर निगम पुकार ही।। पतित पावन बिरद जाको, शीश माधौ कर मया।" गोपालदास अनंत लीला, प्रकट श्री वल्लभ भया।।२।। ये व्रजबालिया गोप गुवालिया, ये गोकुल के लोग वहां।। ये वन क्रीड़ा हरि मुख बीडा, हरि सेवा रसभोग वहाँ।।छन्द।। रसभोग और संयोग मिलि, यों हियें अन्तर रम रह्या। तुव बालचरित्र अनन्तलीला, दान दे सब गुण कह्या। तेरी भली मूरत देख सूरत, राधिका अंचल गह्या। गोपालदास अनन्त लीला, प्रकट श्रीवल्लभ भया।।३।। पूरण ब्रहम सनातन माधो, कलि केशव अवतार वहां।। जिन जेसा देख्या तिन तेसा पेख्या, भक्तन प्राण आधार वहां।। छन्द।। भक्तन प्राण आधार श्रीवल्लभ, हिये अन्तर राखिया। रामकृष्ण मुकुन्द माधो, सदा जिह्वा भाखियां। गोपीनाथ अनाथ बंधु, वेद मे करुणामया। "गोपालदास" अनन्त लीला प्रकट श्रीवल्लभ भया।।४।।

संध्या में (राग गोरी) तिलक तिलंगना हो, त्रिभुवन वंदना हो, भव भय भंजना हो, कलिमय खंडना हो।। (यह पूरा पद पेज ६० पर पढ़े)

शयन में (राग कान्हरौ) (बधाई) भक्ति सुधा बरखत ही प्रगटे, श्रीवल्लभ द्विजराज।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) कुंज में पोढे रसीक पिय प्यारी।। (यह पूरा पद पेज ३२ पर पढ़े)

वैशाख कृष्ण द्वितीया

श्रृंगार – ग्वाल पगा का।

वस्त्र – रुपेरी कोर की केसरी रंग की मलमल की धोती तथा लाल रंग का चाकदार खुलाबन्द, श्रीमस्तक पर ग्वालपगा पर जरी के काम की मोर शिखा, ठाडा वस्त्र मेघश्याम पिछवाई पीली मलमल की।

आभरण – नित्यानुसार मध्य के। पन्ना के आभरण धराये गये हैं। गुलाबी पुष्पों की दो मालाजी धराये गये हैं।

मंगला में (राग बिलावल) **माधव मासे भर वैशाखे (यह पूरा पद पेज ६७ पर पढ़े)**

श्रृंगार (राग बिलावल) **पूत भयोरी नंदमहर के, नाचत गावत ग्वाल।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (बधाई के पद होय) (रांग सारंग) **श्री वल्लभकी हों बलिहारी।। (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **कांकर वार तैलंग तिलक द्विज, वंदो श्रीमद् लक्ष्मण नन्द।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े)**

घर घर ग्वाल देत है हेरी।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े)

भोग में (राग सारंग) **सावन सुदी एकादशी, अर्धरात्री प्रकट भये, करुणा करि साधन बिनु, जीव सब उद्धारे।। आज्ञा दई श्रीवल्लभ प्रभुकों ब्रहासंबंध की, करुणा करि जीवन के पंच दोष टारे।।१।। सेवा करवाय सबपें, अपने मुख भोजन करि, अधरामत जु दे, परम फल विचारें।। 'रसिक' सदा चरन आस, रहेत हे निस द्यौष पास, दासन के दास, तेउ भवजल तें तारे।।२।।**

संध्या में (राग हमीर/कान्हरौं) **प्रकटे पुष्टि महारस देन।। श्रीवल्लभ हरि भाव अग्नि मुख, रुप समर्पित लेन।।१।। 'नित्य संबंध कराय भावदे, विरह अलौकिक देन।। यह प्राकट्य रहत ह्रदय में, तीन लोक भेदन कों जेन।।२।। रहियें ध्यान सदा इनके पद, पातक कोऊ न लगेन।। "रसिक" यह निराधार निगमगति, साधन और नहेन।।३।।**

ब्यारु का पद (राग कान्हरौ) उसीर महल में दंपति राजत।। भोजन करत प्रान प्यारी संग, खटरस बींजन सकल रस साजत ।।१।। दूध भात बांसोधी पूरी, लुचई सुहारी भरके छाजत्।। "परमानन्द" प्रभु मनमथमोहन, फूलन के आभूषन अंग बिराजत।।२।।

शयन में (राग कान्हरौ) यह धन धर्म ही तें पायों।। नीके राखि यशोदा मैया, नारायण ब्रज आयो।।१।। जा धन कों मुनि जप तप खोजत, वेदहु पार न पायो।। सो धन धर्‌यौ क्षीर सागर में, ब्रह्मा जाय जगायौ।।२।। जा धन तें श्रीगोकुल सुख लहियत, सगरे काज सवारें।। सो धन बारबार उर अन्तर, "परमानन्द" बिचारे।।३।।

पोढवा में (राग बिहाग) पोढिये लाल लाडली संग लें।। (पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)

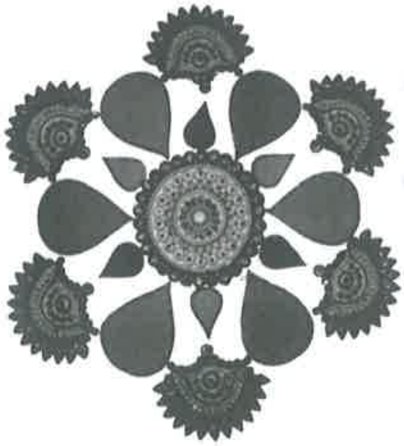

वैशाख कृष्ण तृतीया

शृंगार – पाग कतरा का।

वस्त्र – गुलाबी चाकदार रूपेरी किनारी के एवं गुलाबी सुथन। श्रीमस्तक पर पाग गुलाबी एवं गोल कतरा धराया गया है। ठाडा वस्त्र कत्थई तथा पिछवाई गुलाबी मलमल की।

मंगला में (चोखड़ा) (राग बिलावल) **श्रीवल्लभ गुन गाउ।। निरखत सुन्दर स्वरुप, बरसत हरि रस अनुप, द्विज वर कुल भूप, सदा बलि बलि जाऊ।।१।। निगम अगम कहेत जाहि, सुर नर मुनि न लहे ताहि, सकल कला गुन निधान, पूरन उर लाउं।। "गोविन्द" प्रभु नन्द नन्दन, लक्ष्मण सुत जगत वंदन, सुमरण त्रय ताप हरण, चरण रेणु पाउं।।२।।**

शृंगार में (राग खट) **नन्द को लाल वृज पालने झूले।। कुटिल अलकावली, तिलक गोरोचना, चरण अंगुष्ठ मुख, किलकि फूलै।।१।। नैन अंजनरेख भेख अभिराम सुंठ, कंठ केहरि नख, किंकिनि कटि मूले।। "नन्ददासनि" नाथ, नन्दनन्दन कुंवर, निरखि नागरी देह गेह भूले।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **श्री वल्लभ सबके हित कारण।। श्री लक्ष्मण गृह प्रकट भये हें, देवी जीव उद्धारण।।१।। श्रीभागवत विशद करण कों, भक्ति मार्ग विस्तारन।। "कृष्णदास" करुणानिधि प्रकटे, निजजन के प्रति पालन।।२।।**

राजभोग में (राग आसावरी) **देखो अद्‌भूत अविगत की गति, कैसो रुप धर्यो है हों। तीन लोक जाके उदर बसत है, सो सूप के कोने पर्यो है हों।।१।। नारदादि ब्रहादिक जाको, सकल विश्व सर सांधे।। ताकौ नार छेदत व्रज युवती, बांटी तगा सों बांधे।।२।। जा मुखको सनकादिक लोचत, सकल चातुरी ठाने। सोई मुख निरखत महरि जसोदा, दूध लार लपटाने।।३।। जिन श्रवनन सुनी गजकी आपदा, गरूड़ासन विसराये।। तिन श्रवनन के निकट जसोदा गाये और हुलराये।।४।। जिन भुजान प्रहलाद उबार्यो, हरनाकुस उर फारे।। तेई भुज पकरि कहत ब्रजगोपी, नाचौ नेक पियारे।।५।। अखिल लोक जाकी आस करत है, सो माखन देख अरे है।। सोई अद्‌भुत गिरिवर हू ते भारे, पलना मांझपरे है।।६।। सुरनर मुनि जाकौ ध्यान धरत है, शम्भु समाधि न टारी।। सोई प्रभु "सुरदास" को ठाकुर, गोकुल गोप बिहारी।।७।।**

(राग धनाश्री/सारंग) **सबनसों कहत जसोदा माय, जन्मदिन लालकौ, फिरि आयो।। जब बीते सब मास, बहोरि आयौ पुनि भादों।। दिन आठें बुधवार, होत गोकुल दधिकांदौ।। बोलि लई ब्रजसुन्दरि, हिलिमिलि मंगल गायो।। बांधति बंदनवार मनोहर मोतिन चौक पुरायो।।१।। केसरि चन्दन घोरि कान्ह, बलि प्रथम न्हवाये।। नाना वसन अनूप, कनिक भूषण पहराये।। रोरी को टीकौ दियौ, अंजज नैन लगाय।। देत नौछावारि रोहिनी, फूली अंग न माय।।२।। बजत बधाई द्वार, नगारे भेरी ढोला।। व्रज कौतूहल होई, उमग्यौ मानो सिंधु कलोला।। भई दुंदभी की गरजना, सुर विमान चढि आये।। शिव विरंचि स्तुति करें, सुर सुमनन बरखाए।।३।। गाम गामतें विप्र भाट, चारण जुर आये।। जाकौ जेसौ भाग्य, दान तिन तैसो पाये।। भली भांति पूजा करी, नीके नन्द जिमाय।। दै असीस घरको चले, सोंधे सों लपटाय।।४।। ऐसी लीला देखि फिरत, फूले ब्रजवासी।। फूली धेनु और बच्छ, फूली द्रुम कुंज पलाशी।। गोवर्द्धन फूल्यौ सदा, फूली श्रीयमुना बहाई।। "रामदास" मन फूल भए, श्रीगिरिधर कौ जस गाई।।५।।**

संध्या में (राग कान्हरौ/नट) **श्रीमद् वल्लभ रुप सुरंगे।। अंग अंग प्रति भावन के भूषण, वंदावन सम्पति अंग अंगे।।१।। दरस परस गिरिधर जु की न्याई, ऐनमेन व्रजराज उछंगे।। "पद्मनाभ" देखे बनि आवे, सुधि रही रास रसाल भ्रुवभंगे।।२।।**

शयन भोग आते समय (ब्यारु के पद) (राग कान्हरौ) **सुखद श्यामा श्याम सुखद वन्दा विपिन, सुखद ब्यारु करत, सुखद यमुना तीर।। सुखन ओदन मांझ, सान ताती दार, करत मनुहार, दोऊ प्रेमरत गंभीर।।१।। सुखद पकवान, विंजन विविध भांत के, परोसे ललिता, अंग पहेरी चन्दन चीर।। सुखद "हरिवंस" दृग, निरख चित विवस व्हैं, करत बिजनी लिए, झारी शीतल नीर।।२।।**

शयन में (राग कान्हरौ/नायकी) **सुनि बड़भागिन हो नंदरानी, गोद खिलावत लाल।। आनन्द की निधि मुखलाल कौ, ताहिं निहारत निश और बासर, छबि नही परत बखानी।।१।। गुन अपार बुद्धि विस्तार, कही न परत, निगम नेत नेत बानी।। "हरिनारायण श्यामदास" के प्रभु देखे, जसुमति कूख सिरानी।।२।।**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **पोढ़िये पिय कुंवर कन्हाई।। नवनव वसन नवल कुसुमावलि, हों अपने कर सेज बनाई।।१।। नाहिन समें सखी काहू को, ग्वालमडली सब बोराई।। "आसकरण" प्रभु मोहननागर, नागरीको ललिता ले आई।।२।।**

वैशाख कृष्ण चतुर्थी

शृंगार – फेंटा का

वस्त्र – चम्पई (अमरसी) रंग के तुईलेस की कोर के सुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर अमरसी पाग पर दोहरी कलंगी। ठाडा वस्त्र लाल तथा पिछवाई अमरसी रंग की रुपेरी कोरकी।

आभरण – नित्यानुसार मध्य के मोती–पन्ना व सोना के आभरण धराये गये हैं।

मंगला में (राग रामकली) (अष्टपदि) **प्रेंख पर्यंक शयनम्।। चिर विरहताप हरमति रुचिर मीक्षणं प्रकट प्रेमायनम्।।ध्रु.।। तनुतर द्विज पंक्तिमति ललितानि हसितानि तव वीक्ष्य गायकीनाम्।। इशद वधिपरमेत दाशया समभवज्जीवितं तावकीनाम्।।१।। तोकता वपुषि तव राजते दशि तु मदमानिनी मानहरणम्।। अग्रिमे वयसि किमु भाविका मेपि निजगोपिका भावकरणम्।।२।। व्रजयुवति ह्रधकनकाचलानारोढु मुत्सुकं तव चरण युगलम्।। तेन मुहुरुन्न मनभ्यासमिव नाथ सपदि कुरुते मदुल मदुलम्।।३।। अधिगोरोचना तिलक कमलकोद्ग्रथित विविध मणिमुक्ताफल विरचितम्।। भूषणं राजते मुग्धतामत भरस्यदि वदनेंदु रसितम्।।४।। भ्रूतटे मात रचितांजन बिन्दु रतिशयित शोभया दग्दोषमपयन्।। स्मर धनुषि मधुपिबन्नलिराज इव राजते प्रणयि सुख मुपनयन।।५।। वचन रचनोदारहास सहज् स्मिता मत चयैरार्ति भरमपनयन्।। पालय सदा स्मान स्मदीय "श्रीविट्ठले" निजदास्य मुपनयन्।।६।।**

शृंगार में (राग बिलावल) **सांवरो सुत पलना झूलै।। निरखि निरखि जसुमति जिय फूलै।।१।। नैन विशाल भृकुटी मसि राजै।। निरखि बदन उडुपति जिय लाजै।।२।। कठुला कंठ रुचिर पोहोंची कर।। सुभग कपोल नाक बिंबाधर।।३।। भाल तिलक लर लटकन सोहै।। मन्द हँसन सबकौ मन मोहै।।४।। माखन मिश्री मेलि चटावें।। बारबार प्रमुदित उर लावें।।५।। गिरिधर कुँवर जननी हुलरावै।। "चतुर्भजदास" विमल यश गावै।।६।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) (बधाई) **परम बधाई श्रीलक्ष्मण सुखदाता, प्रेम भक्ति आकार।। हुलसी माय, बाप अति हुलसे, ताप गये तन दरशन सार।।१।। फूले भक्त जान निज रूपहि, नाथ किये निरधार।। सुर नर मुनि गंधर्व गुण गायक, नाचत कछु न संभार।।२।। शिव विरंचि सनकादिक नारद, शेषहू करत विचार।। बलबल 'दास' चरण अभिलासन, या सुख वारन पार।।२।।**

राजभोग दर्शन में (राग सारंग) **रतिपथ प्रकट करणकुं प्रकटे, करुणा निधि श्रीवल्लभ भूतल।। हुलसे सकल दैवीजन के मन, साधन बिन हम पावेगें फल।।१।। मायामत को तिमिर नसायो, पंथ दिखायों वेद वचन बल।। यह मारग जो दृढ तिनको हरि, मेलत मुख मे पत्र कुसुम जल।।२।। सींचत वचन सुधाकर सेवक, मारग रिपु दाहे वचनानल।। सेवारस सागर प्रकटायो, वदन अनल तें अतिशय शीतल।।३।। उपजत ताप छिनक सानिध्य में, देत विरह आनन्द रस केवल।। देखो संत विचार चारु चित, श्री गोकुलपति है यह निश्चल।।४।। दे चरणोदक दोष निवारे, सूधे किये काल कलिके खल।। “रसिक” भजत नित्य श्रीवल्लभ पद, ते बडभाग्य सदा मन निर्मल।।५।।**

भोग में (राग नट) **सवै मिल गावो गीत बधाई। श्रीलक्ष्मणगाह प्रकट भये हैं, श्री वल्लभ सुखदाई।।१।। उघरे भाग्य सकल भक्तन के, पुष्टि भक्ति प्रकटाई। यशोमति सुत निज सुखदेवें को, मुख मुरति प्रकटाई।।२।। अति सुन्दर विधु वदन विलोकत, सकल शोक विनसाई।। कहत फिरत सबहिन सों फूले, आनन्द उर न समाई।।३।। श्री भागवत अर्थ प्रकट करन को, भाग्यन दई है दिखाई।। भई न कब हूं व्हे हे न ऐसी, जैसी अब निधि पाई।।४।। सदा विराजो शीश हमारे, यह मूरत मनभाई। चरण रेणु सेवक को सेवक, दास “रसिक” बलिजाई।।५।।**

संध्या में (राग हमीर/कान्हरौ) **प्रकटे पुष्टि महारस देन।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े)**

शयन में (राग नायकी) **आनन्द बधावनों नन्द महरजू के धाम।। बडभागीन जसुमति जायौ है, कमल नैन घनश्याम।।१।। बजत निशान मृदंग ढोल रव, मंगल गावत वाम।। देत दान कंचन मणि भूषण, धेनु बसन लै लै नाम।।२।। देत असीस सकल गोपीजन, व्रज जन मन अभिराम।। “हरिनारायण श्याम दास” के प्रभु, प्रगटे है पूरन काम।।३।।**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। (पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)**

वैशाख कृष्ण पंचमी

शृंगार – कुल्है जोड़ का।

वस्त्र – केसरिया सुथन तथा वागो चाकदार रुपेरी कोर के। श्रीमस्तक पर कुल्है एवं पाँच मोरपंख की सादा चंद्रिका लड़ मोती की। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा श्रीजी की कन्दरा पर काचको चोखटा व पिछवाई केसरिया रुपेरी कोर की। कर्णफूल, पीला व गुलाबी दो मालाजी दो धराये गये है।

आभरण – आज श्रीमहाप्रभुजी के उत्सव का आगम का श्रंगार दो जोड़ का भारी हीरा पन्ना माणक–माती का। आज फूल का चोखटा धराया गया है।

मंगला में (राग भैरव/रामकली) **सोहिलरा नन्दमहर गृह आज बाजे, माई बाजे मंदिलरा अनुपम गति।। नरनारी मिलि मंगल गावै, ऋषि मुनि वेद पढ़त, ब्रह्मा शिव फूलै सूरपति।१।। भयौ आनन्द तिंहूँ पुर, घरघर भक्त अभय, कीने दान अति।। "जगन्नाथ" प्रभु प्रकट भये है, कूंखि सिरानी रानी जसुमति।।२।।**

शृंगार में (राग खट/रामकली) **यह नित नेम जसोदा जू मेरे, तिहारे लाल लडावन को।। प्रात समय उठि पलना झूलाऊं, शकट भंजन जस गावन को।।१।। नाचत कृष्ण नचावत गोपी, कर कठताल बजावन को।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर, निरखि बदन सचुपावन को।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **तत्व गुण बान भूवि, माधवासित तरनी, प्रथम सौभग दिवस, प्रगट लक्ष्मण सुवन।। धन्य चंपारन्य, मन त्रैलोक जन, अन्य अवतार होय, न एसो भूवन।।१।। लग्न वश्चिक कुंभ, गति केतु कवि इंदू, सुख मीन युत बुध, उच्च रवि वैर नासें।। मंद वृष कर्क गुरू, भौम युत सिंघयोग, ध्रूवकरन नव यश प्रकासें।।२।। ऋक्ष घनिष्ठा प्रतिष्ठा अधिष्ठान स्थित, विरह वदनानलाकार हरि को।। यह निश्चे "द्वारकेस" इनकी सरन, ओर श्री वल्लभाधिस सरको।।३।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **शुभ वैशाख कृष्ण एकादशी, श्रीवल्लभ प्रभु प्रगटे भये।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े)**

(राग सारंग) प्रकट भये प्रभु श्रीमद् वल्लभ, श्री लक्ष्मणजू के गेह री।। मात इलंमा ढोटा जायो, रसिक शिरोमणि जेह री।।१।। देवन द्विज दुंदुभी बजाई, कुसुमन बरसत मेह री।। मुनि मन प्रफुल्लित करत वेद ध्वनि, अंतर उपज्यो नेह री।।२।। नारद नृत्य करत गुण गावत, श्रीमुख करत बखान री।। श्रीभागवत वेद उपनिषद्, वेद व्यास पुराण री।।३।। मागधसूत विमल यश बोलत, गंधर्व शब्द सुर तान री।। याचक आय जुरे सिंहद्वारें, सुनत बधाई कान री।।४।। धन्य धन्य माधवमास एकादशी, कृष्णपक्ष शुभरात री।। सात घरी उपरान्त पल चालीस, उपज्यों जग विख्यात री।।५।। श्रीलक्ष्मण भट्ट अति आनन्दित, मन ही मन मुसकात री।। परम कृपाल कृपाकर आये, भई अलौकिक बात री।।६।। पुत्र उत्साह भयो सबहिन कों, पशु पक्षी व्रज मांझ री।। बनठन कें आई व्रजसुन्दरी, मानो फूली सांझ री।।७।। बजत निसान भेरी शहनाई, ताल पखवज झांझ री।। तूर मुरझ पिनाक डफ महुवर, उमग उमग मन मांझ री।।८।। मोतिन चौक पुराये बहु विध, बांधी बन्दन वार री।। नूतन तरु पल्लव पट कुसुमन, मुक्ताफल अति सार री।।९।। कहा कहों शोभा जु भवन की, कहेत न आवे पार री।। जय–जय कार करत नरनारी, भक्तहित अवतार री।।१०।। दान देन कों अति आदर कर, बोल सबनकौं को लेत री।। मणिमाणिक कंचन पट भूषण, मन वांछित फल देत री।।११।। चिरजीयों करुणानिधि वल्लभ, प्रेमसिधु कों खेत री।। “सगुणदास” गुण वरण सके को, निगम पुकारत नेत री।।१२।।

भोग में (राग गोरी) आज बधावो श्री लक्ष्मणराय के, इलंमागारू जाये श्री वल्लभ राज।। माधो मास कृष्ण एकादशी, अमल पक्ष रविवार।। प्रगट भऐ कुमार पूरण, ब्रह्म लियो अवतार।।१।। तैलंग कुल के तिलक भूषण, लसत भाव अपार।। अंग शोभा अमित रसना, कहत न आवे पार।।२।। पढत द्विजवर वेद आंगन, बजत दुंदुभि द्वार।। सूत मागध भाट बंदी, करत वंश विस्तार।।३।। रचे पल्लव रचे तोरन, बांधी बंदनवार।। मंगल कलश भराय पूरे, मोतिन चौक सुढार।।४।। पहर भूषण बसन नव अंग, साज कंचन थार।। चली त्रिय गण गीत गावत, पग नूपुर झनकार।।५।। आय निरखे प्राणिपति, सब परम अति सकुमार।। करि प्रणाम असीस दे मुख, भेट धरत फलसार।।६।। सदन शोभा अति बढी सखी, होत जय

जयकार।। देत दान बुलाय विप्रन, धन–गोधन अपार।।७।। सुरंग सारी पट अमोलिक, और मणिगन हार।। हरख के पहराय जुवती, लक्षमण भूप उदार।।८।। चोवा चंदन छिरक केसर, नीर धरा घनसार ।। नाचत सब नर नारि आंगन, गावत जय जय कार।।६।। देवीजन सब हरख घर घर, करत मंगल चार।। "दास" निजजन निरख शोभा, जात तंहा बलिहार।।१०।।

संध्या में (राग गौरी) **तिलक तिलंगना हो, त्रिभुवन बंदना हो, भव भय भंजना हो, कलिमलखंडना हो, प्रकटे श्रीवल्लभ महाराज।। (यह पूरा पद पेज ९० पर पढ़े)**

शयन में (राग ईमन) **श्रीलक्ष्मण कुल चन्द उदित जग उद्योतकारी।। (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **कुंज भवन में पोढे दोऊ।। (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े)**

वैशाख कृष्ण षष्ठी

शृंगार – गोल चंद्रिका का

वस्त्र – पीले सूथन एवं चाकदार पर लाल रंग के भरत काम के रेशम के बुंटे एवं पीली पाग पर लूम तथा जरी काम का नागफणी कतरा, कर्णफूल, सफेद व गुलाब की दो माला। ठाडा वस्त्र हरे तथा पिछवाई पीला रंग की भरत काम की धराई गई है।

आभूषण – नित्यानुसार माणक मोती–पन्ना तथा सोने के आभरण।

मंगला में (राग बिलावल) **श्रीवल्लभलाल पालने झूले, मात ईलम्मा झुलावे हो।। रतन खचित कंचन पलना पर, झूमक मोती सुहावे हो।।१।। झोटनी घुंघरु घमक रहे, झूलना कमक मिलावे हो।।२।। चुचकारत चुटकी बजावत, चुंबन दें हिरदे लावे हो।। किलक किलक बिहसन मन प्रफूलत, बाल लीला मन भावे हो।।३।। कबहू उरज पयपान करावत, फिर पलना पोढावे हो।। पीठ उठाय मैया सन्मुख व्हे, आपुन रिझ रिझावे हो।।४।। महाभाग मात–तात दोऊ, आपुन पो बिसरावे हो।। "वल्लभदास" आस सब पुजी, श्री वल्लभ दरस दिखावे हो।।५।।**

शृंगार में (राग बिलावल) **कमल नयन शशी बदन मनोहर, देखिये विचित्र गति।। श्याम सुभगतन पीत वसन धरे, उर वन माल सोहे अति।।१।। नखमणि मुकुट प्रभा अति उदित, चिते चकित उनमानं न पावति।। अति प्रकाश निसि विमल तिमिर छूटि, कमला पति हि जगावति।।२।। दरसन मुखी सुखी अति सोचति, यह सूत सोच सुरति अति आवति।। "सूरदास" प्रभु होउ पराकृत, भुजा चारिको चिन्ह दुरावति।।३।।**

राजभोग में (राग सारंग) **गोकुल मे बाजत कहां बधाई।। मीर भई है नंदजू के द्वारे, अष्ट महासिद्धि आई।।१।। ब्रह्मादिक रुद्रादिक जाकी, चरन रेनु नहीं पाई।। सोई नंदजू को पूत कहावै, कौतुक सुनों मेरी माई।।२।। ध्रुव अंबरीष प्रहलाद बिभीषण, नितनित महिमा गाई।। सो हरि "परमानन्दको" ठाकुर, ब्रज में केलि कराई।।३।।**

(राग सारंग) **सावन सुदी एकादशी, अर्धरात्रि प्रकट भये करुणा करि साधन बिनु, जीव सब उद्धरे।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े)**

भोग में (राग नट/देवगंधार) **श्रीवल्लभ मंगल रुप निधान।। कोटि अमत सम हंस मदु बोलत, सबको होत कल्याण।।१।। परम उदार चतुर चिंतामणि, देत अभय पद दान।। "विष्णुदास" द्वारे यश गावत, रुचित नांहि कछु आन।।२।।**

संध्या में (राग गौरी) **श्रीमद् वल्लभ नमोनमो।। विमलबाहु जिन द्विजवपु धार्यो, पुरुषोतम जय नमोनमो।।१।। स्वयं भुव कीनों मुख प्रकटित, मार्ग वरण प्रति नमोनमों।। आगम अगम निगम सब जानत, सब विध समरथ नमोनमो।।२।। सकल कला संपूरण गुणनिधि, आदि अंत जय नमोनमो।। धर्म, अर्थ, पुष्टि मर्यादा, ज्ञान अगोचर नमोनमो।।३।। आगे एसो कोऊ न प्रकटित, बहोरि न प्रकटित नमोनमों।। नन्द नंदनको अंतःकरण प्रभु, जय हरि वल्लभ नमोनमो।।४।। निज ईच्छा भई जब हीं मन मे, आपहि प्रकटित नमोनमों।। गीता भागवत अमृत रसमय, यश विस्तारण नमोनमो।।५।। हतित पतित उद्धारण कलि में, जग निस्तारण नमोनमो।। नामनिवेदन सेवा सबविध, आप सिखावत नमोनमो।।६।। व्रजपति वल्लभ एकही जानों, भेद नहीहे नमोनमो।। भजनानंन्द रसिक गिरिधारी, आप दिखावत नमोनमो।।७।। शिव सनकादिक नारद मुनि जन, पार न पावत नमोनमो।। में मतिमंद जाहि मति मोटी, "कृष्णदास" प्रभु नमोनमो।।८।।**

शयन भोग आते समय (राग ईमन/कल्याण) **श्रीलक्ष्मणकुल चन्द उदित जग उद्योतकारी।। (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े)**

शयन में (राग ईमन) **श्री लक्ष्मणवर ब्रह्मधाम, काम मुरति पुरुषोत्तम, प्रकट भये श्री वल्लभ प्रभु, लीला अवतारी।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय में (राग बिहाग) **कुंज भवन में आज मंगलचार।। नव दुल्हनी वृषभान नंदनी, दुल्हे श्री व्रजराज कुमार।।१।। नये नये पुष्प कुंज के तोरन, नव पल्लव की वंदनवार। चौरी रची कदंबखंडी में सघनलता मंडप विस्तार।।२।। करत वेदध्वनि विप्र मधुपगन, कोकिल त्रिय गावत अनुसार। दीनी भूरि दास "परमानन्द", प्रेम भक्ति रत्नन के हार।।३।।**

वैशाख कृष्णा सप्तमी

श्री विट्ठलनाथजी का पाटोत्सव

शृंगार – पाग कतरा का और धोती पर चाकदार।

वस्त्र – लाल रंग की रूपेरी कोर की धोती तथा केसरी वागा खुले बन्द रुपहरी तुईलेस कोर का। श्रीमस्तक पर चंपाई रंग की गोलपाग पर हीरे का जमाव का कतरा। ठाड़ा वस्त्र हरे रंग के लहरिया के तथा पिछवाई पचरंगी केसरी रुपेरी कोरकी।

आभरण – नित्यानुसार मध्यका श्रंगार हीरा–मोती का।

मंगला में (राग देवगंधार) **यह सुख देखौ री तुम माई।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े)**

शृंगार में (राग बिलावल) **प्रगट भये तैलंग कुल दीप।। (यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **गोकुल में बाजत कहां बधाई।। (यह पूरा पद पेज ७७ पर पढ़े)**

राजभोग मे (राग सारंग) **श्री लक्ष्मण गृह महा मंगल भयो, प्रगटे श्री वल्लभ पूरण काम।। माधव मास कृष्णपक्ष शुभलग्न, उदित एकादशी दूसरो याम।।१।। मंगल कलश चौक मोतिन के, विविध विचित्र चित्र बने धाम।। मंगल गावत मुदित मानिनी, नखशिख रुप काम सी वाम।।२।। मिट्यो तिमिर दुख द्वंद जगत को, भोर भयो मानों मिट गई याम।। "माणिकचन्द" प्रभु सदा विराजो, आय बसो श्रीगोकुल धाम।।३।।**

भोग में (राग नट) **लीला होती जूनी नातर, लीला होती जूनी।। जोपें श्रीवल्लभ प्रभू प्रकट न होते, वसुधा रहती सूनी।।१।। दिन दिन प्रति नई छबी लागत, ज्यों कंचन नग चुनी।। "सगुणदास" या घर को सेवक, यश गावत जाको मुनी।।२।।**

संध्या में (राग कान्हरौ) **हरि जनमत ही आनन्द भयौ।। (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े)**

शयन में (राग कान्हरौ) **यह धन धर्म ही तैं पायौ।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। (पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)**

वैशाख कृष्ण अष्टमी

श्रृंगार – पाग गोल चन्द्रिका और घेरदार वागा का। (एच्छिक श्रृंगार)

वस्त्र – गुलाबी रुपेरी कोर के शुथन तथा वागो घेरदार कटि में पटका। श्रीमस्तक पर गुलाबी पाग पर रुपेरी जरी कामकी गोल चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम तथा पिछवाई गुलाबी रूपेरी कोर की।

आभरण – नित्यानुसार आभरण सभी हीरा मोती के तथा पन्ना व सोना के कर्णफूल धराये गये हैं।

विशेष – आज मेष संक्रान्ति होय तो श्रीजी के सतुवा के भोग गोपी वल्लभ में आवे तथा आज से ही नित्य सतुवा के भोग चालु होय।

मंगला में (राग बिलावल) (चोखड़ा) **धन्य धन्य माधव मास एकादशी।। प्रकटे श्रीवल्लभ सुखरासी।। श्री गोकुल गोवर्धनवासी।। यमुनाकुन्ज निकुंज निवासी।।टेक।। कुंजन कुंज निवास यमुना, पुलिन वेणु बजाईयों।। अकुलाय नव व्रज सुन्दरी तब, सुखद रास रचाईयों।। सात दिन गिरिधर्यो कमल कर, गर्व सुरपति हरण जू।। “दासजन” के हेत प्रकटे, फेर गिरिधर धरण जू।।१।। श्रीलक्ष्मण गह नवनिधि आई।। श्रीवल्लभ द्विज रुप कहाई।। जायो पुत इलंमा माई।। हरखत फूली अंग न समाई।।टैक।। फूली अंग न समाय जननी, करत आनन्द बधावने।। गोरस कीच भई अजर में, दूध दधि सिर नावने।। पहर भूषण मुदित सहचरी, वसन नाना वरनजू।। “दासजन” के हेत प्रकटे, फेर गिरिवर धरण जू।।२।। श्री लक्ष्मणगह होत बधाई।। श्रवण सुनत ब्रज वधु उठधाई।। सहज श्रंगार किये मन भाये।। बोलत जय जय शब्द सुहाये।।टेक।। जय जय शब्द सुनाय बोलत, गीत झूमक गावहीं।। थार कंचन हाथ लीने, जुरि जुरि झूडंन आवहीं।। मुदित दे करतार नाचत, बाजत नूपूर चरणजू।। “दासजन” के हेत प्रकटे, फेर गिरिवर धरण जू।।३।। श्रीलक्ष्मण गह नवनिधि आई।। अदभुत शोभा वरणी न जाई।। कंचन कलश ध्वजा फहराई।। दीपदान कर जुगत बनाई।।टेक।। बनाई जुगत धर दीपमाला, जोत फेली गगन जू।। धेनु धन गह वसन भूषण देत कंचन नगनजू।। मुदित व्है नरनारि जुर, देत असीस चले घरन जू।। “दासजनके” हेत प्रकटे, फेर गिरिवरधरन जू।।४।।**

शृंगार में (राग आसावरी) **माईरी कमल नैन श्याम सुन्दर झुलत हैं पलना।। बाललीला गावत सब, गोकुल की ललना।।१।। लाल के अरुन तरुन चरन कमल, नखमनि शशि जोती।। कुंचित कच भ्रमराकृत, लर लटकत गज मोती।।२।। लाल अँगूठा गहि कमल पान, मेलत मुख माही।। अपनौं प्रति बिंब देखि, पुनि पुनि मुसिकाई।।३।। रानी जसुमति के पुन्य पुन्ज, बार बार लालै।। "परमानन्द" स्वामी गोपाल, सुत सनेह पालै।।४।।**

राजभोग आते समय (राग आसावरी) (बधाई) **धन्य माधव मास, कृष्ण एकादशी भट्ट लक्ष्मण धाम, प्रगट वल्लभ भये।। धन्य चम्पारण्य, धन्य धरनी सकल धन्य, धटिका प्रहर, धन्य अति पल भये।।१।। धन्य यशपुंज, पावन करन श्रष्टि कों, प्रगट करी कृष्णलीला, सहित सो किये। धन्य गावत, "रसिकदास" बारंबार कीजिये सफल, मनोरथ हिये।।२।।**

राजभोग में (राग सारंग) **श्री लक्ष्मण भूप कुमार प्रकटे श्रीवल्लभ पूरणकाम।। (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े)**

भोग में (राग नट) **जो पें श्रीवल्लभ प्रगट न होते।। (यह पूरा पद पेज ६० पर पढ़े)**

संध्या में (राग ईमन) **श्री लक्ष्मण कुल चन्द उदित जग उद्योतकारी।। (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े)**

शयन में (राग नायकी) **आनन्द बधावनों नन्द महरजू के धाम।। (यह पूरा पद पेज ७३ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **कुसुम सेज पिय प्यारी पोढे, करत है रस बतीयां।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े)**

वैशाख कृष्ण नवमी

श्रृंगार – पाग चन्द्रिका का

वस्त्र – लाल मलमल सुनेरी कोर के सुथन तथा वागा घेरदार, कटि में पटका। श्रीमस्तक पर लाल पाग पर मोर पंख की चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र पीले तथा पिछवाई लाल रुपेरी कोर की।

अभरण – नित्यानुसार पन्ना, मोती व सोने का छोटा श्रृंगार धराया गया है। पाग पर लूम तथा मोरपंख की सादी चन्द्रिका धराई गई। कर्ण में कर्णफूल तथा श्वेत व गुलाब की दो माला धराई गई है।

विशेष – बधाई तथा आज के दिन स्थाई श्रृंगार है।

मंगला में (राग बिलावल) **श्रीलक्ष्मण गह आई नवनीधि।। (यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **श्री वल्लभ पुरषोत्तम रुप।। सुन्दर नयन विशाल कमल रंग, मुख मदु बोलत वचन अनूप।।१।। केटि मदन वारों अंग अंग पर, भुज मृणाल अति सरस स्वरुप।। दैवी जीव उद्वारन प्रकटे, दास शरण लक्ष्मण कुल भूप।।२।।**

राजभोग आते समय (राग धनाश्री) **रानी तैरो चिरजीयौ गोपाल।। बेगी बड़ौ बढ़ होय विरध लट, महरि मनोहर बाल।।१।। उपजि पर्‌यो यह कूखि भाग्य बल, समुद्र सीप जैसे लाल।। सब गोकुल के प्राण जीवन धन, बैरिन के उर साल।।२।। "सूर" की तौ जीय सुख पावत है, देखत श्याम तमाल।। रज आरज लागौ मेरी अँखियन, रोग दोष जंजाल।।३।।**

(राग धनाश्री/सारंग) **यशोदारानी जायौ है सुत नीको।। आनन्द भयौ सकल गोकुल में, गोप वधू लाई टीको।।१।। अक्षत दूब रोचना रोरी, नंदे तिलक दही को।। अंचर बारि बारि मुख निरखत, कमल नैन प्यारौ जी को।।२।। अपने अपने भवनतें निकसी, पहरे चीर कसूंभी को।। "यादवेन्द्र" व्रजकुल प्रतिपालक कंस काल भय भीको।।३।।**

भोग में (राग सारंग) आज बधावो श्री लक्ष्मण राय कें, इलंमा जायो श्री वल्लभलाल।। ध्रुव।। (यह पूरा पद पेज ७५ पर पढ़े)

संध्या में (राग नट) श्रीमद् वल्लभ रुप सुरंगे।। (यह पूरा पद पेज ६१ पर पढ़े)

शयन भोग आते समय ब्यारु के पद (राग ईमन) तेरे पैयां लागु गिरिधर भोजन कीजे।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १६ पर पढ़े)

शयन में (राग कान्हरौ) प्रगट भये श्रीवल्लभराज।। सुतमुख निरखत अति मन ही मन, फूले श्री लक्ष्मणभट द्विजराज।।१।। मंगल कनक कलश धर नारी, लाई सब मंगलको साज।। देतदान कंचन मणि माणिक, पूरे सबके मनके काज।।२।। नाचत गावत करत कुलाहल, गिनत नही मन राजाराय।। श्रीव्रजपति प्रिय सदा बिराजों दास "रसिक" तहाँ बलबल जाय।।३।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पोढिये लाल लाडिली संग ले।। (पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)

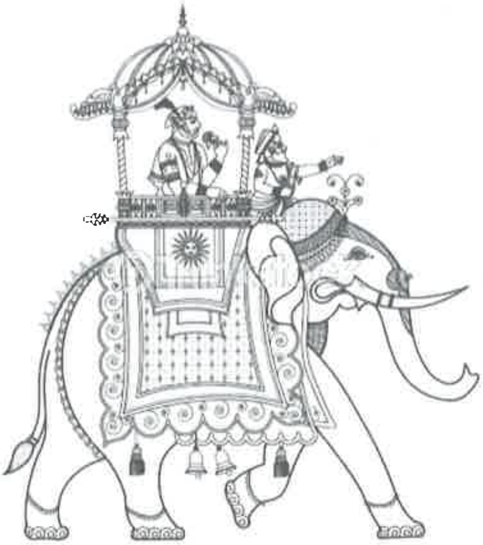

वैशाख कृष्ण दशमी

श्रीपांच स्वरुप का उत्सव– देहरी तथा वन्दनमाल

श्रृंगार – मुकुट काछनी का स्थाई श्रृंगार।

वस्त्र – लाल रंग के शुथन तथा काछनी रुपेरी कोर की एवं रासका पटका। श्रीअंग में श्याम साटन की चोली। श्रीमस्तक पर लाल पाग पर मोती के काम का मुकुट, ठाडा वस्त्र सफेद, पिछवाई चित्राम की (इस पिछवाई में श्रीनाथजी के आजु बाजु श्रीनवनीतप्रियाजी श्री मथुराधीशजी, श्री विठ्ठलनाथ जी तथा श्रीद्वारकाधीश जी बिराजे है।) तथा गोस्वामी बालकों के चित्रकाम की पिछवाई धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार। हीरा, मोती, माणक व सोने के आभरण का भारी श्रृंगार किया गया है।

विशेष – गो.ति. श्री गावेर्धन लाल जी महाराज श्री ने आज ही के दिन ये पांचो स्वरुप पधराकर छप्पन भोग आरोगाया।

मंगला में (राग देवगंधार) **यह सुख देखोरी तुम माई। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **नन्दराय के नवनिधि आई।। (यह पूरा पद पेज ६२ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **श्रीलक्ष्मण गृह बजत बधाई।। पूरण ब्रह्म प्रकटे पुरुषोतम, श्री वल्लभ सुखदाई।।१।। नाचत वद्ध तरुण और बालक, उर आनन्द न समाई।। जय जय यश बंदीजन बोलत, विप्रन वेद पढ़ाई।।२।। हरद दूब अक्षत दधि कुंकुम, आंगन कीच मचाई।। बंदनमाल मालिन बांधत, मोतिन चोक पुराई।।३।। फूले द्विज कर दान देत हें, पटभूषण झरलाई।। मिट गये द्वन्द "दीन दासन" के, मनवांछित फल पाई।।४।।**

राजभोग में (राग सारंग) **विहरत सातों रुप धरें।। सदा प्रकट श्रीवल्लभ नन्दन द्विज कुल भक्ति वरें।।१।। श्रीगिरिधर राजाधिराज, व्रजराज उद्योत करें।। श्री गोविन्द इन्दू जग किरणन, सीचंत सुधा खरे।।२।। श्रीबालकृष्ण लोचन विशाल देख, मन्मथ कोटि डरें।। गुण लावण्य दयाल करुणा निधि, गोकुलनाथ वरें।।३।। श्रीरघुपति यदुपति घनसांवल, मुनिजन शरण परें। "छितस्वामी" गिरिधरन श्री विठ्ठल, जिहिं भज अखिल तरें।।४।।**

(राग सारंग) ऐसी बंशी बाजी, बन घन में व्याप रही ध्वनि, महा मुनीन की, समाधी लागी।। (यह पूरा पद पेज ६३ पर पढ़े)

भोग में (राग नायकी) बधाई री बाजत आज सुहाई, श्रीगोकुलराज के धाम।। रानी जसुमति ढ़ोटा जायौ है, मोहन सुन्दर श्याम।।१।। सुनि सब गोप घोष के वासी, चले बर बसन बनाय।। ता पुर की मंगल व्रज बीथिन, भीर न निकस्यौ जाय।।२।। आई सब गोप वधू मिलि साथन, हाथन कंचन थार।। कमल बदन सब बनी कमला सी, झलकत कुण्डल हार।।३।। नाचत ग्वाल करत कुतूहल, दधि धत खोरें गात।। देत मंगाय बसन अरु भूषण, फूले अंग न मात।।४।। जो जाके मन हुती कामना, सो दीनी नन्दराय।। “नन्ददास” कों दई कृपा करि, अपने ललनकी बलाय।।५।।

संध्या में (राग कन्हरौ) श्री वल्लभ मधुराकृति मेरे।। सदा वसो मन यह जीवन धन, सबहिन सों जु कहत हूं टेरे।।१।। मधुर वचन और मधुर नयन भ्रोंह युग, मधुर वदन अलकन की पांत।। मधुर भाल बीच तिलक मधुर अति, मधुर नासिका कही न जात।।२।। अधर मधुर रस रुप मधुर छबि, मधुर मधुर दोऊ ललित कपोल।। श्रवण मधुर कुण्डल की झलकन, मधुर मकर मानों करत कलोल।।३।। मधुर कटाक्ष कृपा रस पूरण, मधुर मनोहर वचन विलास।। मधुर उगार देत दासन को ,मधुर बिराजत मुख मदुहास।।४।। मधुर कण्ठ आभूषण भूषित, मधुर उरस्थल रुप समाज।। अति विशााल जानु अवलंम्बित, मधुर बाहु परिरंभण काज।।५।। मधुर उदर कटि मधुर जानु युग्म, मधुर चरण गति सब सुखरास।। मधुर चरण की रेणु निरन्तर, जनम जनम मांगत “हरिदास”।।६।।

ब्यारु का पद (राग ईमन) लाडिले बोलत है तोहि मैया।। (पूरा पद पेज १६ पर पढ़े)

शयन में (राग कान्हरौ) श्रीमद् वल्लभ रुप सुरंगे।। (यह पूरा पद पेज ६१ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पोढिये लाल लाडिली संग ले।। (पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)

वैशाख कृष्ण एकादशी

"श्रीमद् वल्लभाचार्य जी का प्राकट्य उत्सव"

आज नगारे बजते है, बन्दन माल तथा अभ्यंग स्नान होते हैं।

श्रृंगार – कुल्हे जोड तथा चाकदार वागा का। स्थायी श्रृंगार आज ही के दिन श्रीनाथजी का गिरिराजजी से प्राकट्य हुआ है।

वस्त्र तथा आभरण – केसर सों रंगे हुऐ केसरीया शुथन तथा वागा चाकदार, रुपेरी कोर के, श्रीमस्तक पर केसरिया कुल्है सादा पर पांच मोर पिछ का जोड़ तथा ठाडीलड मोती की, दोहेरा पान पन्ना को शीर पेच, शीशफुल कुन्डल सभी हीरा कें तथा वेणी श्याम हीरा मोती की। श्रीमुखारबिंद पर तिलक माणक का, अलंकार कमलाकार नकवेशर माणक मोती के, चिबुक हीरा का तथा श्री अंग में भारी श्रंगार वनमाला का। हांस हीरा का, हार हीरा पन्ना मोती के तथा फुल की माला गुजांमाल। श्री अंग में श्रृंगार दो जोड़ी का। श्री हस्त मे नखावली व मुद्रिका है। हस्तपान, पौची, बाजुबंद, अनवट बिछिया, पग पान, पायल पेजनी, जेहंर सभी हीरा पन्ना के। नुपुर सोना के, वेणु वैत्र हीरा जड़े हुवे। फूल की छडी। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा श्रीजी की कन्दरा पर मोती तथा भरतकाम का चोखटा तथा पिछवाई केसरिया।

उत्सव विशेष : राजभोग के दर्शन में श्रीनाथजी को प्रथम तिलक अक्षत होकर आटे से बनी दिवला में आरती होय। मुठिया वार कर राई–लोन करे न्योछावर हुये बाद में श्री महाप्रभुजी की पादुका के तिलक होय तथा श्री पंड्या जी द्वारा श्रीमहाप्रभुजी की जन्म दिवस को वर्षफल बाँच्यो जाय। आज गोपी वल्लभ भोग मे जलेबी आवे। सखडी में पांच भात तथा सेव बड़ा तथा दूधघर की सामग्री विशेष आवे। मन्दिर के द्वारन पर कुमकुम के पांच पांच छापा लगे। श्री महाप्रभुजी की पादुका को अभ्यंग स्नान, श्रृंगार व अलग भोग आता है।

मंगला में (राग भैरव) आज बड़ौ दरबार देख्यो, नन्दराय तेरो।। भयो सुख सबै भाति दुख गयौ मेरौ।।१।। बजत निशान ढ़ोल, ढ़ाढ़िन यश गायौ।। सोवैहे कहा उठि, जसुमति सुत जायौ।।२।। केई देखि लिये जात, कीरति तिहारी।। गायन के ठाट बटत, भीर भई भारी।।३।। सुफल फूलन फूली, जसुमति रानी।। जाके सर्व दीये, वसुधा अघानी।।४।। मांगत जो लिये जात, भीख जो तिहारी।। तिहूं लोक सुन्यों जस, भयौ अतिभारी।।५।। अब लग नेम लिये रह्यो बरसाने।। लैहों भीख जब, पूत व्है है महराने।।६।। अबकें महरि मोहि, मांगनौ न कीजै।। "सूरदास" कहै मोहि, दास पदवी दीजै।।७।।

(राग देवगंधार) **जन्माष्टमी की बधाई** व्रज भयो महरि कै पूत, जब यह बात सुनी।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े)

अभ्यंग समय (राग धनाश्री) रानी जू, आपनु मंगल गावे।। आज लालको जन्म द्योंस हैं, मोतिन चौक पुरावें।।१।। गाम गाम ते जाति आपनी, गोपिन न्यौति बुलावे।। अन्वाचार्य मुनि गर्ग परासर, तिन पै वेद पढावे।।२।। हरदी तेल सुगंध सुवासित, लालें उबटि न्हवावें।। हरि तन ऊपर वारि न्यौछावरि, जन "परमानन्द" पावै।।३।।

शृंगार में (राग बिलावल) आनन्द आज नन्द जू के द्वार।। दास अनन्य भजन रस कारन, प्रगटे श्याम मनोहर ग्वार।।१।। चन्दन सकल धेनु तन मंडित, कुसुम दाम शोभित आगार।। पूरन कुंभ बने कंचन के, बीच रुचिर पीपर की डार।।२।। युवती यूथ मध्य गोप बिराजत, बाजत प्रणव मदंग सुतार।। "हितहरिवंश" अजिर ब्रज वीथिनि, दूध दही मधु घत के खार।।३।।

राजभोग आने पर (राग धनाश्री) हो वृज मांगनौ जू, व्रज तज अनत न जाऊं।।धु।। बड़डे भूपति भूतल महियां, दाता सूर सुजान।। कर न पसारों सीस न नाऊं, या व्रज के अभिमान।।१।। सुरपति नरपति नागलोक पति, मेरे रंक समान।। भांति भांति मेरी आशा पूजी, यै व्रज जन जिजमान।।२।। मैं व्रत करि करि देव मनाये, अपनी घरनी संयूत।। दियौ विधाता सब सुख दाता, गोकुलपति के पूत।।३।। हों अपनौ मनभायौ लैहों, कित बौरावत बात।। औरनको धन घन ज्यों बरखत, मो देखत हंस जात।।४।। अष्टसिद्धि नवनिधि मेरे मन्दिर, तुव प्रताप व्रज ईश।। कहत "कल्याण" मुकुन्द तात, कर कमल धरौ मम शीश।।५।।

राजभोग में (राग सारंग) **घर घर ग्वाल देत है हेरी।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े)**

नन्दजु मेरे मन आनन्द भयौ, सुनि गोवर्धन तें आयौ।। तुम्हारें पुत्र भयौ हों सुनि के, अति आतुर उठ धायौ।।१।। बंदिजन और भिक्षुक सुनि सुनि, देश देशतें आये।। एक पहले हीं मेरी आशा लागी, बहोत दिनन के जाये।।२।। तुम दीने कंचन मणि मुक्ता, नाना बसन अनूप।। मोहि मिलें मारग मे मानों, जात कहूँ के भूप।।३।। दीजै मोहि कृपाकरि सोई, जो हों आयौ मांगन।। जसुमति सुत अपने पायन चलि, खेलन आवै आंगन।।४।। कोटि देहुं तो परयौ रहुंगौ, बिनु देखे नहीं जाऊँ।। नन्दराय सुनु विनती मेरी, तबही बिदा भले पाऊं।।५।। तुम तौ परम उदार नंदजू, जो मांग्यों सो दिनों।। ऐसौ और कौन त्रिभुवन में, तुम सर को कीनौ।।६।। मदनमोहन मैया कहि बोले, यह सुनकें घर जाऊं।। हौ तो तुम्हारे घर को ढाढ़ी, "सूरदास" मेरौ नाऊं।।७।।

केसर की धोती कटि, केसरी उपरना ओढ़ें, तिलक मुदा धर ठाडें, मंदिर गिरिधर के।। दोऊ जन की प्रीति कछू, काहू पे न कही जात, उत नंदनदन इत वल्लभवर के।।१।। करके श्रंगार आज, लाडिले गोपालजू को, लेत है बलाय, वार वार दोउकर के।। बेउ मुसिकात जात, फूले न समात गात, कहे "हरिदास" में, निहारे दृगभर के।।२।।

भोग संध्या में (राग टोडी/गौरी) **आज बधायो श्री व्रजराज के रानीजू जायो है मोहन पूत।।ध्रुव।।** मास भादों द्योंस आठें, रोहिनी बुधवार।। यशोदा की कूखि प्रगटे, श्रीकृष्ण लियौ अवतार।।१।। बहुत नारि सुहाग सुन्दर, सबै घोष कुमारी।। सजन प्रीतम नाम ले ले, दे परस्पर गारी।।२।। पुत्र मानों भये घर घर, निर्तत ठाम ठाम।। नन्द द्वारे भेंट लै लै, उमग्यौ गोकुल गाम।।३।। साथिये श्यामा धरत द्वारें, सात सींक बनाय।। नव किसोरी मुदित व्है व्है, गहत जसुमति पाय।।४।। चौक चंदन लीपि के, आरती धरी है संजोय।। कहत घोष कुमार ऐसौ, आनन्द जो नित होय।।५।। एक मानिनी मंगल गावे, लीला गावें ग्वाल।। एक माखन दूध दधि लै, छिरकत फिरत है बाल।।६।। एक हेरी दै दै नाचे, एक भेंटत धाई।। एक काहू बदत नांही, एक खिलावत गाई।।७।। एक नारी सुहाग सुंदर, एक जोबन जोरि।। एक काहू बदत नांही, एक हँसत मुख मोरि।।८।। कृष्ण जन्म सुन प्रेम सागर, होत घोष विलास।। देखी व्रजकी संपदा जन फूले "माधोदास"।।९।।

भोग संध्या में (राग कान्हरौ) **नेन कटाक्ष के बान चलावत, वल्लभ प्रितम प्यारो री।। घायल सी हों घूमत डोलत, नेन निरख छबि हारों री।।१।। प्रानजीवन धन मेरे वल्लभ, इन नैनन को तारो री।। "रसिक" श्रीवल्लभ मुख मुसकनि पर, तन मन धन सब वारों री।।२।।**

शयन भोग आते समय (राग कान्हरौ) **श्री वल्लभ लाल बियारु कीजे।। पूरी शाक संधानो खटरस, बिलसारु रुचिकर ही लीजे।।१।। गुंजा मठड़ी जलेबी घेवर, थपड़ी सेव चना की लिजे।। वृंदावनचन्द जेंवत रुचि सों, जूठन "रामदास" को दीजे।।२।।**

शयन में (राग कान्हरौ) **श्री वल्लभ मधुराकृति मेरे।। (यह पूरा पद पेज ८५ पर पढ़े)**

(राग ईमन) (ब्यारु के पद) **अहो बल जिय अधिक डरात।। गोधन किन ले आवो अबे, कित परत ही रात।।१।। एक ही थार में जेवत दोऊ, यशुमति करत विचार।। सुन्दर स्याम देत हुंकारी, जननी प्रीत विचार।।२।। बालक कान्ह निपट भोरे हैं, सिखवत रही हो बात।। तुम अग्रज वसुदेव के नन्दन, जानत हो सब घात।।३।।**

(राग बिहाग) **सुखद सेज पोढे श्रीवल्लभ, संग पोढे श्रीनवनीत प्रिया।। ज्यों जसुमति सुत नंदनदन को, त्यो मुदित मनमाहि हिया।।१।। हुलरावत दुलरावत गावत, अंगुरिन अग्र दिखाय दिया।। कहत न बने देखत दग नेनसों, दुख बिसरत सुख होत जिया।।२।। डरप जात बालक संग पोढे, हावभाव चित चाव किया।। "परमानन्ददास" गोपीजन सो, जस गायो घोख त्रिया।।३।।**

वैशाख कृष्ण द्वादशी

(प्रति श्रृंगार)

वस्त्र – रुपेरी कोर का केसरिया पिछोरा। श्री मस्तक पर कल के अनुसार श्रृंगार। ठाडा वस्त्र सफेद कन्दरा पर फूल का चोखटा पिछवाई चित्राम की चम्पारण्य में अग्निकुण्ड में से श्री वल्लभाचार्यजी प्रकट हुवे वह।

आभरण – एकादशी के अनुसार

विशेष – आज कीर्तन मे बधाई गाई जाती है। झांझ नही बजती है तथा रीत के कीर्तन गये जाते हैं।

मंगला में (राग बिलावल) **मूल पुरुष नारायण यज्ञ, श्रुति अवतार भये सर्वज्ञ, शाखा तैत्तरीय गोत्र भारद्वाज, तैलंग कुल उदित द्विजराज।**

छंद – **द्विजराजतें हरि आय प्रगटे, सोमयज्ञ कियो जबे। कुंडतें हरि कही बानी, जन्म कुल तुम्हरे अबे। चकित तत् क्षण भये सब जन, ऐसी अबलों न भई कबे। सुनत ही मन हरख कीनो, धन्य–धन्य कह्यो सबें।।१।। तिनके पुत्र भये गंगाधर। तिनके गणपति सुत श्री वल्लभ वर। श्री लक्ष्मणभट्ट अनुभव टेव। शुद्ध सत्व ज्यों श्रीवसुदेव।। सत्व गुण विद्या पयोनिधि, विशद कीर्ति प्रकटई। गाम कांकरवार में रही, जाति सब हरखित भई। पर्व पर सकुटुम्ब लेकें, चले प्रागकुं, साथ लें। स्नान–दान, दिवाय द्विज कूं, चले काशी पात ले।।२।। कछुक दिन रही के चले सब दक्षण। आनंदित तनु सकुन सुलक्षण। चंपारण्यमें जब आये। इलम्मागारु गर्भ स्रवित जताये।। स्राव जानि चले तहांते, नगर चौड़ामें बसे। जगत में आनंद फेल्यो, दशों दिशा मानो हँसे। चेन है सुनि चले काशी, फेर वही बन आवही। अग्नि चहुंथा मध्य बालक, देखि सन्मुख धावहीं।।३।। मारग दियो जानि जिय माता। लिये उछंग मोहे दियो है विधाता। तात सुनत दौरि कंठ लगाये। तिंहिं छिन मंगल होत बधाये।। मंगल बधायो होत तिहुं पुर, देव दुंदुभि बाज हीं। जोतसी को लग्न पूछत, प्रथम समयो साध हीं। धन्य संवत पंद्रहा, पैंतीस माधव मास है। कृष्ण एकादशी श्रीवल्लभ, प्रकट वदन विलास है।।४।। श्रीवल्लभकूं ले आये काशी। सुंदर रुप नयन सुख राशी। सात बरस उपवीत धराये। तबतें विद्या पढ़न पठाये।। पढ़े चारों वेद अरु, खटश्शास्त्र महिना**

चारमें। तातकूं अचरज भयो, यह कौन रूप विचार में। नींद आई कह्यो प्रभु, संदेह क्यों तुम करत हो। प्रथम बानी भई है सो, प्रकट जानो अब भयो।।५।। जाग परी कह्यो पत्नी आगे, ये है पूरण ब्रह्म अनुरागे। श्रीमुख वचन कहे श्रीवल्लभ, मायामत खंडन भयो सुलभ।। सुलभतें दक्षिण पधारे, ग्यारे बरसको वपु धरे। देख मामा हरखकें, आदर कियो आवो घरे। विद्यानगर कृष्णदेव राजा, बहुत मतही जहां मिले। जीत के कनकाभिषेक सूं, पढ़े आवत इहां पहिले।।६।। रामानुज अरु मध्वाचार्य। विष्णुस्वामी, निमादित्य हरिभज। शंकरमें अनुसरत और मत। युक्ति बलतें आज सबल अति। सबल सुन आपुहि पधारे, द्वारपें पहुंचें जबें। भत्य दौरि प्रताप बरन्यो, सभामें जु पधारिये। सुनहो विनती कृपासागर, दुष्ट मतहि विदारिये।।७।। गजगति चाल चले श्रीवल्लभ। इनकी कृपा भये सब सुल्लभ। रविके उदय किरण ज्यों बाढ़ी। तैसी सभा पांत उठि ठाढ़ी।। ठाढ़े सब स्तुति करि जब, कियो 'मायामत' खंडन। शब्द 'जै जै' होत सब मुख, भक्ति पथ भुव मंडन। स्तुति करे द्विज हाथ जोरें, राय मस्तक नावहीं।। परम मंगल होत है, 'कनकाभिषेक' कराव हीं।।८।। पाछे जलसों न्हाय बिराजे। विनती करी राय मन साजे। द्रव्य सबे अंगीकृत करिये। प्रभु बोले यहि नांहि ग्रहिये।। ग्रहिये नाहिन स्नान जलवत। बांट सबकों दीजियें। बांट दीनो करी बिनति। मोहि शरणजु लीजिये। कृपा करि के शरण लीनो। थार भरि महोरें धर्यो। सप्त लेकें कह्यो दैवी, द्रव्य अंगीकृत कर्यो।।९।। तहांते पंढरपुर जु सिधारे। श्रीविट्ठलनाथ मिलनकुं पधारे। भीमरथीके पार मिले जब। दोउ तनमें आनंद बढ्यो तब।। बढ्यो आनंद करी बिनती, आपको यह श्रम भयो। कहि श्रीविट्ठलनाथजी ने, मित्रता पथ प्रकटियो। फेर श्रीगोकुल पधारे, निरख यमुना हरख ही।। संग दमलादिक हते, तिनपे कपा रस बरख ही।।१०।। एकसमें चिंता चित्त आई, दैवी किहिं बिध जानी जाई? आसुरी सूं सब मिलित सदाही, भिन्न होय सो कौन उपाई।। भिन्न को जब चित्त धर्यो, तब प्रभु पधारे तिहिं समे। मधुर रूप अनंग मोहित, कहत सुध कीने हमें। करो अबतें ब्रह्म को, संबंध दैवी सष्टि को। पांच दोष न रहे ताके, 'निवेदन' करो वष्टि को।।११।। वचन सुनि हरखे श्रीवल्लभ, यह आज्ञातें परम अति सुल्लभ। कंठ पवित्रा ले पहराये, मिसरी भोग धरी मन भाये। भयो भायो चित्तको, तब पुष्टि पथकूं अनुसरे। शरण जे आवत निरंतर, काल–भयतें ना डरे। प्रकट सब लीला

दिखावत, नंदनंदन जे करी। अवनि पर पद पद्म राखी, परिक्रमा मिश उर धरी।।१२।। फेरि पंढरपुर जब आये, श्रीविट्ठलनाथ कहि मन भाये। 'करि विवाह' बहु रूप दिखाओ, मेरो नाम सुवन को धराओ। धरो चित्त में बात यह काशी विवाह जु होयगो। मैं कह्यो द्विज आय विनती, करे चरण समोयगो। आय वहांते विवाह कीनो, अधिक मंगल तब भयो। नाम धर्यो 'श्री महालक्ष्मी', देखि जोरि दुःख गयो।।१३।। परिक्रमा त्रीजी चित्त आई। निकस चले श्रीवल्लभराई। झारखंड में प्रभु ने जताई, अबते मोहि मिलो मनभाई।। मिलेंगे हरिदासपें, जहां तीन दमन कहावहीं। इन्द्र, नाग जु देवदमन, सो मेरो नाम धरावहीं। फेरके जब व्रज पधारे, पांच सेवक संग हें। सदू है आन्योर में, तहां द्वार पें ठाड़े रहे।।१४।। सदू कहि 'स्वामी कछु खैहे? मेघन कहि सेवकको लैहें'। इतने प्रभु गिरि ऊपर बोले। 'लाई नरो दूध' रहे अनबोले।। बोली नरो 'यह पाहुने आये, तिनहीं को बैठारिये'। प्रभु कहत 'मोहे बेर लागत, भली चित्त बिचारिये। ले गई पय प्याय आई, देख श्रीवल्लभ कह्यो। 'बच्यो होय कछु हमें दीजें, बोल पहेलो ही गह्यो।।१५।। देख नरो बोली 'हों वारी। नाम दीजिये गर्व प्रहारी'। नाम दीनो पूछि वे कहा है। कहि पर्वत जाओ तहांहे। तहां देखे प्राणपति सब, हुलसि दोउ तन फूलही। वहीं समे सुख कहि न आवे, पंगु गति–मति भूलही। हंसि कह्यो 'सकुटुंब आवो, निकट रहि सेवा करो'। मानि वचन प्रमाण कीनो, सासरे दिश पग धर्यो।।१६।। कछुक दिन रहि संग ले आये। बसे अडेलमें निज हरखाये। संवत पन्द्रह सडसठ आयो। आसो वदि द्वादशी शुभ गायो। गायो श्रीगोपीनाथजी, जब जन्म लीनो आयके। जानि बलको रूप हरखित, देत दान बढ़ायके। फेरके चरणाट आये, कछुक दिन रहे जानके। धन्य संवत पंद्रह, धन बहोंतरा शुभ मानके।।१७।। पोष कृष्ण नवमी जब आई। घर–घर मंगल होत बधाई। श्रीविट्ठलनाथ प्रकट भये सुनि के। कहत फिरत आनंद गुण गनि के। आनंद बाढ्यो चहुं दिशा, छबि निरखि श्रीवल्लभ हँसे। बेउ कछु मुसकाय चितये, दोऊ हँसन मेरे मन बसे। तिलक मृगमद छिप्यो हरखित, कहांलो गुण गाईये। कृपातें उछलित निज रस, छिपत नाहीं छिपाईये।।१८।। श्री गोकुल में वास सुहायो। श्री रूक्मिणी, पद्मावती पति गायो। श्री गिरिवरधर जिनहीं छबीलो। श्री नवनीत प्रिय जिन ही अरविलो। प्रिय श्री मथुरेश, श्री विट्ठलेश, श्री द्वारकेश जु। श्री गोवर्धनधर, श्रीगोकुलचन्द्रमा, श्री मधुरेश जु।

श्रीमदनमोहन अष्ट, यह विधि रमण श्रीविट्ठलनाथ के। तातको चित्त जानि सेवा, विस्तरी सब साथके।।१६।। पंद्रह से सत्ताणुं कार्तिक। विमल द्वादशी मंगल नित ढिंग। प्रथम पुत्र प्रकटे श्रीगिरिधर। षट्गुणधर्मी धर्मधुरंधर।। धुरंधर ऐश्वर्य श्रीगोविंद, पंचदश, निन्यानवें। ऊर्ज शामल अष्टमी शुभ, गुरु सुदिन प्रकटे जबें। ऋतु वियत श्रंगार आश्विन तेरस भ्राजहि। श्रीबालकृष्णजी महापराक्रमी, वह सुख सोलें राजही।।२०।। कवि सह सुदि सातें श्रीगोकुलपति। यश स्वरूप माला स्थापित रति। सोरह से ग्यारह कार्तिक सित, अर्क बुध रघुनाथ श्रीसहित। हेतु निज अभिधान प्रकटे। तात आज्ञ मानके। तिथि कला बुध मधु छठ। विमल ज्ञान बखानके। श्रीयदुनाथ प्रकटे रह्यो। विरह श्री घनश्याम स्वरूपके, सह कृष्ण तेरस रविज रिक्ष, सतकला श्रीविट्ठलभूपके।।२१।। भामिनी, रानी, कमला बखानी। पारवती, जानकी महारानी, कृष्णावती मिलि सातों कहाये। अलौकिक अग्निकुल सब, अलौकिक अष्ट छाप है। अलौकिक सब भक्तजन जो, शरण लीने आप है। यथामति कछु बरनि आई, जानियो यह दास है। "श्रीद्वारकेश" निरोध मांगे, यही फलकी आस है।।२२।।

(इसकी मंगला में आखरी दो तुक छोड़कर श्रृंगार में गाई जाती है।)

राजभोग आते समय (राग सारंग) **भक्ति सुधा वरखतही प्रकटे श्रीवल्लभ द्विजराज।। (पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **दान देत श्री लक्ष्मण प्रमुदित, मणि माणिक कंचन पट गाय।। श्री व्रजराज कुंवर यशोदासुत, करुणाकर प्रगटे हरि आय।।१।। रही न मन अभिलाष कछू अब, याचक नाम हतो कोउ जोय।। "विष्णुदास" उमगे अंतर ते, दे असीस तुमसे नहि कोय।।२।।**

भोग में (राग नट/बिहाग) **श्रीलक्ष्मण गृह आज बधाई।। प्रकटे श्रीवल्लभ सुख रासी, भक्तन के सुखदाई।।१।। अद्भुत रुप कहत नहीं आवे, कोटिक काम लजाई।। यह सुन नरनारी मंगल सज, गावत आये धाई।।२।। माधवमास कृष्ण एकादशी, शुभ घरी लगन सुहाई।। देत दान लक्ष्मण आनंदित, जातकर्म करवाई।।३।। मात इलंमा तनमन फूली, आनन्द उर न समाई।। देख थके सुर पति सुर वनिता, नत्यत अति सुखदाई।।४।। मायामत कों दूर करेगें, पुष्टि भक्ति प्रकटाई।। "सुगणदास" पर कृपा बहुत कर, राख लियों शरणाई।।५।।**

संध्या में (राग कान्हरौ/नायकी) **सुनी बड़भागिन हो नन्दरानी गोद खिलावत लाल।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े)**

शयन में (राग कान्हरौ) **यह धन धर्म ही तैं पायौ।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े)**

श्रीवल्लभ लाल आंगन मध्य खेलन।। पहले प्रगट श्री यशोदा नन्दन, गोपीन को रस देनन।।१।। अबही प्रगट श्री लक्ष्मण नन्दन, श्रीभागवत रस एनन।। "परमानन्द" प्रभुकी छबि निरखत, सुख आवत नहीं बेनन।।२।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग/केदारों) **सुखद सेज पोढ़े श्रीवल्लभ संग पोढ़े श्रीनवनीत प्रिया (पूरा पद पेज ८६ पर पढ़े)**

वैशाख कृष्ण त्रयोदशी

शृंगार – पाग चंद्रिका और धोती उपरणा, राजशाही पटका

वस्त्र – केसरी रुपेरी कोर की धोती तथा पटको। श्रीमस्तक पर केसरी पाग पर रुपेरी जरीके कामकी गोल चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र हरे तथा पिछवाई नन्द महोत्सव, छठीपूजन की पलना झुलाते हुवे श्रीनन्द–जसोदा की कलात्मक चित्राम की धराई है।

आभरण – नित्यानुसार। मोती–माणक व सोने के आभरण, गोल चमक की सोने की चन्द्रिका, कर्णफूल व जड़ाव का भारी शृंगार। दो मालाजी, मोती–माणक का हमेल धराया है।

विशेष – आज से कीर्तन बाल लीला के गाये जाते हैं।

मंगला में (राग रामकली) **बलि बलि चरित्र की गोकुल राय।। दावानल को पान कीयौ, पीवत दूध सिराय।।१।। पूतना के प्रान शोषे, रहै उर लपटाय।। कहत जननी दूध डारत, खीजत कछुव न खाय।।२।। धर्यो गिरिवर दाहिने कर, धरत बाँह पिराय।। शकट भंजन धरत कुच युग, कठिन लागत पाय।।३।। तणावत आकाश तें पटक्यौ, हन्यौ मुष्ट फिराय।। डरत ललना झूलत पलना, खरे देत झुलाय।।४।। बकासुर की चोंच फारी, सुदिस दष्टि दिखाय।। कीर पिंजरा देत अँगुरी, श्याम लेत भजाय।।५।। बिना दीपक भवन द्वारें, श्याम धरत न पाय।। अघासुर मुख पैठि निकस्यो, बच्छ बाल छुड़ाय।।६।। लिख्यौ द्वारें नाग कारौ, स्याम देखि डराय।। सहस्त्र फन पर नत्य कीनों, सप्त ताल बजाय।।७।। घोष नारी संग मोहन, रच्यौ रास बनाय।। कहत जननी ब्याह की तब, हँसत वदन दुराय।।८।। यमुलार्जुन तोरि तारे, ह्रदे प्रेम बढ़ाय।। कहत तात प्रकास पल्लव, देह देत दिखाय।।९।। वृषभ भंजन, हनत केशी, हन्यौ पुच्छ फिराय।। डरत सखान समेत मोहन, देखि ब्याई गाय।।१०।। हरे ब्रह्मा बाल बच्छ, कृत हेत दोरी माय।। बच्छ ग्वाल समूह सब मिलि, फिरि व्रज रच्यौ है आय।।११।। कहा कहूँ जो एक रसना, बुद्धि और उपाय।। "सूर" प्रभु हरि रसिक नागर अंग अंग नित भाय।।१२।।**

शृंगार में (राग खट/आसावरी) **जदिन कन्हैया मोसों, मैया कहि बोलेगो।। सोदिन शुभ दिन गिनोंगी री आली, रुनक झुनक ब्रज अंगना में डोलेगो।।१।। प्रात ही उठेगों धाय, खिरक दूहेगो गाय, बंधन बछुरवा के चटकदे खोलेगो।। "परमानन्द" प्रभु कुंवर लाडिलो, ग्वालन के अंग संग करत कीलोलेगो।।२।।**

राजभोग आते समय (ग्रह भोजन के पद) (राग सारंग) **बैठे लाल कुंजन में जो पाऊं।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **जब मेरौ मोहन चलैगों घुटुरवन, तब हौ करौंगी बधाई।। सर्वसु वारी दैहुंगी तिहि छिनु, मैया कहि बोलेगो तुतराई।।१।। यशोदा के वचन सुनत "केशो" प्रभु, जननी प्रीति जानी अधिकाई।। नन्द सुवन सुख दियौ मातकों, अति कृपाल मेरौं नन्दललाई।।२।।**

भोग में (राग गौरी) **कौन सुकृत इन व्रजवासिन को, वदत विंरची शिव शेष।। श्रीहरि जिनके हेत, प्रकटे मानुष वेष।।ध्रु.।। जोती रुप जगन्नाथ जगत गुरु, जगत पिता जगदीश।। योग यज्ञ जप तप व्रत दुर्लभ, सो गह गोकुल ईश।।१।। एक एक रोम विराट कूप सम, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड।। लिये उछंग वाही मात यशोदा, अपने नीज भुज दण्ड।।२।। जाके उदर लोक त्रय जल थल, पंचतत्व चहुं खान।। बालक होई झूलत व्रज पलना, जसुमति भवन निधान।।२।। अनुदिन श्रवत सुधारस पंचम, चितामणि सी धेन।। सो तजी जसुमति को पय पीवत, भक्तन कों सुख देन।।४।। करन हरन प्रभु दाता भुक्ता, विश्वंभर जग जानि।। ताहि लगाय माखन की चोरी, बांधत है नन्द जू की रानी।।५।। रवि शशि कोटी कला सम लोचन, त्रिविध तिमिर मिटि जात।। अंजन देत हेत सुत के चक्षु, लेकर काजर मात।।६।। कमला नायक वैकुण्ठ दायक, सुख दुख जाके हाथ।। कान्धे कामरी कर लकुट नग्न पद, वन बछरन के साथ।।७।। वेद वेदान्त उपनिषद खट रस, अरपत भुक्तत नाहि।। गो, ग्वालन मंडली के मध्य, मोहन हंसि–हंसि जुठन खाहि।।८।। क्षिती नापी त्रिपद करुणामय, बलि छल दियो पतार।। देहरी उलंघ सकत नहीं सो प्रभु, खेलत नन्द दुवार।।६।। बकी, बकासुर, सकट, तृणावत, अघ, धेनुक, वृषभास।। कंस, केशी को यह गति दीनी, राखे चरण निवास।।१०।। भक्त वत्सल प्रभु पतित उधारन, रहे सकल भरपूर।। मारग रोकि पर्यो हठ द्वारे, पतित शिरोमणि "सूर"।।११।।**

संध्या में (राग गौरी) तेरी लाल मोहि लागौ बलाय।। बाल गोपाल छगनुवा मेरे, चलो क्यों न अंगना धाय।।१।। लर लटकन मटकन कर पोहोंची, नूपूर बाजे पाय।। चुटकी दै दै ग्वाल नचावत, मुदित यशोदा माय।।२।। आनन्द भरी नन्दजू की रानी, अंग अंग अगनित भाय।। “परमानन्द” नन्द नन्दन को, राखो उर लपटाय।।३।।

शयन में, (राग ईमन) कहो कहाँ खेले हो लालन, बात कहो मोसों बनकी।। आवो उंछग साँवरे मोहन, गोरज पोंछू वदन की।।१।। देखियत वदन कमल कुम्हलानों, और दशा भई या तनकी।। “रसिक” प्रीतम सौ कहत नन्दरानी, बलबल जाऊँ छगन मगन की।।२।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) सोवत नींद आय गई स्याम हि।। महरि उठ पोढ़ाय दुहुन को, आपन लगी गृहकाम हि।।१।। वरजत है घर के लोगन कों, हरी को ले ले नाम हि।। गाढ़े बोल न पावत कोऊ, डर मोहन बलराम हि।।२।। शिव सनकादिक अंत नही पावत, ध्यावत है निश याम हि।। “सूरदास” प्रभु ब्रह्म सनातन, सो सेवत नन्द धाम हि।।३।।

वैशाख कृष्ण चतुर्दशी

श्रृंगार – पाग कतरा और पिछोड़े का। (ऐच्छिक श्रंगार)

वस्त्र – फूल बुंटी के काम का गुलाबी पिछोड़ा तथा लाल ठाड़ा वस्त्र धराया गया है। गुलाबी पाग पर हीरा का जड़ाऊ कतरा। गुलाबी फूल बेल वाली पिछवाई।

आभरण – नित्यानुसार। हीरा–मोती व सोना के आभरण।

विशेष – बाललीला चल रही है।

मंगला में (राग रामकली) **माखन तनक दे री माय।। तनक कर पर तनक रोटी, मांगत चरन चलाय।।१।। तनक से मन मोहन की, लागो मोहि बलाय।। तनक मुख में व्दै दूध दतियां, बोलत है तुतराय।।२।। कनक भूपर करत रिंगन, नेत पकर्यो धाय।। कंपियो गिरि, शेष संख्यो, सिन्धु अति अकुलाय।।३।। तनक माग्यौ बहुत दियो, लियो कंठ लगाय।। "सूर" प्रभु की तनक चुटिया, गुहत मांय बनाय।।४।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **यशुमति दधिमथन करत, बैठी वरधाम अजिर। ठाडे हरि हंसत, नेन्ही दंतियन छबि छाजे।। चितवत चित रह्यो लुभाय, शोभा कुछ कही न जाय। मुनिन के मनहरण को, मोहनी दल साजें।।१।। यशुमति कहें नाचो लाल, देहोंगी नवनीत लोंदा। रूनक झूनक नाचत, पग पेंजनी बाजे।। गावत गुण "सूरदास", सुख छायो भूव आकाश। नाचत त्रिलोकीनाथ, माखन के काजे।।२।।**

राजभोग आते समय (ग्रह भोजन के पद) (राग आसावरी) **हरि भोजन करत विनोद सों।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े)**

राजभोग (राग आसावरी) **तेरे री लाल मेरों माखन खायों।। भर दुपहरी लख सूनो घर, ढ़ोर ढ़डोर, अब ही उठ धायो।।१।। खोल किवार अकेले मंदिर, दूध–दह्यों सब लरिकन खायो।। छींके ते काढ़ खाट चढ मोहन, कछू खायो कछु भू–ढरकायो।।२।। नित्य प्रति हानि कहाँ लौं सहिये, यह ढोटा ऐसे ढंग लायो।। "परमानन्द" रानी तुम बरजो, पूत अनोखो तें ही जायो।।३।।**

(राग सारंग) **मैया मोहि बड़ो कर ले री।। दूध दही धृत माखन मेवा, जो मांगो सो दे री।।१।। कछु होंस राखे जिन मेरी, जोई जोई मोहि रुचे री।। होऊं बेगि मै सबल सबनि में, सदा रहौ निरभै री।।२।। रंग भूमि में कंस पछारौं, घीसि बहा देऊं बैरी।। "सूरदास" स्वामी की लीला, मथुरा राखौ जै री।।३।।**

भोग में (राग नट) **तू नेक बरज री जसोदा मैया, अपने सांवरे को।। घर घर दधि माखन हेरत फिरत, आंखिन मांझ भरत रुप बावरे को।।१।। काहुको न कछु रह न पावे री उद्यम, मेल्यों तनक से ने संग गाँवरे को।। "नन्ददास" प्रभु जसोदा ठाडी हंसत, कहा कहा नही कहति गोपी उधम थावरे को।।२।।**

संध्या में (राग ईमन/पूर्वी) **गोवर्धन चढि टेरी हो, गांग बुलाई धूमरि धौरी। स्याम जलद गंभीर, गरज अति मन्द मन्द, और मधुर मधुर श्रवन, सुनत रही हेरी।।१।। दूध धार धरनी पर, सिंचति धाई सबै, पूंछ फेरी फेरी।। "गोविन्द" प्रभु को मुखार विंद, देखि और हुंकी सब, आस पास रही घेरी।।२।।**

शयन में (राग ईमन) **कनैया मेरो कौन कौन को भावें।। कौन कौन की अंखियां मूंदौ, सब जग देखन आवे।।१।। गोकुल वन्दावन की ग्वालिन, आय चतुर बतरावे।। "रामदास" प्रभु यह डरपत हौ, मत कोऊ द्रष्टि हरि लगावें।।२।।**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **आंगन मे हरि सोय गयेरी।। (पूरा पद पेज २१ पर पढ़े)**

वैशाख कृष्ण अमावस्या

श्रृंगार – मल्लकाछ, टीपारे का।

वस्त्र – लाल मल्लकाछ रुपेरी कोर का एवं पटका। श्रीमस्तक पर सोनरी जरी का टीपारा। ठाडा वस्त्र हरा तथा पिछवाई चित्राम की माखन चोरी की।

आभरण – नित्यानुसार हीरा–मोती के धराये गये है। मध्य का श्रंगार। मयुराकृति, कुंडल, सफेद व गुलाबी पुष्पों की दो मालाजी धराई जाती है।

विशेष – बाललीला चल रही है। इसमें बाललीला के चार शृंगार होते हैं तथा बाललीला के कीर्तन गाये जाते हैं।

मंगला में (राग रामकली) **नन्द सदन गुरुजन की भीर, तामें लालन वदन नीके, देखि नहीं पाऊँ।। बिन देखे रहयो ना जाये, जिय अकुलाय दुख पाय, जदपि बडरे देखन, उठी उठी धाऊँ।।१।। ले चलरी सखी मोही, जमना के तीर, जहाँ होए बलबीर, देख सलोनो मुख, दृगन सिराऊं।। “नन्ददास” प्यासे को पानी पिवाय ले, जिवाय ले जियकी जानत तू, तोसों कहा लौ जनाऊं।।२।।**

शृंगार में (राग टोडी) **ते कहुँ देख्यो री नन्द को नन्दन, मेरी मटकी झटकि के पटक गयो।। माखन चोर, चोर मन लीनो, नेकहु न डर कीनो, नट जो उलटके सटक गयो।।१।। मारग मे रोके रहत अति खोरन में, माखन ले मेरो गटक गयो।। “तानसेन” के प्रभु तुम बहुनायक, नैन सैन दे मटक गयो।।२।।**

राजभोग आते समय (गह भोजन के पद) (राग धनाश्री) **जेवत नन्द कान बलभैया।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े)**

राजभोग (राग आसावरी) **तेरे री लाल मेरों माखन खायो। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े)**

(राग सारंग) **विमल कदम्ब मूल अवलम्बित, ठाडे है पिय भानुसुता तट।। सीस टिपारो कटि लाल काछिनी, उपरेना फरहरत पीत पट।।१।। पारीजात अवतंस रुरत सखी, सीस सेहरो बनी अलक लट।। विमल कपोल कुण्डल की शोभा, मन्द हास जीते कोटी मदन भट।।२।। वाम कपोल वाम भुज पर धर, मुरली बजावत तान बिकट छट।। “गोविन्द” प्रभु के जू श्रीदामा प्रमति, सखा करत प्रसंसा जय नागर नट।।३।।**

भोग में (राग नट) काहे आय न देखिये रानी जू, अपने सुत के करम।। भाजन भवन एको न रह्यो, कह्यो तो आगे हंस परि है, ऐसे जाने को काहू को मरम।।१।। दिन दिन की हानि दुजे, राखतन नेक कान, कहो जु बसवे को कौन धरम।। "नन्द दास" प्रभु, मैया के आगे, साधु व्हें बैठे, चोरी को कहा भरम।।२।।

संध्या में (राग ईमन/कान्हरौ) मोहन माखन चोरी करत फिरत, बरजो हो नन्द रानीजू।। माखन चोरी करे तो भले ही करे, ताको कछु न कहे री माई, और चोरी चित करत फिरत।। ताकों रानी तुम हटको, देखत मनजु हरत।।१।। तनगति मनगति सब बिसरी, री आवें न कछू गृहकाज करत।। निसदिन फिरत संग लागी लागी, "गोविन्द" प्रभुकी मैया सुनि सुनि मन हरखत।।२।।

शयन (राग कान्हरौ) सोहत नासिका गिरिधर गजमोती।। खोलत बीरा खात हंसत डोलत, अरुन अधर की दीनी पोती।।१।। कुण्डल लोल कपोल बिराजत जगमगात मुख मंजुल ज्योंति।। "गोविन्द" प्रभु देख सुख उपज्यो, रसना कहा कही सके मति बोती।।२।।

मान में (राग नायकी) रुसवो न कर प्यारी रुसवो निवारी।। कब की ठाड़ी मनुहार करती हों, रेन रही घड़ी चारी।।१।। मेरो कह्यों तू मानरी सुहागिनी, अति प्रवीन सुकुमारी। "गोविन्द" प्रभु सों तू हिल मिल भामिनी, तन मन जोबन वारी।।२।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पोढ़े माई मदन मोहन श्याम।। (यह पूरा पद पेज २७ पर पढ़े)

वैशाख शुक्ल प्रतिपदा

श्रृंगार – मुकुट काछनी का।

वस्त्र – रूपेरी कोर की लाल काछनी एवं रासका पटका। श्रीमस्तक पर लाल पाग पर सोनेरी जरी के काम का मुकुट, ठाडा वस्त्र सफेद, जामदानी (चिकन) के युगल स्वरुप के निकुंज लीला की पीछवाई धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार मीलवा–हीरा–मोती, माणक–पन्ना व सोना के जड़ाव के आभरण श्रीमस्तक पर स्वर्ण का रत्न जड़ित मुकुट तथा उत्सव के वेणीजी, मयुराकति कुण्डल व श्वेत पुष्पों की दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – आज से लीला निकुंज की, रास व पनघट की चलती है।

मंगला (राग विभास) **गोकुल की पनिहारी, पनिया भरन चली, बडे बडे नयना तामें, फबि रह्यो कजरा।। (यह पूरा पद पेज ३६ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **सुमिरो मन गोंपाल लाल, सुन्दर अति रुप जाल, मिटे हें जंजाल सब, निरखत गोप बाल।। मोरमुकुट सिस धरे, बनमाल सुभग गरे, सबको मन हरे देख, कुण्डल की झलक गाल।।१।। आभूषण अंग सोहे, मोतिन के हार पोहे, कंठसरी मोहे दृग, गोपी निरखत निहाल।। "छितस्वामी" गोवर्धनधारी, कुंवर नन्दसुवन, गायन के पाछे पाछे, धरत है लटकीली चाल।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **(आज से छाक के पद गाये जाते है) सुबल गिरिधारी चढ़ टेरत।। (यह पूरा पद पेज ३५ पर पढ़े)**

भोजन कीनो री गिरिवरधर।। कहा बरनौ मण्डल की सोभा, मधुवन ताल कदम तर।।१।। पहिले लिये मनोरथ व्यंजन, जन जे पठये ब्रज धरधर।। पाछें डला दियो श्रीदामा, मोहनलाल सुघर वर।।२।। हंसत सयानो सुबल सैन है, लाल लीनों दोना कर।। "परमानन्द" प्रभु मुख अवलोकत, सुरभी भीर परी पर।।३।।

भोग में (राग मालव) **जाऊंगी वृन्दावन भेटौंगी गोपाल, देखोंगी नयन भर स्याम तमाल।।१।। कालिंदी तट चारत धेनु।। संग सखा बजावत मदु बेनु।।२।। मोर मुकुट गुंजा अवतंस।। मधुर मधुर कूजत कलहंस।।३।। "परमानन्द" प्रभु गोवर्धन पाल, लीला सागर मदन गोपाल।।४।।**

संध्या में (राग कान्हरो)
नयन, बांकी भौह ललित भाल,
शयन में (राग बिहाग)
पर, जगत वार सब नाखूं।।१।।
"रसिक प्रीतम" संगम की बातें,
मान में (राग बिहाग)
लई री।। (यह पूरा पद पेज ४८ पर
पोढ़ते समय (राग बिहाग)
पेज ३२ पर पढ़े)

वैशाख शुक्ल प्रतिपदा

श्रृंगार – मुकुट काछनी का।

वस्त्र – रूपेरी कोर की लाल काछनी एवं रासका पटका। श्रीमस्तक पर लाल पाग पर सोनेरी जरी के काम का मुकुट, ठाडा वस्त्र सफेद, जामदानी (चिकन) के युगल स्वरुप के निकुंज लीला की पीछवाई धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार मीलवा–हीरा–मोती, माणक–पन्ना व सोना के जड़ाव के आभरण श्रीमस्तक पर स्वर्ण का रत्न जड़ित मुकुट तथा उत्सव के वेणीजी, मयुराकति कुण्डल व श्वेत पुष्पों की दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – आज से लीला निकुंज की, रास व पनघट की चलती है।

मंगला (राग विभास) **गोकुल की पनिहारी, पनिया भरन चली, बडे बडे नयना तामें, फबि रह्यो कजरा।। (यह पूरा पद पेज ३६ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **सुमिरो मन गोंपाल लाल, सुन्दर अति रुप जाल, मिटे हें जंजाल सब, निरखत गोप बाल।। मोरमुकुट सिस धरे, बनमाल सुभग गरे, सबको मन हरे देख, कुण्डल की झलक गाल।।१।। आभूषण अंग सोहे, मोतिन के हार पोहे, कंठसरी मोहे दृग, गोपी निरखत निहाल।। "छितस्वामी" गोवर्धनधारी, कुंवर नन्दसुवन, गायन के पाछे पाछे, धरत है लटकीली चाल।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **(आज से छाक के पद गाये जाते है) सुबल गिरिधारी चढ़ टेरत।। (यह पूरा पद पेज ३५ पर पढ़े)**

भोजन कीनो री गिरिवरधर।। कहा बरनौ मण्डल की सोभा, मधुवन ताल कदम तर।।१।। पहिले लिये मनोरथ व्यंजन, जन जे पठये ब्रज धरधर।। पाछें डला दियो श्रीदामा, मोहनलाल सुघर वर।।२।। हंसत सयानो सुबल सैन दै, लाल लीनों दोना कर।। "परमानन्द" प्रभु मुख अवलोकत, सुरभी भीर परी पर।।३।।

भोग में (राग मालव) **जाऊंगी वृन्दावन भेटौंगी गोपाल, देखोंगी नयन भर स्याम तमाल।।१।। कांलिदी तट चारत धेनु।। संग सखा बजावत मदु बेनु।।२।। मोर मुकुट गुंजा अवतंस।। मधुर मधुर कूजत कलहंस।।३।। "परमानन्द" प्रभु गोवर्धन पाल, लीला सागर मदन गोपाल।।४।।**

संध्या में (राग कान्हरौ) बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु, श्याम सुन्दर कमल नयन, बांकी भ्रौंह ललित भाल, घुघंर वारी अलकें।। (यह पूरा पद पेज ६३ पर पढ़े)

शयन में (राग बिहाग) पिय तोही नैननही में राखूं।। तेरी एक रोम की छबि पर, जगत वार सब नाखूं।।१।। भेटौ सकल अंग सांवल सों, अधर सुधारस चाखूं।। "रसिक प्रीतम" संगम की बातें, काहु सों नहीं भाखूं।।२।।

मान में (राग बिहाग) दौरी दौरी आवत, मोहि मनावत, दाम खरच कछु, मोल लई री।। (यह पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) कुंज मे पोढे रसिक पिय प्यारी।। (यह पूरा पद पेज ३२ पर पढ़े)

वैशाख शुक्ल द्वितीया

श्रृंगार – पाग चन्द्रिका का।

वस्त्र – रूपेरी कोर के लाल धोती उपरना का, श्रीमस्तक पर लाल पाग पर मोर चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र पीला तथा पिछवाई लाल मलमल की कोर की।

आभरण – नित्यानुसार मोती व सोना के आभरण धराये गये। मध्य का श्रंगार किया गया। कर्णफूल तथा श्वेत पुष्पों की दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – निकुन्ज की लीला। सिंहासन, चरण चौकी पड़छा, झारीजी तथा बंटाजी, वेणुजी आज सोना के तथा कल से सभी साज चांदी के आवेंगे। कमल छड़ी धराई जायेगी।

मंगला में (राग बिलावल) **माइ री प्रातकाल, नन्दलाल पाग बधावत, बाल दिखावत दर्पण, भाल रह्यो लसि।। सुन्दर नव करन बीच, मंजु मुकुर की छबि, रह्यो फबि मानो गहि, आन्यो है युग कमल ससि।।१।। बिच बिच चितके चोर, मोर चन्द माथें दिये, तिन ढिंग रत्नपेच, बांधत है कसि।। "नन्ददास" ललितादिक, ओट भये अवलोकत, अतुलित छबि कहि न जात, फूल झरे हँसी।।२।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **सोभित सुरंग पाग, रही झुकि वाम भाग, नैनकी कोर तीखी, मोहनी मोहन की।। (यह पूरा पद पेज ३६ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (छाक के पद) (राग सारंग) **छाक ले आई ग्वालिन गोरी।। जसुमति सब पकवान छाब भर, पठई टेरत भोरी।।१।। जब ही आन अरोगत प्यारो, गोरस कनक कमोरी।। "ब्रजाधीश" प्रभु स्याम ढाक तर, भली बनी यह जोरी।।२।।**

राजभोग में (राग सारंग) **आज की बनिक कही न जाय, बैठे अब निकस कुंजद्वार।। (यह पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)**

भोग में (राग पूर्वी) **सोहत लाल पाग, सांकरे पेचन चोकरी।। (यह पूरा पद पेज २७ पर पढ़े)**

संध्या में (राग गौरी) झुक रही सुन मुरली के टेर।। (यह पूरा पद पेज ३२ पर पढ़े)

शयन में (राग अडानों) मैं जब देखे री गोपाल लाल, मोहनि मूरत नंदलाल, तन–मन–धन–जोबन, न्योछावर को ले गई।। सुन्दर रुप उजागर नागर, उनकी छबि चित्र चितेरेने लिख लई।।१।। गरे सोहे गुंजामाल, ताते मोहि ब्रजबाल, ऐसी छबि निहारी हों मगन भई।। “नन्ददास” प्रभु कौन मंत्र पढ डार्यो मुरली में, अधर धरी धुन बजाई सुनी मधुरे नई।।२।।

मान में (राग बिहाग) मनावत हार परी री माई।। तू चट तें मट होत न राधे, कित हरि लैन पठाई।।१।। राजकुमारि होइ तौ जाने, कै गुरु होई पढ़ाई।। नन्दनन्दन को जानि महातम, अपनी राखै बड़ाई।।२।। ठोडी हाथ चली दै दूती, तिरछी भ्रौंहे चढ़ाई।। “परमानन्द” प्रभु करौ दुलहिनी, तौ बाबा की जाई।।३।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पोढिये लाल लाडिली संग ले।। (पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)

वैशाख शुक्ल तृतीया

(चंदन यात्रा – जलकुंभदान – परशुराम जयंती)

अक्षय तृतीया (देहरी वन्दनमाल तथा अभ्यंग)

श्रृंगार – कुल्है जोड़, पिछोड़ा को।

वस्त्र – सफेद मलमल के केशर की कोर रंगा पीछोड़ा। श्रीमस्तक पर रुपेरी कोर की सफेद कुल्हे पर मोर चन्द्रिका को जोड़। चन्दनीया ठाड़ा वस्त्र डोरीया के तथा पिछवाई सफेद मलमल की रुपेरी कोर की। कन्दरा पर मोती के भरत काम का चोखटा।

आभरण – नित्यानुसार सफेद मोती के आभरण धराये जाते हैं। श्याम वेणी मोती की।

विशेष – आज श्रीजी को गाढे चन्दन की पांच गोली, दोनों चरणारबिन्द पर, दोनों श्री हस्त कमलों पर तथा एक श्री हृदय कमल पर धराई जाती है। बाद में गुलाबदानी तथा मिट्टी का कुंजा, झारी धरते है तथा नये खस का पंखा करके उत्सव भोग। इसमें शीतल पने का डबरा, फल, फूल तथा चालनी को साज तथा दूधघर इत्यादी धराये। धूप दीप होने के बाद भोग सरे तथा दूसरें दर्शन खुले। आरती होने के बाद राई–लोन तथा न्यौछावर करके दर्शन बन्द होय। आज से चार बाती की ही आरती होती है तथा चन्दन की बंटी धराई जाती है। आज से ही "उष्ण–काल" की लीला प्रारंभ हुई। अधिक सामग्री मे बीज (खरबुजा) के लडुवा आरोगाया जाता है।

मंगला में (राग भैरों) **मंगल आरती गोपाल की माई।। (यह पूरा पद पेज १५ पर पढ़े)**

अभ्यंग के समय (राग देवगंधार) **कर मोदक माखन मिश्री ले, कुंवर के संग डोलत नंदरानी।। (यह पूरा पद पेज १५ पर पढ़े)**

(राग बिलावल) **आओ गोपाल श्रृंगार बनांऊ।। विविध सुगंधन करो उबटनो, पाछे उष्ण जल लेजु न्हवाऊं।।१।। अंग अंगोछ गुहूं तेरी बेनी, फूलन रुच रुच माल बनाऊ।। सुरंग पाग जरतारी चीरा, रत्न खचित शिरपेच बंधाऊ।।२।। वागो लाल सुनेरी छापो, हरी इजार चरणन विरचाऊं।। पटुका सरस बैजनी रंग को, हंसुली हार**

हमेल बनाऊं।।३।। गज मोतिन के हार मनोहर, वनमाला ले उर पहराऊं।। ले दर्पण देखो मेरे प्यारे, निरख निरख उर नयन सिराऊं।।४।। मधुमेवा पकवान मिठाई, अपने करले तुम्हे जिमाऊं।। "विष्णुदास" को यही कृपा फल, बाल चरित्र हों निश दिन गाऊं।।५।।

शृंगार में (राग बिलावल) सुभग शृंगार निरख मोहन को ले, दर्पण कर पिय ही दिखावें।। (यह पूरा पद पेज २६ पर पढ़े)

राजभोग में (राग टोड़ी) अक्षय ततीया अक्षय लीला, नवरंग गिरिधर पेहेरत चन्दन।। वामभाग वृषभान नंदिनी, बिच बिच चित्र किये नव वंदन।।१।। तन–सुख छींट इजार बनी है पीत उपरना विरह निकंदन।। उर उदार वनमाल मल्लिका, सुभग पाग युवतिन मन फंदन।।२।। नखशिख रत्न अलंकृत भूषण, श्रीवल्लभ मारग जन रंजन।। "कृष्णदास" प्रभु गिरिधर नागर, लोचन चपल लजावत खंजन।।३।।

उत्सव भोग आने पर (राग सारंग) देख सखी गोविन्द के, चन्दन शोभित सांमल अंग।। नाना भांति चित्रकीये तामें, केसर विविध सुरंग।।१।। कंठमाल पीयरो उपरेना, बनी इजार पचरंग।। कानन करणफूल भ्रकुटि छबि, मोहत कोटि अनंग।।२।। मगमद तिलक कमल दल लोचन, शीस पाग अधरंग।। "चतुर्भुजप्रभु" गिरिधर तन छिन छिन, छबि की उठित तरंग।।३।।

भोग में (राग सारंग) बन्यो वागो वामना चंदन को।। चंपकली की पाग बनाई, भाल लितक नव वंदन को।।१।। चोली की छबि कहत न आवे, काछोटा मन फंदन को।। "परमानन्द" आनन्द तहां नित, मुख निरखत नंद नंदन को।।२।।

संध्या में (राग कल्याण) पिछोरा खासा को कटि बांधे।। वे देखो आवत नंद नंदन, नैन कुसुम सर साधे।।१।। स्याम सुभग तन चंदन चरचित, बाहु सखा के कांधे।। चलत मंद गति चाल मनोहर, मानो नटवा गुन नांधे।।२।। यह पद कमल अब ही प्राप्त भये, बहोत दिनन आराधे।। "परमानंद" स्वामी के कारन सुरमुनी धरत समाधे।।३।।

दुहिवो दुहायवो भूल गयो हो।। सेली हाथ बछरुवा मिलवत, नूपुर को ठमको जू भयो हो।।१।। नवयोवन नई चूनर के रंग, घूंघट में दूर मुर चितयो हो।। “धोधी” के प्रभु दम्पति परस्पर, प्यारी प्यारो रिझयो हो।।२।।

शयन में (राग सारंग) मेरे गृह चन्दन अति कोमल, लीजे हो सुन्दर व्रजनायक।। परम उदार चतुर चिंतामनि, लाई स्वच्छ तुमलायक।।१।। अंग लेपन करत परस्पर, निरख अनंग लजावत।। चंन्दन पहेरे आय हरि बैठे, “सूर” रसिक जस गावत।।२।।

(राग कान्हरौ) आज को दिन, धन्य धन्य री माई, नैननि भरि देखे, नन्द नन्दन।। परम उदार मनोहर मूरति, तापहरन नख पूजहि चंन्दन।।१।। रसिक राय श्रीगोवर्धनधारी, रुप रासी जुवती मन फंदन।। ध्वजा वज्र अंकुस बिराजत, “कृष्णदास” किये पद वंदन।।२।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पौढे रंग महल गोविन्द।। राधिका के संग शरद् रजनी, उदित पून्यों चन्द।।१।। अनेक चित्र विचित्र चित्रित, कोटि कोटिक बंन्द।। निरख निरख विलास विलसत, दम्पति रस फंद।।२।। मलय चन्दन अंग लेपन, परस्पर आनंन्द।। कुसुम बिजना ब्यार ढ़ोरत, सजनी “परमानन्द”।।३।।

वैशाख शुक्ल चतुर्थी

श्रृंगार – पाग–चन्द्रिका और पिछोड़े का। (ऐच्छिक श्रृंगार)

वस्त्र – चंदनीया मलमल का पिछोड़ा। चंदनीया पाग पर गोल कतरा। ठाड़ा वस्त्र गुलाबी तथा चंदनीया मलमल की पिछवाई धराई गई है। माटी का कुंजा, दो गुलाबदानी व चांदी की त्रस्टी धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार हीरा, सोना, मोती के धराये गये है।

विशेष – अब नित्य लीला है प्रभु को चन्दन धराने की। राजभोग तथा सायंकाल भोग में (राग सारंग) के चन्दन के पद तथा संध्या मे गौ दोहन के पद गाये जाते हैं। मूंग की दाल, चणाकी दाल भिंजी हुई उत्थापन भोग में आती है। मिश्री का सुगन्धित शीतल जल नित्य आता है।

मंगला में (राग बिलावल) **बलि बलि पांऊ धारिये, आज कछु मेरो लहनो, ब्रजनपति सुत भोर ही, आये हो रसभरे।। भई बड़ी बार पांउ धारिये, हमे हू निवाजिये, बास्यो अरगजा बासे बीरा, ले आगे धरे।।१।। कहि न सकत एक बात, लालन जाकें निस बसे, ताकें बसन पलटि पहिरे।। "गोविन्द" प्रभु पिय सुजान सिरोमनि, किधौं बलदाउ के हरे।।२।।**

श्रंगार में (राग सुहा बिलावल/सारंग) **कमल मुख देखत कौन अधाय।। (यह पूरा पद पेज ३३ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **कुमुदवन भली पहुंची आय।। सुफल भई है छाक तिहारी, लाल कदम तर पाय।।१।। यहां तें चले उठि मानसरोवर, संग सखा सब लाय।। बैठे तकि ठौर गिरि ऊपर, चरत चहुं दिस गाय।।२।। खेलत सखा हंसत परस्पर, बातें करत बनाय।। "परमानन्द" बलबल बूझन पर, कहा बिंजन लाय।।३।।**

राजभोग में (राग सारंग) **देखि सखी गोविन्द के चन्दन सोभित सांवल अंग।। नाना भांति चित्र किये ता मांहि, केसरि विविध सुरंग।।१।। कंठमाल पीरै उपरैना, बनी इजार पचरंग।। कानन करनफूल भकुटी छबि, मोहत कोटि अनंग।।२।। मगमद तिलक कमलदल लोचन, सीस पाग अधरंग।। "चत्रभुज" प्रभु गिरिधर तनु छिनु–छिनु, छबि की उठत तरंग।।३।।**

भोग में (राग सारंग) आज बने नन्द नन्दनरी, नवचन्दन को तन लेप किये।। तामे चित्र बने केसर के, राजत है सखी सुभग हिये।।१।। तन–सुख को कटि बन्यो है पिछोरा, ठाड़े है कर कमल लिये।। रुचिर बनमाल पीत उपैरना, नयन मैन सरसे देखिये।।२।। करनफूल प्रतिबिंब कपोलनि, मगमद तिलक ललाट दिये।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधरन लाल सिर, टेढ़ी पाग रही भ्रकुटि छिये।।३।।

संध्या में (राग कल्याण) दुहिवो दुहायवो भूल गयो हो।। (पूरा पद पेज १०८ पर पढ़ें)

शयन भोग आवता (राग कान्हरौ) सैन भोग लाई भर थारी।। (पूरा पद पेज २० पर देखें)

शयन में (राग नायकी) पायन चन्दन लगाऊं।। बहुत भांति बिंजना ढुराऊं, छिरक गुलाबजल नैन सिराऊं।।१।। अगर कपूर घसि अंग लगांऊ, मगमद आड भाले बनाऊं।। "कल्याण" के प्रभु गिरिधरन छबिले, ले ले लाड लडाऊं।।२।।

मान में (राग बिहाग/सारंग) मनावत हरि परी री माई।। (पूरा पद पेज १०५ पर पढ़ें)

पोढ़ते समय (राग बिहाग/केदारों) कुसुम सेज पियप्यारी पौढे, करत है रसबतियां।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े)

वैशाख शुक्ला पंचमी

श्रृंगार – मल्लकाछ टीपारा को।

वस्त्र – हल्का गुलाबी रूपेरी कोर का मल्ल–काछ एवं टिपारे का साज ठाड़ा वस्त्र पीला, पिछवाई गुलाबी मलमल की रुपेरी कोर की। गोलपाग, मयुराकृत कुंडल तथा श्वेत पुष्पों की दो मालाजी धराये गये है।

आभरण – नित्यानुसार मोती के धराये जाते हैं।

विशेष – प्रभु को राजभोग में चरणारवन्द पर चन्दन धराते हैं। पास में चन्दन की बंटी आती है। खसखाने का मनोरथ होता है। मनोरथ भोग में लुचई, अमरस, सतुवा, मोहनथार, गुंजा, कचोरी, दहिबड़ा आरोगाये जाते हैं।

श्रृंगार

मंगला में (राग भैरों) **भले आये भोर गिरिवर धरण।। अरुण नयन जभात आलस, धरत डगमगे चरण।।१।। पाग लटपटी बसन पलटे, अटपटे आभरण।। शिथिल सब अंग अंग देखियत है, निशा के जागरण।।२।। नव त्रिया संग याम चारों, पल न पायें परण।। "चतुर्भुज" प्रभु जीत रति रण, कियो रति पति शरण।।३।।**

श्रृंगार में (राग रामकली) **निर्तत मोहन रसिक सखन संग, गिड़गिड़ तजथेई ततथेई ताता।। मदंग ध्रुम्र ध्रुम ताल उपंग गत, सुर जो मिलवत मधुप मत्ता।।१।। टिपारो सिर, पीत पट, लाल काछनी, बनी किंकिनी रूनझूनात, गावत सु रसता।। "गोविन्द" प्रभु की गोप बाल संग, करत जै जै जै प्रेम अनुरक्ता।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **आज हमारे भोजन किजै।। बहुत भांत पकवान मिठाई, षट रस व्यंजन लीजे।।१।। सद्य घी खिचरी और खौवा, श्याम सलोनें लीजे।। उर्द के बरा दही मे बोरे, कछु कोरे कछु भीजे।।२।। संग समान सखा बुलावहु, बांट सबन को दीजे।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर, पान्यो पछावर पीजे।।३।।**

राजभोग में (राग सारंग) **गोविन्द लाडिलो लड़बौरा।। अपने रंग फिरत गोकुल में, स्याम बरन जैसे भौंरा।।१।। देखि स्वरुप ठगी ब्रज बनिता, ओढे पीत पिछौरा।। किंकिनी क्वनीत चारु चल कुण्डल, तन चंदन की खौरा।।२।। नृत्यत गावत बसन फिरावत, हाथ फूलन के झौरा।। माथे कनक बरन को टिपारो, जिय**

भावे नही औरा ।।३।। जाकी माया जगत भुलानों, सकल देव सिरमौरा।। "परमानन्ददास" को ठाकुर संग दिठोना गौरा।।४।।

सुन्दर तिबारो, खसखाने को बनायो है, बैठे वजराज कुंवर, मन को हरत हैं।। अति सुगंध जल, बहु भांतिन के बेलाभर, लाय लाय सखी स।, छिरक्यों करत है।।१।। शीतल सुगंध, त्रिविध समीर बहे, कोकीला चकोर मोर, डोलत फिरत है।। "जीवन" फुहारे छूटें, मानो मन्मथ लूटें, झुक झुक धार गिर, हौदन भरत है।।२।।

भोग में (राग सारंग) अक्षय तृतीया गिरधर बैठे, चन्दन को तन लेप किए।। प्रफुलित वदन सुधाकर निरखत, गोपी नयन चकोर किए।।१।। कनक वरन सिर बन्यो है टिपारो, ठाड़े हैं कर कमल लिए।। "गोविन्द" प्रभु की बानिक निरखत, वारि–फेरि तन मन जु दिए।।२।।

संध्या में (राग कल्याण) आवत मदन गोपाल त्रिभंगी।। निर्तत गावत बेनु बजावत, करत कुलाहल बालक संगी।।१।। कटि पीताम्बर उर बनमाला, बन्यो टिपारो लाल सुरंगी।। वचन रसाल सुरति हौ भूली, सुनी मुरली बन नाद कुरंगी।।२।। बरसत कुसुम देव मुनि हरखत, बाजत ढोल दमामा जंगी।। "परमानन्द" स्वामी नटनागर, स्याम विनोद सुरत–रस–रंगी।।३।।

शयन में (राग ईमन) चारु नट भेख धरि, बैठे गोविन्द जहां, सघन गहवर, नव निकुंज भवने।। नागरी जब ही, नागरसूं नैन मिले, तबही नागरी, मुदित विपुल गवने।।१।। रसिकवर नन्दसुत, सुहस्त सिज्जा रची, विविध गति विविध पटकुल ठवने।। हंसजा तट निकट, विमल जल बहत तहां, त्रिविध तल सैल, सीखंड पवने।।२।। "दासकुंभन" प्रभु सुजान, तोहि मिलन कुं बहुत आतुर, निमिष जुग गवने।। जोवत पथ एकटक, लाल सुकुमार सखी, गोवर्धनधर अखिल युवति रवने।।३।।

मान में (राग केदार) रुप रस पुन्ज वरनों कहा चातुरी।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पोढ़े स्याम जू सूख सेज।। संग श्रीवृषभान तनया, रंग रस को हेज।।१।। तरणि तनया तीर विलुलित, कनक मालती तेज।। शोभा की सीमा है दम्पति, "गोविन्ददास" गनेज।।२।।

वैशाख शुक्ला छठ

श्रृंगार – सुथन पटका, फेंटा व चन्द्रिका का

वस्त्र – केसरी धोरा की सुथन तथा राजाशाही पटका रुपेरी, श्रीमस्तक पर फेटां मोर पंख के कतरा कंलगी व मोर चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई केसरी रुपेरी कोर की। आज फूल कली की मण्डली, मनोरथ भोग आते हैं।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये है।

विशेष – आज का श्रृंगार ताज की विनंती से से श्री गुंसाईजी द्वारा किया गया। ताज की तरफ से श्रृंगार, वर्ष में ६ बार किया जाता हैं।

मंगला में (राग विभास) **प्रात समे नंदनंदन स्यामा, देखे री आवत कुंजगली।। नव घनश्याम तरुन दामिनी मिल, राजत रुप अनूप लली।।१।। लटपटी पाग सीस कर मुरली, लोचन घूमत भांति भली।। सिथिलित चीर मरगजी अंगिया, काम कामिनी देखी छली।।२।। चार जाम निसि जागत बीते, उर उमंग्यो अनुराग बली।। कज्जल अधर नैन बीरी रंग, मदन नृपति की फौज दली।।३।। "सूर" वदन पंकज रस पीके, अलक मधुप की पांति चली।। प्रफुलित प्रीति परस्पर निरखत, तरनि उदै ज्यों कमल कली।।४।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **सुन्दर स्वरुप अति, सेवासों सरस रस, मारग प्रवीन यातें, ज्ञान हु कथित है।। तैसोई बागो बनाय, तैसीय झूक रही पाग, चन्द्रिका संवार निके, फेटा हु कसत है।।१।। मोतिमाल गुंजाहार, हिये पदक कन्ठ लाल, सूथन संभार चरण, जेहर सजत है।। करके सिंगार, गिरिधारी जू को बारबार, आरसी दिखाय, "हरिराय" जु हँसत है।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **मोहन जेंवत छाक सलौनी।। (यह पूरा पद पेज ३५ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **वागो बन्यो बामना चंदन को।। चंपकली की पाग बनाई, भाल तिलक बन्यो बंदन को।।१।। चोली की छबि कहत न आवे, ठांय ठांय काछ कुन्दन कौ।। "परमानन्ददास" को ठाकुर, देव लोक मुनि वंदन को।।२।।**

ओढ़ें लाल ऊपरैनी झीनी।। तनसुख सेत सुदेस अंस पर, बहुत अरगजा भीनी।।१।। अति सुगन्ध सीतल उर चन्दन, सादि ये रचना कीनी।। रही धसी भ्रुअ पर पाग दुपेची, कोटी मदन छबी छीनी।।२।। सूथन बनी हिरमिची सोभित, गति गयंद की लीनी।। "परमानन्द" प्रभु चतुर सिरोमनी, ब्रज बनिता प्रेम रति दीनी।।३।।

भोग में (राग सारंग) देख सखी गोविन्द के, चन्दन सोभित सांवल अंग।। (यह पूरा पद पेज १०६ पर पढ़े)

संध्या में (राग कल्याण) अहो कान्ह गैया कहा बिड़रानी।। कहां चराई चलाई कौन बन, कहाँ पियायो पानी।।१।। भई सांझ बन मांझ फिरत हो, बोलत पंछी कोऊ न बानी।। "रसिकप्रीतम" तुम भूले से फिरत कहा, बात तिहारी हम जानी।।२।।

शयन में (राग कान्हरौ) आज को दिन धन्य धन्यरी माई, नैनन भरि देखे नन्द नन्दन।। (यह पूरा पद पेज १०८ पर पढ़े)

मान में (राग केदार) रुप रस पुंज वरनों कहा चातुरी।। (पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पोढ़े स्यामजू सुख सेज।। (पूरा पद पेज ११२ पर पढ़े)

वैशाख शुक्ल सप्तमी

गो. ति. श्री लाल गिरधरजी महाराज को उत्सव (१६८६)

देहरी बन्दन माल

श्रृंगार – पाग–कतरा, पिछोड़ा का।

वस्त्र – रुपेरी कोर का गहरा पीला पिछोरा, खिड़की वाली छज्जेदार पाग पर, रुपेरी जरी के काम का नागफणी कतरा तथा रुपेरी वादलाकी लुमक। आज से ठाड़ा वस्त्र नहीं आवे। पिछवाई पीली मलमल की रुपेरी कोर की। आज से ही श्रीजी में फुहारा की शुरुआत के साथ ही जल का छिड़काव किया जाता है। सभी दरवाजों पर खस के टेरा बांधे जाय राजभोग के बाद शीतल भोग आवे। कमर तक का ग्रीष्मकालीन श्रृंगार, कर्ण में कर्णफूल तथा श्वेत पुष्पों के दो मालाजी धराये गये हैं।

आभरण – नित्यानुसार मोती के, कमलछड़ी, चांदी के वेणुजी और दो वेत्रजी धराये गये है।

मंगला में (राग रामकली) **आवत ललन प्रिया रस भीनें।। सिथिल अंग डगमगात चरन गति, मोतिन हार उर चीने।।१।। पारिजात मंदार माल, लपटात मधुप मधु पीने।। "गोविन्द" प्रभु पिय तहां सिधारो, जहाँ अधर दसन छत किने।।२।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल/टोडी) **बलि बलि पांऊ धारीये आज कछू मेरो लेहनों (पूरा पद पेज १०६ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (छाक के पद) (राग सारंग) **भयो मध्यान छाक की बिरियां, बंसीबट बैठे नंन्दलाल।। अपनी अपनी गैया छैया ही, ले आवत सब ग्वाल।।१।। ग्वाल मंण्डली मध्य बिराजत, करत भोजन परस्पर, नवल बने गोपाल।। "आसकरन" प्रभु मोहननागर, सब सुखसागर राज कुंवर रसाल।।२।।**

राजभोग में बधाई (राग सारंग) **श्री वल्लभ नन्दन रुप अनुप, स्वरुप कह्यो न जाई।। प्रकट परमानन्द गोकुल बसत हें, सब भक्तन के सुखदाई।।१।। भक्ति मुक्ति देत सबन को, निजजन कों कृपा प्रेम वरखत अधिकाई।। सुखद एक रसना कहाँलों वरनों, गोविन्द बल–बल जाई।।२।।**

भोग में (राग सांरग) बिराजत दोऊ उसीर महल में, छूटत फुहारे आगे नीके।। ललितादिक सखी गावें बजावें, रस की चहल–पहल में।।१।। जब प्यारी फल ले धरत धार पर, थिर व्है रहत चहल में।। "चतुरबिहारी" गिरिधारी की छबि निरखत, भूली सखी बिजना की टहल में।।२।।

अनत न जैये पिय, रहिये मेरे ही महल।। जोई जोई कहोगे, सोई सोई करौंगी टहल।।१।। सज्या सामग्री बसन आभूषन, सब विध कर राखौगी पहल।। "चतुरबिहारी" गिरिधारी पिया की, रावरी यही सहल।।२।।

संध्या में (राग कल्याण) लालन मेरे आवत माई, तू जो कहत सों हेरी।। फूले है फूल फुल्यो है सब वन, फूली है सरस जुन्हाई।।१।। अगर चन्दन घिस मन्दिर लिपाऊ, रच पच फूलन सेज बनाऊं।। "लाल गिरिधर" पिय सों रति मानी, हँस हँस कंठ लगाऊ।।२।।

(राग हमीर) पिछोरा खासा को कटि बांधे।। (पूरा पद पेज १०७ पर पढ़े)

(राग कान्हरौ) (ब्यारु का पद) ब्यारु करत है घनश्याम।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े)

शयन में (राग नायकी) पायन चन्दन लगाऊं।। (पूरा पद पेज ११० पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) नवल किशोर नवल नागरिया।। अपनी भुजा स्याम भुज ऊपर, स्याम भुजा अपने उर धरिया।।१।। करत बिहार तरनि तनया तट, स्यामा स्याम उमग रस भरियां।। यों लिपटाय रहे दोऊ जन, मरकत मणि कंचन जैसे जरिया।।२।। या उपमा कों रवि शशि नाहीं, कदर्प कोटि वारने करिया।। "सूरदास" बल बल जोरी पर, नन्द नन्दन वषभान दुलरिया।।३।।

वैशाख शुकल अष्टमी

श्रृंगार – धोती पटका का

वस्त्र – गुलाबी मलमल को रुपेरी कोर की धोती एवं राजशाही पटका गुलाबी रंग की पाग व वस्त्र काम का कतरा तथा मोती की लर। पिछवाई गुलाबी मलमल की रुपेरी कोर की। मध्य का श्रंगार, ग्रीष्मकालीन। कर्णफूल तथा सफेद पुष्प की दो मालाजी धराये गये हैं।

आभरण – मोती के आभरण धराये गये हैं। तीन कमल की कमल छड़ी, चांदी के वेणुजी तथा दो वेत्रजी धराये गये हैं।

विशेष – प्रतिदिन उत्थापन भोग में एक दिन चणा की तथा एक दिन मूंग की बिना छिलके की भिंजी हुई दाल क्रम से तथा मिश्री का पना फल फूल के साथ भोग आते है।

मंगला में (राग विभास) **कोऊ माई आम बेचन आई।। टेर सुनत मोहन उठ धाये, भीतर भवन बुलाई।।१।। मैया मोहि आंब ले देरी, संग सखा बल भाई।। “परमानन्द” यशोमति आन दिये, खाये कुंवर कन्हाई।।२।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **कमल मुख देखत कौन अघाय।। (यह पूरा पद पेज ३३ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **आज हमारे भोजन कीजे।। (यह पूरा पद पेज १११ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **सखि सुगन्ध जल घोर के, चन्दन हरि अंग लगावन।। वदनकमल अलके मधुपन सी, टेड़ी पाग मनभावन।।१।। कर विंजना कुसुम के ले ढोरत, कुसुम भूखन ले ले पहिरावन।। “तानसेन” के प्रभु मया कीनी मोपर, सुकी वेल भई हरियन।।२।।**

भोग में (राग सारंग) **लालन पहिरत है नव चंदन।। विविध सुंगध मिलाय अरगजा, ब्रजजुवति जन मन फंदन।।१।। शीतल मंद बहत मलयानिल, मोहन मन को रंजन। अंग अंग छबि कहां लौ बरनों, मनमथ मनके गंजन।।२।। आरत चित विलोकत हरिमुख, चपल चलन दग खंजन।। “गोविन्द” प्रभु पिय सदा बसो जिय, गिरिधर बिरह निकंदन।।३।।**

संध्या में (राग हमीर) निरखि मुख ठाड़ी व्है जु हँसे।। धौरी धेनु दुहत नंदनंदन, लाडिली हीरदे बसे।।१।। सेली हाथ बछरुआ मिलवत, कौन कौन छबि लागें।। मोचत धरत दोहनी चाँपत, मन उपजत अनुरागे।।२।। यह लीला ब्रह्मा शिव गाई, नारदादि मुनि ज्ञानी।। “परमानन्द” बहुत सुख पायो, अरु सुक व्यास बखानी।।३।।

शयन में (राग कान्हरौ) आज सखी रूचिर गिरिधरनलाल सिर, पाग लपेटी भली रही फबी।। टेढ़ी पाँति रूचिर भ्रकुटी पर, देखत कोटिक काम गये दबि।।१।। वंदन मगमद छिरक केसरी–पुट, एक चंद्रिका लगी अद्भूत छबि।। कुंचित केस सुदेस कमल पर, मनिमय कुंडल तेज छिप्यो रवि।।२।। बर अवतंस कपोल नासिका, चारू चिबुक कहा कहौ और छबि।। “चत्रभुज” प्रभु रसरासी रसिक की, बानक बरनै कौ ऐसो कवि।।३।।

(राग अडानों/ईमन) अरी हों या मग निकसी आय अचानक, कान्हकुंवर ठाडे अपनी पोर।। (यह पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)

मान में (राग बिहाग) मनावत हारि परी री माई।। (पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पौढ़े श्यामजू सुखसेज।। (पूरा पद पेज ११२ पर पढ़े)

वैशाख शुक्ल नवमी

श्रृंगार – ग्वान पगा का।

वस्त्र – बादामी रंग का पिछोड़ा। श्रीमस्तक पर बादामी ग्वाल पगा पर सफेद पंख की मोरशिखा धराई गई है। पिछवाई बादामी मलमल की रुपेरी कोर की।

आभरण – नित्यानुसार मध्य का श्रंगार मोती के आभरण, छोटा कमर सुधी का श्रंगार धराया गया है।

विशेष – आज राजभोग से संध्या आरती तक खस के बंगले मे बिराजते हैं। (ऐच्छिक श्रृंगार)

मंगला में (राग विभास) **मृगनैनी मुख अमृत बेनी, कुंज महलते चलि उठ भोर।। डगमगात लटकत लट छुटि, सोमित पहिरैं पीत पटोर।।१।। अरुण नैन घूमत मदमाते, मानो रस सिंधु के बढे हिलोर।। गिर गिर परत गलत कुसुमावलि, सिथिल सीस पलके चकोर।।२।। कर नख अंक जुगलबर राजत, सुभग हिये सोमित तन गौर।। "परमानन्द" प्रभु सुख निधि अब पलट हँसी मुख मोर।।३।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **सुन रि सैन दई ग्वालन को, मोहनलाल बजायो बैनु।। (यह पूरा पद पेज ३७ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग धनाश्री) **सुत ही जिमावत जशोदा मैया सानत कोर मधुर मृदु मीठो, दे मुख लेत बलैया।।१।। खेलन को उठ उठ भाजत है, राखत है बोहोरैया।। आवो चिरैया आवो खूमरैया, ग्वालिन लेत बलैया।।२।। तुम जेवों मिल संग लाल के, बहु विध ख्याल खिलैया।। "श्रीविट्ठल गिरिधर" माता की, प्रीति कही नहि जैया।।३।।**

राजभोग में (राग सारंग) **चन्दन अरगजा ले आई बाल, लाल के अंग लगावन।। सुगंधि गुलाबजल, ता मध्य कपूर डारी, अंजुरि भर भर लेपत गात, लागत पवन चढावन।।१।। नाना बहुभांत के, कुसुमन सों सय्या रची, मची सुवास बसी, ऐसी पिय मनभावन।। "मुरारीदास" प्रभु गीष्मऋतु तपत, तैसे ही सारंग लागी गावन।।२।।**

भोग में (राग सारंग) सियरे तहखाने, तामे खसखाने सीचे अतर गुलाब की, ब्यार लपटत है।। फूलन के बंगला, फूलन की जारी नीकी, फूलन की सेज तामे, पोढ़ि प्यारी मौन है।।१।। गुलाब छूटत फुहारे, चादर निर्झर झरे बहत सीतल नीर, तरंग चलत है।। "वृन्दावन" प्रभु माते, प्रेमरस अति राते, देखि देखि सखी जू, सुजस बिलसत है।।२।।

संध्या में (राग कल्याण) गोविन्द गायन की, पीठ पर हाथ फेरत, सुबल सखा सो, ठाडे हँसत।। स्याम सुन्दर कमलनैन बार बार, राधा तन चितवत, मदन ते छबि लसत।।१।। छक सों एंड़ाय, छक मुसक मुस्काय, उमंग उमंग सखा यों, भुज बिच कसत।। "रामराय" प्रभु, खिरक खडे प्रिया, प्रेम भरे "भगवान" के, हिय बसत।।२।।

शयन में (राग कान्हरौ) नैन छबीले तरुन मदमाते।। चंचल चपल भ्रकुटि छबि उपजत, आन आन मुसकाते।।१।। भक्ति कृपारस सदाई प्रफुलित, मानहु कमलदल राते।। "गोविन्द" प्रभुको श्री मुख निरखत, पान करत न अघाते।।२।।

मान में (राग नायकी) रुसवो न कर प्यारी रुसवो निवार।। (यह पूरा पद पेज १०१ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पौढ़े हरि झीनों पट दै ओट।। (यह पूरा पद पेज २१ पर पढ़े)

वैशाख शुक्ल दशमी

श्रृंगार – धोती, पटका का।

वस्त्र – रूपेरी कोर की पीली धोती पटका एवं पाग, उस पर मोती का गोल कतरा। पिछवाई सरबती जामदानी (चीकन) की कोर की।

आभरण – नित्यानुसार मोती के श्रंगार। कर्णफूल व सफेद पुष्पों की दो मालाजी धराये गये हैं। तीन कमल की छड़ी, चांदी के वेणुजी व वेत्रजी धराये गये हैं।

विशेष – आजकल वस्त्र मलमल के हल्का रंग के कोर सहित या बिना कोर के आते है। मिट्टी के कुंजा जल भरकर उस पर वस्त्र ओढ़ाकर तथा चन्दन की बंटी तथा गुलाबदानी में गुलाबजल भरकर पधराई जाती है। राजभोग में दहीभात, शिखरनभात, सतुआ, अमरस भात, श्रीखण्ड तथा मंगला में खरबुजा व आम का भोग धराते हैं।

मंगला में (राग विभास) **आज लाल अति राजें, बैठे निकसी छाजें, सुधी न कछू री गात, प्यारी प्रेम मगनाँ।। लटपटी पाग सिर, सिथिल चिकूर चारु, उपटत उर हार प्यारी कंठ लगनाँ।।१।। आलस अरुन अति, खरेई बिलोचन, भरी भरी आवत, पिय–सी अनुरंगनाँ।। "गोविन्द" प्रभु पिय प्यारी, सुजानी सिरोमनि, सुरति रंगरस, भोर लौं जगना।।२।।**

शृंगार में (राग बिलावल) **आज हरि रैन ऊनींदे आये।। अंजन अधर ललाट महावर, नैन तंबोल खवायैं।।१।। बिन गुन माल, बिराजत उर पर, वंदन भाल लगाये।। गजगति चाल सिर पाग लटपटी, भ्रकुटी चंन्दन लाये।।२।। ह्रदय सुभग नखरेख बिराजत, कंकन पीठि बनाये। "सूरदास" मोहि यही अचंभो, तीन तिलक कहां पाये।।३।।**

राजभोग आते समय (राग धनाश्री) **जेंवत नन्द कान्ह बलमैया।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **भले ही मेरे आयेहो पीय, टीक दुपहरी की बीरीयाँ।। शुभ दिन शुभ नक्षत्र, शुभ महूरत, शुभ पलछिन, शुभ घरियाँ।।१।। भयो है आनन्द कंद, मिट्यों विरह दुखद्वंद, चन्दन घस अंगलेपन, और पायन परियाँ।। "तानसेन" के प्रभु, मया कीनी मोंपर, सुखी बेल, करी हरियाँ।।२।।**

भोग में (राग सारंग) आज धरे गिरधर पिय धोती।। अति झीनी अरगजा भीनी, पीताम्बर घन दामिनी जोती।।१।। टैढी पाग भ्रकुटी छबि राजत, श्याम अंग अद्‌भुत छबि छाई।। मुक्तामाल फूली वनराई, "परमानन्द" प्रभु सब सुखदाई।।२।।

संध्या में (राग कल्याण) गिरधर सबही अंग को बांको।। बांकी चाल चलत गोकुल में, छैल छबिलो काको।।१।। बांकी भ्रौंह चरनगति बांकी, बांको ह्रदय है ताको।। "परमानन्ददास" को ठाकुर कियो, खौर ब्रज सांको।।२।।

शयन भोग आने पर (ब्यारु का पद) (राग कान्हरौ) रानीजू अपने सुतहि जिमावत।। (यह पूरा पद पेज ६३ पर पढ़े)

शयन में (राग अड़ानों) अरि हो या मग निकसी आय अचानक, कान्ह कुंवर ठाडे आपुनी पोर।। (यह पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)

(राग ईमन) मेरे री बगर में आवत, छबिसों कमल फिरावत।। औरन सों बतरावत मोतन चितवत, चतुर परोसन देख देख मुसकावत।।१।। नयनन मनुहार करत, बैनन समझावत, नेह जनावत, भ्रौंह चढ़ावत।। "नन्ददास" प्रभु सों स्नेह, लोक लाज बाढ़ी, कहो कैसे के धीरज आवत।।२।।

मान में (राग केदारों) राधिका आज आनन्द मे डोले।। सावरे चँद, गोविन्द के रस भरी, दूसरी कोकिला, मधुर स्वर बोले।।१।। पहिरें तन नीलपट, कनक हारावली, हाथ ले आरसी, रुपको तोलें।। कहत "श्रीभट्‌ट", व्रजनागरि नागर बनी, कृष्ण के सील की ग्रंथिका खोले।।२।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) नवलकिशोर नवल नागरियां।। (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े)

वैशाख शुक्ल एकादशी

श्रृंगार – सेहरा और धोती पटका का।

वस्त्र – रुपेरी कोर को चंदनीया मलमल का पिछोड़ा, अन्तर वास पटका तथा चंदनीया दुमाला पर मोती के कामका सेहरा, पिछवाई गुलाबी रुपेरी कोर की।

आभरण – नित्यानुसार हीरा मोती आदि के। कर्ण में मकराकति कुंडल मोती के, वेणुजी, सफेद व गुलाबी पुष्पों की दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष –आज खस का बंगला मे श्रीजी बीराजे हैं। मनोरथ भोग धराये गये।

मंगला में (राग बिलावल) **प्यारी के महल तें, चले उठ भोर।। सखी वंद अवलोकी अग्रस्थित, ढकत नील कंचुकी, पीतपट छोर।।१।। राधा चरित्र विलोक परस्पर, तेजु हास ईत उत मुख मोर।। "गोविन्द" प्रभु चले दगा दे, नागर नवल सभाचित चोर।।२।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **आज तन राधा सजत श्रृंगार।। नीरज सुत वाहन को भक्षण, अरुण श्याम रंग कौन विचार।।१।। मुद्रापति अचवन तनया सुत, उर ही बनावत हार।। सारंग सुता पति वश करिवे को, अक्षत ले पूजत रिपूमार।।२।। पारथ पितु आसन सुत शोभित, श्याम धरा बंग पांत विचार।। "सूरदास" प्रभु हंससुता तट, विहरत राधा नन्दकुमार ।।३।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल) चोखड़ा **श्री ललिताजी के आज बधायो।। श्रीवंदावन ब्याह रचायो।। आली सब न्योत बुलाई।। वे मंगलनिधि न्योतो लाई।। टैक।। मंगल न्योते लाई सखियन, मंण्डली अद्भूत रचाई।। बांध बंदनवार चहुं दिसि, मध्य विधि वेदी सजाई।। संकेत देवी पूज ललिता, हरखे अति आनन्द भरी।। मेरी नवल राधा दुलहिनी, कुंवर मिले दुलहे हरि।।१।। देव बहु भांत पुजाई।। सो बिघना बिधि आन मिलाई।। जो राधे औ हरि आराधे।। आज ले लग्न अनुपम साधे।।टेक।। सोई लग्न परम अनुप साधे, हरख मंगल गाइयो।। महा मंगल रुप अद्भूत, बहु भांत मंडप छाइयों।।१।। मेरी उबट राधा दुलहिनी, जब स्याम के उबटन कियो।। स्नान कर सिर गूथ गोरी, मुकुट मोहन के दियो।।२।। कर सो कर जोर फिराई। भांवर देके ढिग बिठाई।। हंस कर दई है बधाई। ललिता फूली अंग**

न समाई।।टेक।। फूली जो अंग न समाई ललिता, रंग केवल बलि गई।। आज भाग्य सुहाग की कछु जात नही मोपें कही।।३।। धन्य धन्य दिन यह रात, धन्य धन्य यह पल सुभ घरी।। धन्य धन्य नवल किशोर दुलहे, दुलहिनी राधा वरी।।४।। यह दुलहे निपट सयानो।। या दुलहिन के रुप लुभानो।। आली छिन एक विलंब न कीजे।। अंचल जोरनो कर लीजे।।टैक।। अंचल जोरनो कर दियो सखियन, बिचार गौने को कियो।। कर दिये कुज प्रवेस दोउ, धन्य "ललिता" को हियो।।५।। जहां नवल सखी अनेक छबि पर, वारनें बलि बलि गई।। या ब्याह की रसरीत सखि जात नही मोपें कही।।६।।

राजभोग आते समय (राग सारंग) श्रीवृषभान सदन भोजन कों, नंदादिक सब आये हो।। तिनके चरण कमल धरिवे कों, पग पांवडे बिछाये हो।।२।। राम कृष्ण दोउ वीर बिराजत, गौर श्याम मुख चंदा हो।। तिनके रुप कहत नहि आवे, मुनिजन के मन फंदा हो।।२।। चन्दन घस मृगमद मिलाय कें भाजन भवन लिपाये।। विविध सुगंध कपूर आदि दे, रचना चोक पुराये।।३।। मंडप छायो कमल कोमल दल, शीतल छांय सुहाई।। आस पास परदा फूलन के, माला जाल गुहाई।।४।। शीतल जल कुमकुम के जल सों, सबन के चरण पखारे।। कर विनती करजोर सबन सों, कनकपटा बैठारे।।५।। राजत राज गोप भूपति संग, विमल वेष अहीरा।। मानो समाज राजहंसन को, जुरे मानसरोवर तीरा।।६।। धरे अनेक कोटिक कटोरा, और कंचन की थारी।। ढिंग ढिंग धरी सबन के सुन्दर, शीतल जल की झारी।।७।। गावन लागी गीत ब्याह के, सुकुमारी व्रजनारी।। अति हूलास परिहास परस्पर, यह सुख शोभा भारी।।८।। परोसन लागे पुरोहित हित सों, जिन की वदन बडाई।। तिनके दरश परस संभाषण, मानों सुर सरिता आई।।६।। ओदन की उज्वलता मानों, सहेज रुप धर आये।। यह हित प्रीति प्रीतम जन हित सों, प्रकट हि आप जनाये।।१०।। बरी बरा अरु बरन बिजोरा, पापर पित बनाए।। कनक वरण बेसन बरी, प्रकार न जात गिनाए।।११।। आबंल बेल आंब अदरख रस बहुतेरे मीले संधाने।। सद सीरा और सुरभी धृत सों, सौरभ घ्राण बखाने।।१२।। बासोंदी शिखरण और खोवा, अमत अंब रस रसना तोषे।। आमल रस कटुक तीक्ष्ण रस लोंन मधुर रस पोषे।।१३।। कंदमूल फल फूल पत्र जो, व्यंजन सबे प्रकार।। मानों भई

प्रकट भूतल में, अमत की रस धार।।१४।। और बहुत विध षड्रस व्यंजन, परोसन वारे हारे।। यद्यपि होय शारदा की मति, तदपि न जात संभारे।।१५।। शीतल सूगंध चार सों कोमल, विविध भांत पकवान।। वे उत प्रकार परे नही कबहु, सूरपति के कान।।१६।। कर अचवन उठे सब व्रजजन, मन मे अति सूखपाये। पटभूषण बीरा सोंधे सों, पूज सदन पधराये।।१७।। यह सुख सम्पति यह रस शोभा, कापें जात वखाने।। जूठन जाय उठाय “गदाधर”, भाग्य आपनो माने।।१८।।

राजभोग में (राग सारंग) आज बने गिरधारी दुल्हैं, चन्दन को तन लेप किये।। सकल श्रंगार बने मोतिन के, विविध कुसुम की माल हिये।।१।। खासा को कटि बन्यो है पिछोरा, मोतिन सेहरों सीस धरे।। रातै नैन बंक अनियारे, चंचल खंजन मान हरै।।२।। ठाडे कमल फिरावत गावत, कुण्डल श्रमकन बिंदु परे।। “सूरदास” प्रभु मदन मोहन मिल, राधा सों रति केल करे।।३।।

भोग में (राग सारंग) बिराजत दोऊ उसीर महल मैं, छूटत फुहारे आगे नीके।। (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े)

संध्या में (राग हमीर कल्याण) निरखि मुख ठाडी व्है जु हंसे।। (यह पूरा पद पेज ११८ पर पढ़े)

शयन में (राग बिहाग) कुंज भवन मे आज मंगल चार।। (यह पूरा पद पेज ७८ पर पढ़े)

मान में (राग केदारों) राधिका आज आनन्द मे डोले।। (यह पूरा पद पेज १२२ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) कुंज महल में मंगल हेरी।। किसलयदल कुसुमन की शय्या रची, तापर बिछई पीत पिछोरी।।१।। ओट्यों दूध कनक कटोरा, और पानन की भरभर झोरी।। सघन कुंज मे श्रीगिरिधर विलसत, ललितादिक चितवत दगचोरी।।२।। होय मनोरथ मेरे जियके, दंपति पोढ़े हे एक ठोरी।। कहे “श्रीभटट” ओट व्है निरखूं, क्रीड़ा करत किशोरी किशोरी।।३।।

वैशाख शुक्ल द्वादशी

श्रृंगार – धोती पटका का।

वस्त्र – रुपेरी कोर की गुलाबी मलमल की धोती पर राजशाही पटका तथा गुलाबी पाग पर मोर पंख। पिछवाई गुलाबी रंग की रूपेरी कोर की।

आभरण – नित्यानुसार मोती के आभरण कर्णफूल तथा सफेद पुष्पों की दो मालाजी धराये गय हैं। (ऐच्छिक श्रंगार)

मंगला में (राग विभास) **श्याम श्यामा प्रातः ऊठ बैठे, अरस परस दोऊ करत सिंगार।। लटपटी पाग संवारत श्यामा, अलक संवारत नन्द कुमार।।१।। इन पहिनी वाकी मोतीन माला, उन पहिन्यो वाको नवसर हार।। "श्रीभट्ट" जुगल किशोर की द्युति, अरून उदय दोऊ करत विहार।।२।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **आज को सिंगार, सुभग सांवरे गोपाल जु को, कहत न बनि आवे, देखे ही बनी आवे।। भूषन वसन भांति भांति, अंग अंग छबि कही न जात, लटपटी सुदेस पाग, चित को चुरावे।।१।। मकर कुण्डल तिलक भाल, कस्तूरी अति रसाल, चितवन लोचन विशाल, कोटि काम लजावे।। कंठसरी वनमाल, फेंटा कटि छोरन छबि, निरखत त्रिभुवन त्रिया, धीर न मन लावे।।२।। मेरे संग चल निहार, ठाडे हरि कुंजद्वार, हित–चित की बात कहूं, जो तेरे जिय भावें।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधर नख सिख सुन्दर सुजान, बडभागिन ताहि गिनों, सो जात ही लपटावे।।३।।**

श्रंगार में (राग बिलावल) **मोहन घुमत रतनारे नैन, संकुचत कछू कहत बेन, सेंन ही से उत्तर देत नन्द के दुलारे।। (यह पूरा पद पेज ३१ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग आसावरी) **हरि भोजन करत विनोद सो।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **दुपहरी झनक भई, ता में आये पिय मेरे, मे उठ कीनो आदर।। आंको भर ले गई, तनकी तपत सब, ठौर ठौर बूंदन चमक।।१।। रोम रोम सुख संतोष भयो, गयो अनंग तन मे न रह्यों तनक।। मोहे मिल्यों अब "धोंधी" के प्रभु, मिट गई विरह की सनक।।२।।**

भोग में (राग सारंग) देखरी देख रसीक नन्द नन्दन, लटपटी पाग सुभग आधे सिर, रही भुरक कछु बंदन।।१।। खासा को कटि बन्यो पीछोरो, ऊपरेना तन चरचत चंदन।। चितवत चारु कमल दल लोचन, युवती जन मन फंदन।।२।। कबहुक सहज बजावत सारंग, कर मुरलि सुर मंदन।। "चतुर्भुज" प्रभु रस रास सकल अंग, गीरधर बिरह निकंदन।।३।।

संध्या में (राग कल्याण) दुहिवो दुहायवो भूल गयो हो।। (यह पूरा पद पेज १०८ पर पढ़े)

शयन में (राग कान्हरौ) आज सखी गिरीधरन लाल सिर, पाग लपेटा भलो रहयों फब।। टेढी भ्रोह रुचिर भ्रकुटी पर, देखत कोटिक काम रहे दब।।१।। चंदन भूरक छिरक केसर पुट, ऐक चन्द्रिका भई अद्‌भुत छब।। कूंचित अलक तिलक मगमद रुचि, मणीमय कुंडल तेज छिप्यो रब।।२।। सुन्दर अधर कपोल नासिका, चारू चिबुक की कहो ओर छब।। "चतुर्भुज" प्रभु रस रास रसिक की, बानक बरने को एसो कब।।३।।

मान में (राग बिहाग) मानरी मान मेरो कह्यों।। (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पौढे रावटी सुख सेज संग श्रीवषभानु तनया, सुरत रस कौ हेज।।१।। नवल कुंजनि जाल रंध्रनि, बहत शीतल पौन।। दास "परमानन्द" आली बिजना ढ़ोरत गौन।।२।।

वैशाख शुक्ल त्रयोदशी

श्रृंगार – पाग–चंद्रिका का।

वस्त्र – गुलाबी पिछोड़ा। गुलाबी पाग पर सफेद मोर की चन्द्रिका, पिछवाई चंदनीया मलमल की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार मोती के। छोटा ग्रीष्मकालीन श्रंगार छोटा तथा कर्णफूल व सफेद पुष्पों की दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – चन्दन के बंगले मे श्रीजी बीराजे है। मनोरथ की सामग्री मे आम की बरफी आरोगी है।

मंगला में (राग भैरव) **भोर भये देखों श्री गिरिधर को कमल मुख।। प्रातः ही नयन निरखत होत परम सुख।।१।। लोचन विशाल छबि संच ह्रदय में धरौ, कृपा अवलोकीवे को चारू भकुटी रूख।। "चतुर्भुज" प्रभु आनंद निधि, दूरी करी हों सब रैन को विरह दुःख।।२।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **कमल मुख देखत तप्ति न होय।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग धनाश्री) **चलहु गोपाल बोलत महतारी।। परोसे थार, धरे मग चितवत, नयनन आंसु डारी।।१।। विविध भांति पकवान मिठाई, मेवा मिश्री ठानी।। "रामदास" प्रभु रसिक छबीलो, व्रज युवतिन सुखदानी।।२।।**

राजभोग में (राग सारंग) **कमलमुख देखत कौन अघाय।। (यह पूरा पद पेज ३३ पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **नीकौ बन्यो बेष चन्दन को।। बिच बिच छैल रसिकिनी राधा, राच्यो चित्र बंदन को।।१।। नाभी कंठ लगु कैसे बरनौ, जुवति नैन फंदन को।। "कृष्णदास" प्रभु गिरिधर नवरंग, बिरह ताप निकंदन को।।२।।**

संध्या में (राग कल्याण) कमल मुख सोभित सुन्दर बैनु।। मोहन ताल बजावत गावत, आवत चारे धैनु।।१।। कुंचित केस सुदेस वदन पर, जनु साज्यो अलि सैनु।। सहि न सकत मुरली मधु पीवत, चाहत आपुने ऐनु।।२।। भकुटी चारु चाप कर लीने, भयो सहायक मैनु।। "सूरदास" प्रभु अधरसुधा लग, उपज्यों कठिन कुचैनु।।३।।

शयन में (राग अड़ानों) कृपा रस नयन कमल दल फूले।। भ्रोंह विलास देखे कोटिक, मनमथ रहे भूले।।१।। वदन कमल पर कुटिल अलक छबि, मोतिन हार अवतंस झूले।। "गोविन्द" प्रभु प्यारी संग बैठै, जहां कालिदी के कूले।।२।।

मान में (राग नायकी) रुसनो न कर प्यारी रुसवो निवारी।। (यह पूरा पद पेज १०१ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) दम्पति पोढैई रस बतियां करत, नैना दोऊ लाग गये।। सेज उजरी चंन्दा हूतें निर्मल, ता पर कमल छयै।।१।। फूंकत दग वषभाननंदिनी, झपत खुलत मुरजात नयै।। मानों कमल मध्य अलिसुत बैठे, सांझ समय मानों सकुच गयै।।२।। आलस जान आप संग पोढी, पिय हिये उर लाय लयै।। "नन्ददास" प्रभु मिली स्याम तमाल ढ़िंग, कनकलता उल्ह्यै।।३।।

वैशाख शुक्ल चतुर्दशी

श्री नृसिंह चतुर्दशी का उत्सव (जयन्ति)

शृंगार — कुल्है जोड़, पिछोड़े का।

वस्त्र — पीली मलमल का पिछोड़ा श्रीमस्तक पर पीली कुल्हे तथा उस पर तीन मोर पिछ की जोड़। मकराकति कुंडल, सफेद पुष्पों कलात्मक रंगीन थाक वाली दो मालाजी धराये गये। पिछवाई पीली रूपेहरी कोर की।

आभरण — नित्यानुसार हीरा मोती के, वेणी श्याम मोती की।

विशेष — चार कमल पुष्प की छड़ी, चांदी के वेणुजी व दो वेत्रजी धराये गये हैं। वनमाला का चरणारविंद तक का स्थायी श्रंगार धराया गया है।

मंगला में (राग बिलावल) (महात्यम के पद) **गोविन्द तिहारों स्वरुप निगम नेति नेति गावें।। (यह पूरा पद पेज ४१ पर पढ़े)**

अभ्यंग समय (राग बिलावल) **आवो गोपाल श्रंगार बनाऊं।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े)**

लाल को सिंगार बनावत मैया।। (यह पूरा पद पेज ४२ पर पढ़े)

श्रंगार में (राग बिलावल) **सुभग सिंगार निरख मोहन को, ले दर्पण कर पियुही दिखावें।। (यह पूरा पद पेज २६ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **जाको वेद रटत, ब्रह्मा रटत, शंभु रटत, शेष रटत, नारद, शुक, व्यास, रटत, पावत नहीं पार री।। ध्रुव जन, प्रहलाद रटत, कुंती के कुंवर रटत, द्रुपट सुता रटत, नाथ अनाथन प्रतिपाल री।।१।। गणिका गज गीध रटत, गौतम की नार रटत, राजन की रमणी रटत, सुतन दे दे प्यार री।। "नन्ददास" श्रीगोपाल, गिरिवर धर रूप रसाल, यशोदा को कुंवर लाल, प्यारी राधा उर हार री।।२।।**

भोग में (अष्टपदि) (राग मालव) **प्रलय पयोधि जले धतवानसिवेदं।। विहित विहित्र चरित्र मखेदं।। केशव धत मीन शरीर जय जगदीश हरे।।१।। क्षिति रति विपुलतरेतव तिष्ठति पष्टे।। धरणि धरण किणच्रक गरिष्ठे। केशव धत कच्छप रुप जय जगदीश हरे।।२।। वसति दशन शिखरे धरणि तव लग्ना। शशिनिकलंग**

दीपक भाई पुरूषोत्तम दास पटेल अहमदाबाद का सप्रेम जय श्री कृष्ण

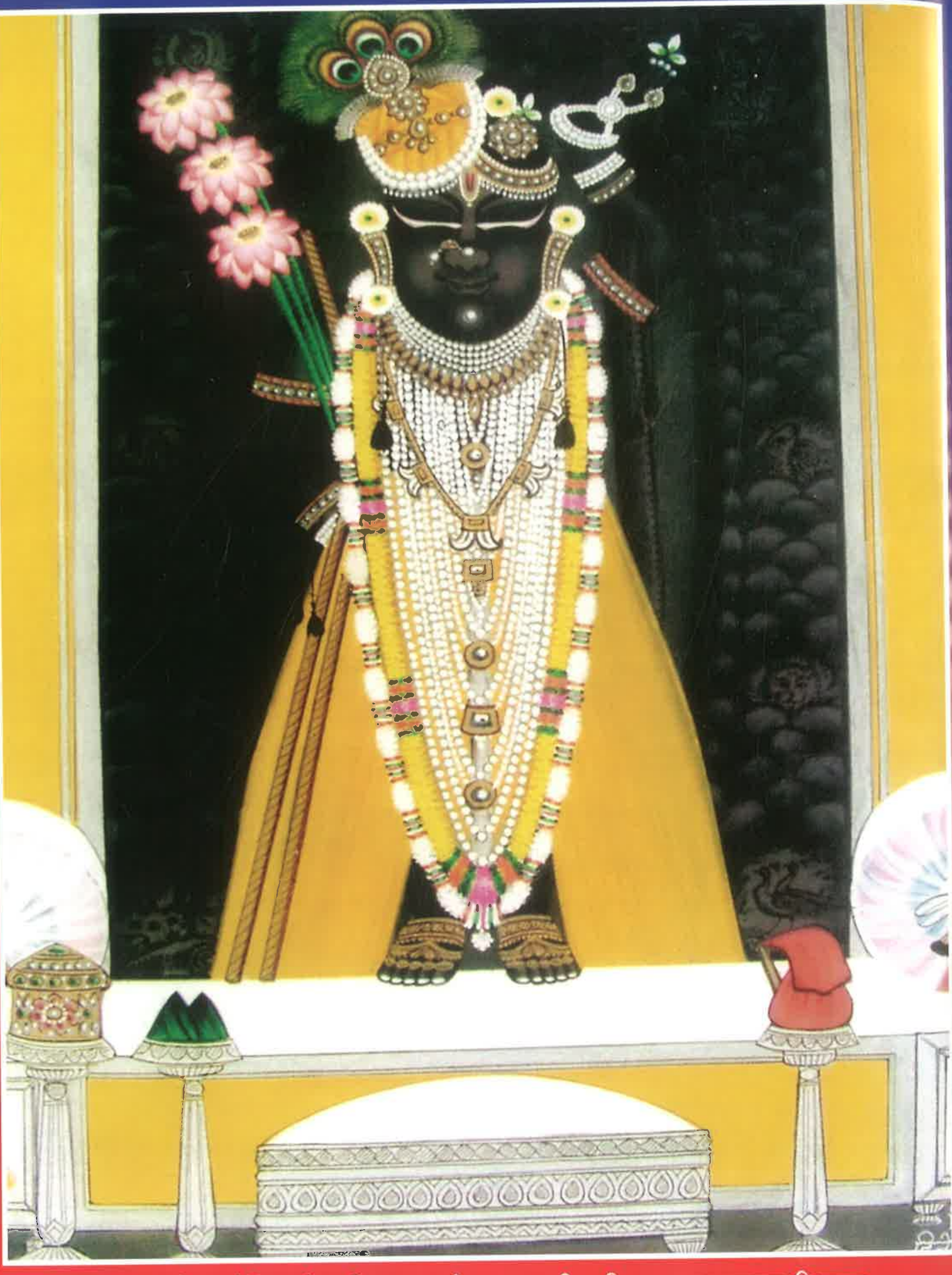

कान्ताबाई बालगोविन्द जी पारीख तथा रमेश चन्द्र पारीख नि. नाथद्वारा का जय श्री कृष्ण

कलेवरनिमग्ना।। केशव धत सूकर रुप जय जगदीश हरे।।३।। तव कर कमल वरे नख मद्भूत श्रंगम।। दलित हिरण्यकशिपु तनु भंग।। केशव धत नरहरि रुप जय जगदीश हरे।।४।। छलयसि विक्रमणेबलिमद्भुत वामन।। पद नख नीरजनितजन पावन।। केशव धत वामन रुप जय जगदीश हरे।।५।। क्षत्रिय रुधिर जगदपगदपापं स्नपयसिपयिस शमित भवतापं।। केशव धत भगपतिरुप जय जगदीश हरे।।६।। वितरसिदिक्षुरणे दिक्पति कमनीयं, दशमुखमौली बंलिरमणीय।। केशव धत रघुपति रुप जय जगदीश हरे।।७।। वहसिवपुषि विषदेवसंन जलदाभ।। हलहतिभीतिमिलितयमुनाभं।। केशव धत हलधर रुप जय जगदीश हरे।।८।। निदसियज्ञ विधेरहहश्रुतिजातं।। सदयहद्वय दर्शित पुशघातं।। केशव धत बुद्ध शरीर जय जयगदीश हरे।।६।। म्लेच्छनिवहनिधनेकलय सिकरवालं धूमकेतू मिवकिमपिकरालं।। केशव धत कल्किशरीर जय जगदीशहरे।।१०।। श्री जयदेव कवेरिदमुदित मुदारं।। श्रणु सुखदं शुभंद भवसांर।। केशव धत दशविधरुप जय जगदीश हरे।।११।।

संध्या में (राग मालव) पद्म धर्यो जन ताप निवारन।। चक्र धर्यो रिपु–उदर बिदारन, गदा धरी दुष्टन सँहारन।। चारि भुजा चारि आयुध धरं, नारायण भू भार उतारन।।२।। दीनानाथ दयाल जगतगुरु, आरति–हरन भक्त चिंतामनि।। "परमानन्ददास" को ठाकुर, यह औसर औसर छांडो जनि।।३।।

पंचामत समय (राग कान्हरौ) यह व्रत माधों प्रथम लीयों जो मेरे भक्तन को दुखदे, ताको फारु नखन हियो।।१।। जो भक्तन सो वैर करत है, परमेश्वर सो वैर करे।। रखवारी को चक्र सुदर्शन, माथे ऊपर सदा फिरे।।२।। पराधीन हों अपुने भक्त के, जा कारण अवतार धर्यो।। यह जु कही हरि मुनीजन आगे, अभिमानी को गर्व हर्यो।।३।। भजते भजों त्यजों नहि कबहु, पारथ प्रति श्रीपति यो भाखी।। "परमानन्ददास" को ठाकुर, अखिल भुवन सब साखी।।४।।

शयन में (राग कान्हरौ) चरण कमल बन्दो जगदीस, जे गोधन के संग घाऐ।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग केदारों) राय गिरिधरन संग राधिका रानी।। (यह पूरा पद पेज २१ पर पढ़े)

वैशाख शुक्ल पूर्णिमा

श्रृंगार – पाग–परदनी का।

वस्त्र – सफेद मलमल की बिना कोर की, परदनी तथा सफेद पाग छोर वाली उस पर सफेद मोर की चन्द्रिका। पिछवाई सफेद मलमल की।

आभरण – मोती के आभरण नित्यानुसार धराये जाते है। कर्ण में कर्णफूल तथा सफेद पुष्पों की थाक वाली दो मालाजी धराये गये हैं। छोटा ग्रीष्मकालीन श्रंगार।

विशेष – राजभोग मे चौकी पर श्री यमुनाजी का थाल आता है उसमें फूल तथा रूपा के कछुआ, मछली, नाव तथा वासुदेव प्यालों पधरावे है।

मंगला में (राग बिलावल) **बल बल पांऊ धरिये जु, आज कछु मेरे लेहेनो, वज नपति सुत भोर ही, आये हो रसभरे।। (यह पूरा पद पेज १०६ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **लटपटी पाग के पेच संवारो, अहो नंदलाल हो आज लटपटी पाग। छुटे चिकुर मानो मत्त मधुपगन उनमरा जीवराग।।१।। चंदन कुच झर झपत नव, नखहार बन्यों बिनताग।। "विधापति" रति श्रीलाल अंग, ता भामिनी के भाग ।।२।।**

राजभोग आते समय (यमुना तट के छाक के पद) (राग सारंग) **यमुना तट भोजन करत गोपाल।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **सोहत लाल परदनी अति झीनी।। तापर एक अधिक छबि उपजत, जलसुत पांति बनी कटि छीनी।।१।। उज्वल पाग श्याम शिर शोभित, अलकावली मधुप मधुपीनी।। "चतुर्भुजदास" गिरधर पिय, चपल नयन युवती बसकीनी।।२।।**

भोग में (राग सारंग) **भले ही मेरे आये हो पीय टीक दुपहरी की बीरीयाँ।। (यह पूरा पद पेज १२१ पर पढ़े)**

संध्या में (राग हमीर) **निरखि मुख ठाडी व्है जु हँसे।। (यह पूरा पद पेज ११८ पर पढ़े)**

शयन में (राग केदारों) **चारू नट भेख धरि बैठे गोविंद जहां, (यह पूरा पद पेज ११२ पर पढ़े)**

ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिप्रदा

श्रृंगार – पाग कतरो आडबन्द को।

वस्त्र – सफेद मलमल के बिना कोर का आडबन्द तथा श्रीमस्तक पर सफेद छोर वाली पाग। पाग के उपर मोर पिछके काम का दोहरा कतरा धराया गया है। पिछवाई सफेद मलमल की बिना कोर की। सफेद साज व सफेद वस्त्र धराये गये हैं।

आभरण – नित्यानुसार, वेणु वेत्र गंगा जमुनी यानी सोना रूपा के। छड़ि कमल की। कर्णफूल व गुलाबी पुष्पों की दो मालाजी कलात्मक हमेल की तरह धराये गये हैं।

विशेष – मंगला के दर्शन में सफेद फेंटा व आडबन्द।

मंगला में (राग बिलावल) (श्रीयमुनाजी की अष्टपदी) **नमो देवी यमुने नमो देवी यमुने हर कृष्ण मिलनांतरायम्।। (यह पूरा पद पेज ११ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **यमुना जल घट भरन चली चंद्रावली नारी।। मारग में खेलत मिले घनश्याम मुरारी।।१।। नैननि सों नैना मिले मन रह्यों लुभाई।। मोहन मूरति जिय बसी पग धर्यो न जाई।।२।। गुप्त प्रीति प्रकट भई यह पहिली भेंट।। "परमानन्द" ऐसे मिली जैसे गुर में चेंट।।३।।**

राजभोग आते समय, (राग सारंग) छाक का पद–उष्णकाल **सुबल गिरिघाटी चढ़ टेरत।। (यह पूरा पद पेज ३५ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **चन्दन की खोर किये, चन्दन सब अंग लगावे, सौंधेकी लटप झपट, पवन फहरन में।। प्यारी के पिया को नेम, पियके प्यारी सो प्रेम, अरस परस रीझ रिझावे, जेठ की दुपहरी में।।१।। चहूं और खस संवार, जल गुलाब डार डार, सीतल भवन कियौ, कुंज महल में।। सोभा कछु कही न जाय, निरख नैन सचु पाय, पवन ढुरावे "परमानन्द" दासी टहल में।।२।।**

भोग में (राग सारंग) **बने माधौ जु के महल।। जेठ मास अति जुडात, माघ मास कहल।।१।। दूर भयें देखियत है, बादर के से पहल।। बिच बिच श्याम हरित, जमुना से दहल।।२।। व्रजपति कहा अनूप, इहै बात सहल।। "परमानन्द" तहां, करत फिरत टहल।।३।।**

संध्या में, (राग ईमन) **पूत मेहेर को खिरक दुरावत गैया।। सांझ समे बांधे फेंटा गले गुंजामाल, पहिरे तनिया ठाड़े है अध पैया।।१।। कोधनीं बनी गात, पायन पनसुरा, रूप मोहिनी मदन हरैया।। "रसिक" प्रीतम की बानिक निरखत, रिझे लेत बलैया।।२।।**

शयन में (राग बिहाग) **सुन्दर यमुना तीर री, मन मोहन ठाड़े।। जबतें दष्टि परी मनमोहन, तबतें धरत न धीर री।।१।। मगमद तिलक अलक घुंघरारी, नासा मुक्ता कीर री।। "सुरदास" प्रभु बेनु बजावत, थक्यो सरिता नीर री।।२।।**

मान का पद, (राग नायकी) **रूसवों न कर, प्यारी रूसवों निवारी।। (यह पूरा पद पेज १०१ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय, (राग बिहाग) **पौढ़े हरि झीनों पट दै ओट।। (यह पूरा पद पेज २१ पर पढ़े)**

ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया

श्री दाउजी महाराज कृत चार स्वरुप का उत्सव

(देहली–वंदनमाला–हांडी)

शृंगार – ऐंठवा फेंटा चन्द्रिका और पिछोड़े का।

वस्त्र – केसरी (अमरसी) मलमल बीना किनारी का पिछोड़ा एंव ऐंठवा फेटा पर मोरपीछ के कामका कतरा कंलगी, कमल की छड़ी तथा कमल के काम की पिछवाई केसरी तुईलेस कोर की।

आभरण – नित्यानुसार मोती के मध्य का श्रंगार। मोती का हास व चंदन के मालाजी, मोर पंख की सादी चन्द्रिका, मकराकति कुंडल थाक वाली कलात्मक दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – राजभोग में बधाई के कीर्तन। आज के दिन ति. श्रीदाऊजी महाराज ने संवत १८७८में श्रीमथुरानाथजी, श्री विठ्ठलनाथजी, श्रीगोकुलनाथ जी एवं श्री नवनीतप्रियाजी चारों स्वरुपों को पधराकर दुहरा मनोरथ किया था।

मंगला में, (राग रामकली) **श्रीयमुनाजी अधम उधारनी मै जानी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े)**

शृंगार में (राग रामकली) **कहत श्रुतिसार निरधार करके।। इन बिना कौन ऐसी करे हें सखी, हरत दुख, द्वन्द सुखकंद बरखे।।१।। ब्रह्मसंबंध जब होत या जीव को, तबही इनकी भुजा वाम फरके।। दौर करि सौर करि जाय पियसों कहे, अति ही आनन्द मन में जू हरखे।।२।। नाम निरमोल नग ले कोऊ ना सके, भक्त राखत हिये हार करके।। "रसिक प्रितम" जू की होत जा पर कृपा, सोई श्रीजमुनाजी को रूप परखे।।३।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **गिरी पर चढ़ि गिरिधर टेरें।। (यह पूरा पद पेज ४७ पर पढ़े)**

राजभोग में, (रांग सारंग) बधाई, **श्री विठ्ठलेश चरण चारू, पंकज मकर लुब्ध, गोकुल में सखन संग, करत है नितकेली।। पावन चरणोदक जहां, संतन**

हित सलिल बहै, त्रिविध ताप दूर करे, वदन बिन्दु मेली।।१।। भूतल कृष्णावतार, प्रकट ब्रह्म नराकार, सिंचत हरिभक्ति सुधा, धरणि धर्मबेली।। “छितस्वामी” गिरिवरधर, लीला सब फेरी करत, धेनु दुहत गोप संग, हाथ पाट सेली।।२।।

भोग में, (राग सारंग) वृन्दावन जमुना के जल, खेवत नाव ललितादिक जहं कुंजकुसुम रचत, बैठे हरि राधा।। प्रफुलित मुख दोऊ जन, अरगजा रंग सारी, पाग मोती भूषन सुभग अंग, तैसीय रूप अगाधा।।१।। आस–पास तट हरे द्रुम, गजबर कमनीय केलि, मदु सुगंध फैली रहयों , तरनि तेज न बाधा।। जंत्रन नीर फूंही परत, सुखदायक सखी जहां, “ब्रजाधीस” बेन मध्य, गावत सुर साधा।।२।।

संध्या में, (राग कल्याण) ऐ कटि पीत पिछोरी बांधे, ठाडोरी खिरक मांझ, भुज तर कंचन लकुट धरे।। अलकन गौल ऐठवा फेंटा, बांध्यों है लट छेल छबीले, बनमाला ले धरत गरे।।१।। अंग अंग प्रति अमित माधुरी बिलोकवे को, कोटिक मन्मथ मनजू हरे।। बात कहत “हितअनुप” सखासों, हँस हँस दसनन फूलझरे।।२।।

शयन में (राग कान्हरौ) मेरे गह चन्दन अति कोमल, लीजे हो सुन्दर ब्रजनायक।। (यह पूरा पद पेज १०८ पर पढ़े)

मान का पद (राग नायकी) रूसवो न कर प्यारी रूसवो निवारि।। (यह पूरा पद पेज १०१ पर पढ़े)

पोढ़ते समय, (राग बिहाग) कुंज भवन में पौढ़े दोऊ।। (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े)

ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया

शृंगार – पाग परदनी का।

वस्त्र – रूपेरी कोर की गुलाबी परदनी। गुलाबी पाग पर गुलाबी पंख की चन्द्रिका पिछवाई गुलाबी रूपेरी कोर की।

आभरण – नित्यानुसार मोती के आभरण, कर्णफूल व सफेद पुष्पों के दो मालाजी हमेल की तरह धराये गये हैं।

सामग्री – सतुआ, दहीभात, श्रीखण्डभात, अमरस भात, अमरस लुचाई तथा बैंगन का भरता, छाछ तथा मठा, केरिकी छाछ तथा शीतल अमरता, आम रसकी बरफी आदि।

विशेष –आज से आषाढ़ सुदी ११ तक कलियों (फूल) का शृंगार किया जाता है।

मंगला में (राग रामकली) **चित में श्री यमुना निशदिन जू राखो।। भक्त के बस कृपा करत है सर्वदा, ऐसो श्री यमुनाजी को है जू साखो।।१।। जा मुखतें श्री यमुने यह नाम आवे, संग किजे अब जाय ताको।। "चतुर्भुजदास" अब कहत है सबन सो, ताते श्री यमुने यमुने जू भाखो।।२।।**

श्रंगार में (राग रामकली) **प्राणपती बिहरत श्री यमुना कुले।। लुब्ध मकरंद के भ्रमर ज्यों बस भये, देख रवि उदै मानों कमल फूले।।१।। करत गुंजार मुरलीजू ले सांवरों, सुनत ब्रजवधू तन सुधि जू भूलें।। "चतुर्भुजदास" जमुने प्रेमसिंधु में, लाल गिरिधरनवर हरखि झूलें।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **मोहन जेंवत छाक सलौनी।। (यह पूरा पद पेज ३५ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **भलई मेरे आये हो पिय टीक दुपहरी की बिरियां।। (यह पूरा पद पेज १२१ पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **सूर आयो सिर पर, छाया आई पायन तर, पंछी सब झुक रहे, देख छांह गहेरी।। धंधीजन धंधो छांड, रहे ही धूपन के लिये, पशु पंछी, जीव जन्तु चिरियाँ चुप रहिरी।।१।। ब्रज के सुकुमार लोग, दे दे किवार सोवे, उपवन की व्यार तामे, पिय संग पोढ़ो प्यारी।। "सूर" अलबेली चल, काहे कु डरात है, माघ की मध्यरात, जैसे जेठ की दुपहरी।।२।।**

संध्या में (राग हमीर) बिलग कित मानत हो जु हमारो।। कहा जु भयो पाछे दुहि दीनी, हौं तो ग्वाल तुम्हारौ।।१।। इनकी गति हों नीके जानत, सुरभी दूध देत, त्यों होत अंध्यारो।। भर दोहनी काल्ह दुही दैहों, तब व्है हे "रामदास" प्रभु को पतियारौ।।२।।

ब्यारू का पद (राग ईमन) गिरिधर जानी तिहारी बात।। ब्यारू परघर करि आवत हो इहां कछु नही खात।।१।। ईही सुभाव जनम को तिहारो, चोरी बिन न रहात।। "परमानन्द" बलि राम स्याम दोऊ मिलि जेंवो एक साथ।।२।।

दूध का पद (राग ईमन) कीजे लाडिले पान अब दूध लाई हो जसोदा मैया।। (पूरा पद पेज २० पर पढ़े)

शयन में (राग अड़ानो) कृपारस नैन कमल दल फूले।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)

मान का पद (राग नायकी) रूसनों न कर, प्यारी रूसवों निवारि।। (पूरा पद पेज १०१ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पौढ़े प्रेमके पर्यंक।। सुरति रसमें मग्न दोऊ, लेत भरि भरि अंक।।१।। कोक–कला प्रवीन बिहरत, उठत भाव तंरग।। "कृष्णदास" प्रभु गोवर्धनधर, मुदित जीति अनंग।।२।।

ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी

शृंगार – पगा मोती की पाग पर्दनी का।

वस्त्र – आज मोती के काम की पर्दनी एवं मोती की पाग पर मोती का कतरा धराया है। पिछवाई सफेद जाली की, आज खस के बंगले में श्रीजी बिराजे तथा सांज को यही श्रंगार फूल कली का धराया जाता है। मनोरथ भोग आता है। कर्णफूल व सफेद पुष्पों की कलात्मक दो मालाजी धराये गये हैं।

मंगला में (राग रामकली) **नैन भरि देख अब भानुतनया।। केली पियसों करें भ्रमर तबही परे, श्रमजल भरत आनन्द मनया।।१।। चलत टेढ़ि होय लेत पियको मोहि, इन बिना रहत नही एक छिनया।। "रसिक" प्रीतम रास करत जमुना पास, मानों निर्धनन की है जू धनया।।२।।**

श्रंगार में (राग बिलावल) **देख्योरी हरि नंगम नंगा।। जलसुत भूषण अंग बिराजत, बसन हीन छबि उठत तरंगा।।१।। कहा कहौ अंग अंग की सोभा, निरखत लज्जित होत अनंगा।। कछु दधि हाथ कछु मुख माखन, "सूर" हंसत ब्रज जुवतिन संगा।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **मोहन जेवत छाक सलोनी।। (यह पूरा पद पेज ३५ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **सुन री आली, ऐसी दुपहरी की बिरिया में, बैठी झरोखन पोवत हार।। औंचक आय गये नन्दनन्दन, मो तन चितये कांकरी मार।।१।। हो सकुची लाजन भई ठाड़ी, गुरूजन को मन में कियो विचार।। "गोविन्द" प्रभु पिय सुजान सिरोमनी, सैन दई है भूजा पसार।।२।।**

भोग में (राग सारंग) **फूल के भवन, गिरिधरन नव नागरी, फूल सिंगार कर, अति ही राजे।। फूलकी पाग सिर, स्याम के राजही, फूलकी माल, हिय में बिराजे।।१।। फूल सारी, कंचूकी बनी फूल की, फूल लहेंगा, निरखी काम लाजे।। "छितस्वामी" फूल सदन, प्यारी संग बिलसत, मिलवत अंग काम दाजे।।२।।**

संध्या में (राग कान्हरौ) **धन धन हो हरिदास राई।। सानुग सेवा करत सकल विधि, ताते बलि मोहन जिय भाई।।१।। कंद मूल फल फूल पत्र ले, सिंघासन रूचिर बनाई।। कोमल तन गाइनि चरिबे को , सीतल जल झरना जु बहाई।।२।। बिबिध केली क्रीडत जु सखन संग, छिन उतरत छिनु चढ़त जु धाई।। रामकृष्ण के चरन परस तें, पुलकित पुहुपित रहत सदाई।।३।। इनको भागु कहा लौं बरनौ, कोमल कर लीनो जु उठाई।। प्रेम मुदित यों कहत गोपिका, तिन पर "गोविन्द" बलि बलि जाई।।४।।**

मान का पद (राग नायकी) **अरी तोमे समुझ नाहिं, उठ चल री प्रिये, पहर गहनों।। (यह पूरा पद पेज ५५ पर पढ़े)**

शयन में (राग अड़ानों) **कृपा रस नैन कमल दल फूले।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **पौढ़े हरि झीनों पट दै ओट।। (पूरा पद पेज २१ पर पढ़े)**

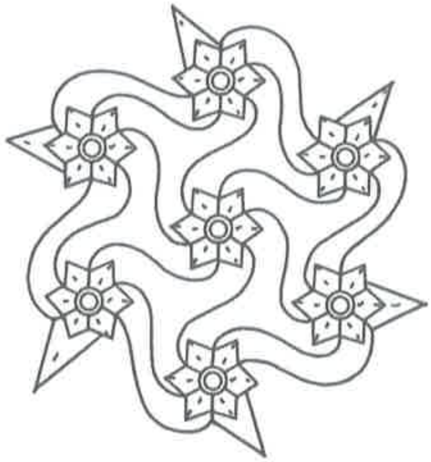

ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी

शृंगार – धोती–पटका को।

वस्त्र – सफेद मलमल की धोती एवं पटका तथा श्रीमस्तक पर ग्वाल पगा सफेद मोरिशिखा, मोती के आभरण व कर्णफूल व दो मालाजी हमेल जैसी धराई गई है। उष्ण काल की लीला है, राजभोग से संध्या तक फुहारे चलते है। (ऐच्छिक श्रंगार)

मंगला में (राग रामकली) **श्रीयमुना के नाम अघ दूर भाजे।। जिनके गुण सुनन को, लाल गिरिधरन पिय, आय सन्मुख ताके बिराजे।।१।। तिहि छिनु काज ताके जु सगरे सरे, जाय के मिलत ब्रज बधू समाजे।। "कृष्णदासनि" कहे ताहि अब कौन डर, जाके ऊपर श्री जमुने सी गाजे।।२।।**

शृंगार **में** (राग रामकली) **श्री यमुनाजी तिहारों दरस मोहि भावे।। श्री गोकुल के निकट बहत हों, लहरन की छबि आवे।।१।। सुख देनी दुःखहरनी श्री जमुनाजी, जो जन प्रात उठ नावें।। मदनमोहन जू की खरी हे प्यारी, पटरानी जू कहावें।।२।। वंदाबन में रास रच्यों है, मोहन मुरली बजावे।। "सुरदास" प्रभु तिहारे मिलन को, वेद विमल जस गावे।।३।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **बिहारीलाल आई छाक सलौनी।। (यह पूरा पद पेज ३६ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **बन्यो माई पगा श्याम सिर नीको।। धोती और उपरेना ओढ़े और गहनों मोती को।।१।। अंग अरगजा कमल हाथ में, लीने मिल्यों भावतों जीको।। नैन चकोर चन्द्रमुख निरखे, "रसिकप्रीतम" सबहि को।।२।।**

भोग में (राग सारंग) **दुपेरी झनक भई, तामें आये पिय मेरे, में उठ किनो आदर।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)**

संध्या में (राग कल्याण) **अहो कान्ह गैया कहां बिसरानी।। (यह पूरा पद पेज ११४ पर पढ़े)**

शयन में (राग बिहाग) **बैठे ब्रजराज कुंवर प्यारी संग जमुना तीर, सीतल बयार सखी, मंद मंद आवे।। अति उदार वैजवंती श्याम अंग शोभा देत, अंस भुज मेल दोऊ, बिहंस बिहंस गावे।।१।। झीनों पट दीपत देह, प्रीतम सों अति सनेह, गौर स्याम अभिराम, सोभा कहत न बनी आवें।। "सूरदास मदन", मोहन मोहनी से बने दोऊ, हंसी हंसी अंग अगरजा लगावे।।२।।**

मान का पद (राग बिहाग) **मनावत हार परी री माई।। (पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **पौढे रावटी सुख सेज।। (यह पूरा पद पेज १२७ पर पढ़े)**

ज्येष्ठ कृष्ण छठ

श्रृंगार – पाग पिछोडे का।

वस्त्र – हल्का गुलाबी मलमल का पिछोडी, श्रीमस्तक पर गुलाबी पाग पर सफेद मोती की मोरशिखा, कर्णफूल व दो मालाजी धराये गये हैं। पिछवाई पीली मलमल की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार, मोती के आभरण, कर्णफूल व सफेद पुष्पों की दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – सांयकाल यही श्रृंगार फूल कली के धराते है तथा खस का बंगला मनोरथ भोग में अमरस लुचई, मगध, सतुवा तथा मोहन थाल।

मंगला में (राग विभास) **प्रफुल्लित बन विविध रंग, झलकत यमुना तरंग, सौरभ घन आमौदित, अति सुहावनो।। चिंतामणि कनक भूमि, छवि अद्‌भुत लता झूमि, शीतल मन्द अति सुगन्ध, मरूत आवनो।।१।। सारस–हंस– सुक–चकोर, चित्रित नत्यत सुमोर, कपोत कोकिला कल, मधुर गावनों।। जुगल रसिकवर विहार, "परमानन्द" छबि अपार, जयति चारू वंदावन, परम भावनो।।२।।**

श्रृंगार में (राग रामकली) **हेत करि देत श्री यमुने वास कुंजे।। जहां निसि वासर रासमें रसिकवर, कहां लग बरनिये प्रेमपुंजे।।१।। थकित सरिता नीर थकित ब्रजवधू भीर, कोऊ न धरत धीर मुरली सुनिजे।। "चतुर्भुजदास" यमुने पंकज जानि, मधुप की नाई चित्त लाय गुंजे।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **आगे आऊरी छकहारी।। (यह पूरा पद पेज ३६ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **जमुनातट नवनिकुंज द्रुम, नवदल पुहुप पुंज, तहां रची नागर वर, रावटी उसीर की।। कुंकुम घनसार घोर, पंकज दल बोर बोर, चर्चत चहुं और अवनि, पंकज पाटिर की।।१।। सोमित तन गौरश्याम, सुखद सहज कुंजधाम, सीतल सुगन्ध मंद, गति समीर की।। "नन्ददास" पिय निरख, सखि ललिता औट, श्रवन धुनि किंकिनी, मंजीर की।।२।।**

भोग में (राग सारंग) फूल के भवन गिरिधरन नवल नागरी, फूल सिंगार कर अतिही राजें।। (यह पूरा पद पेज १३६ पर पढ़े)

संध्या में (राग अड़ानों) कृपारस नैन कमल दल फुले।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)

शयन में (राग केदारों) फूली फूली डोले कुंजसदन में, मदन मोहन रसमाती।। रस बस किये सुहाग बिहारन, मंद मंद मुसकाती।।१।। बहियां जोर परस्पर दोऊ, लाडली फेर लडाती।। "हरिदास" के स्वामी स्यामा, रंग बरसत बहु भांति।।२।।

मान में (राग बिहाग) चल तु माननी मानि निहोरो।। हो पठाई तोही लेन सांवरे, चलरी गर्व करी थोरों।।१।। कुन्ज महल बैठे मनमोहन, चितवत चन्द चकोरों।। "सूरदास" प्रभु तिहारे मिलन को, रेन गई रस थोरो।।२।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) दंपति पोढ़े रस बतियां करत, नयना दोऊ लाग गये।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)

ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी

श्रृंगार – पाग–पिछोडे का।

वस्त्र – केसर मिश्रित चंदन चोली तथा केसरी मलमल का पिछोड़ा चन्दनीया पाग पर मोती की दोहरी कीलंगी।

आभरण – नित्यानुसार मोती के आभरण, शीशफूल व सफेद पुष्पों के दो कलात्मक मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – गुलाबदानी में गुलाब जल पधराया जाता है तथा खस के पंखों पर छिड़काया जाता है। बाद में पवन किया जाता है।

मंगला में (राग रामकली) **नैन भरि देख अब भानु तनया।। (यह पूरा पद पेज १३६ पर पढ़े)**

श्रंगार में (राग रामकली) **जयति भानु तनया चरणयुगल बन्दें।। जयति ब्रजराज नन्द प्रिये, देत आनन्द ज्यों सरद चन्दे।।१।। जयति सकल सुख कारिनी कृष्ण मन हारिनी, श्री गोकुल निकट बहत मंदे।। जाके तट निकट हरी रासमण्डल रच्यों, तहां नत्यत ताता तेई थंदे।।२।। जयति कलिदंगिरि नंदिनी देत आंनदिनी, भक्त के हरत सब दुखद्वंदे।। चितमे ध्यान धर मुदित "ब्रजपति" कहे, जयति जमुने जयति नन्दनन्दे।।३।।**

राजभोग आते समय (राग नूर सारंग) **आज दधि मीठो मदनगोपाल।। भावत मोही तिहारों जूठों, चंचल नयन विशाल।।१।। आने पात बनाये दौना, दिये सबन को बाट।। जिन नहीं पायो सुनौरे भैया, मेरी हथेरी चाट।।२।। बहुत दिनन हम बसे कुमुदवन, कृष्ण तिहारे साथ।। एसो स्वाद हम कबहु न चाख्यों, सुन गोकुल के नाथ।।३।। आपन हँसत हँसावत ग्वालन, मानस लीलारूप।। "परमानन्द" प्रभु हम सब जानत, तुम त्रिभुवन के भूप।।४।।**

राजभोग में (राग सारंग) **गोविन्द लाडिलों लड़बोरा।। (यह पूरा पद पेज १११ पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **अक्षय ततीया गिरिधर बैठे, चन्दन को तनलेप किये।। (यह पूरा पद पेज ११२ पर पढ़े)**

संध्या में (राग कल्याण) **आवत मदन गोपाल त्रिभंगी।। निर्तत गावत बेनु बजावत, करत कुलाहल बालक संगी।।१।। कटि पिताम्बर उर बनमाला, बन्यों टिपारों लाल सुरंगी।। बचन रसाल सुरति हौ भूलि, सुनि बन मुरलीनाद कुरंगी।।२।। बरसत कुसुम देव मुनि हरखत, बाजत ढोल दमामा जंगी।। “परमानन्द” स्वामी नटनागर, स्याम विनोद सुरत रस रंगी।।३।।**

शयन में (राग अड़ानों) **तेरी भ्रौंह की मरोरन तें, ललितत्रिभंगी भये, अंजन दे चितयो, भयेजू स्याम वाम।। (यह पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)**

मान में (राग बिहाग/केदारों) **घरी घरी को रूसनों, कैसे बनि आवे।। है कोऊ चेरी तेरे बाबा की, नित्य उठ पैयां लाग तोहि मनावे।।१।। अब तो कठिन भई मेरी आली, तो बिन लाल और नहीं भावे।। “आसकरन” प्रभु मोहन नागर मुरली में, राधे राधे गावे।।२।।**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **कुसुम सेज पिय प्यारी पौढ़े, करत है रस बतीयाँ।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े)**

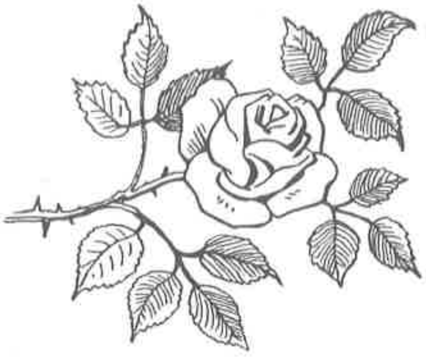

ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी

श्रृंगार – पाग–कतरा आडबन्द का।

वस्त्र – रूपेरी कोर का सफेद मलमल का आडबन्द एवं पाग पर रेशम के काम का दोहरा कतरा, पिछवाई सफेद कमल तलाई की धराई गई है।

विशेष – सांयकाल यही श्रृंगार फूल कली के तथा मनोरथ भोग शीतल सामग्री आती है।

मंगला में (राग भैरव) **जय जय श्री सूर्यजा कलिंद नन्दिनी।। गुल्म लता तरू सुवास, कुंज कुसुम मोदमत्त, गुंजत मधुप सुभग वायुमंदिनी।।१।। हरि समान धर्मशील, कांति मंजुल जलदनील, तट नितंब भेदति, नित गति सुछंदिनी।। सिक्ता–गन मुक्ता मानों, कंकनयुत भुजतरंग, कमलन उपहार लै, पिय चरन वंदिनी।।२।। श्रीगोपेन्द्र गोपीसंग, श्रमजल–कन सिंचत अंग, अति तरंग निरखी नैन, रस सुकंदिनी।। "छीतस्वामी" प्रभु गिरिधर, वर आनन्दकन्द श्रीजमुनाजल दुरित हरन, दुख निकंदिनी।।३।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल/सारंग) **घाट पर ठाडे मदन गोपाल।। कौन युक्ति करि भरौं री जमुनाजल, परे हैं हमारे ख्याल।।१।। द्यौंस बढयौ घर लाल रिसे है, चलि न सकति एक चाल।। कहा करौं अब यो नहि मानत, सुन्दर नन्द को लाल।।२।। कछुक संकोच कछु चोंप मिलनकी, परी प्रेमकी जाल।। "परमानन्द" स्वामी चित चोर्यो, बेनु बजाई रसाल।।३।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **तोरे पैयां लागूं गिरिधर भोजन कीजें।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **पनीयां न जैहोरी आली, नन्दनन्दन मेरी मटुकी झटकी के पटकी।। टीक दुपहरी में अटकी कुंजन में, कोऊ न जाने मेरे घटकी।।१।। कहा री करौं कछु बस नहीं मेरों, नागर नटसों अटकी।। "नन्ददास" प्रभुकी छबि निरखत, सुधि न रही पनघटकी।।२।।**

भोग में (राग सारंग) **तनक प्याय पानी, यह मिस गये वाके घर।। समझ बुझके जल भर लाई, पीवन लागे ओक ढ़ीली करि, तब ग्वालिन मंदमंद मुसिकानी।।१।। वहे जल वैसे ही गयो, और जल भर लाई, तब ग्वालिन बोली मधुरी सी बानी।। "चतुरबिहारी" प्यासे हो तो पानी पीजें, नातर सिधारों रावरेजू, प्यास में जानी।।२।।**

संध्या में (राग कल्याण) **यह कौन टेव तेरी कन्हैया, जब तब मारग रोके।। कैसे के पनिया जाय युवतीजन, आडोई ठाड़ो रहै लकुट लिये, दग झोकें।।१।। कब हुक पाछेंते गागर डार देत, ऐसें बजावे तारी, जैसे कोऊ चौंके।। "रसिक" प्रीतम की अटपटी बातें, सुनरी सखी समझ न परे, वाकी नोंके।।२।।**

शयन में (राग अड़ानों) **जर जावोरी लाज मेरे, ऐसी कौन काज आवे, कमलनयन नीके, देखन न दीनें।। बनते आवत, मारग में भेट भई, सकुच रही इन, लोगन के लीने।।१।। कोटि जतन कर, रही री निहारवें कूं, अचरा की ओट दे दे, कोटि श्रम कीने।। "नन्ददास" प्रभु प्यारी, ता दिन ते मेरे नयना, उनही के अंग संग, रंग रस भीने।।२।।**

मान में (बिहाग) **मनावत हार परी री माई।। (पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **पौढ़े प्रेम के पर्यंक।। (यह पूरा पद पेज १३८ पर पढ़े)**

ज्येष्ठ कृष्ण नवमी

श्रृंगार – टिपारा–पिछोडे का।

वस्त्र – बादामी रंग का बादामी पिछोड़ा एवं पाग पर सफेद रेशम का टीपारा का साज फूल कमल की छड़ी तथा पिछवाई रूपहरी कोर की। मोती के वेणीजी तथा सफेद पुष्पों के दो मालाजी धराये गये हैं।

आभरण – नित्यानुसार मोती व ग्रीष्मकालीन भारी श्रंगार धराया गया है।

मंगला में (राग रामकली) **श्री यमुने पर तन–मन–धन प्राण वारौं।। जाकि कीरति विशद् कौन सब कहि सके, ताहि नैननते न नेक टारौं।।१।। चरनकमल इनकेजू चिन्तत रहौ, निसदिना नाम मुखतें उचारौ।। "कुम्भनदास" कहे लाल गिरिधरन मुख, इनकी कृपा भई तब निहारौ।।२।।**

श्रृंगार में (राग रामकली) **श्रीयमुना सी नाहीं कोऊ और दाता।। जो इनकी सरन जात है दौरिकें, ताहि को तिही छिनु करे सनाथा।।१।। येहि गुणगान रसखान रसना एक, सहस्त्र रसना क्यों न दई विधाता।। "गोविन्द" प्रभु पर तन–मन–धन वारने सबहिं को जीवन इनहि के हाथा।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **आज हमारे भोजन. (यह पूरा पद पेज १११ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **भलेई मेरे आये हो पिय, टीक दुपहरी की बिरियां।। (यह पूरा पद पेज १२१ पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **सिर धरे पंखोआ मोरके।। गुंजाफल फूलन के लटकन, सोभित नन्द किसोर के।।१।। ग्वालमंडली मध्य बिराजत, कौतुक माखन चोर के।। नाचत गावत बेनु बजावत, अंस भुज सखा ओर के।।२।। तैसेइ फरहरात रंग भीनी छबि, पिताम्बर छोर के।। "परमानन्ददास" को ठाकुर, मन हरत नैनकी कोर के।।३।।**

संध्या में (राग कल्याण) **गिरीधर सब हीं अंग को.. (यह पूरा पद पेज १२२ पर पढ़े)**

शयन में (अष्टपदि) (राग/बिहाग) **रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेषं।। (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े)**

मान में (राग बिहाग) **दौरी दौरी आवत, मोहि मनावत, दाम खरच कछु, मोल लई री।। (यह पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **पौढ़े हरि झीनों पट दै ओट।। (पूरा पद पेज २१ पर पढ़े)**

ज्येष्ठ कृष्ण दशमी

(जमुना दशमी)

श्रृंगार – पाग–कतरो और आडबन्द का।

वस्त्र – मलमल कपासी सफेद आडबन्द एवं पाग पर सफेद मोर पंख के काम का दोहरा कतरा, फूल कमल की छड़ी, पिछवाई सफेद मलमल की।

आभरण – नित्यानुसार मोती के तथा श्रीमस्तक पर छोर वाली पाग, कर्णफूल व सफेद पुष्पों के दो मालाजी तथा दो मालाजी हमेल जैसे धराये गये हैं।

विशेष – सांयकाल डोल तिवारी में श्रीयमुनाजी भरे जाय। आज उत्थापन नहीं खुले। भोग के दर्शन खुले। आज शयन भोग में रोटी तथा केरी का बिलसारू व बैंगन का भरता श्रीजी को भोग में आवे। जल विहार के भाव से चारों तरफ केल कुंज के भाव से पधराये गये व रूई के बतखजी पधराये गये हैं।

मंगला में (राग रामकली/बिलावल) (श्रीयमुनाजी की अष्टपदी) **नमो देवी यमुने नमो देवी यमुने हर कृष्ण मिलनांतरायम्।। (यह पूरा पद पेज ११ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **यमुना जल घट भरन चली चन्द्रावली नारि।। (यह पूरा पद पेज १३३ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **तेरे पैयां लागूं गिरिधर भोजन कीजै।। (पूरा पद पेज १६ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **आवत ही यमुना भर पानी।। स्याम रूप काहुको ढोटा वाकी चितवन मेरी गैल भुलानी।।१।। मोहन कह्यों तुमको या ब्रज में, हमै नही पहिचानी।। ठगीसी रही चेटकसों लाग्यों, तब ब्याकुल मुख फूरत न बानी।।२।। जा दिनतें चितये री मोतन, ता दिनतें हरि हाथ बिकानी।। "नन्ददास" प्रभु यों मन मिलियों, ज्यों सागर में सरित समानी।।३।।**

भोग में (राग सारंग) **बैठे घनश्याम सुन्दर खेवत है नाव।। आज सखी कान्ह संग खेलवेकों दाव।।१।। पथिक हम खेवट तुम लीजै उतराई।। बिचधार मांझ रोकी**

मिस हि मिस डुलाई।।२।। जमुना गंभीर नीर अति तंरग लोल।। गोपिन प्रति कहन लागे मीठे मदु बोल।।३।। नन्दनन्दन डरपत हौं राखहु पद पास।। याहि मिस मिल्यों चाहै “परमानन्ददास”।।४।।

संध्या में (राग अड़ानों) कृपारस नैन कमलदल फुले।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)

शयन में (राग बिहाग) बैठे बजराज कुंवर प्यारी संग यमुनातीर, शीतल बियार सखि, मंद मंद आवें।। (यह पूरा पद पेज १४२ पर पढ़े)

मान में (राग बिहाग) दौरी दौरी आवत मोहि मनावत, दाम खरच कछु मोल लई री।। (यह पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) नवल किशोर नवल नागरिया।। (यह पूरा पद पेज २० पर पढ़े)

ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी

शृंगार – धोती–पटका का।

वस्त्र – गुलाबी रूपेरी कोर की धोती तथा गुलाबी पाग पर मोती शृंगार, पिछवाई चित्राम की।

आभरण – नित्यानुसार।

मंगला में (राग खट) **चन्दनचर्चित नीलकलेवर पीत वसन वनमाली।। केलिचनलनमणि कुण्डल मंडित गण्ड युग स्मितशाली।। हरिरिह मुग्धवधुनिकंरे।। विलासिनी विलसति केलीपरे।।ध्रु.।। पीनपयोधर भारभरेण हरिपरिरभ्य सरागम्।। गोपवधूरनुगायती काचिदुदांचित पंचमरागम्।।हरि।। कापिविलास विलोल विलोचन खेलनजनित्मनोजम्।। ध्यायति मुग्ध वधूरधिकं मधुसूदन वदन सरोजं।। हरि।। कापि कपोल तले मिलताल पितुं किमपि श्रुतिमूले।। चारू चुचुंब नितम्बवति दयितं पुलकैलरनुकूलै।।हरि।। केलिकला कुतुकेन च काचिदमुं यमुनाजलकूले।। मंजुलवंजुल कुंजगतम् विचकर्ष करेण दुकूले।।हरि।। करतल ताल तरलवलयावलिकलित कलस्व नवंशे।। रासरसे सह नत्यपरा हरिणा युवतिः प्रशंशसे।। हरि।। श्लियष्यति कामपि चुंबति कामपि रमयति कामपि रामां।। पश्यति सस्मितचारू परामपरामनुगच्छति वामां।। हरि।। श्रीजयदेव कवेरिदभद्भुत केशव केलि रहस्यं।। वंदावन विपिने ललितं वितनोतु शुभनियशस्यं।।हरिरिह।।**

शृंगार में (राग रामकली) **नैन भर देख अब भानु तनया।। (यह पूरा पद पेज १३६ पर पढ़े)**

राजभोग में चन्दन धरावे तब (राग सारंग) **सखी सुगन्ध जल घोर के, चन्दन हरि अंग लगावत।। (यह पूरा पद पेज ११७ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **चन्दन को बागो पहिरे, चन्दन की खोर किये, चन्दन के रूख तरे, ठाडे पिय प्यारी।। चन्दन की पाग सिर, चन्दन को फेंटा कटि, चन्दन की चोली तन, चन्दन की सारी।।१।। चन्दन की आरसी ले, निरखत दोऊ जन, हंस हंस गिर जात, भरत अंकवारी।। "सूरदास मदन मोहन", चन्दन भवन में बैठे, गावत सारंग राग, रंग रह्यो भारी।।२।।**

भोग में (राग सारंग) नीकौ बन्यों वेष चन्दन को।। (यह पूरा पद पेज १२८ पर पढ़े)

संध्या में (राग ईमन) मेरे री बगर में आवत, छबी सों कमल फिरावत।। (यह पूरा पद पेज १२२ पर पढ़े)

शयन में (राग कान्हरौ) आज को दिन धन्य धन्यरी माई, नैननि भरि देखे नन्द नन्दन।। परम उदार मनोहर मुरति, तापहरन नख पूजहि चन्दन।।१।। रसिकराय श्रीगोवर्धनधारी, रूपरासी जुवती मन फंदन।। ध्वजा, वज्र, अंकुस बिराजत, "कृष्णदास" किये पद वन्दन।।२।।

मान में (राग बिहाग) मनावत हार परी री माई।। (पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग कान्हरौ) पौढ़े रंग महल गोविन्द।। (पूरा पद पेज १०८ पर पढ़ें)

ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी

श्रृंगार – पाग पिछोड़े का।

वस्त्र – चंदनीया रंग का पिछोड़ा एवं पाग। फूल कमल की छड़िया पांच तथा गुलाबी मलमल की पिछवाई रूपेरी कोर की। श्रीमस्तक पर चंदनीया पाग तथा सफेद मोर पंख शीशफूल, कर्णफूल व सफेद पुष्पों की दो मालाजी तथा थाकवाली दो मालाजी हमेल जैसी धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार, मोती के आभरण तथा चंदन भी धराया गया है।

विशेष – आजकल श्रीजी डोल तिबारी में पोढ़ते है। शैय्याजी बाहर पधारते है। जल की मथनियां छन्ना से ढांक दी जाती है। इससे रात्रि में जलपान का झारी का जल शीतल रहता है।

मंगला में (राग रामकली) **नैन भर देख अब भानुतनया।। (यह पूरा पद पेज १३६ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग रामकली) **प्राणपति बिहरत श्रीयमुनाकुले।। (यह पूरा पद पेज १३७ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय, (राग सारंग) **(दुपहरी के, कुंज के तथा श्री यमुनातट की छाक के पद नित्य गाये जाते है।)**

यमुना तट भोजन करत गोपाल।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े)

राजभोग में (राग सारंग) **चन्दन की खोर किये, चन्दन सब अंग लगावे, सोंधेकी लपट झपट, पवन फहरन में।। (यह पूरा पद पेज १३३ पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **दुपेरी झनक भई तामे कैसे आये मेरे गेह।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)**

संध्या में (राग कल्याण) द्रुपद **गोविन्द गायन की पीठ पर हाथ फेरत, सुबल सखासों ठाडे हंसत।। (यह पूरा पद पेज १२० पर पढ़े)**

शयन में (राग अडानों/कान्हरौ) **कृपारस नैन कमल. (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)**

मान में (राग बिहाग) **मनावत हार परी री माई।। (पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **पौढे हरि झीनों पट दै..... (पूरा पद पेज २१ पर पढ़े)**

ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी

शृंगार – सेहरा का।

वस्त्र – केसरिया रूपेरी कोर की धोति पटका। श्रीमस्तक पर दुमाला तथा मोती का सेहरा। पिछवाई केसरी रूपेरी कोर की।

आभरण – नित्यानुसार, मोती के शीशफूल, कर्णफूल, सफेद पुष्पों की थाकवाली दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – सांयकाल यही शृंगार फूलकली के। भोग दर्शन के बाद मनोरथ भोग में अनेक प्रकार की सामग्री यथा अमरस – लुचई मोहन थाल, खाजा, मेसुर, सतुवा, फिका सलोना आदि। बाद में संध्या आरती के दर्शन।

मंगला में (राग रामकली) **पिय संग रंग भरी, करी कलोलें।। सबन को सुख दैन, पिय संग करत सैन, चित में तब परत चैन, तबही बोले।।१।। अति ही विख्यात, सब बात इनके हाथ, नाम लेत कृपा, करे अतोले।। दरस कर परस कर, ध्यान हियमें धरें, सदा ब्रजनाथ, इन संग डोले।।२।। अति ही सुखकरन, दुख सबन के हरन, ये ही लीनो परन, दै जू कौलें।। ऐसी श्रीजमुने जान, तुम करो गुणगान, "रसिक" प्रीतम पाये, नग अमोले।।३।।**

शृंगार में (राग बिलावल) **श्याम संग श्याम, व्है रही श्रीयमुनें।। सुरत श्रम बिन्दुते, सिंधुसी बही चली, मानो आतुर अलि, रहि न भवने।।१।। कोटि काम ही वारौं, रूप नैनन निहारौं, लाल गिरिधर संग, करत रमनें।। हरखि "गोविन्द" प्रभु, निरखी इनकी और, मानों नवदुल्हनी आई गवनें।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **श्री वृंदावन नवनिकुंज, भ्रमर भ्रमत करत गुंज, कुसुम पुंज ललित लता, गहवर बन नीकों।। जमुनातीर आंजनखर, हरे गाय चरवे को, प्यारी को धाम लाल, भावत है जीको।।१।। रूचि उपजत छाक खात, सखन सहित अति अघात, परम मुदित फेर खात, पठई मैया नीको।। कौतुक सुरपुर विमान, कुसुम वष्टि करत, और या सुखतें फीकों।।२।।**

राजभोग में (राग सारंग) **आज बने गिरधारी दुल्हें, चन्दन को तन लेप किये।। सकल सिंगार बने मोतिन के, विविध कुसुम की माल हिये।।१।। खासा को**

कटि बन्यों है पिछोरा, मोतिन सेहरों सीस धरे।। राते नैन बंक अनियारे, चंचल खंजन मान हरे।।२।। ठाडे कमल फिरावत गावत, कुण्डल श्रम कन बिंदु परें।। “सूरदास” प्रभु मदनमोहन मिल, राधा सों रति केलि करें।।३।।

भोग में (राग सारंग) अति उदार मोहन मेरे, निरख नैन फूले री।। बिच बिच बरूहा चन्द, फूलन को सेहरों सोहे, कुण्डलकल श्रवनन पर, निगम निगम भूले री।।१।। फूलनकी माला गरे, चन्दन के चित्र करें, पीताम्बर फेंट बांधे, अंनग अनुकुले री।। “छितस्वामी” गिरिवरधर, गायन कों नाम लेत, टेरत सब ठाड़ी भई, कदमतर मुले री।।२।।

संध्या में (राग अड़ानों) कृपा रस नैन कमल दल फुलें।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)

शयन भोग आते समय (राग बिहाग) चन्दन भवन मध्य करत ब्यारू, परोस धरि हे कंचन थारी।। हँस हँस जात देत मोहन कर, बहु विंजन जसुमत महतारि।।१।। चन्दन अंग अंग लेप किये, तन लागत है सुखकारी।। “नन्ददास” चरन रज सेवक, तन मन डारत वारी।।२।।

शयन में (राग बिहाग) बैठे बृजराज कुंवर, प्यारी संग यमुना तीर, शीतल बियार सखि, मंद मंद आवें।। (यह पूरा पद पेज १४२ पर पढ़े)

मान में (राग बिहाग) दौरी दौरी आवत, मोहि मनावत, दाम खरच कछु, मोल लई री।। (यह पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े)

पोढ़वा में (राग बिहाग) कुंज भवन में पोढे दोऊ।। (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े)

ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी

श्रृंगार – पाग चंद्रीका को

वस्त्र – धावेती व पटका दोनों गुलाबी रंग के, रुपहरी जरी के श्री मस्तक पर रूपेरी जरी के काम की गोल चंद्रिका पिछवाई गुलाबी वनमाला का (चरणारविंद) तक ग्रीष्मकालीन अच्छा श्रृंगार धराया गया है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – आजकल खस तथा चन्दन के बंगले आते है तथा कली के श्रंगार होते है। चन्दन के बागा धराये जाते है तथा संध्या को स्नान कराया जाता है। (ऐच्छिक श्रृंगार)

मंगला में (राग रामकली) **पिय संग रंग भरि करि कलोंले।। (यह पूरा पद पेज १५५ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग रामकली) **श्याम सुखधाम जहां नाम इनके।। निसदिना प्रानपति आये हियमे बसे, जोई गावे सुजस, भाग्य तिनके।।१।। येही जग में सार, कहत बारंबार, सबन के आधार, धन निर्धनन के।। लेत श्रीयमुने नाम, देत अभय पद दान, "रसिक" प्रीतम प्रिया, बस जू इनके।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **कुंज में बैठे जुगल–किशोर।। अरस परस दोउ खात खवावत, रूचि सौं दे दे कौर।। ललितादिक सब सखी परोसत, लोचन किये चकोर।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई, लावत है चहुं ओर।। हास विलास विविध रस पीवत, मधुर वचन चितचोर।। तन मन धन वारत "परमानन्द", करि अंचल की छोर।।२।।**

राजभोग में (राग सारंग) **सखि सुगन्ध जल घोर के चन्दन हरी अंग लगावत।। (यह पूरा पद पेज ११७ पर पढ़े)**

भोग में (राग सांवत सारंग) **बने माधौ जू के मेहेल।। (यह पूरा पद पेज १३४ पर पढ़े)**

संध्या में (राग कल्याण) **कमल मुख शोभित सुन्दर बैन।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)**

शयन भोग आते समय (राग बिहाग) चन्दन भवन मध्य करत ब्यारू परोस धरीहे कंचन थारी।। (यह पूरा पद पेज १५६ पर पढ़े)

शयन में (राग कान्हरौ) आज सखी रूचिर, गिरिधरनलाल सिर पाग, लपेटी भली रही फबि।। टेढ़ी पांति रूचिर भ्रकुटी पर देखत, कोटिक काम गये दबि।।१।। चंदन मगमद छिटक केसरी पुट, एक चंद्रिका लगी अद्भुत छबि।। कुंचित केस सुदेश कमल पर, मनि में कुण्डल छिप्यों रवि।।२।। बर अवतंस कपोल नासिका, चारू चिबुक कहा कहौ और छबि।। “चतुर्भुज” प्रभु रस रासि रसिक की, बानक बरनै को ऐसो कवि।।३।।

मान में (राग बिहाग) दौरी दौरी आवत मोहि मनावत दाम खरच कछु मोल लई री।। (पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े)

पोढ़वा में (राग बिहाग) पोढ़े रावटी सुख सेज।। (यह पूरा पद पेज १२७ पर पढ़े)

ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या

श्रृंगार – पाग परदनी का।

वस्त्र – सफेद मलमल की परदनी। पिछवाई सफेद जाली की तथा छोटा कमर तक का श्रृंगार, केसरी रंग की पाग पर मोर पंख की चन्द्रिका, शीशफूल, कमल छड़ी, चांदी के वेणुजी व वैत्रजी धराये गये है।

आभरण – नित्यानुसार, मोती के आभरण, कर्णफूल तथा मोती का हमेल व हरा रंग के दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – उष्ण काल में यह रीत का श्रृंगार है तथा श्रृंगार के भाव का कीर्तन राजभोग में गया जाता है।

मंगला में (राग रामकली) **भक्त प्रतिपाल जंजाल टारें।। अपने रस रंग में संग राखत सदा, सर्वदा श्रीयमुने नाम उच्चारे।।१।। इनकी कृपा अब कहां लग बरनिये, जैसे राखत जननी पुत्र बारे।। "श्रीविठ्ठल गिरिधरन" संग बिहरत, भक्त को एक छिन ना बिसारे।।२।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **प्रफुलित बन विविध रंग, झलकत यमुना तंरग, सौरभ घन आमोदित, अति सुहावनों।। (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **श्रीगोवरधन गिरी कंदरा में, भोजन करत है पिय प्यारी।। आस पास युवति सब राजत, देत परस्पर कर मनुहारी।।१।। सखिन के भावकी सामग्री लेत, श्रीललिता निहार निहारी।। "कुंभनदास" प्रभु लाल गिरधर को, देत श्रीराधा प्यारी।।३।।**

राजभोग में (राग सारंग) **सोहत श्याम मनोहर गात।। श्वेत परदनी अतिरस भीनी, केसर पगिया माथ।।१।। कर्नफूल प्रतिबिंब कपोलन, अंग अंग मन्मथ ही लजात।। "परमानन्ददास" को ठाकुर, निरख वदन मुसकात।।२।।**

भोग में (राग सोरठ) **अंग अनंगन रंग रस्यो।। नंदगह ते नंदसुत, वषभान भवन बस्यों।।१।। धेनु के संग मिस ही मिस, बिपिन पंथ धस्यो।। निरख के सब ग्वाल सैन, नयन फेर हंस्यो।।२।। बहुर क्यों छुटत तहां ते, बाहुबंध कस्यों।। नेक**

राधा वदन चितयों, हुलस इत बिलस्यों ।।३।। सांझ समे एकत्र व्है के, घोष पथ परस्यों ।। 'सूर' ऐसे दरस कारन, मन रहत तरस्यों ।।४।।

संध्या में (राग कल्याण) **गोविन्द गायन की पीठ पर, हाथ फेरत, सुबल सखा सों ठाडे हंसत।। (यह पूरा पद पेज १२० पर पढ़े)**

शयन में (राग बिहाग) **सुन्दर यमुना तीर री मनमोहन ठाड़े।। (यह पूरा पद पेज १३४ पर पढ़े)**

मान में (राग बिहाग) **मनावत हार परी री माई।। (पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े)**

पोढ़वा में (राग बिहाग) **पोढ़े स्याम जू सुखसेज।। (पूरा पद पेज ११२ पर पढ़े)**

ज्येष्ठ शुकल प्रतिप्रदा

श्रृंगार – कुल्हे जोड का।

वस्त्र – शरबती पिछोड़ा बिना कोर का, श्रीमस्तक पर कुल्हे पर सादा मोर पंख का जोड़ पिछवाई शरबती बिनाकोर की। मध्य का घूंटन तक ग्रीष्मकालीन अच्छा श्रृंगार किया गया है।

आभरण – नित्यानुसार, मोती के आभरण, कर्णफूल व तुलसीजी व सफेद पुष्पों की कलात्मक थाकवाली दो मालाजी धराई गई है।

विशेष – संध्या समय सारें श्रृंगार फुलकली के तथा रीत के अनुसार मनोरथ भोग धराया जाता है।

मंगला में (राग रामकली) **गुन अपार मुख एक, कहां लौ कहिये।। तजो साधन, भजो नाम श्री जमुनाजी को, लाल गिरिधरन वर, तब हि पैये।।१।। परम पुनित प्रीत की, रीत सब जानिके, दढ करि, चरण–कमल जु गहिये।। "छितस्वामी" गिरिधरन श्रीविठ्ठल, ऐसी निधि छांड़ी अब कहां जु जैये।।२।।**

श्रृंगार में (राग रामकली) **शरन प्रतिपाल गोपाल रतिवर्धिनी।। देत पति पंथ, प्रिय कंथ सन्मुख करत, अतुल करूणामयी, नाथ अंग अर्द्धिनी।।१।। दीन जन जान, रस पुंज कुंजेस्वरी, रमत रसराज पिय, अंग निस सरदिनी।।२।। भक्ति दायक सकल, भव सिंधु तारिनी, करत विध्वंस जन, अखिल अघ मर्दिनी।।३।। रहत नन्दसूनु तट निकट निसदिन सदा, गोपी–गोप मध्य रमत रस कंदिनी।।४।। कृष्ण तन वर्ण गुन धर्म श्रीकृष्ण के, कृष्ण लीला मयी कृष्ण सुख कंदिनी।।५।। पद्मजा पाइ तुव संग मुररिपु, सकल सामर्थ्यमयी पाप की खंडिनी।।६।। कृपारस पूर वैकुण्ठ पद की सीढ़ी, जगत विख्यात सिव सेस सिर मंड़नी।।७।। पर्यो पद कमलतर, और सब छांडिके, देख दग करि दया हास्य मुख मंदिनी।।८।। उभय कर जोर, "कृष्णदास" विनति करें, करो अब कृपा, कलिंदगिरी नंदिनी।।९।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **घोर्यो सतुआ के संग जेंवत, बेजर की रोटी नंदलाल।। टेटी साग संधानों मोदक, लाई डलियन भर ब्रजबाल।।१।। मेवा, अमरस, गोरस, बूरा, दधि ओदन, पकवान रसाल।। "कृष्णदास" प्रभु कुंज भवन में, निरख अखियां भई निहाल।।२।।**

राजभोग में (राग सारंग) आज अति शोभित है नन्दलाल।। नवचन्दन को लेप किये तन, ता पर मोतिन माल।।१।। खासा को कटि बन्यो पिछोरा, कुलह सरस बनी भाल।। कुंदमाल श्रीकंठ बिराजत, बिच बिच फूल गुलाब।।२।। सारंग राग अलापत गावत मधुर सरस सुर ताल।। "गोविन्द" प्रभु की या छबि ऊपर, मोहि रही ब्रजबाल।।३।।

भोग में (राग सारंग) फूलन सों बेनी गुही फूलन की अंगीया, फूलन की सारी मानों फूली फूलवारी।। फूलन की दुलरी हमेल हार फूलन के, फूलन की चौकी, चारू और गजरारी।।१।। फूलन के तरौनां कुण्डल फूलन के, फूलन की किंकिनी सरस संवारी।। फूलन के महल बने फूली श्री राधाप्यारी, फूल रहे "नन्ददास" जाय बलिहारी।।२।।

संध्या में (राग कान्हरौ) धन धन हो हरिदास राई।। (यह पूरा पद पेज १४० पर पढ़े)

शयन में (राग नायकी) पायन चंदन लगाऊ।। (यह पूरा पद पेज ११० पर पढ़े)

मान में (राग बिहाग) अक्षय भाग्य सुहाग राधेकों, अक्षय प्रितम की दिन रतियां।। चंदन पूज प्रीतम सुख दीजे, रीझ यह कहु बतियां।।१।। अक्षय सुजस कहा लो बरनों, पार न पावत सेस मुख जतियां।। छुट्यों मान सहज "परमानन्द", शुभ दिन नीकों अक्षय ततियां।।२।।

पोढ़ते समय (राग केदारों) राय गिरिधरन संग राधिका रानी।। (पूरा पद पेज २१ पर पढ़े)

ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया

शृंगार – पाग–आडबन्द का।

वस्त्र – मोती का आडबन्द, छोटा (कमर तक) ग्रीष्मकालीन श्रंगार किया गया है श्रीमस्तक पर मोती की गोलपाग तथा सफेद मोर पंख धराया गया है। पिछवाई सफेद

आभरण – नित्यानुसार सारे मोती के। शीशफूल, कर्णफूल तथा तुलसीजी की व सफेद पुष्पों की कलात्मक थाकवाली दो मालाजी धराई गई है।

विशेष – फुहारे चलते है श्री जमुनाजी का थाल नित्य राजभोग से संध्या तक आता है। दोनों समय जल का छिड़काव होता है।

मंगला में (राग रामकली) **श्रीयमुना सी नाहीं कोऊ और दाता।। (यह पूरा पद पेज १४६ पर पढ़े)**

शृंगार में (राग बिलावल) **सोभा आज भली बनि आई।। जलसुत ऊपर हंस बिराजत, तापर इन्द्रबधू दरसाई।।१।। दधिसुत लियों दियो दधिसुत में, यह छबि देख नंद मुसकाई।। नीरजसुता वाहन को भक्षण, सूरश्याम लें कीर चुगाई।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **व्रजनारी घर घरते आई, सतुआ भोग धरन को गिरिधर।। बहुत सुगंध डार ता भीतर, कर कर मोदक लाई थार भर।।१।। बैठे जहां निकुंज भवन में श्रीव्रजराज कुंवरवर कुंवरी।। "कृष्णदास" प्रभु प्रेम मुदित दोऊ, आरोगत पिय प्यारी।।२।।**

राजभोग में (राग सारंग) **भलेई मेरे आये हो पिय, टीक दुपहरी की बिरियां।। (यह पूरा पद पेज १२१ पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **करत जल केलि, पिय प्यारी भुज मेलि।। छुटत फूहारे भारी उज्वल, होद संवारे अत्तर सुगंधि रेली।।१।। निरख ब्रजनारी कहा कहो छबि वारी, सखी सहेत सहेली।। राधागोविन्द जलमध्य क्रीडत, ख्याल "वन्दावन" सखी सब टहेली।।२।।**

संध्या में (राग कान्हरौ) आवरी बावरी ऊजरी पाग में, मेल के बांध्यों है मंजुल चोटा।। चंचल लोचन चारू मनोहर, अब ही गहि आन्यों है खंजन जोटा।।१।। देखत रूप ठगोरी लागत, नयनन सैन निमेष की ओटा।। "नन्ददास" रतिराज कोटि वारौं, आज बन्यो ब्रजराजकों ढोटा।।२।।

शयन में (राग अड़ानो) अरी हों या मग निकसी आय अचानक, कान्ह कुंवर ठाडे आपुनी पोर।। (यह पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)

मान में (राग बिहागरो) तू चल राख मेरो मान।। वे तो तिहारों मग ज़ोवत है तू तो निपट अयान।।१।। काहूकों कही सुन धरियों जियमें करियों अपने मन को सयान।। उठ चल हिलमिल कहत "गदाधर" नेक न कर तू काहुकी कान।।२।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पौढ़े हरि झीनों पट दै ओट।। (पूरा पद पेज २१ पर पढ़े)

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया

श्रृंगार – पाग–आड़बंद का।

वस्त्र – शरबती मलमल का आड़बंद रूपेरी कोर का तथा श्रीमस्तक पर शरबती रंग की पाग पर सफेद मोर पंख का कतरा तथा पिछवाई शरबती मलमल की, छोटा (कमर तक) का ग्रीष्मकालीन श्रृंगार किया गया है।

आभरण – नित्यानुसार, मोती के आभरण, शीशफूल, कर्णफूल व सफेद पुष्पों की बड़ी माला पिठिका पर तथा सफेद पुष्पों की दो माला तथा कलात्मक दो मालाजी हमेल की तरह धराई गई है।

विशेष – शीतल जल मीठो, दाल मुंग की, चणाकी गाली हुई नित्य उत्थापन के बाद आरोगाई जाती है।

मंगला में (राग रामकली) **प्राणपति विहरत श्रीयमुनाकुलें।। (यह पूरा पद पेज १३७ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग रामकली) **शरण प्रतिपाल गोपाल रति वर्धनी।। देति पति पंथ, पिय कंथ सन्मुख करत, अतुल करूनामयी, नाथ अंग अर्द्धिनी।।१।। दीन जन जान, रसपुंज कुंजेश्वरी, रमत रस रास पिय अंग निसि सरदिनी।।२।। भक्तिदायक सकल भवसिन्धु तारिनी, करत विध्वंस जन अखिल अघ मर्दिनी।।३।। रहत नन्दसूनू तट निकट निस दिन सदा, गोप गोपी रमत मध्य रस कंदिनी।।४।। कृष्ण–तन वर्ण गुन धर्म श्रीकृष्ण के, कृष्ण लीलामयी कृष्ण सुख कंदिनी।।५।। पद्मजा पाइ तुव संग मुर रिपु, सकल सामर्थ्यमयी पाप की खंडिनी।।६।। कृपारस पूर वैकुंठपद की सीढ़ी, जगत विख्यात शिव शेस सिर मंडनी।।७।। पर्यो पद कमलतर और सब छांडिके, देख दग करि दया हास्य मुख मंदिनी।।८।। उभय कर जोरि "कृष्णदास" विनति करें, करौ अब कृपा कलिदंगिरी नंदिनी।।९।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **बैठे लाल कुंजन में जो पाऊ।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **पनीयां न जैहोंरी आली, नन्दनन्दन मेरी मटुकी झटकि के पटकी।। (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **रूखरी मधुवन की मोहन संग, निसदिन रहत खरी।। जबते परस भयो मोहन को, तबतें रहत हरी।।१।। शीतल जल जमुना को सिंचत, प्रफुलित द्रुमलता सगरी।। "नन्ददास" प्रभु के सरन आए तें, जीवन सुफल करी।।२।।**

संध्या में (राग कल्याण) **मोही ईन सांवरे दिठोना।। गठजोर पाऊ अंतर, मेरे नंदरानी को छोना।।१।। कछु न सुहाय, भावे नही कोऊ, देख पिया कों भोना।। कहा री कहो कछु कहत न आवे, नख सिख रूप सुठौना।।२।। "परमानन्द" को आन मिलों, गिरिधर सब विध गौना।।३।।**

शयन में (राग कान्हरौ/अडानों) **तेरे सिर कुसुम, बिथुर रहे भामिनी, सोभा देत मानों, झलकत तारे।। स्याम अलक, छूट रही वदन पर, चंद छिप्यों मानों बादर कारे।।१।। मोतिनमाल मानौ मानसरोवर, कुच चकवा दोऊ न्यारे न्यारे।। "धोंधी" के प्रभु त्रिलोक बस कीने, तें बस कीने आली नन्ददुलारे।।२।।**

मान में (राग बिहाग) **काहे को न बोलत नागरी बैना।। तोहि मिलन को बहुत करत है, गिरिधरलाल कमलदल नैना।।१।। जब ते दष्टि परी मोहन की , बिसर्यो गोचारण ग्वाल की सेना।। रटत है "सूर" राधे राधे कहि, कंहू बनमाल कंहू उपरैना।।२।।**

पोढ़ते समय (बिहाग) **कुसुम सेज पिय प्यारी।।** (पूरा पद पेज २५ पर पढ़े)

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी

श्रृंगार – पाग धोवती का

वस्त्र – हल्के केसरी रंग की धोती मलमल की, पिछवाई चित्राम की "गोवर्धन गिरि सघन कन्दरा की। श्रीमस्तक पर केसरिया पाग तथा शिरपेच तथा केसरी रंगा हुआ मोर पिछ, शीशफूल व कर्णफूल तथा सफेद पुष्पों की कलात्मक दो मालाजी धराये गये हैं।

आभरण – नित्यानुसार, मोती के आभरण धराये गये हैं।

विशेष –मंगल भोग में नित्य खरबुजा व आम की फांक व आम आरोगाये जाते है।

मंगला में (राग रामकली) **तुम सम और न कोई, श्रीजमुनाजी।। करो कृपा मोहि दिन जानकें, निज ब्रजवासों होई।।१।। राखों चरण सरन तरनि तनया, जन्म आपदा खोई।। यह संसार स्वारथ को सब विध, सुत बंधू सगो न कोई।।२।। प्रेम भजन में करत विध्नता, संत संतापे सोई।। ताको संग मोहिं सपने न दीजै, मांगत नयन भर रोई।।३।। गरल पान डारत अमृत में, विषया रस सों मोई।। "रसिक" कहै दीन होय मांगू, लहर समुद्र समोई।।४।।**

श्रंगार में (राग रामकली) **तिहारो दरस हौ पाऊं श्रीजमुनाजी।। श्रीगोवर्धन श्रीवन्दावन, ब्रजरज अंग लगाँऊ।।१।। दिन दस–पांच रहूं श्रीगोकुल, ठकुरानी घाट न्हाऊं।। "दासन" ऊपर करो कृपा, संतन के संग आऊ।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **सुबल गिरिधारी चढ़ टेरत।। (यह पूरा पद पेज ३७ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सावंत सारंग) **चन्दन पेहेर श्याम बने, कोटिक मनमथ मान हने री।। अंग अंग छबि अमित माधुरी, अद्‌भूत रंग तरंग सनेरी।।१।। गोवर्धन की सघन कन्दरा, सीतल लहरी प्यारी।। झूम रहे ज्यों वक्ष चन्दन के, फूल रही फूलवारी।।२।। सीतल जल झरना को रोचक, त्रिविध पवन सुखकारी।। अति रमनिक पुनित गेहवर, तहां राजत लाल बिहारी।।३।। लटक लटक दग डार रही, सब भांति हरि रस पिये।। फटक धरी एक कुंवर सिरोमनि वामभुजा तर दिये।।४।। नन्दकिशोर स्याम घनसुन्दर, माथे खोरी संवारी।। छबीली पाग पर**

रचना कीनी, श्रीवषमान दुलारी।।५।। चरनन लौ परसत बनमाला, मुक्तामाल छबि न्यारी।। कृष्ण कपूर सिला पर ठाडे, अरून कमल कर धारी।।६।। छबिसों छकीं सबन ब्रजललना, राजत गोरी गोरी।। चन्दन की कंचुकी सबन के, सारी अरगजा घोरी।।७।। जिनकी गति मति हरि हर लीनी, सुन्दर नवल किसोरी।। चन्द्रमुखी निरखत ब्रज चन्द ही, व्है रही सबही चकोरी।।८।। त्रिविध ताप मिट जाय हियके, ऐसों दरसन कीजे।। कहे "भगवानहित रामराय" प्रभु बसो हमारे हिये।।९।।

संध्या में (राग कान्हरौ) **डगर चल गोवर्धन की बाट।। खेलत बीच मिलेंगे मोहन, जहाँ गोधन के ठाट।।१।। चल री सखी तोहि लै जाय मिलाऊं, सुन्दर वदन सरोज।। कमलनयन के एक रोम पर, वारौं कोटि मनोज।।२।। तू पाहुनी एक अनुपम आई, आन गांव की ग्वारी।। "परमानन्द" स्वामी के ऊपर सरबस दीजै वारी।।३।।**

शयन में (राग कान्हरौ) **धन धन हो हरीदास राई।। (यह पूरा पद पेज १४० पर पढ़े)**

मान में (राग केदारों) **रूपरस पुंज वरनों कहा चातुरी।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय में (राग बिहाग) **नवल किशोर नवल नागरिया।। (पूरा पद पेज २० पर पढ़े)**

ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी

(श्रीजी में नाव का मनोरथ)

शृंगार – गुलाबी रूपेरी कोर के मलमल की परदनी एंव गुलाबी एक छोड़ की पाग पर रूपेरी जरी के काम की गोल चन्द्रिका। कमल के फुल की छड़ी तथा पिछवाई चित्राम की इसमें प्रभु राधाजी, गोपीजनों सहित नौका विहार करते हुवे। गणगौर घाट की नाव तथा घूमर करती गोपीजन व श्री ठाकुरजी, बलदेवजी तथा नंद यशोदाजी के चित्रकाम वाली पिछवाई।

आभरण – नित्यानुसार, हीरा–मोती के आभरण, कर्णफूल व सफेद पुष्पों की दो मालाजी तथा कमल के मालाजी हमेल की तरह धराये गये हैं।

विशेष – आज संध्या में डोल तिबारी में श्री यमुनाजी भराये गये और सुन्दर सजी हुई नाव में श्रीमदनमोहनलाल जी को पधरा कर जल विहार कराया गया। श्रीजी के नाव का मनोरथ श्री नवनीतप्रियाजी को पधराकर गो. ति. श्री गोविंदलाल जी ने महाराणा भूपालसिंह जी की प्रार्थना से वि.सं. २००५ में इस दिन प्रारंभ किया। तब से यह मनोरथ सदा के लिय स्थाई कर दिया। श्री मदनमोहनलाल जी नाव में बिराजते हैं। इससे पहले नाना प्रकार के मनोरथ भोग आरोगाये गये। नौका विहार के बाद श्रीमद्नमोहनजी को भीतर पधरायें गये तथा संध्या आरती की गई। वैष्णव श्री यमुनाजी में नहाये।

मंगला में (राग रामकली) **नैन भर देख अब भानु तनया।। (यह पूरा पद पेज १३६ पर पढ़े)**

शृंगार में (राग बिलावल) **घाट पर ठाडे मदन गोपाल।। (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **गिरि पर चढ़ि गिरिधर टेरें।। (यह पूरा पद पेज ३७ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **करत जल केलि पिय प्यारी भुज मेलि।। (यह पूरा पद पेज १६३ पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **बैठे घनश्याम सुन्दर खेवत है नाव।। (यह पूरा पद पेज १५० पर पढ़े)**

संध्या में (राग कल्याण) **माईरी बांके लोचन नीकें।। चिते चिते चित चोरत यह मुरति, खेलत नैनन में लाल भांवते जीके।।१।। एक बेर मुसक्याय चले जब, हिरदें गढ़े गुण पीयके।। "परमानन्द" कोऊ आन मिलावौ, प्रोढ़ बरस या त्रिय के।।२।।**

शयन में (राग बिहाग) **सुन्दर यमुना तीर री मनमोहन ठाड़े।। (यह पूरा पद पेज १३४ पर पढ़े)**

मान में (राग केदारों) **तोहि मिलन कों बहुत करत है, मोहनलाल गोवर्धनधारी।। उत्तर बेग देहो किन भामिनी, कहिधों कहा यह बात तिहारी।।१।। देखीरी तूं जो झरोखन के मग, तन पहरे झूमक की सारी।। तन मन बसीरी प्राण प्यारे के, निमिष जियते होत न न्यारी।।२।। कहिरी सखी कहाँ होय आऊं, बेग बताय सुठौर विचारी।। "कुंभनदास" प्रभु वे बैठे है, जहां देखियत ऊंची चित्रसारी।।३।।**

पोढ़वा में (राग बिहाग) **नवल किशोर नवल नागरियां।। (यह पूरा पद पेज २० पर पढ़े)**

ज्येष्ठ शुक्ल छठ

शृंगार – टिपारे और पिछोड़े का।

वस्त्र – रूपेरी कोर का, बदामी मलमल का पिछोड़ा, श्रीमस्तक पर मोती की टोपी बीच में सफेद रेशम की मोरशिखा तथा दोनों तरफ सफेद रेशम का दोहरा कतरा, शीशफूल व मकराकति कुंडल व वेणीजी मोती के धराये गये हैं तथा पिछवाई सफेद जाली की गोपीजनों के काम वाली, वनमाला का चरणाविंद तक शृंगार भारी कराया गया है।

आभरण – नित्यानुसार, मोती के आभरण तथा तुलसीजी व सफेद पुष्पों के दो मालाजी कलात्मक धराये गये।

विशेष – खस के पंखा होय, तथा चन्दन की बंटी पास में पधराई जाय। फुहारा चले अनोसर में पूरा दिन भोग–संध्या तक छिटकाव कियो जाय।

मंगला में (राग रामकली) **हेत करि देत श्रीयमुने वास कुंजे।। (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **मोहन जेंवत छाक सलौनी।। (यह पूरा पद पेज ३५ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **गोविन्द लाडिलों लड़बौरा।। (यह पूरा पद पेज १११ पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **छबिलों लाल दुहत धेनु धोरी।। माथे कमल वरण को टिपारों, ओढ़ै पीत पिछोरी।।१।। कहारी कहुं कछु कहत न आवे, डारी कठिन ठगोरी।। "कुंभनदास" प्रभु सुख गिरिधर को, जब भेटूं भर कोरी।।२।।**

संध्या में (राग कल्याण) **आवत मदन गोपाल त्रिभंगी।। (यह पूरा पद पेज १४६ पर पढ़े)**

शयन में (राग अडानों) **तेरी भ्रौंह की मरोरन तें, ललित त्रिभंगी भये, अंजन दे चितयों, भये जू स्याम वाम।। (यह पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)**

मान में (राग केदारों) **तोहि मिलन की बहुत करत है, मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज १७० पर पढ़े)**

पोढ़वा में (राग बिहाग) **पोढ़े श्यामजु सुखसेज।। (पूरा पद पेज ११२ पर पढ़े)**

ज्येष्ठ शुकल सप्तमी

श्रृंगार – छज्जेदार पाग आडबन्द का।

वस्त्र – शरबती मलमल का रुपहरी कोर का आडबन्द, श्रीमस्तक पर छज्जेदार शरबती पाग के उपर शिरपेच, लूम व वस्त्र काम का सफेद कतरा तथा पिछवाई शरबती मलमल की।

आभरण – नित्यानुसार, मोती के आभरण, शीशफूल, कर्णफूल व तुलसीजी व सफेद पुष्पों की सुंदर कलात्मक मालाजी व कमल के मालाजी पिठिका पर धराये गये हैं।

विशेष – उष्णकाल की श्री यमुनाजी की लीला चल रही है। छत व हाथ के पंखा होते है।

मंगला में (राग रामकली) **भक्त प्रतिपाल जंजाल टारे।। (यह पूरा पद पेज १५६ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग रामकली) **कहत श्रुतिसार निरधार करके।। (यह पूरा पद पेज १३५ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **बिहारी लाल आई छाक सलोनी।। (यह पूरा पद पेज ३६ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **सूर आयो सिर पर, छाया आई पायन तर, पंछी सब झूक रहे, देख छांह गहरी।। (यह पूरा पद पेज १३७ पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **शीतल उसीर गृह, छिरक्यों गुलाब नीर, परिमल पाटीर, घनसार बरसत है।। सेज सजी पत्रन की, अतर सों तर कीनी, अरगजा अनूप अंग, मोद दरसत है।।१।। बिंजना बियार सीरी, छूटत फुहारे नीके, मानों घन में न्हैनी न्हैनी, फुही बरसत है।। "चतुरबिहारी" प्यारी, रस सों विलास करे, जेठ मास हेमन्त ऋतु, सरस दरसत है।।२।।**

संध्या में (राग कल्याण) **गिरिधर सबही अंग को बांको।। (यह पूरा पद पेज १२२ पर पढ़े)**

शयन भोग आते समय (राग कान्हरौ) अपने कर चंदन सखी, पिय अंग लगावत।। हरखित वदन सदन अपने, निजकर बिंजनी दुरावत।।१।। शीतल भोग राग गुन कहि कहि, कर मनुहार लिवावत।। "द्वारकेश" प्रभु रिझ विवश भये, नेह नई उपजावत।।२।।

शयन में (राग ईमन) मेरे री बगर में आवत छबि सों कमल फिरावत।। (यह पूरा पद पेज १२२ पर पढ़े)

मान में (राग केदारों) तोहि मिलन की बहुत करत है, मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज १७० पर पढ़े)

पोढ़वा में (राग बिहाग) कुसुम सेज पिय प्यारी पोढ़े, करत है रस बतियाँ।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े)

ज्येष्ठ शुकल अष्टमी

श्रृंगार – फेटा का।

वस्त्र – चंदनीया मलमल का रुपहरी पिछोड़ा एवं दुमाला पर शिरपेच और गुलाबी रेशम की मोरशिखा व शीश फूल। श्रीकर्ण में लोलक बंदी लड़वाले कर्णफूल धराये हैं तथा सफेद रंग की जाली की पिछवाई धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार, मोती के आभरण तथा पीला पुष्प व तुलसीजी की दो मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – आजकल कमल के फुलकी माला तथा छड़ी धराई जाती है तथा श्रीजमुनाजी थार में पधराये जाते है। ग्रीष्मकाल में पांच अभ्यंग होते हैं। शयन में रोटी, शिखरन, भात, आमरस आरोगाया जाता है।

मंगला में (राग रामकली) **हेत करि देत श्रीयमुने वास कुंजे।। (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग रामकली) **जयति भानु तनया चरनजुगल बन्दे।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **आगे आऊ री छकहारी।। (यह पूरा पद पेज ३६ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **अबहि रंग राख्यों मुरली में, कहा कहौ री लाल सुघर।। तान तरंग सुर भेद अरू मिलवत जति गति, बिच बिच मिलवत विकट अवधर।।१।। चोखि माखिनी की रेख तामें, गायन टेरति लांबे लांबे स्वर।। बिच बिच लेत तिहारों नाम, सुन री सयानी "गोविन्द" प्रभु, ब्रजरानी के कुंवर।।२।।**

भोग में (राग सारंग) **जल क्यों न पीओं, जो तुम हो पिय प्यासे।। समझ सोच भर लाई जमुनाजल, पीवत क्यों अलसासे।।१।। जल ही मिस तुम उझकत डोलत, नवल त्रिया रस रासे।। "रसिकप्रितम" तुम पीओं चाहत, अधर–सुधा रस आसे।।२।।**

संध्या में (राग कल्याण) **यह कौन टेव तेरी कन्हैया, जबतब मारग रोके।। (यह पूरा पद पेज १४८ पर पढ़े)**

शयन में (राग अडानों) **जर जाओरी लाज मैरे, ऐसी कौन काज आवे, कमलनयन नीके, देखन न दीनें।। बनतें आवत, मारग में भेट भई, सकुच रही इन, लोगन के लीनें।।१।। कोटी जतन, कर रहीरी निहारवे कूं, अंचरा की ओट दे दे, कोटि श्रम कीनें।। "नन्ददास" प्रभु प्यारी, ता दिनतें मेरे नयना, उनही के अंग संग, रंग रस भीने।।२।।**

मान में (बिहाग) **मनावत हार परी री माई।। (पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े)**

पोढ़वा में (राग बिहाग) **दंपति पोढेई पोढ़े रसबतियां करत, नैना दोऊ नयना लाग गये।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)**

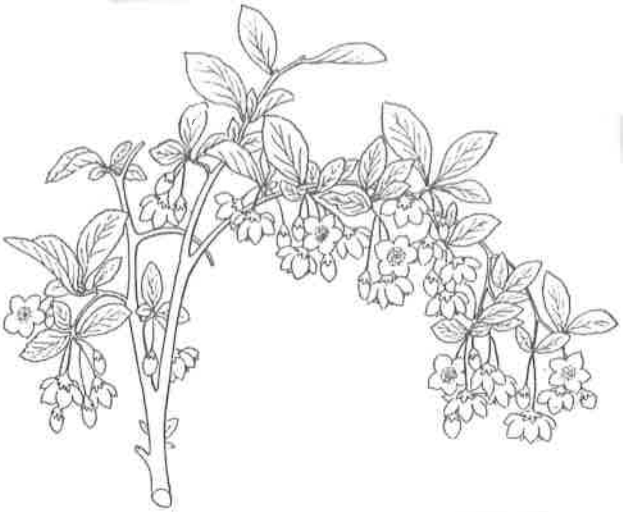

ज्येष्ठ शुक्ल नवमी

– धोती पाग एवं पीत पिछोडी को।

वस्त्र – पीत पिछोरी सफेद मलमल की धोती उस पर केसरीया उपरना याने पीत पिछोरी, श्रीमस्तक पर सफेद पाग पर सफेद मोर की चंद्रीका (सफेद मोर पंख) शीशफूल, कर्णफूल व तुलसीजी व सफेद पुष्पों के दो मालाजी तथा पिछवाई गिरी कन्दरा की।

आभरण – नित्यानुसार छोटा श्रंगार धराया गया है।

मंगला में (राग विभास) प्रफुलित बन विविध रंग, झलकत यमुना तरंग, सौरभ घन आमोदित, अति सुहावनों।। (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े)

श्रृंगार में (राग बिलावल) घाट पर ठाडे मदन गोपाल।। (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े)

राजभोग आते समय (राग सारंग) ऐ ग्वाल मंडली भोजन करत गुपाल।। (यह पूरा पद पेज ४० पर पढ़े)

राजभोग में (राग सारंग) करत जल केलि, पिय.... (यह पूरा पद पेज १६३ पर पढ़े)

भोग में (राग सारंग) पीत पिछोरी कहां जो बिसारी।। ये तो लाल ढिंगन की, ओढे है काहु की सारी।।१।। हों वाहीं घाट पिवावत गैया, जहां भरत पनिहारी, भीर भई गैया सब बीड़री, मुरली भली जो संवारी।।२।। हौं ले भज्यों और काहुकी, वे ले गई जू हमारी।। "परमानन्द" बलि बलि बतियन पर तन तोरत महतारी।।२।।

संध्या में (राग कल्याण) मेरे तो कान्ह हैरी प्राण सखीरी आन ध्यान, नाहीन मेरे, मनके हरण, सुख के करन।। लटपटी पचरंग पाग, ढरक रही वामभाग, कुंकुम को तिलक भाल, नयन कमल घनश्याम बरन।।१।। भकुटी कुटिल ललाट लोल, रत्न जटित कुण्डल लोल, मानों ससि प्रकट भयों, उदय कियो जुगल तरनि।। प्रभु "कल्याण" गिरिधर की छबि, निरखत मगन भई, मोहि लई मन भाई, मुरली अधर धरनी।।२।।

शयन में (राग बिहाग) बैठे बजराज कुंवर, प्यारी संग यमुनातीर, शीतल बियार सखी, मद मंद आवें।। (यह पूरा पद पेज १४२ पर पढ़े)

मान में (बिहाग) मनावत हार परी री माई।। (पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग केदारों) कुंज महल में मंगल हेरी (यह पूरा पद पेज १२५ पर पढ़े)

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी

श्री गंगा दशहरा का उत्सव

श्रृंगार – पाग पिछोड़ा को।

वस्त्र – केसरिया रूपहरी कोर का पिछोड़ा एवं खिड़कीदार पाग पर मोर पिछ के काम का कतरा व लुमक रूपेरी बादला की। पिछवाई केसरिया रूपेरी कोर की।

आभरण – नित्यानुसार, हीरा मोती के आभरण, कर्णफूल व तुलसीजी व सफेद पुष्पों की दो मालाजी

विशेष – आज सांयकाल मणीकोठा व डोल तिबारी में गंगाजी भराये भोग संध्या के दर्शन हुवे। सामग्री में श्रीगोपी वल्लभ भोग में मनमनोहर के लड्डु तथा राजभोग में सतुआ, हीभात मठड़ी खाजा तथा केंसरी सुहारी के भोग आवे। नि. लि. गोस्वामी तिलकायत श्री गोविन्दलाल जी महाराज इस दिन गादी बिराजे थे।

मंगला में (राग रामकली) अष्टपदि गंगाजी की। **नमो देवी गंगे मातगंगे हरशिरसि निखिलमद्यमलकानंदे।।ध्रु.।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े)**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **आगे आगे भाज्यो जात, भगीरथ को रथ, पाछें पाछें आवत, रंग भरी गंग।। झलमलात अति, उज्वल जल की ज्योति, अवनि दिपत मानों, सीस भरे मोति मंग।।१।। जाय परसे है भूप, कब के भसम रूप, ठौर ठौर जागि उठे होत सलिल संग।। "नन्ददास" मानों, अगिनी के जंत्र छूटे, ऐसे सुरपुर चले धरें दिव्य अंग।।२।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **छाक ले आई ग्वालिन गोरी।। (यह पूरा पद पेज १०४ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **जाको वेद रटत, ब्रह्मा रटत, संभु रटत, सेष रटत, नारद, सुक, व्यास, रटत, पावत नहीं पार री।। ध्रुवजन प्रहलाद रटत, कुंती के कुंवर रटत, द्रुपद सुता रटत, नाथ अनाथन प्रतिपाल री।।१।। गनिका गज गिध रटत, गौतम की नार रटत, राजन की रमणी रटत, सुतन दे दे प्यार री।। "नन्ददास" श्रीगोपाल, गिरिवरधर रूप रसाल, जसोदा को कुंवर लाल, राधा उर हार री।।२।।**

भोग में (राग सारंग) **बैठे घनश्याम सुन्दर खेवत है नाव।। (यह पूरा पद पेज १५० पर पढ़े)**

संध्या में (राग अडानों) **कृपारस नैन कमल दल फुलें।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)**

शयन में (राग बिहाग) **रतिसुखसारे गतमभिसोर मदनमनोहर वेषं।। (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े)**

मान में (बिहाग) **मनावत हार परी री माई।। (पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े)**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **नवल किशोर नवल नागरियां।। (पूरा पद पेज २० पर पढ़े)**

ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी

"श्री निर्जला एकादशी व्रतम्"

शृंगार – मोती का मुकट व धोती।

वस्त्र – गुलाबी रुपहरी कोर की धोती और पटुको धराया गया है। श्री मस्तक पर मोती का मुकुट तथा पिछवाई गुलाबी हासिया वाला।

आभरण – मोती के आभरण व मोती का शीशफूल धराया गया है। कान में मयुराकति कुंडल धराये गये हैं। तुलसीजी व सफेद पुष्पों की कलात्मक मालाजी धराये गये हैं।

विशेष – आज श्रीनाथजी चंदन के बंगले में बिराजे तथा यही श्रंगार सायंकाल कली का धराया गया। मनोरथ भोग आरोगाये गये।

मंगला में (राग खट) **(चंदन की अष्टपदी) चंदनचर्चितनीकलेवर पीतवनसनवनमाली।। (यह पूरा पद पेज १५२ पर पढ़े)**

शृंगार में (राग रामकली) **श्रीजमुनाजी अधम उद्धारनी में जानी।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **पीत उपरैना वाले ढोटा, कबहु की टेरत ग्वालनी।। छाक बनाय ले आई विविध विध, कालिंदी तीर उपहारनी।।१।। कहा लेहो ऐसी गाय चरायवे में, जाय सम्हारो क्यों न छकहारिनी।। "रसिक" सिरोमनि त्रिपुर विमोहित, कुंजन कुंज बिहारिनी।।२।।**

राजभोग में (राग सारंग) **आज अति शोभित है नन्दलाल।। (यह पूरा पद पेज १६२ पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **फूलन सों बेनी गूही, फूलन की अंगीया, फूलन की सारी, मानों फूली फूलवारी।। (यह पूरा पद पेज १६२ पर पढ़े)**

संध्या में (राग गौरी) **कमल मुख सोभित सुन्दर बैनु।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)**

शयन में (राग अडानों) पाग सोहे लटपटी, गुलाब के फूलन कुलह भरें।। भ्रकुटी विलास हास, कुण्डल कपोल झांई, कोटिक मन्मथ मन हरे।।१।। कुंचित केस सुदेश, तिलक रूचिर भाल, माल मोतिन की भेख करें।। "चतुर्भुजदास" प्रभु गिरिधर, ऐसी विधि ठाडे, मुरली अधर धरे।।२।।

मान में (राग बिहाग) आवत जात हौं हार परी री।। ज्यों ज्यों प्यारों विनती कर पठवत, त्यों त्यों तूं गढ़मान चढ़ी री।।१।। तिहारे बीच परे सोई बावरी, हौं चौगान की गेंद भई री।। "गोविन्द" प्रभु कों वेग मिल भामिनी, सुभग यामिनी जात बही री।।२।।

पोढ़ते समय (राग बिहाग) कुसुम सेज पिय प्यारी पोढ़े, करत है रस बतिया।। हंसत परस्पर आनन्द हुलसत, लटक लटक लपटात छतियां।।१।। अति रसरंग भीने रीझेरी रिझवार, एक तनमन भई एक मति गतियां।। "रसिक" सुजान निर्भय क्रीडत दोऊ, अंग अंग प्रतिबिंबित दोउन के वसन भतियां।।२।।

ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी

शृंगार – पाग चंद्रीका का।

वस्त्र – केसरी मलमल का, रुपहरी कोर का पिछोड़ा एंव पटका राजाशाही श्रीमस्तक पर केसरी पाग पर रूपेरी जरी काम की दोहरी कीलंगी, शिरपेच, लूम चंद्रीका, शीशफूल, कर्णफूल तथा केसरिया पिछवाई।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – आज श्रीजी राजभोग से संध्या तक मनोरथ से कदम के फुल मण्डली में बिराजे तथा विविध प्रकार के मनोरथ भोग आरोग्या।

मंगला में (राग रामकली) **श्रीयमुने रसखानि को सिसनाऊं।। ऐसी महिमा जान, भक्तन को सुखदान, जोई मांगौ सोईजु पाऊ।।१।। पतित पावन करन, नाम लिनो तरन, दृढ कर गहि चरन, कहुं न जाऊ।। "कुंभनदास" लाल गिरिधरन मुख निरखत, यही चाहत नही, पलक लाऊ।।२।।**

शृंगार में (राग रामकली) **प्राणपति बिहरत श्रीयमुना कुले।। (यह पूरा पद पेज १३७ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) (श्री यमुना तट छाक आरोगता के पद) **यमुना तट भोजन करत गोपाल।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **आज बने नंदनंदन री, नव चंदन को तन लेप किये।। तामें चित्र बने केसर के, राजत है सखी सुभग हिये।।१।। तनसुख कों कटि बन्यों है पिछोरा, ठाडे है कर कमल लिये।। रूचिर बनमाल पीत उपरैना नयन मैन सरसे देखिये।।२।। करनफूल प्रतिबिम्ब कपोलनि, मगमद तिलक लिलाट दिये।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधरन लाल सिर, पाग रही भ्रकुटी छिये।।३।।**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **विहरत बन बन में बनमाली।। ललितादिक बनमाला लिये, पहिरावत मनुहारी।।१।। अंब कदब झूके चहूं और, फूल रही फूलवारी।। हँस, मोर, चकोर, चातक, पिक मधुर करत झनकारी।। नाना विध के द्विजवर बोलत, त्रिविध पवन सुखकारी।। "सूरदास" प्रभु की यह लीला, मान करत बलिहारी।।३।।**

भोग में (राग सारंग) यमुना तट नव निकुन्ज, द्रुमन दल पहुप पुंज, तहां रची नागरवर, रावटी उसीर की।। कुंकुम घनसार घोर, पंकज दल बोर बोर, चर्चत चहुं और, अवनि पंकज पाटिर की।।१।। सोभित तन गौर स्याम, सुखद सहज कुंजधाम, परसत सीतल सुगंध, मंदगति समीर की।। "नन्ददास" पिय प्यारी, निरख सखी ललिता ओट, श्रवनन धुनि सुन, किंकनी मंजीर की।।२।।

संध्या में (राग कल्याण) जाके दरस को जग तरसत, दरस जाय ताहे दे मेरी आली री।। जाकि मुरली धून सुन, सुर नर मुनि मोहे, ताहि को तु मोह ले री।।१।। शिव विंरची जाकों पार न पावे, सो तेरे चरण परसत है री।।२।। "धोंधी" के प्रभु तीन लोक जाके बस, सो तेरे बस भयो, तनक तु हित चित दे री।।२।।

शयन में (राग कान्हरौ) मेरे गह चन्दन अति कोमल, लीजे हो सुन्दर व्रजनायक।। परम उदार चतुर चिंतामनि, लाई स्वच्छ तुम लायक।।१।। अंग लेपन करत परस्पर, निरख अनंग लजावत।। चन्दन पहेरे आय हरि बैठे, "सूर" रसिक जस गावत।।२।।

मान में (राग बिहाग) आवत जात हौं हार परीरी।। (पूरा पद पेज १८० पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) श्यामा श्याम सैज पै पौढ़े, बिबिध बातें करत।। परसि कपोल परम सुख उपन्यों, दोऊ जन आंको भरत।।१।। हस्त कमल कुच उपर धरिके, सुरति केलि जिय धरत।। "व्रजपति" की अति प्रीति–रीति की, बातें लिखि न परत।।२।।

ज्येष्ठ शुक्ला त्रयोदशी

गो.ति.श्री गिरधर जी महाराज श्री को उत्सव

देहरी बन्दनमाल

श्रृंगार – सेहरा को।

वस्त्र – चंदनीया मलमल का धोती व राजाशाही पटका रूपेरी कोर के तथा श्रीमस्तक पर चंदनीया दुमाला पर मोती का सेहरा, शीशफूल, मयुराकत कुंडल व श्वेत पुष्पों की थाकवाली कलात्मक दो मालायें तथा वेणीजी व केसरी पिछवाई।

आभरण – नित्यानुसार उत्सव के धराये गये है। हीरा–मोती के आभरण।

विशेष – सामग्री श्री गोपीवल्लभ भोग में जलेबी व बिलसारू आरोगाये गये है। तिलकायत श्री गिरधारी महाराज का प्राकट्य विर्य स्वरुप से हुवा। श्री गोवर्धनधर भक्त कामना पूरक है। आपका जीवन अत्यंत चमत्कार पूर्ण है। जन्म सं. १८६६, नाथद्वारा में प्राकट्य। तिलकायत बनने के बाद १६१७ में मोती महल बनवाया। आपने व्रज में लीला प्रवेश किया।

मंगला में (राग रामकली) **फल फलित होय फलरूप जाने।। देखी हु ना सुनी, ताहि की आपुनी, ताकी बात कहो, कैसे जू माने।।१।। ताहि के हाथ, निरमोल नग दीजिये, जोई नीके करी, परखि जाने।। "सूर" कहे क्रूरतें, दूर बसिये सदा, श्रीजमुनाजी को नाम, लीजे जू छाने।।२।।**

श्रृंगार में (राग रामकली) **श्याम संग श्याम व्है रही श्रीयमुने।। (यह पूरा पद पेज १५५ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **बड़ो मेवा एक ब्रज में टेंटी।। जाको होत है साग संधानों, और बेझर की रोटी।।१।। भरि भरि डला जब बिनन लागी, बड़े गोप की बेटी।। "कुभनदास" प्रभु गोवर्धनधर, भुज ओढ़नी लपेटी।।२।।**

राजभोग आते समय (बधाई) (राग सारंग) **केसर की धोती पहिरें, केसरी ऊपरना ओढ़ें, तिलक मुद्रा धरि बैठे, श्री लछमन भट्ट धाम।। (यह पूरा पद पेज ६७ पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **आज बने गिरिधारी दुल्हे, चन्दन को तन लेप किये।। सकल सिंगार बने मोतिन के, विविध कुसुम की माल हियें।।१।। खासा कों कटि बन्यों है पिछोरा, मोतिन सेहरो सीस धरे।। राते नैन बंक अनियारे, चंचल खंजन मान हरे।।२।। ठाडे कमल फिरावत गावत, कुण्डल श्रमकन बिंदु परे।। "सूरदास" प्रभु मदनमोहन मिल, राधा सों रति केली करे।।३।।**

संध्या में (राग हमीर) **निरखि मुख ठाडी व्है जु हंसे।। (यह पूरा पद पेज ११८ पर पढ़े)**

शयन में (राग बिहाग) **कुंजभवन में आज मंगलचार।। नवदुलहिनी वृषभाननंदनी, दुल्हे श्रीव्रजराजकुमार।।१।। नये नये पुष्पकुंज के तोरन नवपल्लव के बंदनवार।। चौरी रचि कदंबखंडी में, बंसीवट सघन लता मंडप विस्तार।।२।। करत वेद ध्वनि मधुप गान, कोकिला गण गावत अनुसार।। दीनी भूरी दास "परमानंद", प्रेम भक्ति रत्नन के हार।।३।।**

मान में (बिहाग) **आवत जात हौं हार परीरी।। (पूरा पद पेज १८० पर पढ़े)**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **पोढ़े लाल राधिका के गेह।। नवल धाम जु नवल सिज्या, नवल बाढ्यों नेह।।१।। नव राधा नवल जोबन, नवल बिलसत देह।। नव दुलहिया "कृष्णदास" स्वामीनि, नवल नागर एह।।२।।**

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी

शृंगार — पाग–किलंगी व आडबंद का।

वस्त्र — गुलाबी रंग की मलमल का रुपहरी कोर का आडबंद धराया गया है। श्रीमस्तक पर गुलाबी पाग, शिरपेच, लूम व सफेद पंख का दोहरी किलंगी तथा पिछवाई सफेद वस्त्र कामकी। इसमें व्रजभक्त दोनों तरफ से जल भर के आते हैं।

आभरण — नित्यानुसार, मोती के आभरण तथा कर्णफूल, तुलसीजी व सफेद पुष्पों की दो मालाजी तथा दो मालाजी हमेल की तरह धराई गई है।

विशेष — श्रंगार के दर्शन के बाद महाराज श्री तथा श्रीमुखियाजी, भीतरयि सभी चांदी–सोना की गागर लेकर नदी पर से जलभर के लाते है। सांझ को जल में सुगन्धी कली तथा फुल पधराकर अधिवासन किया गया हे। आज पनघट की लीला है। आज साकगर में आम की सेवा होती है।

मंगला में (राग विभास) **गोकुल की पनिहारी, पनियां भरन चली, बड़े बडे नैना तामे, फब रहयों कजरा।। (यह पूरा पद पेज ३६ पर पढ़े)**

शृंगार में (राग बिलावल) **यमुना जल घट भरि, चली चन्द्रावली नारि।। (यह पूरा पद पेज १३३ पर पढ़े)**

राजभोग आते समय (राग सारंग) **लाई जसोमति मैया भोजन कीजे लाल।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े)**

राजभोग में (राग सारंग) **आवत ही यमुना भर पानी।। (यह पूरा पद पेज १५० पर पढ़े)**

भोग में (राग सारंग) **पनीयां न जैहों री आली, नन्द नन्दन मेरी मटुकी झटकी के पटकी।। (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े)**

संध्या में (राग कल्याण) **यह कौन टेव तेरी, कन्हैया जब तब मारग रोके।। (यह पूरा पद पेज १४८ पर पढ़े)**

शयन में (राग अडानों) **जल को गईरी सुघट नेह भर लाई, परी है चटपटी दरसकी।। इत मोहन गास उत गुरूजन त्रास, चित्रलिखी ठाडी नाम धरत सखी परसकी।।१।। टूटे हार फाटे चीर, नैनन बहत नीर, पनघट भई भीर, सुधि न कलस की।। "नन्ददास" प्रभुसों, ऐसी प्रीति गाढ़ी बाढ़ी, फैली परी चायन सरस की।।२।।**

मान में (राग बिहाग) **आवत जात हौं तो हार परीरी।। (पूरा पद पेज १८० पर पढ़े)**

पोढ़ते समय (राग बिहाग) **पौढ़ हरि झीने पट दे ओट।। (पूरा पद पेज २१ पर पढ़े)**

ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा

स्नान यात्रा (ज्येष्ठभिषेक) उत्सव। देहरी बन्दन माल

आज का सेवाक्रम – ज्येष्ठाभिषेक (स्नानयात्रा) आज प्रातः काल मंगला आरती हुई बाद में टेरा आया तथा श्रीजी को सफेद धोती उपरना धराया, श्रीमस्तक खुला रखकर स्नान के दर्शन खोले। श्रीजी के आगे पुरुष सूत्र के वेदोच्चारण ज्येष्ठाभिषेक का पाठ करते है। कीर्तन होते है तथा महाराजश्री हाथ में शंख लेकर इससे श्रीजी को स्नान कराते है। स्नान पूरों होने पर टेरा लेकर श्रीजी को श्रंगार कराया जाता है।

श्रृंगार – कुल्हे – जोड़ तथा पिछोड़े का।

वस्त्र – सफेद मलमल के केसर की कोर के तथा केसर के कमल की छाप के धराये गये है। कटि में पिछोड़ों तथा श्रीमस्तक पर सफेद कुल्हैं रूपेरी कोर की उसपर मोर पिछ की सादा जोड़ तथा पिछवाई सफेद केशर के कोरकी तथा केसर के कमल छापा के धराई गई है। मकराकत कुंडल, तुलसीजी व सफेद पुष्पों की दो मालाजी धराये गये हैं।

आभरण – नित्यानुसार उत्सव के धराये गये है। हीरा–मोती के आभरण, सफेदरंग की कुल्हें व सफेद चंदन छाप के वस्त्र धराये गये हैं।

सामग्री – आज श्रीजी को गोपी वल्लभ भोग के साथ स्नान यात्र के सवा लाख आम का भोग आया तथा चिरोंजी के लडुवा तथा (खोपरा के रस के कोरा) आम की बरफी तथा मूंग की अंकुरी तथा खोपरा के घेरा तथा मिश्री का शीतल अमरस लीला मेवा पधराये गये। सखड़ी में दहीभात सतवों तथा सेव बिलसारू व मीठी कढ़ी आरोगाई गई।

ज्येष्ठ पूनो स्नान यात्रा जल सितल स्नान करावे।
शीतल भोग धरत मन भाये मो मन ताप नसावे।।

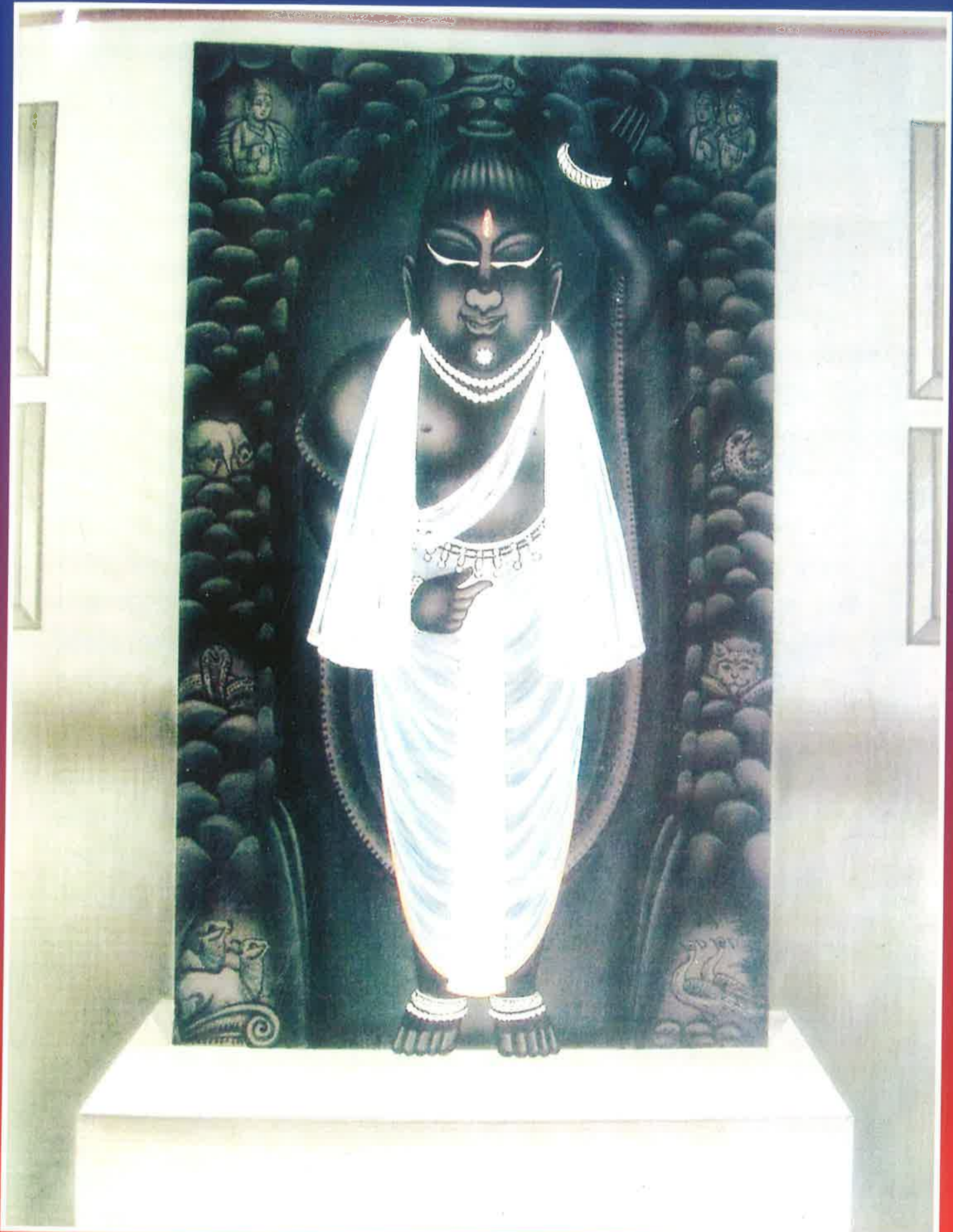

श्री स्नानयात्रा (ज्येष्ठाभिषेक)

श्रीमती मथरीबाई स्व. श्री मदनलाल जी पारख एवं परिवार का जय श्री कृष्ण

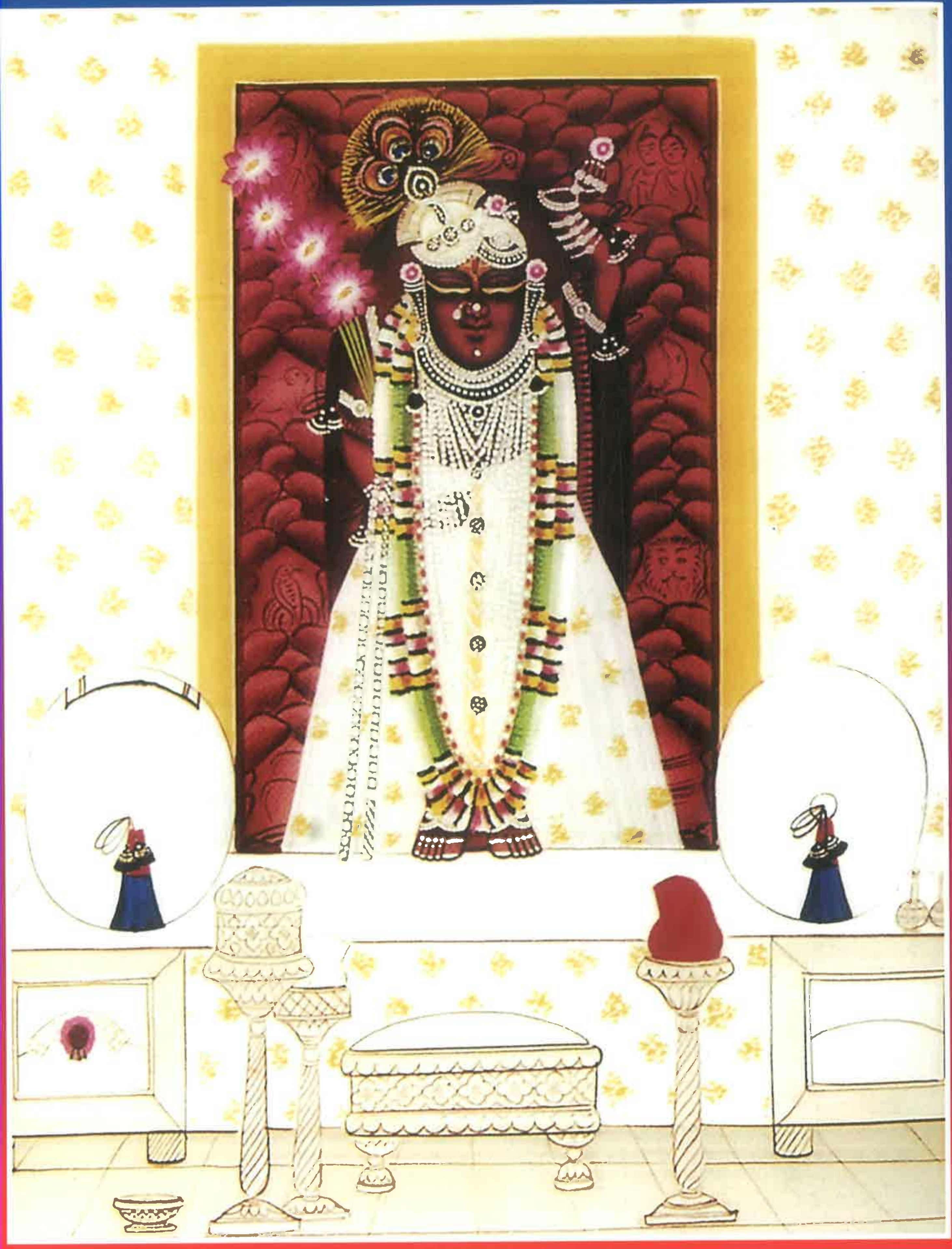

स्नान यात्रा श्रृंगार दर्शन

श्री जयन्तिलाल जी पारख सपरिवार सेक्टर 11 उदयपुर का जय श्री कृष्ण

मंगला में (राग रामकली) राग बिलावल (श्रीयमुनाजी की अष्टपदी) नमो देवी यमुने नमो देवी यमुने हर कृष्ण मिलनांतरायम्।। (यह पूरा पद पेज ११ पर पढ़े)

स्नान के समय (राग बिलावल) मंगल ज्येष्ठ ज्येष्ठा पुन्यों, करत स्नान गोवर्धन धारी।। घिस चन्दन पुष्प तुलसी सुवासित, केसरघट जल डालत प्यारी।।१।। चोवा चंदन मगमद सौरभ, सरस सुगन्ध कपूरन न्यारी।। अरगजा अंग अंग प्रति लेपन, कालिंदी मध्य केली विहारी।।२।। सखियन यूथ यूथ मिलि छिरकत, गावत तान तरंगन भारी।। "केसो–किसोर" सकल सुखदाता, श्रीवल्लभ नन्दन की बलिहारी।।३।। परमानन्द मिले सुख विहरत, जमुना पुलिन परम सुखकारी।।

शृंगार में (राग बिलावल) करत गोपाल यमुना जल क्रीडा।। सुरनर असुर थकित भये देखत, बिसरी गई तन जिय पीड़ा।।१।। मगमद तिलक कुंकुमा चन्दन , अगर कपूर सुबास बहु भुरकन।। कचयुग मगन रसिक नन्दनन्दन, कोमल पानी परस्पर छिरकन।।२।। निर्मल सरदकाल ऋतु सोभा, बरखत स्वाति बुंद सम मोती।। "परमानन्द' कंचनमनि गोपी, मरकतमनि गोविन्द मुख जोती।।३।।

राजभोग आते समय (राग सारंग) आज हमारे भोजन कीजे।। बहुत भांत पकवान मिठाई, खटरस व्यंजन लीजे।।१।। सद्य घी खिचरी और खोवा, स्याम सलोने लीजे।। उर्द के बरा दही में बोरे, कछु कोरे कछु भींजे।।२।। संग समान सखा बुंलावहु बांट सबन को दीजे।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर, पान्यों पछावर पीजे।।३।।

राजभोग में (राग सारंग) जमुना जल गिरधर करत विहार।। आसपास युवति मिल छिरकत, हंसत कमल मुख चार।।१।। काहु के कंचुकी बन्द टुटे, काहुके टुटे उरहार।। काहु के बसन पलट मनमोहन, काहु अंग न संभार।।२।। काहुकी खुभी काहुकी नकबेसर, काहुके बिथुरेवार।। "सूरदास" प्रभु कहां लौं बरनौ, लीला अगम अपार।।३।।

भोग में (राग सारंग) (टोडी) मोहि मिलनि भावै बलवीर की।। सरद निसा पूरन ससी निर्मल, खेलनी जमुना तीर की।।१।। हरि हमकों हम हरिकों छिरके, पैसद फैलन नीर की।। हंस कर खेंचि लेत औंडे जल, अंक माल भूज भीर की।।२।। जलते निकसि होत जब ठाडे, अंग अंगोछनि चीर की।। “परमानन्द” स्वामी रतिनागर, बलि बलि स्याम सरीर की।।३।।

संध्या में (राग अड़ानों) कृपा रस नैन कमल दल फुले।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े)

शयन में (राग केदारों) रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेषं।। (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े)

(राग बिहाग) सुन्दर यमुना तीर री मनमोहन ठाडे।। (यह पूरा पद पेज १३४ पर पढ़े)

मान में (राग बिहाग) तू चल राख मेरो मान।। (यह पूरा पद पेज १६४ पर पढ़े)

पोढ़ते समय (राग बिहाग) पौढे रंग महल गोविन्द।। राधिका संग सरद रजनी, उदित पून्यों चंद।।१।। विविध चित्र विचित्र, कोक कौतुक फंद।। निरख निरख विलास, विलसत दंपति रसकंद।।२।। मलय चंदन अंग लेपन, परसि अति आनंद।। कुसुम बिंजना वायु ढ़ोरै, सजनी “परमानन्द”।।३।।

परिचय

इस ग्रथ के प्रकाशनकर्ता मदनलाल शर्मा का श्रीनाथजी की नगरी नाथद्वारा में सम्वत् 1996 कार्तिक कृष्ण नवमी को श्री हरिशंकर जी हाड़ा (गुर्जर गौड ब्राह्मण) के पुत्र के रुप में जन्म हुआ। आपने एम.ए.,बी.एड. तक की शिक्षा ग्रहण की एवं साहित्य रत्न की उपाधि भी प्राप्त की। आपको राज्य स्तरीय पुरस्कार वर्ष 1993 में प्रदान किया।

आपकी रूचि बाल्यकाल से ही पुष्टिमार्ग में रही। आपका ब्रह्मसम्बंध वर्तमान तिलकायत श्री 108 श्री इन्द्रदमनजी महाराज (श्री राकेशजी) द्वारा हुआ।

आपश्री की प्रेरणा के फलस्वरूप कीर्तन संकलन प्रणालिका के अनुसार प्रारंभ किया एवं इसका प्रथम पुष्प (माह चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ) का प्रकाशन चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सं. 2065 को किया। द्वितीय पुष्प (माह आषाढ़, श्रावण एवं भाद्रपद) का आश्विन शुक्ल 10 सं. 2067 तृतीय पुष्प (आश्विन, कार्तिक एवं मार्गशीर्ष एवं पौष मास) एवं चतुर्थ पुष्प (माघ, फाल्गुन एवं चैत्र कृष्ण पक्ष) का प्रकाशन कर आप वैष्णवजनों को समर्पित किया। प्रथम पुष्प समाप्त हो जाने से इसका पुनः प्रकाशन कराया जा रहा है।

आशा है वैष्णव जन इससे लाभान्वित होंगे एवं श्रीजी सेवामें यह उपयोगी होंगे।

यदुनंदन त्रिपाठी
विद्या विभागाध्यक्ष
मंदिर मंडल, नाथद्वारा